

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.1

Re. 1 per copy

January 2015



Indian Adult Education Association

MoU Signed for Academic Cooperation



With a view to promote academic cooperation between the International Institute of Adult and Lifelong Education (IIALE) and the Department of Adult, Continuing Education and Extension (DACEE), University of Delhi a Memorandum of Understanding was signed on January 9, 2015 by the two institutions represented by

Professor S.Y.Shah, Director, IIALE and Professor Rajesh, Head of the Department, DACEE in the presence of Shri A.C.Choudhary, Chancellor, IIALE. The terms of cooperation are:

Facilitating the placement of students of University Delhi at the Institute for field work and gaining practical experience.
Providing access to the library facilities and other resources of the Institute to students.

Organizing training programmes and research methodology courses.

Conducting joint research projects.

Organization of national/international workshops and seminars.

Exchanging documentary publications and teaching materials regularly.

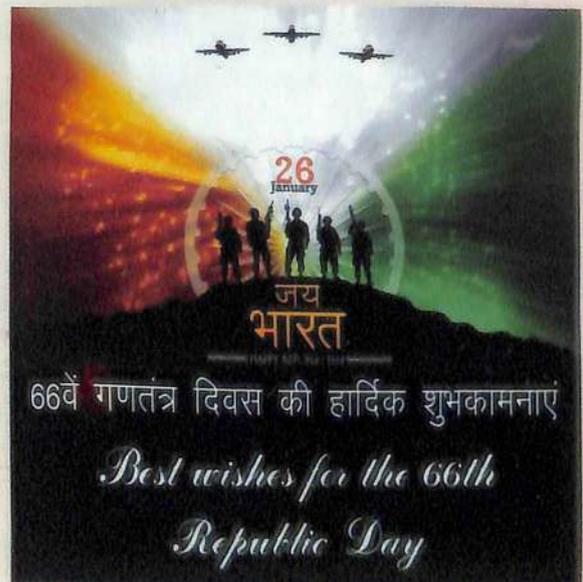
Briefing/orientating visitors from other institutions/organizations.

Any other forms of co-operation, which the two institutions may jointly arrange.

On this occasion Dr. V.Mohankumar, Director, Smt. Kalpana Kaushik, Assistant Director, IAEA and Dr. Bani Bora were also present.

Ms. Vrinda Sarup is the Secretary, School Education

Ms. Vrinda Sarup, 1981 batch IAS officer of Uttar Pradesh cadre has taken over as Secretary, Department of School Education and Literacy, Ministry of Human Resource Development, Govt. of India on January 1, 2015. She has succeeded Shri R. Bhattacharya, 1978 batch IAS officer of Andhra Pradesh Cadre who has superannuated at the end of December 2014. Ms.Sarup was working as Special Secretary in the same department before assuming the charge of Secretary.



स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्तिनगर, दिल्ली

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा कीर्तिनगर, दिल्ली में संचालित स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं के बारे में स्थानीय महिलाओं को सूचित करने तथा सुविधाएं उपलब्ध कराने का एक प्रकल्प है। हाल में इस प्रकल्प के तहत निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित किये गये:

पोषाहार शिविर

गत 8 दिसंबर 2014 को चूना भट्टी (निकट बुद्ध मंदिर), कीर्तिनगर में



एक पोषाहार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कुल 43 लोग उपस्थित रहे। शिविर में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर पोषाहार विशेषज्ञ श्रीमती सुनीता रानी उपस्थित थी। शिविर का मुख्य उद्देश्य उपस्थित महिलाओं को सात माह से दो वर्ष तक के बच्चों के लिए पोषक आहार बनाने की विधि के संबंध में जानकारी प्रदान करना था।



शिविर के आरंभ में श्रीमती सुनीता ने उपस्थित महिलाओं को व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमें निजी स्वच्छता के साथ-साथ अपने बच्चों की स्वच्छता पर भी विशेष

ध्यान देना चाहिए। तत्पश्चात उन्होंने कहा कि जन्म से 6 माह तक के बच्चों को स्तनपान कराना तथा सातवें महीने से स्तनपान के साथ-साथ बच्चों को अलग-अलग पौष्टिक व्यंजन बना कर खिलाने चाहिए। स्तनपान कराते समय दूध की कमी होने पर महिलाओं को अपने भोजन में हरी पत्तेदार सब्जियां तथा लाल-पीले फलों का समावेश करना चाहिए। बच्चे स्वस्थ रहें इसके लिए नियमित टीकाकरण कराना चाहिए तथा उन्हें निश्चित तौर पर विटामिन-ए की खुराक देनी चाहिए। तत्पश्चात उन्होंने दो व्यंजन यथा पौष्टिक दलिया और फ्रूट फिरनी बनाने के नुस्खे के बारे में विस्तार से बताया तथा इन्हें बनाने की विधि का प्रदर्शन किया और व्यंजनों से संबंधित नुस्खों की छायाप्रति भी उपस्थित लोगों को वितरित की। अंत में श्रीमती सुनीता ने कुछ महिलाओं को ओपीडी में अपना स्वास्थ्य जांच कराने के लिए भी रेफर किया।

इसी प्रकार दूसरा शिविर दिनांक 12 जनवरी 2015 को संजय कैंप, हनुमान मंदिर में आयोजित किया गया जिसमें कुल 26 महिलाओं ने भाग लिया। इस शिविर में भी संदर्भ व्यक्ति पोषाहार विशेषज्ञ श्रीमती सुनीता

रानी हीं थी। शिविर के प्रारंभ में उन्होंने उपस्थित महिलाओं को व्यक्तिगत स्वच्छता, मासिक सुरक्षा तथा जीआरसी में संचालित होने वाली गतिविधियों के बारे में बताए हुए कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए व्यक्तिगत साफ-सफाई की अहम भूमिका होती है इसलिए हमें इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।



इसके पश्चात उन्होंने महिलाओं में आयरन और कैल्शियम की कमी तथा इसके दुष्प्रभाव के बारे में भी बताया और कहा कि खान-पान को सही रखकर हम इस कमी को पूरा कर सकते हैं। शिविर में उन्होंने दो प्रकार के व्यंजनों यथा मूंगफली तिल लड्डू और खजूर आंवला चटनी बनाने की विधि का प्रदर्शन किया। तदुपरान्त उन्होंने कहा कि कैल्शियम और आयरन की कमी को पूरा करने के लिए हमें सब्जियां लोहे की कढ़ाई में बनानी चाहिए। हरी पत्तेदार सब्जियां, खट्टे रसदार फल और गाजर, शलगम, हरा साग, दाल तथा दूध से बने हुए खाद्य पदार्थों को भी भोजन में सम्मिलित कर इस कमी से बचा जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए प्रतिभागियों को व्यंजनों को बनाने की विधि की छाया प्रति भी प्रदान की गयी। अंत में श्रीमती रानी ने शिविर में आयी हुई 4 अत्यधिक कमजोर महिलाओं को जीआरसी में आयोजित होनी वाली ओपीडी के लिए भी रेफर किया।

कानूनी जागरूकता बैठक

पिछले दिनों जीआरसी, कीर्तिनगर द्वारा चार कानूनी जागरूकता बैठकें आयोजित की गयी। इनमें से तीन बैठकों का मुख्य विषय घरेलू हिंसा पर जागरूकता उत्पन्न करना तथा एक का मुख्य विषय प्रतिभागियों को वृद्धवस्था पेंशन योजना के बारे में बताना था।

10 दिसंबर 2014 को कमला नेहरू कैंप एफ-ब्लाक, 17 दिसंबर 2014 को वाधवा कैंप (गली न. 8) तथा 7 जनवरी 2015 को फायर स्टेशन झुग्गी (आंगनवाड़ी केन्द्र) में आयोजित बैठकें घरेलू हिंसा पर केंद्रित थीं। इन बैठकों में कुल मिलाकर 88 स्थानीय लोगों ने भाग लिया।





तीनों ही बैठकों में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर श्रीमती रागिनि एस. राज उपस्थित रहीं। उन्होंने महिलाओं को घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 के बारे में बताते हुए घरेलू हिंसा को रोकने के लिए दिल्ली विधिक सेवा

बताते हुए कहा कि स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए हम सबकी सक्रिय भागीदारी अति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि घर की सफाई, अपने आस-पास के वातावरण की सफाई तथा शौचालय और नालियों को



साफ-सुथरा रखने से हम अनेक बिमारियों से बच सकते हैं। इस दौरान श्री हरीश ने पित्त चार्ट के माध्यम से बताया कि खुले में यदि हम बच्चों को शौच कराते हैं तो उस पर मक्खियां बैठती हैं और वही मक्खियां हमारे घर में खाद्य पदार्थ पर बैठती हैं जिसको खाने से बच्चे बीमार हो जाते हैं। इतना ही नहीं हैजा, पोलियो, पेचिश आदि बिमारियों की जड़ भी गन्दगी ही है। इसलिए हमें अपने आस-पड़ोस को गन्दगीमुक्त करने की शपथ लेनी चाहिए। बैठक के अंत में स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु पैम्फलेट भी वितरित किये गये।

इसी प्रकार की एक बैठक 3 जनवरी 2014 को 10/67, आंगनवाड़ी केन्द्र, कीर्तिनगर में आयोजित की गयी जिसमें कुल 24 महिलाओं ने भाग लिया। बैठक में संदर्भ व्यक्ति के रूप में श्रीमती मीना तथा श्री हरीश, कम्युनिटी मोबिलाइजर उपस्थित थे। बैठक का मुख्य उद्देश्य पानी के प्रबंधन विषय पर केन्द्रित था।

1. दिसंबर 2014 को चूना भट्टी, सी-ब्लाक, कीर्तिनगर में आयोजित बैठक वृद्धा पेंशन योजना पर आधारित थी जिसमें दो पुरुषों सहित कुल 40 लोगों ने भाग लिया। जागरूकता बैठक में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर

श्री करन खोसला, अधिवक्ता, दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण उपस्थित थे। बैठक का मुख्य उद्देश्य वृद्धवस्था पेंशन के बारे में लोगों को जागरूक करना था।



श्री करन खोसला ने उपस्थित लोगों को वृद्धवस्था पेंशन

बैठक में संदर्भ व्यक्ति के रूप में श्रीमती मीना तथा श्री हरीश, कम्युनिटी मोबिलाइजर उपस्थित थे। बैठक का मुख्य उद्देश्य पानी के प्रबंधन विषय पर केन्द्रित था।



बारे में जरूरी जानकारियां देते हुए कहा कि इस पेंशन के पात्र वहीं होंगे जिनकी वार्षिक आय 60,000 रुपये से अधिक न हो, उम्र 60 वर्ष की हो, दिल्ली में निवास हेतु 5 वर्ष का प्रमाणिक दस्तावेज, बैंक में एकल खाता, राशन कार्ड, पहचान पत्र, आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र इत्यादि हों। उपर्युक्त उन्होंने बताया कि इस पेंशन के अंतर्गत 60-69 वर्ष की आयु के प्रतिमाह 1000 रुपये दिये जाते हैं तथा 70 वर्ष के बाद से पेंशन की राशि 1500 रुपये प्रतिमाह हो जाती है। इस हेतु आवेदन करने के लिए नजदीकी न्यायिक विधायक, समाज कल्याण विभाग या जीआरसी में सम्पर्क किया जा सकता है।

बैठक की शुरुआत में संदर्भ व्यक्तियों ने उपस्थित प्रतिभागियों को बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में 80 प्रतिशत रोग गंदगी और जल के अभाव में होते हैं इसलिए हमें शुद्ध और साफ पानी का उचित मात्रा में प्रयोग करना चाहिए। पीने के पानी के रख-रखाव के बारे में जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि इसे हमेशा साफ और सुरक्षित स्रोत से ही भरना चाहिए, पानी के बर्तन को प्रतिदिन साफ करना चाहिए, यदि घड़े का इस्तेमान करते हैं तो उसे जमीन से थोड़ा उपर रखना चाहिए, पानी निकालने के लिए उण्डे वाले मग का इस्तेमान करना चाहिए, यदि पानी का बर्तन प्लास्टिक का है तो वह पारदर्शी होना चाहिए। यदि पानी प्रदूषित है तो उसमें क्लोरिन की गोली मिलाकर या उबाल कर तथा छानकर उसे पीने योग्य बनाना चाहिए।

पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक

गत 20 दिसंबर 2014 को 5/35, शिव मंदिर, कीर्तिनगर में एक पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें इलाके के 30 महिलाओं ने भाग लिया। बैठक में सुश्री इन्दू, हैल्प डेस्क काउंसलर, श्री हरीश और सुश्री दीपा कम्युनिटी मोबिलाइजर संदर्भ व्यक्ति के रूप में उपस्थित थे।



संदर्भ व्यक्तियों ने उपस्थित प्रतिभागियों को स्वच्छता का महत्व

पानी ज्यादा दिन तक बचता है तो उसका उपयोग घर के फर्श या शौचालय साफ करने में किया जाना चाहिए। इतना ही नहीं नालियों का पानी और कूड़ा कभी इकठठा नहीं होने देना चाहिए तथा प्रतिदिन इनकी साफ-सफाई भी करनी चाहिए। यदि कहीं गन्दा पानी जमा हो रहा हो तो वहां पर मिट्टी का तेल या फिनाइल डाल देना चाहिए ताकि मच्छर, मक्खियां तथा अन्य हानिकारक कीटाणु न पैदा हो सकें क्योंकि इनसे हैजा, मलेरिया, डेंगू, मियादी बुखार, हाथी पांव जैसी भयानक बीमारियां पैदा होती हैं। बैठक के अंत सभी प्रतिभागियों को अधिक जानकारी हेतु सफाई से संबंधित पैम्फलेट भी वितरित किये गये।

पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण

दिनांक 27 दिसंबर 2014 को 5/35, बस्ती विकास केन्द्र, कीर्तिनगर में एक पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य 'कमल समूह' को सी-लेवल का प्रशिक्षण प्रदान कर स्वैच्छिक कार्यकर्ता बनने के लिए प्रेरित करना था।

प्रशिक्षण का प्रारंभ पिछले प्रशिक्षण की प्रतिपुष्टि के साथ किया गया और उसके पश्चात 'सेहत के पैगाम' नामक पुस्तिका के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की गयी। सभी प्रतिभागियों को चार अलग-अलग समूहों में बांटकर चर्चा के लिए चार अलग-अलग मुद्दे यथा व्यक्तिगत खान-पान एवं स्वच्छता, पानी प्रबंधन, हाथों की सफाई तथा स्वच्छता दिये गये। सभी समूहों ने पैम्फलेट, बुकलेट तथा वाशकित का उपयोग करते हुए अपने-अपने विषय की प्रस्तुति दी। तदुपरान्त मास्टर एन.जी.ओ, चिल्ड्रेन फंड ऑफ इंडिया से आई मॉनिटरिंग ऑफिसर सुश्री टी. सबा ने प्रतिभागियों को जीआरसी द्वारा मनाये जाने वाले दिवस समारोहों के बारे में बताते हुए उन्हें समाज में स्वैच्छिक कार्यकर्ता बनकर कार्य करने की शपथ दिलाई।



इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 21 लोगों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण में श्री हरिकांत, कार्यक्रम अधिकारी, सुश्री इन्दू, हैल्प डेस्क काउंसलर, श्रीमती मीना तथा श्री हरीश कम्युनिटी मोबिलाइजर संदर्भ व्यक्ति के रूप में उपस्थित थे।

DU Students Visited SSSK, Kirti Nagar

The first year students pursuing M.A Lifelong Learning and Extension in the Department of Adult, Continuing Education and Extension, University of Delhi had a field visit to Stree Shakti Suvidha Kendra run under the aegis of Indian Adult



Education Association at Kirti Nagar on January 19, 2015. They were accompanied by Shri Rahul Yadav, Assistant Professor. After they were introduced to the members of the staff of the Kendra by Smt. Kalpana Kaushik, Assistant Director, IAEA & Chief Functionary of SSSK, the students immediately visited Non-Formal Education Centre at Chuna Bhatti, Near Shiv Mandir, C-Block where they spoke on Right to Information, Importance of Education and Swachh Bharat Abhiyan. Thereafter, they have enacted a street play in the community at two places on the need for environmental cleanliness. The play was titled "Bhagwan Ki Mahanarak Ki Yatra" which was enjoyed by one and all. A pamphlet in Hindi on cleanliness was also distributed to the community members.

Books given to IAEA Library

Dr. Bani Bora who did research in the Department of Adult, Continuing Education and Extension, University of Delhi and also worked as Guest Faculty in the same department has recently published two books titled "Empowerment of Marginalized Women A Study of Gender Resource Centre in Delhi" and "Legal Rights Awareness for Women Trainer's Handbook", the copies of



which were given to Shri K.C.Choudhary, President, IAEA and Chancellor, International Institute of Adult and Lifelong Learning on January 9, 2015 for keeping in the Library of IAEA.

On this occasion Professor S.Y.Shah, Director, International Institute of Adult and Lifelong Education, Dr. V.Mohankumar, Director and Smt. Kalpana Kaushik, Assistant Director, IAEA were also present.



"The greatest sin is to think yourself weak"

- Swami Vivekananda

Nehru and Tagore Literacy Awards Nominations Invited

Indian Adult Education Association invites nominations for Nehru and Tagore Literacy Awards for the outstanding work done for promotion of literacy, adult education, continuing education and lifelong education. A model nomination form is given here and the format can be used by the recommending person/institution.

Nehru Literacy Award instituted in 1968 is given to institutions/individuals in recognition of the services rendered and meritorious work done for the promotion of literacy and adult education in the country.

Tagore Literacy Award instituted in 1987 is given to those institutions/individuals who have given significant contributions for the promotion of literacy, adult and lifelong education, creating awareness and improving the social and economic status of women in the country.

The institutions / individuals nominated for Awards should have at least ten years of outstanding work in the field of literacy, adult education, continuing education and lifelong education and the assessment will be on the new

initiatives taken and also the extent to which the work done can be a model for replication for others.

The awardees will be selected only on merit from the names nominated by NLMA, DAE, NUEPA, NCERT, UGC, Universities, State Literacy Mission Authorities, State Resource Centres, Members of IAEA and other educational institutions of repute.

The last date for receipt of nominations for both the Awards is April 30, 2015.

Nominations may be sent in a sealed envelope directly to Dr. Madan Singh, General Secretary, Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi-110002 with all details about the institution/individual, outstanding work done, awards already received, if any, specific recommendation for nominating the institution/individual. One can nominate more than one institution/individual but each one should be in a separate envelop.

The decision of the Selection Committee will be final.

Nehru and Tagore Literacy Awards Nomination Form

1. Name of the Institution/Individual recommended	
2. Complete postal address with pincode, telephone (office, residence), mobile number	
3. Outstanding work done by the Institution/Individual recommended (pl. give as much details as possible. If needed, a separate sheet can be attached alongwith the nomination).	
4. The name of the person who recommends the institution/individual with designation, serving institution and complete postal address with telephone/mobile number	
5. Specific recommendation clearly indicating the reason for suggesting the name of institution/individual for the award	
6. Any other information the recommending person wish to give	
Date:	Signature:

आदर्श लोक शिक्षा केन्द्र फरसागुड़ा का लोकार्पण



हाल ही में जिला लोक शिक्षा समिति बस्तर द्वारा ग्राम पंचायत फरसागुड़ा में आयोजित एक कार्यक्रम में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के स्कूल शिक्षा मंत्री श्री केदार कश्यप द्वारा आदर्श लोक शिक्षा केन्द्र भानपुरी का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम ग्रामीण विद्युतीकरण कॉर्पोरेशन लिमिटेड, भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण के तत्वावधान में राज्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़ के समन्वय से आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उपाध्यक्ष जिला पंचायत, श्री तरुण चोपड़ा ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में अध्यक्ष जनपद पंचायत श्रीमती

बघेल, नगर पंचायत अध्यक्ष श्री उद्बो नाग, नगर पंचायत उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र समसम भी उपस्थित थे। उद्घाटन समारोह में स्वागत वक्तव्य राज्य संसाधन केन्द्र छत्तीसगढ़ के निदेशक श्री तुहिन देब ने दिया। राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण छत्तीसगढ़ के सहायक संचालक श्री प्रशान्त पाण्डेय द्वारा आदर्श लोक शिक्षा केन्द्र की गतिविधियों के विषय में बताया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा राज्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़ की त्रैमासिक पत्रिका नई इबारत के 19वें अंक का विमोचन भी किया गया। फरसागुड़ा के माध्यमिक पाठशाला के विद्यार्थियों ने इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में दो निःशक्त बच्चे सुश्री सेमकुमा व श्री मोहू को श्री केदार कश्यप के द्वारा सहायक राशि का चेक भी प्रदान किया गया। उद्घाटन समारोह में राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण सहायक संचालक श्री दिनेश टांक, ग्रामीण विद्युतीकरण निगम भारत सरकार के प्रतिनिधि श्री आशीष डे, राज्य संसाधन केन्द्र की वरिष्ठ कार्यक्रम समन्वयक श्रीमती शबाना आज़मी व डॉ. मनीषा वत्स, कार्यक्रम समन्वयकगण, बड़ी संख्या में ग्रामीण जन, विद्यार्थी, पत्रकार बंधु, जन प्रतिनिधि, शिक्षक-शिक्षिकाएं, अनुदेशक, प्रेरक व नवसाक्षर महिला-पुरुष अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन बी.आर.सी. श्री कमलकांत जोशी व आभार जिला परियोजना अधिकारी जिला लोक शिक्षा समिति, श्री अखिलेश मिश्रा द्वारा किया गया।

— तुहिन देब

निदेशक, रा.स.केन्द्र, छत्तीसगढ़



"We Can Do" Say Irla Tribal Women

Irlas are one of the tribes live in the forest areas spread over two states – Tamil Nadu

and Kerala. Jan Shikshan Sansthan, Coimbatore for the last many years organises vocational skill training in collaboration with the forest department to tribal boys and girls of Karamadai, Mettupalayam and Perianaikanpalayam forest ranges of Coimbatore district both in their habitats and also bringing a few to Coimbatore for specialized type of training. The sansthan also helps trained persons to promote sales of items crafted by them with the help of TRIFED.

Six Irla tribal women trained by JSS, Coimbatore - Smt. V. Sulochana (Organizer), Smt. M. Sumathi, Smt. S. Kaliammal, Smt. Uma Maheswari, Ms. N. Radha and Ms. M. Priya have participated in the Tribal Food Festival at New Delhi from January 16-19, 2015 organized by the Ministry of Tribal Affairs, Govt. of India. As it was an all India festival the tribes represented from other states were Bhagata, Koya, Konda Dora of Andhra Pradesh, Nyishi of Arunachal Pradesh, Dhurwa and Bhatiri of Chhattisgarh, Gond of Madhya Pradesh, Kolam of Maharashtra, Thankhul Naga of Manipur, Lotha of

Nagaland, Bheel of Rajasthan, Banjara of Telangana and Bhota of Uttarakhand.

The food Irla tribal women exhibited and sold were Tanga and Spicy Delights from Nilgiris, Bamboo Rice Puttu, Bambo Rice Payasam, Bambo Rice Laddu, Bambo Rice Dosai, Samai Rice Biryani, Samai Sambar Rice, Kuthiraivali Rice, Kuthiraivali, Rice (Barnyard Millet) Curd Rice, Thinai Adhirasam (Millet Jaggery Sweet), Samai Murukku (Millet Snack), Varagu Pakkavada (Millet Snack), Minor Millet Rice Laddu, Kambu Dosai, Kambu Kali-Kazhi, Kambu Roti and Kolukkatai, Aval Mix, Coconut Laddu, etc.

Smt. Sulochana and her team mates are extremely happy as it was their first visit to Delhi, first experience of extreme winter cold, long train journey and away from home without any accompanying person from the family. They were telling that they have never imagined that they will be able to leave their homes alone for such an event for which they have all praise for the Ministry of Tribal Affairs, TRIFED and Jan Shikshan Sansthan. They are now confident and said "We Can Do".

-V. Balasubramanian
Director, JSS, Coimbatore



Announcement

Annual Subscription of Journals Revised

As Indian Journal of Adult Education and 'Proudh Shiksha' are regularly uploaded in IAEA Website: iaea-india.org and is available online for the users, it has been decided to print only limited copies for those who pay the annual subscription for these journals in advance. Keeping in view the increase in printing and postage cost the annual subscription of these two Journals have been revised as under:

Name of the Journal	For others	For Life & Institutional Members
Indian Journal of Adult Education	Rs.500/-	Rs.300/-
Proudh Shiksha	Rs.200/-	Rs.100/-

The Life and Institutional Members will continue to get only IAEA Newsletter free of cost.

The revised annual subscription will come into effect from January 2016 onwards.

"जीवन के नवल वर्ष"

हे जीवन के नवल वर्ष
करते सब तेरा अभिनन्दन
अभिलाषाओं की नव आहट
देती है दस्तक मन प्रांगण

उमंगों के सागर पर मन
मद्धम-मद्धम सा थिरक रहा
नयनों में नवल स्वप्न सजते
कुछ पाने को यह हुलस रहा

जगती का चरखा घूम रहा
जीवन के ताने-बाने में
कर्म कपास कातूँ निश-दिन
कई रंग रंगाऊँ चदरिया में

संघर्षों की राहें बीहड़
पथरीली हैं ऊबड़-खाबड़
कभी पैर जलें सुलगे पथ पर
डूबें ये कभी गहरे जल भर

जो बीत गया, उसे बिसर चलो
जो रीत चुका, मत सोचो अब
इस पल को मुट्ठी में बाँधो
जो कर सकते, वह कर डालो

निज आत्म बोध के चिन्तन से
अज्ञान धूल सब छट जाए
चैतन्य भाव की ज्योति में
नवज्ञान प्रभा तब जग जाए

दुःख क्लेश न कभी किसी को हो
इस भाव का हम सब वरण करें
"सर्वे भवन्तु सुःखिनाः" के
श्लोक को अब चरितार्थ करें

परब्रह्म की रचना सिखा रही
हम पर उपकारी बन जाएं
राग द्वेष और लोभ को तज
मान धर्म निभा जाएं

— कुसुम वीर

National Conference on Gandhian Thought

A two day "National Conference on Trends and Innovations in Gandhian Thought" was organized by Institute of Gandhian Thought Research & Action (IGTRA)



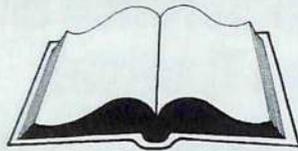
Kerala Gandhi Smarak Nidhi, Thiruvananthapuram in collaboration with the Department of Education, University of Kerala, State Resource Centre, Kerala, Indian Adult Education Association - Kerala State Branch and Council for Teacher Education, Kerala on December 12-13, 2014 in which around 250 delegates participated representing Gandhian organizations, Universities, Colleges, Govt. organizations, NGOs from different parts of India and a few academicians from foreign countries. This was the first major national level conference

organized by IGTRA as part of its mission to reawaken interest in Gandhian thought and ideas among students and teachers and to put them to test through intelligent interface.



The programme was inaugurated by Shri Oommen Chandy, Chief Minister of Kerala. Others spoke on the occasion were Shri P. Gopinathan Nair, Chairman, Prof. N. Radhakrishnan, Working Chairman, Shri K. G. Jagadeesh, Secretary, Prof. Gopalakrishnan, Treasurer, Kerala Gandhi Smarak Nidhi, Dr. V. M. Sasikumar, Council for Teacher Education and Exe. Director, Dr. K.Sivadasan Pillai Foundation, Dr. V. Reghu, Registrar, IGTRA & Vice President, IAEA, New Delhi and Dr. D. Maya, Director, IGTRA.

In all there were 16 sessions covering different aspects of Gandhian thought and education in which 60 resource papers were presented. At the end the delegates suggested that Gandhian thought should be a part of formal and non-formal education programmes in the country.



Falleiro, Savio P. **Economic Impact of HIV/AIDS on Households**. New Delhi, Sage, 2014: 260p.

This book addresses an issue of international, national and local importance—HIV/AIDS—an issue where the predominant attention is on the humanitarian and developmental catastrophe that it is accused of leading to, particularly in the developing world. The book is based on a study conducted in Goa (India). It describes the measures taken by the government, NGOs and donors in combating the scourge of HIV/AIDS.

Herr, Kathryn and Anderson, Gary L. **The Action Research Dissertation: A guide for students and faculty**. New Delhi, Sage, 2014: 216p.

This book provides an accessible roadmap that honors the complexity of action research, while providing an overview of how action research is defined, its traditions and history, and the rationale for using it. The book demonstrates that action research is not only appropriate for a dissertation, but also is a deeply rewarding experience for both the researcher and participants. This practical book demonstrates how action research dissertations are different from more traditional dissertations and prepares students and their committees for the unique dilemmas they may face, such as validity, positionality, design, write-up, ethics, and dissertation defense.

PLAN. **The State of the Girl Child Report - Pathways to Power**. New Delhi, Plan India, 2014.

The objective of the report is to review the existing laws for ensuring protection of girls and women and also to

understand their strengths and limitations. The report aims to understand social and cultural norms to develop programs and policies related recommendations towards creating an enabling and equitable environment for realizing rights of girls and young women.

"Pathways to Power", report is grounded in a conceptual framework of girls' empowerment that is inherently multi-dimensional, and involves changes in the social, political and economic spheres of governance. It is based upon a holistic approach whereby change is only possible through tackling three interconnected dimensions of agency, social relations and structures.

Key Highlights

- The report reveals that access to quality education and technical skills training are the most important instruments of empowerment.

- Primary reasons for discontinuation of education of young girls are: Marriage (39%), Household work (35%), Engagement in livelihood activities (3%).

- 50% women from urban and 15% from rural areas refer that education has helped them to actively take part in household decisions.

- About 32% of young women mentioned experiencing violence.

Singh, Susheela; Darroch, Jacqueline E. and Ashford, Lori S. **Adding It Up 2014: The Costs and Benefits of Investing in Sexual and Reproductive Health**. New York, UNFPA, 2014: 56p.

The 2014 edition of Adding It Up expands the scope of the report and provides new estimates of the needs for and costs and benefits of sexual and reproductive health interventions in the following key areas: contraceptive services; maternal, newborn and other pregnancy-related care; selected services

related to HIV prevention; and treating women for four other common STIs.

UNFPA. **Methodological Guidelines for the Gender Analysis of National Population and Housing Census Data**. UNFPA, 2014: 670p.

Gender analysis needs to access, analyze and reveal the processes of differential social roles, variance in social treatment and outright discrimination that explain the observed results.

The methodological guidance provided in this manual will offer National Statistical Offices and those concerned with gender issues to make increasingly effective use of the data from Population and Housing Censuses.

UNICEF. **The State of the World's Children 2015: Rethink the Future**. New York, UNICEF, 2014.

The State of the World's Children call for brave and fresh thinking to address age-old problems that still affect the most disadvantaged children. In particular, the report calls for innovation—and for the best and brightest solutions—coming from communities to be taken to scale to benefit every child. The Convention itself was an innovation that recognized children as people with rights that must be respected equally to the rights of adults. It has helped drive remarkable progress for millions of children, but far too many are still being left behind. The report highlights how new ways of solving problems—often emerging from local communities and young people themselves—can help us overcome age-old inequities that prevent millions of children from surviving, thriving and making the most of their potential.

This report includes the greatest number of essays—by the greatest number of young people.

-Compiled by Neha Gupta

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,
23378436, 43489048

E-mail: iaeadelhi@gmail.com

Editor: Dr. Madan Singh
Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.2

Re. 1 per copy

February 2015



Indian Adult Education Association

Panel Discussions on New Education Policy and Women Empowerment



The Indian Adult Education Association organized two panel discussions on February 12, 2015 in which around 35 persons participated representing retired bureaucrats, academicians, freelancers and field workers. One discussion was devoted to "Making of New Education Policy" in which Prof. N. K. Ambasht, former Chairman, National Institute of Open Schooling was the panelist and the other one was on "Women Empowerment" in which the panelists were Dr. Pramila Agarwal from George Brown Community College, Toronto, Canada, Dr. Mandakini Pant, Freelance Researcher, Dr. Bani Bora, Senior Research Fellow, International Institute of

Adult and Lifelong Education (IIALE) and Shri B.Sanjay, Research Officer, IAEA.

The first panel discussion started with the welcome address



by Shri K.C.Choudhary, President, IAEA and Chancellor, IIALE. He said that new education policy is needed as the one existing today is of 1986 and in between a lot of changes have taken place in the

field of education. Unfortunately there found to be a grim scene in the primary education sector as many times the students are not able to read or write from the text books of even lower standards than the one they are studying. Eventhough, the schools have got additional physical facilities, the standard of teaching-learning have not improved to that expected level and still the dropout rate is high though free mid-day-meal is provided to children in the schools. Shri Choudhary also said that no detention policy followed upto 8th standard in schools has also brought the educational standard of children to the lowest ebb as they are not found to be learning anything.

Shri Choudhary further said that adult education is always treated as mere literacy with the result that many valuable schemes planned and implemented in India many times fall short of achievements due to too much of importance given to only reading and writing instead of giving equal importance to awareness and functional improvement.

Thereafter, Prof. S.Y. Shah, Director, IIALE introduced Dr. N. K. Ambasht to the audience. He said



that he knew Dr. Ambasht from 1976 when both of them were working as faculty members in NCERT. He is one of the few who have got rich experience in the area of non-formal education due to which he has raised fast in his professional career to head one of the prestigious institutions like National Institute of Open Schooling as Chairman.

Prof. N. K. Ambasht in his address said that a period of almost three decades (1986-2015) is a considerable time span for any policy to deliver the expected outcomes. The need for a new education policy is primarily for the change in the basic human perspectives. Narrating the example of adult education he told that during these 30 years educational tools and technologies have entirely changed and the new gadgets almost reduced the necessity of writing skills to communicate with each other. A person having no or less writing skills can also communicate well with the help of technology like mobile phones. With this improvement our traditional concept of imparting literacy needs a relook. The new concept of e-literacy will almost minimize the actual classroom teaching by adding virtual classroom and cloud classes even in the far and distant places. The e-literacy/e-learning will also help in shortening the learning period as it facilitates the fast learning persons to cross the bar and acquire knowledge with much

more speed and less of time.

The new education policy also should attend to change the concept of learning. The teacher can utmost be a facilitator for learning rather than an embodiment of knowledge who is in the class to transfer the knowledge to students who are like empty vessels. The same way the examination system also needs a lot of change. Testing the knowledge of a student is much more important than testing the memory power on the subjects taught in the classes.

Prof. Ambasht further said that training of teachers should be the most important aspect of new education policy. He was of the opinion that atleast teachers



working in the school system have been trained in teaching (BTC/B.Ed./M.Ed.) but for the teachers appointed in higher education institutions professional qualification in teaching is not compulsory. They should be either Ph.D holders or qualified in NET or SLET. Hence, he desired that the new education policy need to focus on strengthening the academic staff colleges for imparting training to the faculty members of higher educational institutions. The importance of skill training is coming-up in a big way. How to integrate skill training in the educational system (including adult education) is a big question so that the certificates acquired by the students/learners are competitive in the employment market.

Prof. Ambasht opined that

lifelong learning with the help of an open learning system is going to be the order of the day in the years to come in which fiber optic technology will play a decisive role. Hence, it is imperative for the entire faculty to become tech-savvy and work in tandem with the changing technology.

Dr. L. Mishra, former Secretary to Govt. of India and the first Director General of National Literacy Mission while participating in the discussion said that every policy formulation



the national level is an output of collective national consciousness which encompasses the process content and the milieu. As the consultation process for a new education policy has begun efforts should be made to accommodate the opinion of all the stakeholders specifically of the civil society. He also said that new education policy should come-up in congruence with all the previous education policies. It should also be targeted towards establishing functional congruence in between University, Primary Education, University Elementary Education and Adult Education and should find itself in congruence with other national policies in vogue like National Youth Policy, National Health Policy, National Skill Development Policy, Digital India Campaign and Make in India Campaign. Tolerance to dissent should be there for the political dispensation so that frank opinions and views

can get there due space.
In the open discussion Prof. Rajesh from Department of Adult, Continuing Education and Extension, University of Delhi said that choice based credit system of UGC should get proper place in the new education policy.

Shri Prem Chand, former Senior Consultant, Technical Support Group, NLMA said that there is a lot of difference between the Census projected literacy rate and the actual functional literacy rate in the country.

Dr. Ajay Kumar from Jawaharlal Nehru University was of the opinion that any student interested in upgrading the knowledge would like to obtain a post-graduate degree in business administration or its equivalence in a preferred professional discipline for which adequate opportunity should be provided through lifelong learning system.

Smt. Nishat Farooq, former Director of State Resource Centre, Jamia Millia Islamia desired that if knowledge is the base for academic excellence, then the entire examination system should be changed and also persons who are entrusted with the responsibility of examining the students should be trained properly.

Dr. M.V. Lakshmi Reddy from Indira Gandhi National Open University said that keeping adult education outside the purview of education system did not give much effect and hence, it should be brought under the ambit of overall education system with proper structure and human resources in place.

Dr. A. Mathew from National University of Educational Planning and Administration desired to know the follow-up to be taken by IAEA after the consultation

meeting on new education policy. Dr. Mandakini Pant wanted better use of distance learning mode as it can accommodate large constituency of students who could not get admission in regular courses.

Dr. Pramila Agarwal insisted on due recognition to prior learning as many countries in the world have already done the same.

Prof. N.K. Ambasht in his concluding remarks said it is high time that the field of education/adult education adopt the emerging trends of technology for improvement and give due recognition to the knowledge already available with the learners or acquired by them in the course of study rather than testing only their memory power.

Dr. Madan Singh, General Secretary, IAEA in his concluding remarks said that while preparing the new education policy it may be appropriate to review the already existing one to know how much have been implemented



and what is left with reasons for not able to be put into action. This exercise can become the base for formulating the new policy which can be suitable to the existing time.

After lunch break the second panel discussion started with introduction of speakers by Dr.V.Mohankumar, Director, IAEA. The first speaker was Dr. Pramila Agarwal who said that women empowerment discourse has its relevance everywhere. She narrated her experience of



working for the cause of empowerment of minority groups in Canada that mostly included Chinese, African

and Indian immigrants. She said that eventhough, Canada is a developed country having strong legislation for safeguarding the interest of minority communities and particularly women there are certain visible discriminations that these communities are compelled to bear with the same. Women very often draw fewer amounts than their male counterparts for the same kind of job/work. She also gave an example of how Panjabi women who are migrated to Canada and work as daycare attendants receive less remuneration due to their minimum level of exposure beyond their work.

Dr. Mandakini Pant gave a presentation on "The Pedagogy of Women Empowerment" which was based on the research studies conducted by her in the states



of Uttarakhand, Kerala, Telengana and Rajasthan. She said that women as a whole are subjected towards a number of discrimination mainly because they still lack a united voice, organization and no burning desire to change their status. For her working for the cause of women empowerment means empowering them with a suitable training, organizing them to assert their rights and raise their voice against any discrimination.

Dr. Bani Bora's presentation was based on the research conducted as part of her Ph.D. in



the Gender Resource Centres in Delhi. She said that women have benefited a lot in the programmes organized by these centres by way of acquiring new information, skill training for economic betterment and life enrichment through knowledge. However, these centres should be strengthened further so that the beneficiaries are further guided to move vertically in their life by

using the acquired knowledge and skills.

Shri B.Sanjay in his presentation said that women empowerment includes two important aspects – one understanding the empowerment and the other is understanding empowerment from the women’s perspective. According to him empowerment comes only if women have the power to take decisions in the



family and society. Decision making depends on access to information, options which help to make choices and capacity to make a person capable. He concluded his presentation by stating that the action that are needed to empower women should include change of mindset, access to information, bridging the gap by increasing the ability of democratic participation and legal rights.

The session concluded with the vote of thanks by Dr.V.Mohankumar.

IIALE Signed MoU with Julius Maximilian University, Wurzburg for Academic Cooperation

In order to promote academic cooperation between the International Institute of Adult and Lifelong Education (IIALE) and the Julius Maximilian University (JMU), Wurzburg, Germany a Memorandum of Understanding was signed by Professor S.Y. Shah, Director, IIALE and Professor Dr. Eckhard Pache, Vice President for Internationalization, Adult and Continuing Education at the Institute of Education, JMU recently. The academic cooperation agreed upon is initially for three years, i.e. 2015-2018 which may be extended by mutual consent between the two institutions for a further period of three years.

The areas of cooperation are:

- Facilitating the placement of students of University of Wurzburg for field work and gaining practical experience.
- Providing access to the library facilities and other resources of the Institute to students of Wurzburg.
- Organizing training programmes and research methodology courses.
- Conducting joint research projects.
- Organization of national/international workshops/seminars.
- Exchanging documentary publications and teaching materials regularly.
- Briefing of visitors from the other institution.
- Any other forms of co-operation, which the two institutions may jointly arrange, including cooperation with other departments of the University of Wurzburg. This cooperation will be outlined in a separate Memorandum of Understanding.

The MoU was operationalised when six students of the Masters programme in Lifelong Learning from the



Comparative Studies in Adult and Lifelong Learning
Winter School 2015 - Julius-Maximilians-University Würzburg

University of Delhi and three doctoral students from Jawaharlal Nehru University were selected to participate in the International Winter School on Comparative Studies on Adult and Lifelong Learning held at the University of Wurzburg, Germany during January 27th till February 7th, 2015. The selection of students and their orientation was facilitated by the International Institute in cooperation of University of Delhi and JNU. All the expenses connected with the travel, stay and health insurance for ten days workshop in Wurzburg were covered by the DAAD scholarship provided by the German Government.

The Winter School provided an opportunity to the Indian students to meet their counterparts from eleven European universities and attend 15 lectures on various aspects of adult and lifelong learning by eminent international scholars and get a comparative perspective on developments in Asia and Europe.

The winter school was coordinated by Professor Dr. Regina Egetenmeyer of the Institute of Education, JMU who is also a Visiting Professor of the International Institute.

75 Years of Indian Adult Education Association – Some Reflections

An Interview with Shri K. C. Choudhary, President, IAEA

As a part of the Platinum Jubilee celebrations of Indian Adult Education Association (IAEA), a brief history of the Association has been planned mainly based on the study of unpublished and published sources and interviews with some of those members who were closely involved with IAEA over the past several years. The first interview in this connection was held with Shri K.C.Choudhary, current President of IAEA who provided a dynamic leadership for a long period and played a key role in the development of IAEA. Professor S.Y. Shah who is working on the publication conducted the following interview with the President on January 7, 2015 at the office of IAEA, New Delhi.

Prof. Shah: Good afternoon, Sir. Thank you for giving me an opportunity to interview you. As you may be aware, it is very important to interview the members who are closely involved with the activities of the Indian Adult Education Association (IAEA) over a long period because they may be having rich experiences on the working of the organization which may not have been documented and known to many and such information and insights may help us understand the history of the IAEA.

**How did you get to know about the Association?
Which year did you join the Association and who introduced you to IAEA?**

Shri Choudhary: It was in the year 1964 when Shri Nekiram Gupta, the then General Secretary of the Indian Adult Education Association organized a workshop at Indore that I got an opportunity to know about the Association. Smt. Florence Jacob and Shri N.C. Pant who were already Life Members of IAEA introduced me to the activities of the Association. Asha Kala Kendra, a NGO working in Mhow with which I was associated was enrolled as an Institutional Member of IAEA and thus began my long association with the organization.

Subsequently, I attended the Annual Conference of IAEA in 1968 at Pondicherry (now called Puducherry) and I came into contact with Sachdevaji, Dr. S.C. Dutta, Dr. M.S. Mehta and other leading personalities. Subsequently, I attended the Guwahati conference also and since then I have been attending the annual conferences regularly.

Prof. Shah: So last 50 years you have been attending



all the Conferences?

Shri Choudhary: Yes.

Prof. Shah: - What attracted you towards the Association?

Shri Choudhary: My father was a Scout teacher and he was the Headmaster of the local school and also incharge of an Adult Education Centre. I used to go with him to the Adult Education Center with a lantern where he taught the adult learners. This aroused my interest in adult education. Asha Kala Kendra was also conducting five Adult Education Centres and other vocational centres.

Prof. Shah: Did your involvement with IAEA continue uninterruptedly over the last fifty years or there was some break in between?

Shri Choudhary: There was no break during the last fifty years and I still continue my deep interest in the affairs of IAEA with the same zeal and commitment.

Prof. Shah: Please elaborate your interest in IAEA. Did you do something beyond attending the conferences?

Shri Choudhary: Yes, I did not just attend conferences but presented papers and also actively participated in discussions. Since 1976 when I was elected as a Member of the Executive Committee for the first time in the Annual Conference held at Mysore, I became more active in the affairs of IAEA. In 1978, I was elected as an Associate Secretary. I was the convener of 35th All India Adult Education Conference held in Mhow in 1982 and another All India Adult Education Conference held at Bhopal in 1990. I was also the convener of four Regional Conferences organized at Bhopal, Indore, Reva, Mhow and several seminars organized during this period. In 1986 I became the Vice President of the Association and then from 1990

to 2001 I was the General Secretary and again in 2002, I was elected as the President of the Association.

Prof. Shah: Can you recollect some of your specific contributions to IAEA in terms of improving the programmes, administration and strengthening of the Association?

Shri Choudhary: There is nothing personal but it was the team work of President, Executive Committee members and co-workers whose cooperation and hard work could bring a lot of changes in IAEA. We have taken a number of initiative since 1990 when I was in key position. We tried to renovate and expand the infrastructure facilities and computerize office administration for betterment and improve the working conditions at the office. The Library was improved and enriched during our period. We contacted Shri Bhaskar Chatterjee, the then Director General, National Literacy Mission and sought his support for developing the Library. I am happy to tell you that he was instrumental in providing racks, almira's and books and in that way library was expanded and enriched during that period. We established the International Institute of Adult and Lifelong Education and National Chapter of International Reading Association with your inspiration and all these activities could be possible under the valuable guidance and support of Shri B.S. Garg, the then President. Our best of relationship with the government department and officers, particularly with the earlier Director Generals of National Literacy Mission viz; Shi L. Mishra, Shri Sudip Banerjee, Shri Bhaskar Chatterjee, Shri Jagan Mathews and Smt. Vandana Jena helped us a lot to run the Association smoothly. IAEA was entrusted with the responsibility of publishing NLM Newsletter with the support of Dr. V. Mohankumar, the then Director In-charge, Directorate of Adult Education for about four years. The Directorate was always helpful to us and the National Documentation Centre for Population and Adult Education was set up during this period. We could also conduct around 60 evaluation studies assigned by the DAE.

During this period the entire building was renovated and even now the work is in progress. The office building of IAEA is 40 years old and needs a lot of maintenance and changes. Now we have given a new look to the building and added classrooms, committee rooms, guest house and a lot more.

I should admit that the Journals published by IAEA were not very regular during the earlier period. We took special interest to improve the quality of the journals and enhanced the readership. Earlier we

were not getting any postal concession for the journal but during our period, we got it with the result the expenditure on the same is very minimal. For postal concession it is mandatory that the journal is published regularly which we maintain till date. During our period Research Methodology courses were organized to improve the quality of research in adult education and began the Annual Reports of the Association in printing format.

Prof. Shah: I am sure, it may not have been very smooth being the President for a long period. Did you face any challenges or problems and if so, how did you overcome the same?

Shri Choudhary: The main problem has been of finance. We did not have enough money to expand our activities in the earlier period. IAEA did not get enough academic inputs from its members. However, we have been receiving academic inputs from many people like you and the Delhi based universities, specially University of Delhi, JNU and NUEPA. But even then, we feel that our journals need to be qualitatively improved further. There are very few good writers among our members who have the real professional knowledge, skills and competence and could contribute in a significant manner.

Prof. Shah: You mean running a journal was a big problem because of shortage of good quality articles? How did you tackle the issue? Did you take any special steps?

Shri Choudhary: Yes, it was taken and still it is on. We have been asking our friends specially those who are in universities to write research based articles for our journal and we could get good response.

Prof. Shah: Now that Indian Adult Education Association has completed 75 years, what do you think of the future of Association in the next 25 years?

Shri Choudhary: As far as the infrastructure of IAEA is concerned, I think we have done a lot and with the expansion of the facilities in the building, we will have no problem in taking-up new activities in the future. Upto certain extent the Association is now financially self-sufficient. We are neither depending on the government grants nor financial help from outside sources. It is also to tell you that as we publish the journal, we cannot get any foreign contribution. Infact, earlier also we have not accepted any foreign contributions. However, the Asian South Pacific Bureau of Adult Education which is now called Asian South Pacific Bureau of Basic and Adult Education has supported us in some of our activities. Likewise during earlier days, ICAE had also contributed a little towards our programmes. As a

part of our future activities, we plan to take-up skill development programmes, training of trainers programmes, evaluation and research activities.

Prof. Shah: Do you think that as an organization, IAEA has been effective in providing enough scope for its members to contribute to the development of adult education?

Shri Choudhary: Yes, I think so. It is our endeavor to provide enough scope for our members to contribute to the development of adult education in whatever manner they may like.

Prof. Shah: What was your experience in seeking the cooperation of government for the activities of IAEA, especially from National Literacy Mission Authority. Did you get enough support and encouragement from them?

Shri Choudhary: Earlier, our voice was there in the government when our past President Shri K. G. Saiyaidain, who was the Education Secretary to the Govt. of India and Shri Anil Bordia, the then Joint Secretary in the government who was the Editor of Indian Journal of Adult Education. Through them we could convey our views to the government. But with the passage of time, our links with the government became weak. With the launching of the National Literacy Mission, there were political interests and people from different political walks of life came into adult education and I can categorically say that many of them did not understand the real spirit of Adult Education. Even now people at the helm of affairs are politicians who do not understand the concept of Adult Education. We try our best to educate them but miserably failed. You may know Prof. N.G. Ranga, a veteran parliamentarian who served as a member of Lok Sabha for many terms. He was our Life Member. We tried to promote adult education by making him the Chairman of the Forum of Parliamentarians and organized programmes, but in vein as many politicians did not respond to it.

Prof. Shah: Do you think that IAEA has succeeded in achieving the aims and objectives for which it was established?

Shri Choudhary: Definitely. Upto a large extent IAEA has succeeded in achieving the aims and objectives for which it was set-up. As far as the eradication of illiteracy is concerned, IAEA has made some significant contributions by encouraging the state branches to promote and support literacy programmes. But still we have to do a lot. Hence, we are thinking of taking-up new activities and programmes in the areas of vocational education, skill development programmes, activities for senior citizens and women empowerment, etc.

Prof. Shah: To what extent the activities of IAEA have been influenced or guided by different fund giving International agencies like the UNESCO, DVV, ASPBAE, etc? Did their fund influence the programmes of IAEA?

Shri Choudhary: As I said earlier, we have not accepted any foreign contributions. However, DVV has been supporting our activities not financially but academically. They have supported the participation of our members in some of the international conferences. As far as the Government of India is concerned, we have received grant-in-aid for certain programmes, publication of our journals, organization of conferences besides strengthening our library which is named after Shri Amarnath Jha.

Prof. Shah: What were some of the very significant field activities IAEA has undertaken in Delhi or elsewhere?

Shri Choudhary: We had organized 7 to 8 adult education projects in the slum areas of Delhi, especially Trilokpuri which is a big resettlement colony. Now we are running a Gender Resource Centre at Kirti Nagar in North Delhi for the empowerment of women.

Prof. Shah: Did IAEA play a furthering role of government policies or criticized government policies at any point of time?

Shri Choudhary: IAEA always supported the government programmes. In one of our conferences, some of the participants were critical that Kerala literacy programme did not give due importance to post literacy and continuing education. This reached the then Education Secretary to Government of India and DG, NLM who asked us how such an observation was made by IAEA? We clarified that the observations were made by some participants in their personal capacity and it was not the view of IAEA.

Prof. Shah: What has been your experiences of involving universities in the activities of IAEA?

Shri Choudhary: That has been very good as many universities have come forward. Many of the University Departments of Adult, Continuing Education and Extension are Institutional Members of IAEA. Infact, in 1964, IAEA organized the Vice Chancellors' Conference in Bhopal where our then President Dr. M.S.Mehta, who was the Vice Chancellor of Rajasthan University played a key role. About 60 Vice Chancellors attended the conference and they resolved to start Departments of Adult Education in the universities. As a follow-up of the conference, several universities introduced adult education programmes and they have done very good work.

Prof. Shah: What has been the experience of IAEA in

establishing cooperation between national and international agencies for the promotion of Adult Education? Was there any problem?

Shri Choudhary: There was no problem in collaborating with international agencies. We had successfully collaborated with the International Federation of Worker's Education Association. With their support we conducted an International study circle and we studied labour problems. We are a member of International Council of Adult Education (ICAE) and Asian South Pacific Bureau of Basic and Adult Education.

Prof. Shah: What about the national organization?

Shri Choudhary: Yes, We worked with Central Board of Worker's Education, National Institute of Public Cooperation and Child Development, AICMED, Kolkata and similar such organizations.

Prof. Shah: Did IAEA work with the All India Committee for Eradication of Illiteracy?

Shri Choudhary: Yes, we worked closely with the All India Committee for Eradication of Illiteracy for Women. Smt. Phulrenu Guha, Prof. R.N. Talwar and Smt. Gomati Nair were very cooperative and we organized several programmes with them. We continue to be a member of India Literacy Board, Lucknow since its inception. The First Nehru Literacy Award was given to Dr. Wealthy Fisher, who was the founder of Literacy House, Lucknow. Since our President is the member on the India Literacy Board, we actively participate in their programmes and provide guidance to them.

Prof. Shah: During the last 75 years is there any programme or project of IAEA which has influenced others, and which you can say served as a model for other organizations?

Shri Choudhary: One was our Research Methodology course. This has provided a model for many universities to organize similar such programmes.

Prof. Shah: Is there any period in the history of IAEA, when it was very active?

Shri Choudhary: Yes definitely, we were always doing good work. However, during the period 1969 to 1974, we were very active and influenced the government policies and introduced the concept of Total Literacy in Mhow during one of the Regional Conferences. Shri Dutta and Barrister M.G. Mane gave a call for "Literacy for All" which was later on adopted by the government.

Prof. Shah: Did IAEA face any type of crises during the last 75 years?

Shri Choudhary: Yes, crises were always there. The crises were in the form of finance, leadership or some other type.

Prof. Shah: Which was the biggest crisis IAEA faced?

Shri Choudhary: There was a problem about 10 years ago, concerning our General Secretary. He got a case instituted against the Association and defended himself, but half heartedly. Infact he himself admitted that as he wanted to continue as General Secretary for a longer period he initiated a case to get the election stayed. It was purely a personal motive and of course we came out of the problem very soon.

Prof. Shah: Do you think that certain individuals in their personal capacity have greatly influenced the character and functioning of the IAEA?

Shri Choudhary: Yes. Dr. Malcolm S. Adiseshiah, as the President of IAEA influenced a lot the activities of the Association to a great extent. In fact his leadership was an asset. Dr. M.S. Mehta as the President also influenced a lot. Dr. S.C. Dutta who was the General Secretary for 22 years, Treasurer for 3 years and President for one year rendered yeomen service to the organization which is valuable and unforgettable. Prof. B.S. Garg, the then Chancellor of JRN Rajasthan Vidyapeeth (Deemed University), Udaipur has been a guiding factor in the growth of the Association. He was our President and Patron for 17 years. The co-members Shri B.B. Mohanty, Bhai Bhagwan, Shri Sudhir Chatterjee, Shri A.L. Bhargava and many others also have contributed to the growth of the organization.

Prof. Shah: Has the constitution and character of the Association undergone any major change over the years?

Shri Choudhary: Yes. I think for the first time, it was done in 1970 during Bombay Conference. Earlier there was no provision for direct election. The Managing Committee used to go with a list before the General Body and that was accepted and thus the Executive Members were elected unanimously. Then the constitution was changed in 2006 to stipulate the term of the membership of the Executive Committee to the maximum of 10 years only.

Prof. Shah: I have noticed that every year during the annual conference, IAEA brings out a series of recommendations. What has been the follow-up of those recommendations?

Shri Choudhary: We send the recommendations to the government and they are raised in various forums. These recommendations are normally considered by the government. You may know we cannot compel anybody to give serious consideration to the recommendations but only can bring to their notice.

Prof. Shah: IAEA has more than 2000 Life Members. How many members take active interest in the

activities of IAEA?

Shri Choudhary: About 25% of the members take active interest in the activities of IAEA. We have been organizing the annual and regional conferences and it has been found that on an average around 200 to 300 members participate in the same. Moreover some of our members write about their field experiences and send us articles which we publish in our Journals and Newsletter. Additionally our State Branches are active in West Bengal, Rajasthan, Kerala, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh and some other states in which the members participate.

Prof. Shah: How are the policy decisions taken in IAEA?

Shri Choudhary: All the decisions are taken in a democratic manner. All the plans and proposals are placed before the Executive Committee and after through discussion, decisions are taken collectively.

Prof. Shah: Have you planned any strategy to encourage young people to take over the leadership?

Shri Choudhary: We have been following a systematic policy of encouraging young people to join IAEA. In the present Executive Committee we have five young persons. The previous committee also had a few young people as members.

Prof. Shah: Do you think that the present income of IAEA is sufficient to undertake various programmes?

Shri Choudhary: We are not getting enough funds for programmes. We really need a lot of funds to organize more number of programmes.

Prof. Shah: What percentage of income is used for the programmes?

Prof. Choudhary: Earlier we decided not to spend more than 40% of our income towards salary. But in the recent time the expenditure on this account has increased to 50% as we pay the employees the salary almost at par with the government. About 30% of the income is being spent on publications and organization of conferences, seminars and meetings and the remaining 20% is being spent on the improvement and maintenance of the office infrastructure.

Prof. Shah: One of the criticisms is that IAEA is dominated by the same group of people for long and new persons do not get a chance to serve. How do you react to this?

Shri Choudhary: No, the perception is baseless because we organize General Body meeting every year and the election to the Council, Executive Committee and Office Bearers is conducted every three years for which the notification is issued atleast two months before. We advertise the Election schedule and related information well in time to enable the members to participate in the same. Our experience is many times we do not get enough nominations. Normally we try

that the election for different posts is unanimous. If not unanimous, there should be a minimum contest.

Prof. Shah: We are living in a globalized world and IAEA needs to have links with global organizations. What are the initiatives taken in this direction?

Shri Choudhary: IAEA has been encouraging international collaborations and our members have been attending several international events. A number of international experts have been visiting IAEA regularly. We have set-up an International Institute mainly to promote international projects and programmes. Some of the distinguished adult educators viz; the President of ICAE, Director of the UNESCO Institute for Lifelong Learning and the Secretary General of ASPBAE are our regular visitors. We have also established a national chapter of International Reading Association.

Prof. Shah: Do you think IAEA should work more closely with international organizations? Will there be any problem in receiving funds?

Shri Choudhary: Sure, we should work with international organizations; but there will be a problem in receiving foreign funds. This can be overcome by getting FCRA for IAEA.

Prof. Shah: In this year when IAEA has completed 75years, I would like to know your visions for the future. Have you formulated any specific future plans for IAEA?

Shri Choudhary: This is my dream that IAEA should become a centre for learning in which middle level and higher level academics could come. I wish that we should have maximum courses which can attract younger people. IAEA can start a community college and similar other institutions. We can start an exchange programmes for the youth both at national and international level.

Prof. Shah: As an eminent adult educator with over fifty years of experience in the field of adult education, do you like to give some suggestions to those who are entering the field?

Shri K.C. Choudhary: It is unfortunate that youngsters have no attraction towards adult education movement. I wish the younger generation; particularly professionals come to this field of their own to pay back to the community from which they have got a lot. For this we have to create sufficient attraction and such conditions so that they like the field. In our managing committee we have kept room for them which is gradually increasing. In future we may take a decision to reserve atleast 40% positions for them. But we have to device appropriate programmes suitable to their interest.

Prof. Shah: Thank you very much sir for sharing your thoughts.

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्तिनगर, दिल्ली

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के तत्वावधान में कीर्तिनगर, दिल्ली में संचालित स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र द्वारा हाल में संचालित कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नरूप है:

कानूनी जागरूकता शिविर

13 जनवरी 2015 – 5/35, दुर्गा मन्दिर

20 जनवरी 2015 – 5/35, कीर्तिनगर

13 फरवरी 2015 – कमला नेहरू कैम्प

कुल प्रतिभागी – 97

प्रमुख विषय – घरेलू हिंसा से बचाव, कन्या भ्रुण हत्या का विरोध तथा वृद्धावस्था में सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं एवं इस अवस्था में प्राप्त अधिकारों की जानकारी।

संदर्भ व्यक्ति – अधिवक्ता श्रीमती अंजू गर्ग, अधिवक्ता श्री राजीवन मित्तल तथा श्री हरप्रीत सिंह (दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण)।



पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण एवं बैठक

28 जनवरी 2015 – बुद्ध मन्दिर चूना भट्टी

6 फरवरी 2015 – एमसीडी स्कूल, चूना भट्टी

कुल प्रतिभागी – 63

प्रमुख विषय – पानी का प्रबंधन तथा नये समूह का गठन एवं समूह सदस्यों का स्वैच्छिक कार्यकर्ता बनने हेतु प्रेरित किया जाना।

संदर्भ व्यक्ति – श्री हेमंत सिंह, प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर, श्री हरीकांत, कार्यक्रम अधिकारी, श्री हरीश, कम्युनिटी मोबिलाइजर एवं श्रीमती मीना, एस.एच.जी. मोबिलाइजर



स्वास्थ्य शिविर

29 जनवरी 2015 – कमला नेहरू कैम्प

कुल प्रतिभागी – 351

प्रमुख विषय – अखिल भारतीय भाकड भाट जन कल्याण समिति, नेत्र जांच एवं परामर्श

संदर्भ व्यक्ति – डॉ. सुरजीत गुप्ता, महिला रोग विशेषज्ञ, डॉ. वी.के. गुप्ता, सामान्य रोग विशेषज्ञ, डॉ. वी.के. आनन्द, बाल रोग विशेषज्ञ, श्री ललित कुमार झां, फार्मासिस्ट

मुख्य अतिथि – श्री कैलाश चौधरी, अध्यक्ष, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, श्रीमती कल्पना कौशिक, चीफ फंडेशनरी, जीआरसी एवं डॉ. प्रामिला अग्रवाल, जॉर्ज ब्राउन कम्युनिटी कॉलेज, टोरंटो, कनाडा।

कुल रेफर केस – 13



पोषाहार शिविर

9 फरवरी 2015 – फायर स्टेशन झुग्गी

कुल प्रतिभागी – 39

प्रमुख विषय – एनिमिया

संदर्भ व्यक्ति – श्रीमती सुनीता रानी, पोषाहार विशेषज्ञ

व्यंजन प्रस्तुती – गाजर और चुकुन्द की काँजी और अंकुरित चने की चाट

कुल रेफर केस – 5



ओ.पी.डी

13 फरवरी 2015 – 5/35, वस्ती विकास केन्द्र, कीर्तिनगर

कुल प्रतिभागी – 62

संदर्भ व्यक्ति – डॉ. सुरजीत गुप्ता, महिला रोग विशेषज्ञ तथा श्री ललित

कुमार चोपड़ा, फार्मासिस्ट

कुल रेफर केस – 2



B.D.Karve Award for Professor Vandana Chakrabarti

Professor Vandana Chakrabarti, Pro-Vice Chancellor, SMDT University, Mumbai has been selected for B.D.Karve Award instituted by Karve Institute of Social Service, Pune for social work and literacy education. She received the award in a function held at Karve Institute on January 8, 2015 from Dr. Ramesh Awasthi, Trustee of MASUM in the presence of Dr. P.C.Sejwalkar, Chairman and Dr. Deepak Walokar, Director, Karve Institute of Social Service.

Professor Vandana Chakrabarti is the Life Member of Indian Adult Education Association.



Action Research to Know Reasons for Low Literacy at Balrampur District

Recce Conducted

Indian Adult Education Association has been assigned a study by State Resource Centre, Lucknow to find out the reasons for low literacy at Balrampur district and particularly in Panchperwa Block.

In this regard a Recce was conducted at Lucknow and Balrampur from February 3-5, 2015 by a two member team of Indian Adult Education Association which included Shri B.Sanjay, Research Officer and Shri Jai Bhagawan, Assistant to know the actual indicators for the study and to assess the nature and quantum of work done in the field for drawing a comprehensive conclusion.

The team members had interaction with Shri Dinesh Babu Sharma, Director, Basic Education, Smt. Shashi Kiran Tripathi, Joint Director, a Basic Education, Govt. of Uttar Pradesh and Shri Abhinav Sinha,

Senior Professional (MIS & Planning), Sarva Shiksha Abhiyan, UP, Shri G. Pattanaik, IAS (Retd.), Chairman, SRC, Ms.



Singh, Basic Shisha Adhikari, Shri Sanjay Mishra, Chairman, Tarai Environment Awareness Samiti, Balrampur and Shri Udai Bhanu Yadav, Block Education Officer, Panchperwa Block.

Apart from facilitating the visit Dr. S.C.Upadhayaya, Shri Sudhakar Man Singh, Shri Om Prakash Chaurasia and Shri Anoop Krishna Srivastava of SRC provided needed information and data relating to the study.

Ramesh Sharma, Additional Project Director, SSA, UP, Shri Sant Ram Soni, Deputy Director, State Literacy Mission Authority, UP, social activist Shri Rama Shankar Upadhyaya, Shri Jai

Announcement

Annual Subscription of Journals Revised

As Indian Journal of Adult Education and 'Proudh Shiksha' are regularly uploaded in IAEA Website: iaea-india.org and is available online for the users it has been decided to print only limited copies for those who pay the annual subscription for these journals in advance. Keeping in view the increase in printing and postage cost the annual subscription of these two Journals have been revised as under:

Name of the Journal	For others	For Life & Institutional Members
Indian Journal of Adult Education	Rs.500/-	Rs.300/-
Proudh Shiksha	Rs.200/-	Rs.100/-

The Life and Institutional Members will continue to get only IAEA Newsletter free of cost. The revised annual subscription will come into effect from January 2016 onwards.

More Youth in India: UNFPA Report



United Nations Population Fund (UNFPA) has recently released the State of the World's Population Report and according to which India has the world's largest youth

population with 356 million in the age group 10-24 years. Other countries follow are China with 269 million, Indonesia 67 million, United States of America 65 million and Pakistan 59 million. The report also states that the emergence of a large youth population of unprecedented size can have a profound effect on any country. Whether that effect is positive or negative depends largely on how well the governments respond to young people's needs and enable them to engage fully and meaningfully in civic and economic affairs. According to an estimate of Govt. of India nearly 13 million young people enter the labour force every year and at the same time as per Census 113 million people seek work in the job market who most of the time lack skills.

The report also states that India is aging faster than the global average and by 2050 the World will have a larger proportion of youth population than India.

Obituary

Shri Anantha Subba Rao Expired

Shri K.S. Anantha Subba Rao who was born on July 9, 1940 expired on January 22, 2015 at Bengaluru. During his professional career he served in Family Planning Association of India for long. He was a good trainer and an expert in demography and population related issues like sexuality, gender and family planning. He continued to provide consultancy to Family Planning Association till his death.



Shri Rao became a Life Member of IAEA in the year 1990 and was elected as a member of the Executive Committee of IAEA on January 12, 2014 for a period of three years from 2014 to 2016. He attended a number of All India Adult Education Conferences and actively participated both in group and general discussions.

The Indian Adult Education Association conveys heartfelt condolences to the members of the bereaved family and prays for the departed soul to rest in peace.

Announcement

Nehru and Tagore Literacy Awards Nominations Invited

Indian Adult Education Association invites nominations for Nehru and Tagore Literacy Awards for the year 2013 and 2014 from those who have done outstanding work to promote literacy, adult education, continuing education and lifelong education. A model nomination form is given here and the format can be used by the recommending person/institution.

Nehru Literacy Award instituted in 1968 is given to institutions/individuals in recognition of the services rendered and meritorious work done for the promotion of literacy and adult education in the country.

Tagore Literacy Award instituted in 1987 is given to those institutions/individuals who have given significant contributions for the promotion of literacy, adult and lifelong education, creating awareness and improving the social and economic status of women in the country.

The institutions / individuals nominated for Awards should have at least ten years of outstanding work in the field of literacy, adult education, continuing education and lifelong education and the assessment

will be on the new initiatives taken and also the extent to which the work done can be a model for replication for others.

The awardees will be selected only on merit from the names nominated by NLMA, DAE, NUEPA, NCERT, UGC, Universities, State Literacy Mission Authorities, State Resource Centres, Members of IAEA and other educational institutions of repute.

The last date for receipt of nominations for both the Awards is April 30, 2015.

Nominations may be sent in a sealed envelope directly to Dr. Madan Singh, General Secretary, Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi-110 002 with all details about the institutions/individuals, outstanding work done, awards, if any, already received, specific recommendations for nominating the institutions/individuals. One can nominate more than one institution/individual but each one should be in a separate envelop.

The decision of the Selection Committee will be final.

Nehru and Tagore Literacy Awards

Nomination Form

1.	Name of the Institution/Individual recommended	
2.	Complete postal address with pincode, telephone (office, residence), mobile number	
3.	Outstanding work done by the Institution/Individual recommended (pl. give as much details as possible. If needed, a separate sheet can be attached alongwith the nomination).	
4.	The name of the person who recommends the institution/individual with designation, serving institution and complete postal address with telephone/mobile number	
5.	Specific recommendation clearly indicating the reason for suggesting the name of institution/individual for the award	
6.	Any other information the recommending person wish to give	

Date:

Signature

Poverty to Prosperity

Nongmaithem Shilla Devi who is 23 years old was born in village Phanjangkhong, district Thoubal in Manipur. Eldest among the four daughters born to Smt. Nongmaithemongbilbetombi Devi has seen the poverty right from her early age as her father Nongmaithem Shyamjaisingh died when she was only 12 years old. She has seen her mother struggling hard to feed four children with very less income which made her to do something big in her life. The life in the family became much harder not only because of the economic problem but also due to the mental illness of the last sister Puspa Devi. However, for long she could not do as she had neither education nor skill to use. Fortunately, her mother could get two of her younger sisters to get married with a lot of difficulty which compounded the family debt further. To meet the day-to-day expanses of the family Shilla and her mother started collecting sand from the river for sale. Usually this type of work is not done by women or girls in Manipur but they did it as no other option left.

One day one of her relatives living at Yairipok Bazar informed Shilla about Jan Shikshan Sansthan, Thoubal and the vocational courses organized by it. The relative also insisted that Shilla should join the Beautician course conducted at the JSS training centre at Yairipok as it will help her to

earn better income, particularly during marriage season. Shilla immediately has shown a lot of interest in the training but her mother hesitated as Yairipok is 20 kms away from the



village and practically no regular transport facilities available to attend the classes regularly. After some discussion the relative was ready to accommodate Shilla in her house during the period of training which encouraged her further.

Shilla completed her training successfully and started attending to orders initially alongwith the vocational Resource Person who taught her the skill. She assisted the Resource Person and gained confidence to attend the job individually. Today she is a full time Beautician taking job orders and earn on an average around Rs.7000/- to 10,000/- per month. During marriage seasons from October to March her income goes upto Rs.35,000/- to 50,000/-. Shilla is a proud Beautician in her area with a lot of good name. Her mother is proud of her as she is supporting the family with good income. Her only motto now is to open a Beauty Parlour and train girls for the lucrative job.

सतना जेएसएस द्वारा योग्यता संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन

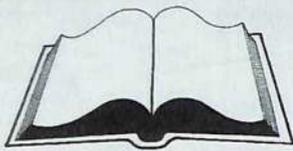
दिनांक 6 फरवरी 2015 को जन शिक्षण संस्थान, सतना द्वारा संस्थान के कार्यक्रम पदाधिकारियों एवं संदर्भ व्यक्तियों के योग्यता संवर्धन हेतु एक दिवसीय योग्यता संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के शुरुआत में संस्थान के निदेशक श्री राज कुमार सनाढ्य ने प्रतिभागियों को इस कार्यक्रम की उपादेयता के बारे में विस्तार से बताया। इसके उपरान्त हुए सत्रों में प्रौढ़ मनोविज्ञान को समझने



की आवश्यकता, परस्पर समन्वय व नेतृत्व के गुणों का विकास तथा डॉक्यूमेंटेशन व रिपोर्टिंग जैसे विषयों पर प्रतिभागियों को गहन जानकारी प्रदान करने की कोशिश की गयी। इन सत्रों में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर राज्य संसाधन केन्द्र भोपाल के संयोजक श्री इम्तियाज खान व समन्वयक श्री सुनील सेन उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम की रूपरेखा डॉ. अजय तिवारी, कार्यक्रम अधिकारी द्वारा तैयार की गई थी जिसमें श्री एन. पी. शर्मा, श्री पी. के. जैन, श्री ज्ञानेन्द्र मिश्रा सहित लगभग 15 चुनिंदा संस्थानों के प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

— आर. के. सनाढ्य
निदेशक, जेएसएस, सतना



Bora, Bani. **Legal Rights Awareness for Women: Trainer's Handbook**. Gaziabad, Mony, 2014: 116p.

This book is to help women come out of the cocoon of self pity with the help of skilled trainers, motivators, community extension workers. This is to ensure that women need not only be aware of all these rights, provisions and protections, but also understand its implications in personal, social and professional life and use it with full confidence. The book also suggests the skills a trainer needs to adopt while interacting with certain aggrieved women, a particular group, and community women.

Cronin, Aidan A.; Mehta, Pradeep K. and Prakash, Anjal (eds.) **Gender Issues in Water and Sanitation Programmes: Lessons from India**. New Delhi, Sage, 2015: 340p.

Exclusion and inequitable access to water, sanitation and hygiene (WASH) services and opportunities are major concerns to development practitioners. The job of providing water for the household invariably falls on women, often at the expense of their education, income-earning opportunities and social, cultural and political involvement. This book provides the key elements of the WASH-gender nexus, examine these and recommend ways ahead for improved gender outcomes and WASH impact in India.

Mohankumar, V. **Adult and Lifelong Learning: Selected Articles**. New Delhi, Indian Adult Education Association, 2014: 244p.

This book includes some selected papers on various areas of adult and lifelong learning/education. These articles are already published in

different issues of Indian Journal of Adult Education. Following papers are included:

1. Foundations of Adult Education by NK Ambasht
2. International Benchmarks and Evolving Perspectives in Indian Adult Education by A Mathew
3. Policy and Programmes of Lifelong Learning in India: A Brief Overview by SY Shah
4. Community Learning and Development: Approaches to Build Capacities of Communities by MC Reddeppa Reddy
5. Promoting Reading Habits and Creating a Literate Society by Asoke Bhattacharya
6. Saakshar Bharat, Belem Declaration and Framework of Action (BFFA) and Literacy Initiative for Empowerment (LIFE) – Commonality and Differences by L Mishra
7. ICT and Economy on the Changing Dimensions of Education and Learning in India – A Double – Edged Sword? By Sayantan Mandal
8. Sustainable Library Strategies for Adult and Lifelong Learning by MV Lakshmi Reddy
9. An Analysis of the Factors Hampering Literacy of Tribal Women in India by Raju Narayana Swamy
10. Training for Adult Education Functionaries in India by V Mohankumar
11. Centrality of Evaluation for Adult Education and Learning by HS Bhola
12. Review and Analysis of Research in Adult Education by Manjeet Paintal and Anuradha Sharma
13. Processes and Products Influencing Extension in Universities by Jai Prakash Dubey
14. Literacy Situation in India and States (2001 and 2011)- A

R.N.I. No. 53577 /1991

Postal Regn. No. DL(C).01/1160/2013-2015

Published on February 26, 2015

Comparative Analysis by Prem Chandra Tilak, Jandhyala B. G. ed. **Higher Education in India: In Search of Equality, Quality and Quantity**. New Delhi, Orient Blackswan, 2014: 538p.

India has a large network of around 634 universities and 33,000 colleges with 817,000 teachers spread across the length and breadth of the country. Despite its massive geographical reach, higher education in India has had its share of problems. This volume is a collection of essays which discusses these problems like inclusiveness and the impact of reservation on education, the problems of mediocrity, shortage of funds, dwindling numbers of faculty and the unemployment of the educated youth, to name a few. It includes diverse perspectives and case studies on a few educational institutes like the University of Mysore and IITs.

United Nations. **World Youth Report 2014: Youth and Migration**. United Nations, Department of Economic and Social Affairs. 2014: 122 p.

This report focuses on the topic of youth and migration. It delivers a synopsis of the basic facts on youth migration and development discussing who is migrating, where they are coming from, where they are going to and why. The Report looks at the entire process involved in migration including the planning and preparations and the drivers behind the decisions that young people make. It examines the impact migration has on young people – those on the move as well as those who have been left behind - their experiences in transit and the lives of migrants in their destination countries and the challenges they face.

-Compiled by Neha Gupta

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,

23378436, 43489048

Editor: Dr. Madan Singh

E-mail: iaeadelhi@gmail.com

Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.3

Re. 1 per copy

March 2015



Indian Adult Education Association

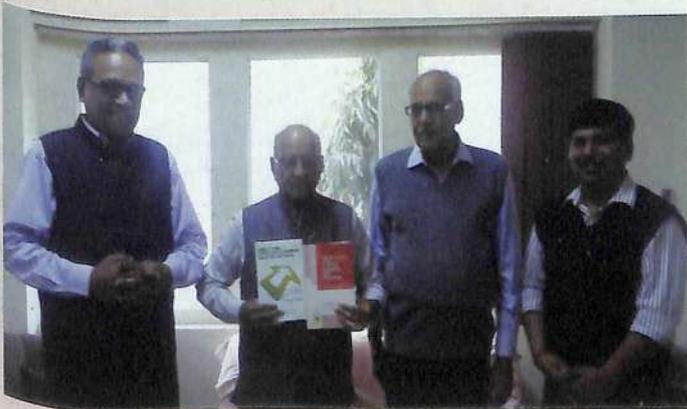
IAEA Executive Committee Meeting held at New Delhi

The Executive Committee meeting of IAEA was held on March 12, 2015 at 11:00 a.m. In the presence of Prof. B.S.Garg, Patron Shri K.C.Choudhary presided over the meeting. The committee apart from confirming the minutes of the previous meeting held on August 29, 2014 approved the report of programmes and activities conducted during the period September 2014 to February 2015, budget for the year 2015-16, Annual Report of the year 2014.

The committee also condoled the death of Life Members Prof. B.B. Mohanty, Shri Rashbehari Acharya and Shri K.S. Anantha Subba Rao.



Recent Publications of IAEA Presented to Patron



Swamy, Shri Prem Chand, Dr. Manjeet Paintal, Dr. Anuradha Sharma, Prof. Jai Prakash Dubey, Dr. Sayantan Mandal and Dr.V.Mohankumar who have got vast experience in the field of adult and lifelong education.

Skilling India: Initiatives and Outcomes contains 8 chapters and they are The Need for Vocational Education: Changing Economic and Labour Market Scenario, Role of Vocational Education in India – an Understanding through Various Commissions and Committees, Vocational Education: a Core Strategic Sector Still Missing Top Priority, Institutional Framework for Vocational Education & Training in India, Role of Vocational Education in Harnessing Outsourcing Opportunities, Jan Shikshan Sansthan: The Institutes of People's Education, NVEQF to NSQF: The Journey and Outcome and Make in India Campaign: Need for Strengthening Skill Development.

Indian Adult Education Association has recently published two books, one edited by Dr.V.Mohankumar is titled "Adult and Lifelong Learning: Selected Articles" and the other authored by Dr.V.Mohankumar and Shri B.Sanjay is with the title "Skilling India: Initiatives and Outcomes".

The Adult and Lifelong Learning: Selected Articles contains 14 papers on various aspects written by eminent persons like Prof. H.S.Bhola, Prof. N.K. Ambasht, Dr. L.Mishra, Prof. S.Y. Shah, Prof. Asoke Bhattacharya, Dr. A. Methew, Prof. M.C.Reddeppa Reddy, Shri M.V.Lakshmi Reddy, Shri Raju Narayana

Copies of both these books were presented to Prof.B.S.Garg, Patron by Shri K.C.Choudhary, President, IAEA on March 11, 2015. On that occasion Dr.V.Mohankumar and Shri B.Sanjay were also present.

Comparative Studies on Adult and LLL in International Winter School

I got an opportunity to participate in ten days International Winter School from January 27 to February 7, 2015 organized by Professorship for Adult and Continuing Education, Institute for Education, University of Würzburg, Germany. It was a successful learning experience on Comparative Studies on Adult and Lifelong Learning. The winter school offered various lectures, presentations, field visits to local institutions of adult and continuing education and range of comparative group work to provide an international insight about the field of Adult and Lifelong learning. The programme was interdisciplinary which gave a pathway to the participants from different countries to construct on theoretical and experiential aspects of Adult education. The methods of teaching were completely dialogical and comprehensive.

As a university student it was interesting to know the strengths, weaknesses, opportunities and challenges in Adult education theories and practice overseas. The programme enhanced my knowledge on comparative international perspective in terms of policies, practices, strategies, level of analysis in Adult and Lifelong Learning. Participating in such a programme enabled me

to upgrade my introspection and knowledge base.

The individual presentation of country reports on the topic 'Academic Professionalization of Adult Education' by the participants of each country generated the understanding that Adult education is beyond its conventional

association with learning of 3R's. In fact,

contextualization of Adult education theory and practice is necessary for building diverse perspective, principles, theories

and approaches. It gave a platform to the participants to document the differences, similarities, challenges and scope for further development in Adult education.

Besides academic learning and experiences there were cultural activities such as guided city tour, Franconia wine tasting and visit to Würzburg Residence as part of Lifelong Learning. Touring Würzburg city was



Mina Toko sitting first in left in the front row

magnificent. It is a beautiful city ornamented with traditional catholic churches, majestic fortress with classic architect, rainbows of vineyards on the bracing hills and rings of golden 'Brezel' (knotted bread). The philosophy served in a sparkling glass, puff of metallic clouds and adorned ageing togetherness virtually makes the city young and radiant as moonlight. But most importantly, when a German says: "You know, It is a umm..German thing" makes the city more German.

Altogether, the International Winter School 2015 has not only broaden the horizons of my social - cultural learning process but also gave me other educational benefits such as self-awareness on the concerned subject in a constructive manner which may add credits to my learning process. Hence, I am honored to be part of such a programme.

-Mina Toko

Research Scholar
Group of Adult Education
School of Social Science, JNU

Books for Sale

Indian Adult Education Association has published two books - *Adult and Lifelong Learning: Selected Articles* (Edited by Dr.V.Mohankumar) and *Skilling India: Initiatives and Outcomes* (Authored by V.Mohankumar and B.Sanjay). Both the books are for sale and price is Rs.300/- per copy. The discount given is 20% and hence, each book cost Rs.240/- only.

Those who desire to purchase these books may place order to Director, Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 alongwith a Demand Draft drawn in favour of Indian Adult Education Association payable at New Delhi (or) through NEFT for which the following can be used:

Indian Adult Education Association

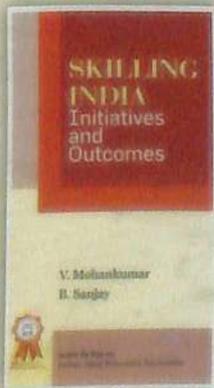
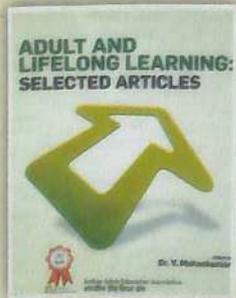
Syndicate Bank

Branch: DTC I.P. Depot, I.P. Estate

A/c No: 91262010001900

IFSC Code: SYNB0009126

(In case of NEFT transfer of amount, please inform through e-mail so that it is verified in the bank)



स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्तिनगर, दिल्ली

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के तत्वावधान में कीर्तिनगर, दिल्ली में संचालित स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र द्वारा हाल में संचालित कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नरूप है:

कानूनी जागरूकता शिविर

13 फरवरी 2015 – कमला नेहरू कैम्प (निकट मजार)

25 फरवरी 2015 – हरिजन कैम्प, कीर्तिनगर

4 मार्च 2015 – 10/67, कीर्तिनगर

कुल प्रतिभागी – 101

प्रमुख विषय— घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 के बारे में लोगों को जागरूक करना तथा सरकार द्वारा वृद्धावस्था में दी जाने वाली सुविधाएं और अधिकार

संदर्भ व्यक्ति— श्री हरप्रीत सिंह, अधिवक्ता, तीस हजारी एवं अधिवक्ता श्रीमती रगिनी एस. राज (दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण)।



पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण एवं बैठक

21 फरवरी 2015 – चूना भट्टी, बुद्ध मन्दिर

26 फरवरी 2015 – चूना भट्टी, बुद्ध मन्दिर

कुल प्रतिभागी – 65

प्रमुख विषय – पानी का रख-रखाव और जन स्वच्छता समूह के कार्यकर्ताओं को स्वैच्छिक कार्यकर्ता बनाने हेतु प्रशिक्षण देना।

संदर्भ व्यक्ति – श्री हेमंत सिंह, प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर, श्री हरीश, श्रीमती मीना एवं सुश्री दीपा, कम्युनिटी मोबिलाइजर एवं श्रीमती मीना, एस.एच.जी. मोबिलाइजर तथा वाश चैंपियन सदस्य सुश्री उषा एवं सुश्री रानी।



व्यावसायिक प्रशिक्षण परीक्षा

24 एवं 25 फरवरी 2015

कुल परीक्षार्थी— 86 (39 सिलाई और कटाई तथा 47

सौंदर्य संवर्धन)

ट्रेड – सिलाई और कटाई एवं सौंदर्य संवर्धन

संदर्भ संस्था—जन शिक्षण संस्थान, पीरागढ़ी।





पोषाहार शिविर

9 मार्च 2015 – फायर स्टेशन झुग्गी

कुल प्रतिभागी – 38

प्रमुख विषय – मेनोपोज

संदर्भ व्यक्ति – श्रीमती सुनीता रानी, पोषाहार विशेषज्ञ

व्यंजन प्रस्तुती – चुकन्दर का रायता और वेज चिड़वा।

ओ.पी.डी

11 मार्च 2015 – जीआरसी, कीर्तिनगर

कुल प्रतिभागी – 12

संदर्भ व्यक्ति – डॉ. सुरजीत गुप्ता, महिला रोग विशेषज्ञ

तथा श्री ललित कुमार चोपड़ा, फार्मासिस्ट।



“मैं, एक बेटी”

माँ के गर्भ में
धीरे – धीरे साँस लेती
रौशनी का एक कतरा
देखने को आतुर
मुँदी आँखों से सपना सहेजती
“मैं, एक बेटी”

शायद!
मेरे अपने ही
मार डालते मुझे गर्भ में
लेकिन,
माँ का विद्रोह,
उसकी हिम्मत से
पैदा हो गई
“मैं, एक बेटी”

माँ की उँगली पकड़
चलना भर सीखी थी मैं, कि
मेरे भाई ने जन्म लिया
पूरा घर हर्षोल्लास से भर गया
गीत, ढोलक की थाप
खुशियों का सैलाब
टुकुर-टुकुर देखती
“मैं, एक बेटी”

घर आँगन बहारना
माँ का हाथ बंटाना
भाई को सम्भालना
यही थी मेरी दिनचर्या
मैं पढ़ना चाहती
पर, कह न पाती

मन मसोसकर रह जाती
“मैं, एक बेटी”

भाई के लिए
पापा लाते खिलौना
घर में पड़ी पुरानी गुदड़ी से
गुड़िया बना, मेरा मन बहलाना
जी करता, मैं भी
भाई की तरह, दौड़कर
पापा के गले से लिपट जाऊँ
लेकिन, सकुचाती,
दरवाजे की ओट में खड़ी
गालों पर ढलके आँसुओं को पोंछती
“मैं, एक बेटी”

वक्त बीत चला
और, न जाने कब
मेरी अपनी ही कुर्ती
मेरे बदन पर तंग पड़ने लगी
माँ ने मुझे देखा
चिंता की रेखाएँ उभर आईं
उसके माथे पर
झट से, उसने ओढ़नी ओढ़ा दी
मेरे काँधे पर
तब से लेकर, आजतक,
लोगों की चुभती निगाहों से
खुद को बचाने की कोशिश करती
“मैं, एक बेटी”

—कृसुम वी

Nehru and Tagore Literacy Awards

Nominations Invited

Indian Adult Education Association invites nominations for Nehru and Tagore Literacy Awards for the year 2013 and 2014 from those who have done outstanding work to promote literacy, adult education, continuing education and lifelong education. Model nomination form published in previous Newsletters can be used by the recommending person/institution.

Nehru Literacy Award instituted in 1968 is given to institutions/individuals in recognition of the services rendered and meritorious work done for the promotion of literacy and adult education in the country.

Tagore Literacy Award instituted in 1987 is given to those institutions/individuals who have

given significant contributions for the promotion of literacy, adult and lifelong education, creating awareness and improving the social and economic status of women in the country.

The institutions / individuals nominated for Awards should have at least ten years of outstanding work in the field of literacy, adult education, continuing education and lifelong education and the assessment will be on the new initiatives taken and also the extent to which the work done can be a model for replication for others.

The awardees will be selected only on merit from the names nominated by NLMA, DAE, NUEPA, NCERT, UGC, Universities, State Literacy Mission Authorities, State Resource Centres, Members of

IAEA and other educational institutions of repute.

The last date for receipt of nominations for both the Awards is April 30, 2015.

Nominations may be sent in a sealed envelope directly to Dr. Madan Singh, General Secretary, Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi-110 002 with all details about the institutions/individuals, outstanding work done, awards, if any, already received, specific recommendations for nominating the institutions/individuals. One can nominate more than one institution/individual but each one should be in a separate envelop.

The decision of the Selection Committee will be final.

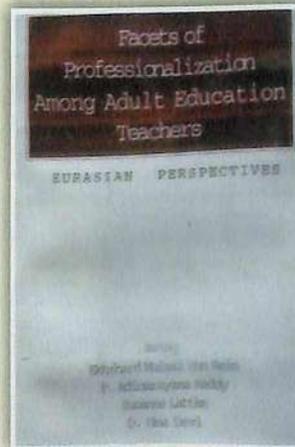
Visitor



Mr. Steve Ciric, Chair, Schools of Health and Wellness and Health Services Management, Centre for Health Sciences, Waterfront Campus, George Brown College, Toronto, Canada visited IAEA and discussed with Prof. S.Y.Shah, Director, International Institute of Adult and Lifelong Education regarding collaborative programmes.

On this occasion Dr.V.Mohankumar, Smt. Kalpana Kaushik and Dr.Bani Bora were also present.

New Book on Adult Education



A new book "Facets of Professionalization among Adult Education Teachers - Eurasian Perspective" with 14 articles written by eminent persons has been recently published by Sarup Book Publishers, Pvt. Ltd., New Delhi. This book is edited by Ekkehard Nuissl Von Rein, P. Adinarayana Reddy, Susanne Latke and D. Uma Devi.

The cost of book is Rs.1400/- per copy.

National Seminar at Aggarwal College, Ballabgarh



The Internal Quality Assurance Cell (IQAC) of Aggarwal College, Ballabgarh, Haryana organized a two day National Seminar on Teaching, Learning and Evaluation on March 13-14, 2015. Around 100 persons attended the seminar which included teachers, students and invited guests. The inaugural session on March 13th was chaired by Shri Devender Kumar Gupta, President, Aggarwal College in which the Chief Guest was Lt. Gen. (Retd) K.S. Yadava, Vice Chancellor, YMCA University of Science and Technology, Faridabad.



Keynote address was delivered by Professor Dorairaj Victor, former Director of Collegiate Education, Government of Tamil Nadu.

There were seven technical sessions in which subject specialists gave Invited Talk by presenting papers on wide range of topics which included Teaching beyond Learning and Evaluation, Role of Research in Teaching and Learning, Sustenance of Quality in Employability, Reinventing Teaching and Learning in Indian Education System, Maximizing Research, Publications and Teaching Impact for Achieving Excellence, Theory of Cultural Reproduction and Pedagogical Practices in India, Recognition, Accreditation, Validation and

Evaluation of Prior Learning, Professional Development of Teachers in Higher Education, Quest for Quality in Education and Teaching, Learning and Evaluation.

Apart from Invited Talk, a large number of presentations were made by faculty members from different universities, colleges, institutions on the related topics chosen for the seminar which included Motivation of Students through Cooperative Learning, Animation: an e-Learning, Inclusive Teaching Practices, Intranet: an Innovative Approach for Teaching, Accountability of Teachers, Cyber Crime and Law, Ragging – a Contemporary Issue, English Language Teaching in Higher Education, Quality Management and Libraries, Information Literacy Skills for Learned Society, Evaluation Practices and Pedagogy, etc.

Dr.V.Mohankumar, Director, IAEA not only presented a paper on **Sustenance of Quality in Employability in Technical Session – V** in the forenoon of March 14, 2014 but also chaired Technical Session – VII in the afternoon.



The concluding session was chaired by Adv. Vijay Gupta, General Secretary, Aggarwal College and valedictory address was given by Dr. (Smt.) Pankaj Mittal, Joint Secretary, UGC.

The seminar became success because of



meticulous planning done by Dr. Krishan Kant, Principal and Dr. Manoj Shukla, Associate Professor & Coordinator, Internal Quality Assurance Cell, Aggarwal College and deep interest with which the participants deliberated on the taken subject.

IAEA NEWSLETTER Form IV

1. Place of Publication	Indian Adult Education Association 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi – 110 002
2. Periodicity of Publication	Monthly
3. Printer's name Nationality Address	Dr. Madan Singh Indian 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi – 110 002
4. Publisher's name Nationality Address	Dr. Madan Singh Indian 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi – 110 002
5. Editor's name Nationality Address	Dr. Madan Singh Indian 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi – 110 002
6. Name and address of individuals who own the newspaper and partners or shareholders, holding more than one percent of the total capital	Indian Adult Education Association 17-B, Indraprastha Estate New Delhi – 110 002
I, Dr. Madan Singh, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.	
Dated: 26-3-2015	
Sd/ Dr. Madan Singh Publisher	

Yamaha signs MoU with Gandhigram Rural Institute – Deemed University



Yamaha is establishing training schools with world class workshops to provide in-plant training for rural youth. To establish one such training school in Gandhigram a MoU was signed on March 18, 2015 between the Yamaha Motor India Sales (YMIS) Private Limited and Gandhigram Rural Institute - Deemed University (GRI). The MoU was signed by Shri Ravinder Singh, Vice President, YMIS and Dr. P. Balasubramaniam, Registrar, GRI in the presence of Dr. S. Natarajan, Vice Chancellor, GRI.

On this occasion Prof. N. Narayanasamy, Dean, Faculty of Rural Development, Senior Executives of Yamaha, Deans of Faculties and Heads of Departments in GRI, students and Research Scholars were also present.

Dr.L.Raja, Professor and Head, Department of Lifelong Learning and Extension formally welcomed all those present and Dr. R. Venkata Ravi, Associate Professor of the Department of Lifelong Learning and Extension gave vote of thanks.

Annual Subscription of Journals Revised

As Indian Journal of Adult Education and Proudh Shiksha are regularly uploaded in IAEA Website: iaea-india.org and is available online for the users it has been decided to print only limited copies for those who pay the annual subscription for these journals in advance. Keeping in view the increase in printing and postage cost the annual subscription of these two Journals have been revised as under:

Name of the Journal	For Life & Institutional Members	For others
Indian Journal of Adult Education	Rs.300/-	Rs.500/-
Proudh Shiksha	Rs. 100/-	Rs.200/-

The Life and Institutional Members will continue to get only IAEA Newsletter free of cost. The revised annual subscription will come into effect from January 2016 onwards.

Seminar on LLL on Emerging Educational Scenario of Kerala

As part of Platinum Jubilee celebration of Indian Adult Education Association, the Kerala State Branch of IAEA organized a seminar on **Lifelong Learning on Emerging Educational Scenario of Kerala** on February 7, 2015 in collaboration with Palakkad District Bhoomi Charitable Trust at Sikshak Sadan, Palakkad.

While inaugurating the seminar Shri P.V. Rajesh, Chairman, Palakkad Municipality said that eventhough most of the farmers in India are either non-literate or less literate but they are considered to be one of the valuable resources of the country as they have abundant knowledge on agriculture and agriculture related issues due to which they are able to produce more food grains by applying the latest technology in the fields. However, they need a lot of support both from the government and non-government organizations so that their livelihood improves and they become an integral part of inclusive growth.

Dr. V. Reghu, Chairman, IAEA Kerala State Branch in his presidential address said lifelong learning is an in-



separable part of human life as human beings learn right from birth to death. Learning takes place in different forms which included formal, non-formal and informal. Learning as an art has four pillars and they are "Learning to know, Learning to do, Learning to live and Learning to be". Lifelong learning as a subject of specialization is coming up fast in India which is a good sign.

Shri Harish, Secretary, IAEA Kerala State Branch welcomed the participants and requested them to become Life Members of IAEA.

Seminar on Summer Health Care



State Resource Centre, Kerala organized a seminar on Summer Health Care in Ayurveda in collaboration with IAEA Kerala State Branch and Dr. K. Sivadasan Pillai Foundation on February 28, 2015 at the Conference Hall of SRC in which around 50 persons participated. Dr. Padma, RMO/Senior Medical Officer, Pankaja Kasthuri Ayurveda Medical College, Thiruvananthapuram spoke on summer heat and how it affects the human body. She told that modern day food habits are bad and they increase toxic contents in the human body, particularly more in summer months due to which many become sick. She gave a lot of information about nutritive food which is important for maintaining good health by human beings. She also spoke on the need for taking

immediate remedial measures to fight against diseases during different seasons. After the lecture was over many participants raised questions and points for clarification for which Dr. Padma patiently replied.

The seminar was presided over by Dr. Muraleedharan Thampi, former Professor & Head, Extension, Kerala Agricultural University while Dr. V.



Reghu, Chairman, IAEA Kerala State Branch moderated the session. At the end Dr. Vijaya Kumari, Secretary, SAMAGRA Holistic Health Promotion Council proposed vote of thanks.

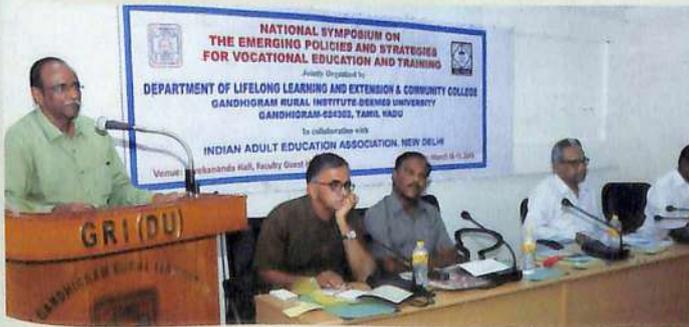
मानवता की शांति एवं समृद्धि के लिए आवश्यक है भारतीय संस्कृति - प्रो. गर्ग



दिनांक 11 मार्च 2015 को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित हुई जिसे संघ के संरक्षक प्रोफेसर भवानी शंकर गर्ग ने संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व मात्र भारत के विकास के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता की शांति, समृद्धि एवं सौहार्दपूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है। महात्मा गांधी जैसे विचारकों ने इस तथ्य को न केवल समझा बल्कि देश और दुनिया के कल्याण के लिए स्वयं के जीवन में उसे आत्मसात् किया और उसके उत्तरोत्तर प्रसार के लिए स्वाधीनता पूर्व काल के मूर्खन्य विद्वानों एवं समाजसेवियों को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ जैसे संस्थानों की स्थापना के लिए प्रेरित किया। प्रो. गर्ग ने कहा कि संघ से जुड़े वर्तमान पीढ़ी को इस संस्थान की स्थापना के पृष्ठभूमि में छिपे इस निहितार्थ को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। तभी हम प्रोफेशनलिज्म और सेवावृत्ति में संतुलन बनाये रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में ऐसे उदाहरणों की कोई कमी नहीं है जहां विशाल स्थावर संपत्ति के रहते हुए संस्थान योग्य कार्यकर्ताओं एवं कार्यक्रम के अभाव में सामाजिक जीवन में कोई सार्थक योगदान नहीं दे पा रहे हैं। प्रो. गर्ग ने संघ द्वारा संपादित वर्तमान गतिविधियों के प्रति बेहद संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा नेतृत्व और कार्यकर्ता दोनों का ही कार्य प्रशंसनीय है। चुनौती इसके निरंतरता को बनाये रखने की है।



Symposium on Vocational Education and Training



Community College, Department of Lifelong Learning and Extension, Gandhigram Rural Institute – Deemed University in collaboration with Indian Adult Education Association, New Delhi organized a two day national level symposium at Gandhigram on March 16-17, 2015 with the theme **Emerging Policies and Strategies for Vocational Education and Training**. Around 45 heads of various skill training institutions from southern states attended the programme.

Dr.S. Natarajan, Vice Chancellor, Gandhigram Rural Institute – Deemed University in his inaugural address emphasized the need for development on the service sector, soft skills, computer literacy with multiple skills. He said that obtaining Generic skills that cut across a number of occupations would allow youths to move from one field to another and the modular competency based vocational courses would bridge skills gaps between the Industry and training centers.

Dr.K.Parthasarathy, Dean, School of Social Science, Bharathidasan University, Thiruchirapalli in his keynote address emphasized the importance of skill oriented courses in the higher education institutions and the need for involving institutions like NCVT, NVEQF and NSDC, Industry and likeminded agencies to train more youths through all possible ways. He has also presented in detail the Skill Development Models developed and implemented by Institute for Entrepreneurship and Career Development (IECD), Bharathidasan University.

Dr.N.Narayanasamy, Dean, Faculty of Rural Development, Gandhigram Rural Institute – Deemed University in his presidential address underlined the possibilities of skill training for youths by different agencies and institutions and recounted the role played by Gandhigram university in the field of vocational education since its inception.

Dr.V.Mohankumar, Director, Indian Adult Education Association, New Delhi in his address envisaged the need for skilled persons for increased productivity and economic growth. He said that India has a large number of youth population and to make them productive they must be given quality skill training so that they

contribute to the development of the country.

Professor L. Raja, Principal, Community College and Head of the Department of Lifelong Learning and Extension welcomed the gathering and Dr. R. Venkata Ravi, Coordinator of Community College and Associate Professor of the Department of Lifelong Learning and Extension proposed vote of thanks.

In the academic sessions 11 thematic papers were presented and each presentation was followed by discussion.

Dr. V.Mohankumar presented a thematic paper on **Understanding National Skill Qualification Framework** and also chaired a session to finalize strategies for vocational education and training.

होशंगाबाद जेएसएस द्वारा महिला संगोष्ठी का आयोजन



जन शिक्षण संस्थान, होशंगाबाद द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर 8 मार्च 2015 को एक महिला संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें महिलाओं में व्यापक असाक्षरता के उन्मूलन तथा उनके सशक्तीकरण पर विचार विमर्श किया गया और साथ ही संस्थान के कई सफल लाभार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किये गये। कार्यक्रम में स्थानीय महिलाओं को साक्षर बनाने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान के लिए श्रीमती प्रेमलता ठाकुर तथा श्रीमती मीना माहुले का विशेष सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक श्री एस.ए.हुसैन तथा कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती श्वेता चौबे ने प्रतिभागियों को संबोधित भी किया।

मुज्जफरपुर जेएसएस द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन

जन शिक्षण संस्थान मुज्जफरपुर ने दिनांक 21 फरवरी 2015 को संस्थान के परिसर में ही एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें संस्थान द्वारा संचालित विविध प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लाभार्थियों द्वारा बनाई गयी सामाग्रियां रखी गयी थीं। इस अवसर पर संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले लगभग 1000 लाभार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किये गये। कार्यक्रम का उद्घाटन स्थानीय सांसद श्री अजय कुमार निशाद द्वारा किया गया जिसमें मुख्य अतिथि महिला सामाख्या, मुज्जफरपुर के निदेशक श्रीमती पूनम सिंह थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष मो. तौहीद खान द्वारा की गयी तथा संचालन निदेशक डॉ. श्याम यादव ने किया। इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी संघ के अध्यक्ष श्री राम संजीवन ठाकुर भी उपस्थित रहे।



Mother Language Day Observed by Chhattisgarh SRC



The International Mother Language Day is celebrated worldwide on February 21 and the theme for 2015 was Inclusion in and through education: Language counts to focus on one of the main challenges that cuts across many of the goals, i.e. Inclusion (equity/quality).

The State Resource Centre, Raipur observed this day in which Shri Pradeep Bhatnagar, Deputy Secretary, School Education, Government of Chhattisgarh was the Chief Guest. In his address Shri Bhatnagar said that each one is proud of his/her mother language as it facilitates the communication to the best of understanding. He appreciated SRC for developing primers in six native dialects to accelerate the pace of learning literacy in the best of understanding.

Professor C.M.Mukherjee, former Professor of English, Pandit Ravishankar Shukla University, Raipur who presided over said that language is the expression of one's growing thought. If one does not develop communication ability the language cannot grow.

Shri Rajeev Ranjan Shrivastav, Chairman, State Resource Centre in his address said that the first sound of the mother happens to be the mother-tongue or first language to the child which develops an emotional bondage with the mother and stays forever.

Shri Tuhin Deb, Director, State Resource Centre in his keynote address traced the history of language struggle happened in Bengal (now Bangladesh) in which students have lost their life. This day is observed to reinforce the importance of mother language in the life of human beings and cherish its richness.

Shri Prashant Pandey, Assistant Director, State Literacy Mission Authority who spoke on the occasion said that language is a medium of expression and mother happens to be one's nursery.

Shri Dinesh Taunk, Assistant Director, State Literacy Mission Authority and Ms. Shibani Moitra recited poems highlighting the greatness of mother language.

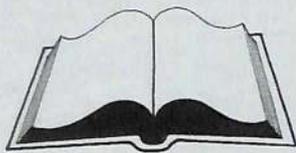
Capacity Building Training to Resource Persons



A two day Capacity Building Training programme was organized on February 12-13, 2015 at the Skill Development Centre, Alagappa University, Karaikudi, Tamil Nadu for 18 Resource Persons of Jan Shikshan Sansthan, Kundrakudi on Operation and Maintenance of Industrial Sewing Machine. The training was given by Ms. A. Bhuvanewari and Smt. Mallika, Faculty members.

The programme was inaugurated on the first day by Dr. B. Dharmalingam, Director, Skill Development Centre while Shri M.Thiyagarajan, Director, JSS presided. On the second day at the end of the programme Professor V. Manickavasagam, Registrar, Alagappa University delivered the valedictory address and distributed certificates to the trainees. Prof.S.Kaliyamoorthy, Convenor, Vice-Chancellor's Officiating Committee presided over.

- Dr.K.Balakrishnan, Chairman, Kunrakudi JSS and Dr. N. Rajkumar, Joint Director, Directorate of Distance Education and Member, Board of Management of JSS felicitated the participants.



Bora, Bani. **Empowerment of marginalized women: A study of Gender Resource Centres in Delhi.** Gaziabad, Mony, 2014: 120p.

The book has focused on the need for empowerment of marginalized women and also substantiated it with a study of Delhi state. The study analyses the impact of collaborative intervention of government and non-governmental organizations towards empowering marginalized women of urban slums of Delhi.

Delhi Commission for Protection of Child Rights (DCPCR). **Status of an adolescent girl in the urban slums of Delhi: A Report.** Delhi, Govt. of NCT of Delhi, 2014: 126p.

The study is the outcome of a detailed analysis of the inputs obtained about the status of adolescent girls in the slums of NCT of Delhi. This study deals with the identification of the survival, development, participation and protection issues from the perspective of the rights of an adolescent girl in the NCT of Delhi and that the suggestions and recommendations.

Mathur, Arun. **HIV Infected and Affected Children in Delhi: A Status Report.** New Delhi, Delhi Commission for Protection of Child Rights. 2014: 46p.

The objective of this study is to understand the status of HIV infected and affected children in the Capital city of Delhi which has been categorised as a "highly vulnerable but low prevalence" city. It also looks at the global and

national context, the various interventions and initiatives at different levels and the schemes and programmes which can be accessed by these children in difficult circumstances.

This status report on HIV and children shows the desk review of the available material on HIV as well as children's rights in the context of their positive status. This included policy documents, various guidelines laid down by the Government of India, reports related to children and their rights and laws, and reports of various donor agencies. Reports by experts in this field as well as of NGOs working in different parts of the country were studied to understand the programmes, schemes and initiatives and their impact on the children infected and affected by HIV. Media reports related to HIV and children were scanned to understand the debate and discussion on the issue within the media.

Mohankumar, V. and Sanjay B. eds. **Skilling India: Initiatives and outcomes.** New Delhi, Indian Adult Education Association, 2014: 201p.

This book deals with skill training, policies, programmes, institutions and performance. As part of standardization of vocational skill development training programmes, the Government of India has introduced National Skill Qualification Framework in December 2013 which has directed the institutions to provide training as per the prescribed

standard norms for various positions. This arrangement will help India to have not only trained but also skilled manpower particularly for 'Make in India' campaign.

Rein, Ekkehard and others eds. **Facets of Professionalization among Adult Education Teachers: Eurasian Perspectives.** New Delhi, Sarup Book, 2015: 286p.

The compendium of the paper is presentations in the network meetings organized at Eurasian countries. The articles being published here reflect the discussion on professionalization in adult education. Many of the articles show the further need of more research and developments.

Social Statistics Division. **Millennium Development Goals India Country Report 2015.** New Delhi, Ministry of Statistics and Programme Implementation; 2015: 260p.

This report contains updated information about the progress achieved so far in respect of the eight Goals disaggregated into 12 targets and the 35 indicators relevant for India. Despite the resilience shown by the Indian economy in the face of global economic crises, its impact on the development process have resulted in less than desirable progress in some economic and social areas. There are impressive achievements in several sections but all the MDGs are unlikely to be met. The details of these are elaborated in the relevant chapters of this report.

-Compiled by Neha Gupta

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,
23378436, 43489048

E-mail: iaedelhi@gmail.com

Editor: Dr. Madan Singh
Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.4

Re. 1 per copy

April 2015



Indian Adult Education Association

Visiting Scholar Awards to Doctoral Students in Adult Education

International Institute of Adult and Lifelong Education, New Delhi established by the Indian Adult Education Association in 2002 (www.iiale.org) has been striving to promote adult education as a field of practice and discipline of study through a variety of innovative programmes, researches, publications and collaborations with national and international universities. Promotion of research being an important mandate of the Institute, it is proposed to encourage young scholars to undertake quality researches and publications through a specially designed programme of Visiting Scholar Award.

The main purpose of the Award will be to provide an opportunity to the doctoral students to consult and collect data from the vast collection of adult education publications- books, documents, theses, research and evaluation studies and journals available at the Amaranth Jha Library of the Association and also benefit from the presentation and discussion of their individual research topics with the faculty of the Institute.

A maximum of fifteen awards will be offered during the year 2015. These awards will be open to all the bonafide doctoral students of Indian universities. The selection will be made by an expert committee

constituted by the Chancellor of the Institute - Dr. K.C. Choudhary.

The selected scholars will be provided a lumpsum amount of Rs.10,000/- (rupees ten thousand only) to cover travel and other sundry expenses besides free accommodation on sharing basis for seven days at the IAEA Guest House. Daily breakfast and working lunch and coffee /tea will also be provided to the scholars. Delhi based candidates will be paid Rs.2500/- (rupees two thousand five hundred only) @ Rs. 500/- per day for five days to cover local travel.

Interested candidates may send e-mail giving the following information to: drsyshah@gmail.com (Professor S. Y. Shah, Director, International Institute of Adult and Lifelong Education, IAEA Building, 17-B, I.P. Estate, New Delhi -110 002) not later than **June 30, 2015**.

1. Name & address of the applicant
2. Date of Ph.D. registration
3. Topic of thesis
4. e-mail & Mobile number along with the scanned copies of
 - Brief CV (not more than a page)
 - Letter of recommendation from the Supervisor and
 - One page abstract of the research topic focusing on the objectives and methodology of study.

Selected scholars will be intimated

by July 15, 2015. The programme will be held in the Conference Hall of the Institute during September 14-19, 2015.

No interim queries will be entertained in this connection.

Last date Extended for Nominations

The last date for receipt of nominations for Nehru and Tagore Literacy Awards has been extended upto June 1, 2015.



A great man is different from an eminent one in that he is ready to be the servant of the society.

Dr. B. R. Ambedkar

Face to Face: An Interview with Professor K. Parthasarathy



Dr. K. Parthasarathy is the senior most Professor in Bharathidasan University, Tiruchirappalli, Tamil Nadu. He is Professor in the Department of Lifelong Learning, Chair in School of Education and Dean, Faculty of Arts. He is also the Founder Director of the Institute for Entrepreneurship and Career Development (IECD) of the University. He is not only a practicing adult educationist but also possess the Master's Degree and Ph.D., in Adult Education from the University of Madras, Chennai. During his three decades of professional career as a faculty in the University and Coordinator, State Resource Centre, Chennai, he has produced 8 M.Phils and 17 Ph.Ds. His research papers over 60 have been published both in reputed national and international journals and also he has authored and edited 68 books, monographs and research reports. He had an academic visit to Indonesia, Malaysia, Philippines, Singapore, Sri Lanka, Thailand and United Kingdom. His efforts to organize vocational skill development training programmes to the students and non-student youths are appreciated by one and all.

As skill development is one of the important topics of discussion in India, particularly in the context of Make in India Campaign, Dr.K.Parthasarathy was interviewed by Dr.V.Mohankumar, Director, Indian Adult Education Association and the following is the excerpts:

 Good morning Prof. Parthasarathy. It is nice to meet you in your university which I am visiting after a long time. Of course, I find a lot of development both in the infrastructure and the popularity of the programmes organized by your IECD, Bharathidasan University.

 Good morning Mohankumar Sir. It is true that over the years a lot of development has taken place with the excellent support extended by the authorities of the University and now our IECD are well known in Tamil Nadu and elsewhere.

 Professor, my visit this time is to know about your views on vocational skill development and how your university could establish the Institute for Entrepreneurship and Career Development (IECD) so that the successful venture you have done is known to many.

 Yes, I am happy to share as much information as possible. Actually it was a long and interesting story Sir, but I put it in a nutshell. I was appointed by Bharathidasan University as Director (full additional charge) of the proposed Institute for Entrepreneurship and Career Development (IECD) on July 8, 2004 and was given freedom to conceive the institutional structure, draft policies, propose programmes and prepare rules and regulations. Thereafter, I started working for establishment of the institute with the support of University authorities. First work done was to construct 22,000 sq.ft. building for a total cost of Rs. 1.50 crores spent by the university in the city campus. I used to personally supervise the construction of building and designed the infrastructure facilities to suite organizing vocational training programmes. Then I started working round the clock by visiting Entrepreneurship and Vocational Training institutions in Tamil Nadu and other parts of India to study their programmes.

 Professor I think right from the beginning you have decided to make the institute one of the best vocational training centres to benefit a lot the unemployed and unskilled youth.

 Yes Sir, Having given the responsibility I thought that I must make the institute one of the successful venture so that my university and IECD get a name. Fortunately, my two decades of

work experience with student and non-student youths as University level coordinator of NSS, Cultural Affairs, Extension and Extracurricular Activities, Campus Diversity Initiatives, Youth Red Cross and Vice-Chairman of Jan Shikshan Sansthan, Tiruchirappalli has become handy so that I could visualize and write the draft policies, programmes, structure and rules and regulations for IECD. The institute has been developed as a flexible skill based training institution for catering to the needs of students, non-student youths, housewives and unemployed youths for their social and economic betterment. The best thing we follow is that age has no bar for anyone seeking admission to undergo skill training programme in the institute. Right from the beginning IECD functions as an autonomous and self-supportive institution within the University system.

I am also happy to state that our University has given in the beginning a sum of Rs.10.00 lakhs to IECD as seed money to meet the initial establishment cost and conduct training programmes. The policies, rules and regulations of the IECD were approved by University Syndicate in 5th February, 2005 and the first activity on Faculty Development Programme - Entrepreneurship Development to College Teachers was inaugurated by Dr. V. N. Rajasekharan Pillai, then Vice Chairman of UGC in 4th March 2005.



Professor, what is the administrative body which controls IECD? Is it the University Syndicate or a separate body constituted for this purpose?



Sir, as per the approved policy, IECD is governed by a 12 member Executive Committee, headed by the Vice-Chancellor as Chairman. Other members are 5 from University Syndicate, 4 Senior Heads of Departments, 1 Industrial Expert and the Director of IECD, as its Member Secretary. The committee meets every 4 to 5 months in a year to decide the new policies, programmes, finance and other activities of the IECD. The committee also closely monitors the programmes implemented.

We had a series of special ad-hoc Board of Studies to develop course syllabi inviting experts

from universities, retired persons, Jan Shikshan Sansthan, unemployed youths, industries, NGOs and other technical institutions. Initially we conceived and introduced IT and ITES related skill development programmes and then moved to Electronics and IT related hardware networking programmes. We have 10 staff members on contract and ad-hoc basis and they work on all week days including Saturdays from 9 a.m. to 8 p.m under my leadership.



Over the years you might have increased both the number of programmes and also the trades. Can you please explain a bit?



Yes, we have developed a lot in the last few years. Initially we started with 4 programmes and slowly added more programmes every year. To tell you Sir as on date we have around 150 programmes in the sectors of Electronics, IT, Hardware, Education & Skill development, Beautician, Health Care, Tourism & Hospitality Management, Transportation & Logistics, Media & Entertainment and Automobile. One thing I would like to say is that whenever a skill development programme is conceived we conduct the same on trial basis for 2-3 days at free of cost. Once we found it successful and the beneficiaries found it useful and demand for the programme we convert the programme into a Certificate or Diploma or Advanced Diploma Programme. In all our training programmes the weightage for theory is 25% and practical aspect is 75%.

In fact, we have involved 20 affiliated colleges of the University for conducting skill development training programmes in their places and also tie-up with different organizations like Madras Institute of Heavy Machineries to organize Earth Moving and Heavy Machineries training for persons who have studied upto 8th standard. This training programme continued for four years and benefited around 991 persons from Tamil Nadu, Kerala, Goa and Maharashtra. All those who got trained are employed both in India and abroad. Diplomas in Television Technology, Visual Editing and Animation & Graphics were conducted in collaboration Good News Channel Pvt. Ltd.,

Chennai and Don Bosco Institute, Tiruchirappalli for persons studied upto 10th standard. 170 persons were trained in three years and all of them are in service in the Entertainment & Media Sector. Advanced Diploma in Aviation, Hospitality and Travel Management was conducted in collaboration with Gavin Air Crew Academy, Coimbatore for 97 plus two passed persons were trained and they have got job opportunities in the aviation sector and hotel industry. For unemployed youth call centre management programme was conducted in collaboration with Divya Knowledge Process Management, Bangalore in which 531 persons were trained and placed in ITES field. Similarly, we have tie-up with 34 industries for operating the vocational training and placement. We always update the syllabi once in a year or when demand arises.



You narrated a very interesting success story. Today a lot of noise is about skilling the people, particularly youngsters. What do you think?



We know that skills and knowledge are the driving force of economic growth and social development for our country. According to reliable data, India is expected to be home to a skilled workforce of 500 million by 2022. About 12 million persons are expected to join the workforce every year. This talent pool needs to be adequately skilled. The recent reports and other government sectors point out that our students graduate from formal educational institutions are not capable of getting jobs as they do not have the required skills which the employment market needs. More than 60 crore Indian population belongs to youth community including a major chunk of non-student youths, dropouts and unemployed youths. Governments have taken efforts in promoting skill training for them in the past several years through various training institutions both in the formal and non-formal sectors and also with public and private institutions. It is the need of the hour that we channelize and provide appropriate skill training to youths so that they get wage employment or self-employed.



In a vast country like India can skilling is that easy?



In my opinion it is not that easy to provide skilling to around 500 million people in India. But, we may achieve if we have workable policies and programmes by both central and state governments in long-term perspective on skill development in different sectors to different target groups. UGC has introduced the scheme of Community College and Bachelor of Vocational Education in different sectors through higher education. Now they have been involved in huge institutional structure for skill development activities in terms of establishing 100 Deendayal Kaushal Kendras through M/o HRD to impart skill development programme to youth. However, it is the right time that both central and state governments should come forward to establish specialized vocational universities in skilling our Indian youth.

I am of the firm opinion that the skill development programmes should be really a skill based one and it must have more practical aspects based on the industrial / employers' needs. That is one and the second one is with regard to execution of the programme, depending upon the skills we are going to train the persons for which the training institutions must have excellent infrastructure facilities like class rooms, workshops and labs. Thirdly, persons who give training on theoretical as well as practical aspects must be well experienced and well trained.

Our practice in IECD is to outsource people from inside as well as outside university system, unemployed youths, retired persons, current students whoever possess required talents to impart the skills to the trainees. We normally give them faculty development training programme based on our needs and requirements. Our curriculum is more of practical oriented with hands-on-training and study materials given play a crucial role for the success of the training programmes. Finally, monitoring, evaluation and issue of authenticated and valid certification in time and follow-up activities for getting them wage employment or help them for self-employment.



Professor, tell us whether IECD is getting regular funds from the University or a self-supporting institution?



It is purely a self-supporting institution. We charge very nominal course fee from the trainees which is used not only to pay the salary for the employees and maintenances but also to organize more number of training programmes in the much needed market demand vocational courses.

In the last 10 years we have established different labs for training, procured equipments and even added additional 11,000 sq.ft. of space by constructing one more floor in the existing building. All these things have been done by using the resources generated internally.



Can you please tell how many persons have been trained so far?



Upto 31st March 2015, 1,93,394 persons have been trained and certified by IECD.



That is a great achievement. It is understood that IECD has extended support to Tamil Nadu State Council for Higher Education. What is that?



IECD extended its support to Tamil Nadu State Council for Higher Education in introducing 41 skill based electives to Under Graduate students of colleges in Tamil Nadu by providing skill development curriculum under the choice based credit system.

The short term programmes are 60-70 hours with 5 credits, certificate programmes are 150 hrs, 3 months, 9 credits, Diploma programmes are 300 hrs, 4 to 6 months, 18 credits and Advanced diploma and PG diploma programmes are of 600 hrs, one year, 36 credits. All programmes consist of only skill development components.

There is one more scheme called School-University-Industry-Tie-up-Scheme (SUITS) wherein we train the students from 5th standard to 9th standard on Information Technology which includes Computer Operations, Office Automation, Programming Techniques, C Programming and C++

Programming. We have also designed skill development programmes to students on Graphic Design, Web Design and 2D Animation. Over 100 schools have been involved in SUITS in Tamil Nadu and Puducherry with tie-up with four industries & institutions.



Whom do you want to give credit for the success of IECD?



I will give entire credit to the Almighty first, the Vice-Chancellors of Bharathidasan University, Executive Committee Members and Functionaries of IECD. The continuous support extended by the former Vice-Chancellors

Prof. C. Thangamuthu, Prof. M. Ponnaivaikko, Dr. K. Meena and the present Vice-Chancellor Dr. V. M. Muthukumar made the institution to progress well and make a name for itself in the field of vocational skill development training.



Can the success made by IECD is replicable in other universities or institutions?



Yes. It is a replicable model. Already Shivaji University, Kolhapur, Jiwaji University, Gwalior, S.V. University, Tirupati, Gandhigram Rural Institute - Deemed University, Gandhigram, Madurai Kamaraj University, Madurai, Alagappa University, Karaikkudi, Bharathiyar University, Coimbatore are very keen to replicate this model. Also University of Exeter, Exeter and Canterbury Christ Church University, Canterbury, UK is keen about the IECD model.



Do you have any database of the students completing the course in IECD and their employment?



We have database of over all trainees. With regard to employment almost all those who have completed the programmes offered by IECD are either wage employed or pursue self-employment excluding the students trained under

SUITS. Many work in foreign countries also.

by IECD, 100% course fee waiver to Differently Abled Persons, 50% course fee waiver to SC/ST students and 25% course fee waiver to OBC students.



Can you point out some key achievements of IECD over the period of time?



Achievements are many but here I give only a few. They are: we have signed MoUs with 34 industries/institutions for offering IECD's Skill Development Programmes, trained 1,93,394 persons (up to 31.03.2015), generated employment opportunities to over 20,000 persons, generated Rs.12,03,49,288/- through course fees, created movable and immovable assets worth of Rs.2,13,11,463/- 31st March, 2015. IECD is empanelled as Udyami Mitra under Rajiv Gandhi Udyami Mitra Yojana by Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises, Government of India for offering Entrepreneurship Training to youths, vertical mobility is made for Under Graduate programmes of Bharathidasan University for those students who are dropouts/failed in plus two exams by enabling them to earn credits under successful completion of Certificate/Diploma programmes run



Professor I am sure a lot of credit should also go to you for giving able leadership to this institute. I am sure IECD will see many more achievements in the time to come and prove to be an institution for inclusive growth. On behalf of Indian Adult Education Association, particularly from Shri. K.C.Choudhary, President and Dr.Madan Singh, General Secretary I congratulate you for the excellent work you do.



Thank you very much Sir. I am sure a small effort taken in our university is a step towards facilitating the youngsters with employable skills. We are trying our level best to expand this and a day will come such efforts will be taken by many more universities and institutions. I am eagerly waiting to see that golden day. Vanakkam.

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्तिनगर, दिल्ली

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के तत्वावधान में कीर्तिनगर, दिल्ली में संचालित स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र द्वारा हाल में संचालित कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नरूप है:

विश्व जल दिवस समारोह 2015

जैसा कि विदित है विश्व जल दिवस हर वर्ष 22 मार्च को मनाया जाता है। इस दिन रविवार होने के कारण जीआरसी द्वारा दिनांक 23 मार्च 2015 को चार अलग-अलग स्थानों यथा एमसीडी स्कूल चूना भट्टी, 5/35



जीआरसी परिसर, हरिजन कैंप तथा बुद्ध मंदिर चूना भट्टी में विश्व जल दिवस समारोह 2015 आयोजित किया गया जिसमें कुल 329 लोगों ने भाग लिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम चार सत्रों में विभाजित था। सम्मिलितरूप से इन सत्रों में समूह संवाद, प्रश्नोत्तर, जागरूकता रैली, पत्रक वितरण, लघु नाटिका तथा चित्रकला प्रतियोगिता आदि के माध्यम से प्रतिभागियों को यह समारोह मनाये जाने तथा पानी के महत्व के बारे में बताया गया। समारोह में संदर्भ व्यक्ति के रूप में श्री हरिओम शर्मा (अध्यक्ष, ताशा सल्यूशन), श्री गुलशन रंजन (सीनियर मैनेजर, आदित्य बिड़ला ग्रुप), श्री हेमन्त सिंह (परियोजना समन्वयक), श्री शिव प्रताप, परियोजना अधिकारी, डॉ. सुरजीत गुप्ता (महिला रोग विशेषज्ञ) और श्री रमेश कुमार (सामाजिक कार्यकर्ता) उपस्थित थे।

ओपीडी

दिनांक 23 मार्च और 17 अप्रैल 2015 को जीआरसी द्वारा

जीआरसी/एसएसके, कीर्तिनगर परिसर में दो ओपीडी आयोजित किये गये जिनमें कुल मिलाकर 106 लोगों ने अपने स्वास्थ्य की जांच कराई। इन दोनों ओपीडी में स्वास्थ्य जांच के अतिरिक्त प्रतिभागियों, विशेषरूप से महिला प्रतिभागियों को मासिक धर्म और स्वच्छता के बारे में विस्तार से बताया गया तथा लोगों को आवश्यक दवाईयां भी वितरित की गयी। ओपीडी में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर डॉ. सुरजीत



गुप्ता, महिला रोग विशेषज्ञ तथा श्री ललित कुमार चोपड़ा, फार्मासिस्ट सम्मिलित हुए।

कानूनी जागरूकता शिविर

गत माह जीआरसी के पहल पर कुल चार कानूनी जागरूकता शिविरों को आयोजन किया गया जिनमें कुल मिलाकर 130 लोगों ने भाग लिया। इनमें से दो शिविर जो दिनांक 24 एवं 31 मार्च 2015 को क्रमशः फायर



स्टेशन झुग्गी एवं 5/35, कीर्तिनगर में आयोजित किये गये वे मूलतः दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से आयोजित हुए जिनमें जीआरसी ने आवश्यक सहयोग प्रदान किया। इन दोनों शिविरों में मुख्यरूप से दहेज निषेध अधिनियम

1961 एवं वृद्धावस्था में सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं तथा सीनियर सिटिजन एक्ट 2007 पर चर्चा की गयी। शिविरों में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर श्री मनीष (दिल्ली हाईकोर्ट) एवं श्री सतनाम सिंह, अधिवक्ता, दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण (पश्चिमी) उपस्थित रहे।

शेष दो शिविर पूर्णरूप से जीआरसी द्वारा ही आयोजित किये गये। दिनांक 1 एवं 16 अप्रैल 2015 को क्रमशः हरिजन कैंप एवं बुद्ध मंदिर,

चूना भट्टों कीर्तिनगर में आयोजित इन दो शिविरों में मुख्यरूप से बच्चों के प्रति बढ़ती यौन हिंसा एवं कानूनी जागरूकता तथा महिला अधिकारों के बारे में चर्चा की गयी जिनमें संदर्भ व्यक्ति के तौर पर श्रीमती रागिनि एस. राज एवं श्रीमती ज्योति राजश्री (अधिवक्ता दिल्ली हाईकोर्ट) उपस्थित हुए।

जन-धन योजना के अन्तर्गत आधार केन्द्र



जीआरसी द्वारा दिनांक 25 एवं 26 मार्च 2015 को जीआरसी परिसर में स्थानीय लोगों को आधार कार्ड बनाने की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु एक आधार केन्द्र के संचालन का कार्य प्रारंभ किया गया।

अबतक इस केन्द्र से लगभग 162 लोगों को फार्म वितरित किये जा चुके हैं जिनमें से 106 ने सफलतापूर्वक अपना नामांकन कराया है। इस कार्य में संदर्भ व्यक्ति के

तौर पर श्री यशपाल राजू, एलडीएम, केनरा बैंक तथा जीआरसी के समस्त कार्यकर्ता सामूहिक रूप से संलग्न हैं।

पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण



जीआरसी द्वारा दिनांक 26 मार्च 2015 को वाधवा कैंप, आंगनवाड़ी केन्द्र में पानी और स्वच्छता विषय पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कुल मिलाकर 20 लोगों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर श्री हेमंत सिंह, प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर, श्रीमती मीना राना, एस.एच.जी मोबिलाइजर एवं सुश्री दीपा, कम्प्युनिटी मोबिलाइजर उपस्थित रहे।

पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक

दिनांक 4 एवं 18 अप्रैल 2015 को जीआरसी द्वारा क्रमशः संजय कैंप तथा 8/35, कीर्तिनगर में दो पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठकों का



आयोजन किया गया जिनमें कुल मिलाकर 67 लोगों ने भाग लिया। हाथों की स्वच्छता पर केन्द्रित इन दोनों ही बैठकों में संदर्भ व्यक्ति के

तौर पर श्री शिव प्रताप, प्रोग्राम अधिकारी, श्री हरीश, सुश्री दीपा, श्रीमती मीना राना, एस.एच.जी मोबिलाइजर एवं श्री हरीश, कम्प्युनिटी मोबिलाइजर उपस्थित रहे।



Announcement

Department of Adult, Continuing Education and Extension University of Delhi

The Department of Adult, Continuing Education and Extension had its beginning as a Cell in 1976 which was upgraded in 1982 as the Centre for Adult, Continuing Education and Extension with the aim of planned involvement of the university and colleges in community extension activities. The department was accorded statutory status as a full-fledged department in 1985 under the Faculty of Social Sciences.

The Department introduced the concept of Lifelong Learning and Extension to meet the variety of educational and skills based needs of youths and community. Based insight gained from the Community interaction, Department introduced Masters Degree program on Lifelong Learning and Extension, commencing from 2014. Five short-term courses are also being offered.

Teaching learning process of the course involved regular teaching, Field work, assignment as well as interaction with universities within and outside the country.

Admission open for M.A. in Lifelong Learning & Extension 2015-2016, second batch two year full time course in Department of Adult, Continuing Education &

Extension, University of Delhi.

Admission:

- For details log on to: <http://du.ac.in>
- PG Admission Portal – from 1st April to 30th April 2015
- For any enquiry contact: (011) 27667280, Email ID: head.dacee@gmail.com
- For course details visit: www.dacee.du.ac.in

Total number of Seats : 34

Eligibility:

The Student should have passed B.A./B.Sc. /B.Com examination of Delhi University with at least 50% marks or an equivalent examination from a recognized University of India or foreign University with 55% marks. The admission for SC/ST and Physically Handicapped category is as per university norms.

Criteria of Admission - Only Entrance test based multiple choice question of 2 hrs duration

Tentative Date of Examination : 25th June, 2015

- Prof. J.P.Dubey
Head of the Department

Mother Teresa Award Conferred on Prof. Reddeppa Reddy

Prof. M.C.Reddeppa Reddy, Director, Department of Adult and Continuing Education, Sri Venkateswara University, Tirupati, Andhra Pradesh has been conferred Bharat Ratna Mother Teresa Gold Medal for the year 2015 for his outstanding contribution to the field of adult education in the last 35 years. This award has been instituted by the Global Economic Progress and Research Association (GEPRA), Tiruvannamalai, Tamil Nadu. The award included a Gold Medal,



Certificate and a Trophy.

Shri M.V.Rajasekharan, former Union Minister of State for Planning, Prof. H.Shivanna, Vice-Chancellor, University of Agricultural Sciences, Bangalore and Shri Padmanabha Kedilaya,V,

District and Sessions Judge, Bangalore jointly gave away the award to Prof. Reddy in a function held at Hotel Citadel, Bangalore on March 8, 2015 on the eve of International Women's Day and on the occasion of International Unity Conference on National Economic Growth through Individual contributions. Others present on the occasion were Shri M. Lakshminarayana, Member, Telephone Advisory Committee, Govt. of India and Shri I.S.Basha, General Secretary, GEPRA.

JSS Kalol Organized Capacity Building Training for Resource Persons



The Jan Shikshan Sansthan, Kalol organized a Two day Capacity Building Training to the vocational resource persons of its sub-centers in Kalol, Gandhinagar district on March 24-25, 2015. In all 27 persons

Department of Computer Science Engineering, K.J. Faculty of Engineering and Technology, S.S.S. R. group of Institutions and Certified Zone Trainer of JCI India took sessions on learning computer skills, formulation of syllabus and improved teaching techniques.

Dr. B. P. Rawal, Vice Chairman, JSS, Kalol, an avid healthcare researcher and Management Trainer, JCI University, USA and Subject Expert in Master's Programme, Gujarat Technological University shared his views on nutrition, diet, beauty products and health care. He emphasized on awareness on use of different beauty products based on Anabolic as well as carcinogenic ingredients some of costly so called herbal products to be avoided. Dr. B. P. Rawal, An author of 27 International Books, 16 International Research Papers and holder of an International Patent in Cancer and Cosmetic Research has been an asset for providing his services to the organization.

At the end of the programme Ms. Falguniben Patel, Programme Assistant, JSS, Kalol proposed the vote of thanks.

participated. The programme was inaugurate by Dr. B. P. Rawal, Vice Chairman, JSS, Kalol and the welcome address was given by Smt. Dinaben Choksi, Director, JSS.

On the first day of the training programme there were four sessions – the first one was devoted to Fabric Dying and Printing which was taken by Shri Dipak Joshi, Assistant General Manager, Donear Suitings Pvt. Ltd., Surat, the second one focused on the gap in skills in Workplace Professionalism and the fourth one was on question-answer.

On the second day Shri Avdhesh Gupta, Head of the

जेएसएस बांदा ने आयोजित किया प्रशिक्षण कार्यक्रम



प्रशिक्षण सत्रों के समापन के उपरान्त प्रतिभागियों ने पहले से तैयार किये गये प्रपत्रों के माध्यम से अपने-अपने फीडबैक प्रस्तुत किये।



जन शिक्षण संस्थान बांदा द्वारा स्थानीय राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में एक तीन दिवसीय क्षमता संवर्द्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिनांक 23 से 25 मार्च 2015 तक चले इस कार्यक्रम में जेएसएस द्वारा संचालित किये जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों यथा ड्रेस डिजाइनिंग एवं कसीदाकारी, स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य संवर्द्धन के 25 संदर्भ व्यक्तियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण

संस्थान, बाँदा के प्रधानाचार्य श्री रामप्रकाश, जन शिक्षण संस्थान-के निदेशक श्री अरुण कुमार, ड्रेस डिजाइनिंग एवं कसीदाकारी की प्रशिक्षिका सुश्री ऊषा सिंह एवं सुश्री मधु तिवारी, स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य संवर्द्धन की प्रशिक्षिका सुश्री दीपा मिश्रा ने भाग लिया। दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम के उद्घाटन के उपरान्त श्री अरुण कुमार ने सम्पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जिसके अनुरूप यह कार्यक्रम संचालित हुआ।

तीन दिवसीय इस प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित क्रमशः प्रधानाचार्य श्री राम प्रकाश तथा बालिका शिक्षा, बांदा के जिला समन्वयक श्री रमाशंकर मिश्र ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किये।

— अरुण कुमार
निदेशक, जेएसएस
बांदा

शिक्षा मंत्री ने किया 'नई इबारात' के नये अंक का विमोचन



'नई इबारात' राज्य संसाधन केन्द्र छत्तीसगढ़ की मुख्य पत्रिका है। दिनांक 31 मार्च 2015 को इस पत्रिका के 20वें अंक का विमोचन राज्य के स्कूल शिक्षा मंत्री श्री केदार कश्यप द्वारा उनके निवास स्थित कार्यालय में किया गया। 'साक्षरता से महिला सशक्तीकरण' पर केन्द्रित इस अंक का विमोचन करते हुए श्री कश्यप ने कहा कि साक्षरता का संदेश जन-जन तक पहुंचाने में यह पत्रिका अमूल्य योगदान दे रही है। विमोचन के अवसर पर राज्य संसाधन केन्द्र के निदेशक श्री तुहिन देब, कार्यक्रम समन्वयक श्रीमती सोनम, श्री रविन्द्र कुमार यादव तथा अनेक पत्रकार उपस्थित थे।

Lady Irwin College and

Dr. Aparna Khanna Received Awards



carefully designed academic programmes and extramural activities.

The International Education and Leadership Summit Awards instituted by Indo Global Chamber of Commerce, Industry and Agriculture, Pune gave the Best College Award to Lady Irwin College and Distinguished Faculty Award to Dr. Aparna Khanna, Associate Professor, Department of Development Communication and Extension, Lady Irwin College for rendering service to younger generation and exemplary performance and contribution to the work being done by the Society for Promotion of Youth and Masses (SPYM) in the area of substance abuse in a function held at India International Centre, Lodhi Road, New Delhi on March 15, 2015.



Lucknow SRC Organized Awareness Camp on Financial and Legal Literacy



State Resource Centre, Lucknow in association with JSS and Literacy House organized a one day awareness programme on Financial Literacy

(including Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna), Legal Literacy and Swachh Bharat at Kabir Theatre, Literacy House Campus, Lucknow on March 18, 2015. Around 200 persons participated out of which 37 Preraks and two Block Coordinators were from the adopted blocks - Safipur and Bangarmau of District Unnao, programme staff of SRC and participants of vocational courses of JSS, Lucknow.

The programme started with a Puppet show on women empowerment titled "Kaalia Se Kalidas" followed by a documentary on teaching techniques prepared by Global Dream and Devi Sansthan.

Subsequently, in a session organized at Vivekanand Hall a blue print for the next plan of action was discussed based on the need assessment with the learners to provide vertical mobility through literacy and social awareness. In this session the participants also shared their experience.



Shri G. Pattanaik, IAS (Retd), Chairman, India Literacy Board and State

Resource Centre inaugurated the programme while others present were Dr. Suneeta Gandhi, President, Global Dream and Devi Sansthan, Smt. Asha Mishra, General Secretary, Indian Women Federation, UP, Shri S.P. Rastogi, Director, Literacy House and Shri Rajesh Kumar Bajpai, Director, State Resource Centre.

Workshop on Equivalency Programme and Institutional Linkages

State Resource Centre, Chennai in collaboration with the Department of Adult and Continuing Education, University of Madras organized a one day workshop on Saakshar Bharat and Equivalency Programme – Institutional Linkages on March 30, 2015 in the auditorium of University Department of Criminology. In all 35 persons participated. The resource support was extended by Dr. Ravi, Regional Director, NIOS, Smt. Dorothy, Deputy Director and Dr. Zareena, Assistant Director, IGNOU, Dr. Natarajan, C-DAC and Dr. K. Devaraj, Programme Coordinator, SRC, Chennai.

In the inaugural session Dr. Neyimur Rehman, Director, MGR Educational Research Institute and University gave the key note address while Dr. NVR Kapali, Professor & Head, Department of Adult and Continuing Education, University of Madras gave the special address. Others addressed the meeting were Dr. V. Balaji, Director, State Resource Centre, Chennai and Shri M. Gunasekaran, Technical Officer, Directorate of Non-formal and Adult Education, Government of Tamil Nadu. Dr. K. Devaraj explained the objectives of the workshop.

The outcome of the workshop was that SRC should start equivalency programme for A – level in selected 7 model centres to cover 150 neo-literates who have successfully completed the test conducted by NIOS.

Visitor

Shri Erfan Khan, Deputy Programme Director and Ms. Supriya Yadav, Assistant Manager (Business Development), Development Alternatives, New Delhi visited IAEA on March 31, 2015 to know more about IAEA and its activities as Development Alternatives is involved in adult education programme in a big way in most of the Hindi speaking states with a new approach of making people literate in 56 days. This effort is named "Tara Akshar".

International Winter School was an Amazing Lifetime Experience

- Letginlen DOUNGEL

I am doing M.A in Lifelong Learning & Extension in the Department of Adult, Continuing Education and Extension, University of Delhi. I had an opportunity to be one of the students to attend International Winter School in the University of Wurzburg, Germany from January 27 to February 7, 2015 as a scholar of study in Comparative Studies on Adult and Lifelong Learning under "A New Passage to India" Programme funded by the DAAD (German Academic Exchange Service). The study visit included attending workshop on "Innovation and Opportunities to the Marginalized Groups in India: Sharing Community Learning Centre in Higher Education". For me attending International Winter School was an amazing lifetime experience. I was immensely glad and excited to represent not only the Department and the University but also my dear country India. The International Winter School's 'Comparative Studies on Adult and Lifelong Learning' is dedicated to analyzing and comparing international and European strategies in Lifelong Learning.

The first part of the study included intensive theoretical building framework and approaches for analyzing European and International Lifelong Learning Strategies which was divided into two working groups moderated by Prof. Licinio Lima and Prof. Paula Guimaraes. Under theoretical building framework students visited different Institutions and Academies to interact with the local students and the faculties. After the visit to institutions the students discussed to concretize ideological and theoretical concepts of mega, macro, meso and micro level to bring out the result of theoretical building framework. The field visit provided students an

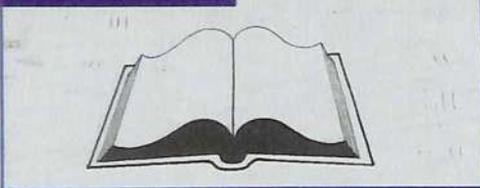
opportunity to critically analyze and compare the Lifelong Learning Strategies as well as theory-practice reflection on international policies on Lifelong Learning.

The second part of the study visit was Group Work on selected six topics in which the students were free to join any group of his/her own choice. The topics given to the groups were:

- 1) Training the Adult Education Trainers
- 2) Participation in Adult Learning and Adult Education
- 3) Promoting Quality in Adult Learning Sector
- 4) Educational Guidance and Counseling
- 5) The Policy & Practice of Lifelong Learning in Knowledge Economy, and
- 6) Academic Professionalization in Adult and Continuing Education.

The participants in the group had an opportunity to present their country report on the assigned topics. I have chosen the group with the topic "Promoting Quality in Adult Learning Sector". This group was moderated and Co-moderated by Prof. Balasz Nemeth and Mr. Christian Muller. The students in this group were from Italy, USA, India and Germany. There were parallel lectures and guidelines from the moderators on the International Comparative group work and on the Quality framework in Adult learning sector.

I also had an opportunity to visit European International School, Denmark on the invitation of Prof. Soren Ehlers who was in India as International Guest Lecturer in the Department of Adult Education, University of Delhi in 2014. This visit also given me a lot of knowledge and awareness.



Given, Lisa M. **100 Questions (and Answers) About Qualitative Research.** SAGE; 2015: 208p.

This book addresses the practical decisions that researchers must make in their work, from the design of the study, through ethics approval, implementation, and writing. The book's quick-scan, question-and-answer format make it ideal as a supplementary text or as a ready reference for graduate students preparing for comprehensive exams and writing research proposals, undergraduates in affiliated programs who will not be taking a primary course in qualitative research methods, and researchers working across disciplines in academic or practice environments.

Government of India. **India 2015.** Ministry of Information Broadcasting, Publication Division, 2015: 1112p.

India 2015, A Reference Annual, gives a comprehensive view of country's progress in the field of rural and urban development, industry and infrastructure, science and technology, art and culture, economy, health, defence, education and mass communication. It also incorporates sections on general knowledge, current affairs, sports and important events. It is a rich source of authentic and definitive data.

Lal, Malashri ed. **Tagore and the Feminine: A Journey in Translations.** Sage: 2015: 372 p.

This book presents a range of Rabindranath Tagore's creative works, including translations of short stories, essays, poems, memoirs, songs and plays from his vast corpus to show his conception of the feminine and gender identity that are relevant even today.

The editor establishes the search for Tagore's engagement with the feminine as subject and agency, character and voice, philosophy and politics in this book. There is rich cultural interplay as Tagore thinks over the contrasting social position of women in the 'East' and the 'West'. He relies on Indian traditions to understand them in the context of domestic ethics, marital institutions, parenting, empowerment, aesthetics and gender politics. The book includes new translations while presenting fresh insights into previously published works.

Sahu, Skylab. **Gender, Sexuality and HIV/AIDS: Exploring Politics of Women's Health in India.** Sage; 2015: 240 p.

The book discusses provisions taken by the government in providing health care to patients in India while also examining how this has influenced society's perception of the disease as well as the patients themselves.

The book explores the dimensions of health-care accessibility, gender equity measures and strategies used by the State as well as the role played by civil society organizations and

activists.

Unesco. **Education For All 2000-2015: Achievements and Challenges (Global Monitoring Report 2015).** Paris, Unesco, 2015: 517p.

The report - Education for All 2000-2015: Achievements and Challenges provides a comprehensive assessment of country progress towards the EFA goals and highlights the work that remains. It highlights effective policies and makes recommendations for monitoring and evaluating education targets after 2015. It also provides policy-makers with an authoritative source with which to advocate that education be a cornerstone of the post-2015 global development architecture.

Wheebox. **India Skills Report 2015.** Haryana, Wheebox, 2015: 55p.

India Skills Report is to provide an insight into the hiring trends of the market while understanding the needs of the job seeker and organizations. This edition of the report has reached out to about 3,00,000 students across 29 states and 7 union territories from the supply side and corporate players from 10 diverse industry sectors on the demand side. This report will give a clear understanding and enable bridging of the talent demand and supply in the country.

-Compiled by Neha Gupta

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,
23378436, 43489048

Editor: Dr. Madan Singh

E-mail: iaeadelhi@gmail.com Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.5

Re. 1 per copy

May 2015



Indian Adult Education Association

All India Adult Education Conference at Gandhigram

The Indian Adult Education Association is organizing 61st All India Adult Education Conference at Gandhigram, Tamil Nadu from December 28-30, 2015 in collaboration with Gandhigram Rural Institute - Deemed University

The theme of the conference is "Lifelong Learning and Skill Development" and the sub-themes are:

1. Vocational Skill Training for Women Empowerment
2. Skill Development Training for Youths
3. Importance of Skill Training in 'Make in India' Programme
4. Traditional Vocational Crafts - Need for Protection and Revival
5. Vocational Training in Unorganized Sector - Need for Standardization
6. National Skill Qualification Framework - A Step towards Quality Assurance
7. Vocational Skill Development Training and Economic Development
8. Vocational Education: Role of Institutions of Higher Learning

All are cordially invited to attend the conference.

The delegates attending the conference may remit the registration fee of Rs.1000/- on or before October 31, 2015 towards boarding and lodging charges through a separate Demand Draft drawn in favour of "Indian Adult Education Association" payable at New Delhi. In view of limited accommodation available delegates registered well in advance alone will be given priority in allotment.

For local participants the Registration fee will be Rs.500/- and they will be provided only lunch free of cost.

The registration fee will be Rs.1500/- for those who

register their names after October 31, 2015.

The delegates are requested to confirm their

Sad Demise of Dr. Martha Farrell

Dr. Martha Farrell, Director, Participatory Research in Asia (PRIA), New Delhi died in Kabul, Afghanistan on May 13, 2015 to the bullets of terrorists. She was one of the four Indians killed in the attack. She was 55 years old. She was an expert on women empowerment and a



good trainer. She was in Kabul on official duty and was running workshops on gender mainstreaming for the local people and officials.

Dr. Martha was the wife of Dr. Rajesh Tandon, Founder President, PRIA who is also a well known educationist, trainer and organizer known internationally. Dr. Tandon is the Life Member of Indian Adult Education Association since 1981.

The management and members of the staff of Indian Adult Education Association convey heartfelt condolences to Dr. Rajesh Tandon, his children, members of the family and the staff of PRIA and also pray for the departed soul of Dr. Martha Farrell to rest in peace.

participation by e-mail: iaeadelhi@gmail.com and submit the Registration Form by post to General Secretary, Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 alongwith the Demand Draft. **The Registration form is printed in this Newsletter.**

Those who desire to present thematic papers in the conference may submit the Abstracts not

exceeding 500 words latest by October 31, 2015 through e-mail director_iaea@gmail.com. The full paper may be submitted (MS Word, Font- New Times Roman, Font Size - 12, Spacing - one and half) by November 30, 2015.

(Dr. Madan Singh)
General Secretary, IAEA

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्तिनगर, दिल्ली

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा कीर्तिनगर, दिल्ली में संचालित स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में स्थानीय लोगों को सूचित करने तथा महिलाओं को विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराने का एक प्रकल्प है। अप्रैल-मई में इस प्रकल्प के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित किए गए:



प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर श्री हेमन्त सिंह, कार्यक्रम अधिकारी श्री शिव प्रताप, एसएचजी मोबिलाइजर श्रीमती मीना राणा तथा कम्युनिटी मोबिलाइजर सुश्री दीपा उपस्थित हुई।

जन-धन योजना के अन्तर्गत आधार केन्द्र



पूर्व की भांति इस बार भी जीआरसी द्वारा दिनांक 23 अप्रैल 2015 को जीआरसी परिसर में स्थानीय लोगों को आधार कार्ड बनाने की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु एक आधार केन्द्र का संचालन किया गया। इस बार इस केन्द्र में लगभग 82 लोगों का आधार पंजीयन किया गया।

पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण

दिनांक 24 अप्रैल 2015 को जीआरसी परिसर



में एक पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य स्थानीय लोगों को स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं के समूह के रूप में प्रशिक्षित करना था। प्रशिक्षण के प्रारंभ में सभी प्रतिभागियों की सहमति से इस समूह का नाम 'प्रेरणा' समूह रखा गया तथा उन्हें जीआरसी द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी दी गई। इसके बाद 'सहत का पैगाम' शीर्षक पुस्तक वितरित की गयी तथा उन्हें व्यक्तिगत जीवन में सफाई की महत्ता और पीने के लिए स्वच्छ पानी के उपयोग से होने वाले फायदों के बारे में बताया गया। हाथ धोने के सही तरीके के प्रदर्शन के साथ प्रशिक्षण सत्र संपन्न हुआ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 20 लोगों ने भाग लिया जिसमें संदर्भ व्यक्ति के तौर पर

ओपीडी



दिनांक 25 अप्रैल 2015 को जीआरसी परिसर में आयोजित एक ओपीडी में महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरजीत गुप्ता द्वारा कुल 53 लोगों की स्वास्थ्य जांच की गई जिसमें 35 महिलाएं, 6 बच्चे तथा 12 पुरुष शामिल थे। एक व्यक्ति को अस्पताल में दिखाने के लिए रेफर भी किया गया। इस ओपीडी में डाक्टर ने उपस्थित लोगों को मलेरिया के बारे में बताते हुए कहा कि मलेरिया मादा मच्छर एनॉफिलिज के काटने से होता है। अगर किसी को कंपकपी के साथ बुखार आए तो यह मलेरिया होने का संकेत देता है। ऐसे में व्यक्ति को फौरन इसका इलाज करवाना चाहिए अन्यथा यह खतरनाक व जानलेवा भी हो सकता है।

इसी प्रकार की एक अन्य ओपीडी 5/35, बस्ती विकास केन्द्र में 8 मई 2015 को आयोजित



की गयी जिसमें महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरजीत गुप्ता द्वारा 35 महिलाओं, 10 पुरुषों तथा 7 बच्चों की स्वास्थ्य जांच की गयी तथा गंभीर रूप से पीड़ित दो मरीजों को अस्पताल के लिए रेफर भी किया। इस ओपीडी में गर्मी के दौरान स्वच्छता पर विशेष ध्यान के साथ-साथ अधिक से अधिक पानी पीने की सलाह भी दी गयी।

दोनों ही ओपीडी में जांच करवाने के लिए आये लोगों को श्री ललित कुमार चोपडा, फार्मासिस्ट के द्वारा अनुमोदित दवाईयां भी वितरित की गयी।

विश्व मलेरिया दिवस



जैसे-जैसे मौसम बदल रहा है मच्छरों का आतंक बढ़ता जा रहा है। मच्छर, मलेरिया जैसे भयानक रोग जिसके कारण दुनियाभर में अनगिनत लोगों की हर साल मृत्यु हो जाती है, के फैलने के मुख्य कारक हैं। इस बीमारी से बचने के लिए जागरूकता उत्पन्न करने हेतु प्रतिवर्ष 25 अप्रैल को विश्व मलेरिया दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी संदर्भ में स्थानीय निवासियों को मलेरिया से बचने के उपायों और सावधानियों की चर्चा के लिए गत 25 अप्रैल 2015 को जीआरसी परिसर तथा वाधवा कैम्प में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम तीन सत्रों में विभाजित था।

प्रथम सत्र जागरूकता बैठक की थी जिसमें

दिल्ली नगर निगम से आए मलेरिया उन्मूलन अधिकारी मो. सलीम तथा उनके दो सहयोगियों ने प्रतिभागियों को मलेरिया होने के कारण, लक्षण तथा मच्छरों की रोकथाम के बारे में दिल्ली नगर निगम द्वारा किये जा रहे प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कूलर में डाली जाने वाली दवा के साथ-साथ मच्छरों की रोकथाम के लिए पैम्फलेट भी वितरित किए।



द्वितीय सत्र में डा. गुप्ता ने मलेरिया से बचने के उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की तथा इस संबंध में महिलाओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए।

तृतीय सत्र के दौरान वाधवा कैम्प में बच्चों द्वारा एक जागरूकता रैली निकाली गयी। इसमें विभिन्न नारों के माध्यम से लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया गया। वाधवा कैम्प आंगनवाड़ी में बच्चों द्वारा एक लघुनाटिका का भी मंचन किया गया जिसका शीर्षक था 'मच्छर का प्रकोप'। प्रतिभागी बच्चों में पुरस्कार वितरण के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हो गया।

पोषाहार शिविर

28 अप्रैल 2015 को 8/35 कीर्तिनगर में 18 से 40 साल की महिलाओं को ध्यान में रखते हुए एनीमिया विषय पर एक पोषाहार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 32 महिलाएं उपस्थित थीं। 'एनीमिया' का तात्पर्य शरीर में खून की कमी से है जो कि महिलाओं में सामान्यता पाई जाती है। इस शिविर में पोषाहार विशेषज्ञ श्रीमती सुनिता रानी ने कमी को खान-पान से किस प्रकार दूर

किया जा सकता है इसकी विस्तृत जानकारी उपस्थित महिलाओं को दी। इस अवसर पर प्रतिभागियों को चुकन्दर की कांजी तथा भेलपूरी बनाना भी सिखाया गया। चुकन्दर विशेष रूप से खून की कमी को पूरा करता है तथा कांजी बनाने पर इसकी महत्ता दोगुनी हो जाती है।

पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक



दिनांक 2 मई 2015 को संजय कैंप, कीर्तिनगर में स्थानीय समुदाय के बच्चों के बीच सफाई संबंधित जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एक पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसका मुख्य विषय हाथों की धुलाई था। इस बैठक में 33 बच्चों ने भाग लिया जिन्हें संदर्भ व्यक्ति के तौर पर उपस्थित कार्यक्रम अधिकारी श्री शिव प्रताप, कम्युनिटी मोबिलाइजर श्री हरीश तथा सुश्री दीपा ने विषय से संबंधित जानकारियां पढ़ाने की। संदर्भ व्यक्तियों ने उपस्थित बच्चों से सवाल-जवाब के माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण बिंदुओं पर बातचीत की जिनमें प्रमुख रूप से हमें प्रतिदिन स्नान क्यों करना चाहिए, लोग बीमार क्यों होते हैं, नाखून सदैव कटे हुए क्यों होने चाहिए, खाने के पहले तथा शौच के

बाद हाथ साबुन से ही क्यों धोने चाहिए आदि शामिल थे।

कानूनी जागरूकता शिविर



6 मई 2015 को कमला नेहरू कैम्प में एक कानूनी जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिसमें अधिवक्ता सुश्री रागिनी एस. राजन द्वारा घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 की विस्तृत चर्चा की गयी। सुश्री रागिनी ने बताया कि घरेलू हिंसा क्या है? घरेलू हिंसा क्यों होती है? घर में छोटे मोटे तनावों को घर में ही कैसे सुलझाया जा सकता है? साथ ही साथ उन्होंने यह भी बताया कि यदि बात मानसिक और

के सहयोग से स्त्री सुविधा केन्द्र द्वारा एक कानूनी जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 32 महिलाओं ने भाग लिया। शिविर में आमंत्रित संदर्भ व्यक्ति अधिवक्ता सुश्री दिव्या ने प्रतिभागियों को लिंग परीक्षण न करवाने की हिदायत दी तथा लिंग परीक्षण करवाने पर कानून द्वारा सजा तथा जुर्माने के प्रावधान के बारे में भी उन्हें अवगत कराया। सुश्री दिव्या ने बताया कि लिंग परीक्षण के विरुद्ध कानूनी सहायता प्राप्त करने के लिए तीस हजारी कोर्ट के कमरा न. 295 में उपस्थित अधिकारियों से सम्पर्क किया जा सकता है।

योजना प्रारंभ की गयी है जिसका कार्य सभी सरकारी तथा गैर-सरकारी बैंको द्वारा किया जा रहा है। स्थानीय समुदाय की नजर से इसकी विशेष आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जी आर सी द्वारा 9 मई 2015 को सन्त निरंकारी भवन में एक मेगा कैम्प का आयोजन किया गया। इसमें लोगों को इस योजना के महत्व और आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताते हुए 300 से अधिक लोगों का जीवन सुरक्षा बीमा भी किया गया। विदित है कि इस दिन सार्वजनिक अवकाश होते हुए भी जीआरसी के कार्यकर्ताओं ने दोनों उपस्थित बैंकों को पूर्णतः सहयोग किया।

प्रधानमंत्री जीवन एवं दुर्घटना बीमा योजना



कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 15 मई 2015 को जीआरसी में एक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें गुजरात से आये संदर्भ व्यक्ति श्री जगदीश ने जीआरसी द्वारा

संचालित व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिलाओं को खाली समय में सिलाई के दौरान बचे कतरनों तथा बेकार धागों से एक विशेष सुई द्वारा विशेष प्रकार की कढ़ाई का कार्य करना सिखाया। इस प्रकार की कढ़ाई से महिलाएं तकिये के गिलाफ, साड़ी के पल्लू तथा रुमाल आदि को अधिक सुन्दर रूप दे सकती हैं। श्री जगदीश ने फ्रेम पर कढ़ाई करने की विधि के अलावा अपने साथ लाए कई नमूनों को भी महिलाओं के सामने प्रस्तुत किया। उपस्थित महिलाओं ने कढ़ाई के लिए कपड़ों में विविध प्रकार के टांके लगाने की विधि भी सीखी। प्रतिभागी महिलाओं ने इस प्रशिक्षण को बहुत ही सराहा।



शारीरिक हिंसा पर आ जाती है तो कानून की सहायता अवश्य लेनी चाहिए। सहायता इन नंबरों पर भी प्राप्त की जा सकती है 100, 1096, 1098, 181। बैठक में कुल 32 महिलाएं उपस्थित थीं।

इसी प्रकार 15 मई 2015 को भी कमला नेहरू कैम्प में दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण (पश्चिम)

प्रधानमंत्री समर्पित कले जा रहे हैं जीवन एवं दुर्घटना बीमा योजना, जन सुरक्षा के हित में

आपका बैंक खाता अब सुरक्षा का आधार

आप सभी को सूचित किया जाता है कि आपके बैंक में लगी सरकारी न की सुरक्षा के लिए आप बैंक खाता जोड़ें। आप बैंक खाते से जुड़कर ही आप अपने बैंक में अपने बैंक खाते का इस्तेमाल कर सकते हैं।

कौशल प्रशिक्षण
दिनांक 15 मई 2015 को जीआरसी में आयोजित किया गया।

सुई प्रशिक्षण
दिनांक 15 मई 2015 को जीआरसी में आयोजित किया गया।

आप सभी को सूचित किया जाता है कि आपके बैंक में लगी सरकारी न की सुरक्षा के लिए आप बैंक खाता जोड़ें। आप बैंक खाते से जुड़कर ही आप अपने बैंक में अपने बैंक खाते का इस्तेमाल कर सकते हैं।

संस्था: सत्य निरंकारी प्राधिकरण, गुजरात, सूरत, सीमा सूरत (कॉलेज रोड, सूरत का पीछे)
संस्थापक: दिनांक 09 मई 2015
संस्था: सूरत, गुजरात

संयोजक: अग्रणी बैंक कार्यालय, केनरा बैंक जिला पश्चिम

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जन सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जीवन एवं दुर्घटना बीमा

National Sample Survey of Estimation of Out of School Children in the age 6-13 in India



A study has been recently conducted on the title "National Sample Survey of Estimation of out of School Children in the age 6-13 in India" by Social and Rural Research Institute (SRI) with Educational Consultants India Ltd. (EdCIL), the draft report of which is available in public domain. The third round of the sample survey of households was conducted in all the states and union territories of India during 2014 and the sample frame for this round was the Census data 2014. All the 640 districts as per Census 2011 were covered in this round. The main findings are:

Out of School Children by gender and age group between 6-13 years

1. More children aged 11-13 years are out of school (3.28% - 26.66 lakh) compared to children in the age group 6-10 years (2.77% - 33.98 lakh). The overall percentage of out of school children is 2.97% and their estimated number is 60.64 lakh.

2. Higher proportion of female children (3.23% - 28.98 lakh) are out of school as compared to male children (2.77% - 31.66 lakh).

Within the age group of 6-10 years 2.94% females (15.94 lakh) are out of school compared to 2.63% males (18.04 lakh) in the same age group.

Those who are out of school between the age group 11-13 it is estimated 3.67% females (13.03 lakh) and 2.98% males (13.63 lakh).

3. East Zone reports the highest percentage of out of school children (4.02%) closely followed by Central Zone (3.90%), North Zone (3.30%), North-East Zone (2.52%) and West Zone (1.17%). South Zone reports the lowest percentage with 0.97%.

4. Odisha has the highest percentage of out of school children in India (6.10%) followed by Uttarakhand (5.07%) and Rajasthan (5.02%).

Six more states have higher proportion of children out of school than the national average (2.97%). They are Bihar (4.95%), UP (3.90%), MP (3.78%), Chhattisgarh (3.75%), Lakshadweep (3.67%) and NCT of Delhi (3.15%).

Out of School Children in Rural and Urban areas

5. Out of school children are more in rural areas (3.13% - 46.96 lakh) as compared to urban areas (2.54% - 13.68 lakh).

However, Central Zone reports 4.68% children in urban areas out of school than 3.67% in rural areas. This may be due to Uttarakhand reporting 15.64% children out of school in age group 6-13 years in urban areas.

Within urban Uttarakhand 23.05% girls between the age 6-10 years are estimated to be out of school. This proportion is 16.93% for girls aged 11-13 years.

Out of School Children from different Social Groups in Rural and Urban areas

6. At national level, the maximum proportion of out of school children in India is within ST (4.20%) followed by SC (3.24%), OBC (3.07%) and others (1.87%).

However, in urban India OBC contributes the maximum to the proportion of out of school children (3.16%) followed by SC (2.60%), others (1.82%) and ST (1.75%).

In East Zone 6.78% ST children are out of school with maximum contribution from the rural parts of the zone. In Odisha alone 14.81% ST children are out of school.

In Central Zone a very high proportion of out of school

children is from the urban areas of Uttarakhand in which OBC is 22.46% followed by SC 12.34%.

Out of School Children from different Religions in Rural and Urban areas

7. At national level Muslims have the maximum proportion of out of school children in India (4.43%) followed by Hindus (2.73%), Christians (1.52%) and others (1.26%).

No difference is observed from the rural-urban disaggregation. The highest proportion of out of school Muslim children are from Central Zone (6.12%) followed by North Zone (5.75%).

In Central Zone Uttarakhand alone records 13.02% followed by MP 10.65%.

In North Zone NCT of Delhi alone records 15.76%.

In Eastern Zone the highest proportion of out of school children are among Hindus (4.08%) followed by Christians (3.88%) and Muslims (3.85%).

Estimation of Children With Special Needs (CWSN)

8. At national level 21.40 lakh children in the age group 6-13 years are CWSN. This is 1.05% of the total children in this age group in India.

Children suffering from orthopedic disability (25.12%), visual disability (19.59%), speech disability (16.95%) and mental disability (14.57%).

An estimated 11.81% children among CWSN suffer from more than one type of disability.

44.15% children suffering from more than one type of

disability are estimated to be out of school.

Among the total estimated CWSN, 28.07% (6 lakh) children are out of school. This is much higher than the nation estimated of out of school children (2.97%).

Head of Household and Parents' Education-wise out of school children

9. 58% of all out of school children come from families with the head of the household is illiterate. Another 21% of out of school children come from families where the heads are educated upto primary.

28.88% of out of school males and 27.54% out of school females have illiterate mothers, while only 19.57% out of school males and 18.63% out of school females come from illiterate fathers.

Classification of out of school children (Never enrolled, Enrolled but never attended, Dropouts)

10. Within the total estimated out of school children 44.50% (2.70 lakh) have never been enrolled in any school.

Proportion of never enrolled children is the highest in Central Zone (51.41%) followed by East Zone (46.26%). The lowest is North East Zone (26.12%).

At national level more males (46.27%) than females (42.55%) have never been enrolled in a school.

Out of total estimate out of school children 18.53% (11.24 lakh) have been enrolled in some school (classified under

'Attending' category) but have never attended the same.

Those children who have attended school before but are not doing it any more have been estimated as 36.97% (22.42 lakh) of the total out of school children.

At the national level the percentage of dropouts in Class - II is the highest with 22.10% followed by Class - III (15.75%), Class - V (14.68%), Class - I (14.22%) and Class - IV (12.23%).

Children within the rural areas drop out of school earlier than those in the urban areas. Most of the dropouts in the said age group from rural areas have completed education upto Class - II, while those from the urban areas have completed Class - V.

Estimated number and percentage of out of school children living in slum areas

11. The study reveals that 36.80% of the children in urban India are living in slum areas. This is estimated to be 1.98 crore children in the age group 6-13 years.

Within the children living in slums, an estimated 2.38% (4.73 lakh) are found to be out of school.

With 2.70% female children from slums not attending school, the proportion of out of school females within slum areas is higher than males (2.14%).

Reasons for being out of school

12. Poverty/economic reason - 23.76%

Child not interested studies -

27.70% (rural areas – 20.24%, urban areas – 11.99%)

Higher proportion of girls are out of school because of the reason “needed to help in domestic work or needed to take care of children” as compared to boys.

A marginally higher proportion of boys are also out of school than girls for the reason “child to supplement household income”.

Education not considered necessary by the head of the household is also reported by more households with an out of school female child (6.27%) as compared to households with an out of school male

child (2.39%).

Higher proportion of children (28.67%) are out of school because of poverty/economic reason as compared to rural areas (22.33%). This is also shown by the fact that as many as 20.74% respondents from urban areas report that their child is out of school because he/she is needed to supplement household income in the rural areas (9.66%).

Percentage of children attending different type of schools

13. Among the total

estimated 20.41 crore children in the age group 6-13 years, 19.80 crore (97.03%) attend school. Among those attending school, 72.39% are attending government/local body schools and 26.02% are attending private aided recognized/private un-aided recognized schools/recognized Madrassas.

Around 55.77% children attend government schools in urban areas in comparison to 78.40% children attend government schools in rural areas.

Padma Shri Conferred on Shri Ashok Bhagat



Shri Ashok Bhagat, founder Chairman of Jan Shikshan Sansthan, Ranchi, Jharkhand has been conferred Padma Shri for his service in the field of social work.

Shri Bhagat is a noted Sarvodaya Leader and founder Secretary of Vikas Bharti Bishunpur, a voluntary organization of repute involved in the betterment of tribal and

marginalized population of Jharkhand. In the last 30 years Vikas Bharti has developed and replicated Tribal Development Models in entire Jharkhand. It is also a training centre for the new recruits to All India Services (IAS, IPS and IFS) and also for the officers of Jharkhand Administrative Service.

Vikas Bharti Bishunpur is running Krishi Vigyan Kendra at Gumla for agriculture demonstration and technology support, Ashrams, Shram Niketans and Vidya Mandirs for education of weaker sections, Vikas Institute of Technology for professional education of weaker sections, Tribal Research Centre and Tribal Study Centre for research, documentation, innovation and recommendation, Gram Takniki Kendra (Technology Resource Centre) for preservation of traditional technologies, new innovations and dissemination, Jivan Jyoti Arogya Niketan Hospital for health services, Food Processing Unit to facilitate people engaged in agro processing and Herbal Plant Farm for demonstration and promotion of various medicinal plants.

Assessment of Basic Literacy Programme by NIOS

The National Institute of Open Schooling conducts assessment test for Basic Literacy Programme twice in a year – once in March and another one in August. The first test was conducted on August 20, 2010 and the last one was conducted on March 15, 2015 in which around 85 lakh learners have appeared. While evaluation of answer sheets and declaration of result for the last test is still under progress, the achievement in the first 9 assessments is as under:

Sl. No.	Assessment Date	Appeared			Successful		
		Female	Male	Total	Female	Male	Total
1.	August 20, 2010	324317 (62.56%)	194068 (37.44%)	518385	212303 (65.46%)	122202 (62.97%)	334505 (64.53%)
2.	March 6, 2011	3568686 (81.88%)	789924 (18.12%)	4358610	2517581 (70.55%)	585284 (74.09%)	3102865 (71.19%)
3.	August 20, 2011	3020576 (65.55%)	1587763 (34.45%)	4608339	2057992 (68.13%)	1125147 (70.86%)	3183139 (69.07%)
4.	March 18, 2012	7629075 (71.32%)	3068482 (28.68%)	10697557	5801030 (76.04%)	2219921 (72.35%)	8020951 (74.98%)
5.	August 26, 2012	2678179 (71.91%)	1045924 (28.09%)	3724103	1935470 (72.27%)	764145 (73.06%)	2699615 (72.49%)
6.	March 17, 2013	3886570 (72.15)	1500330 (27.85%)	5386900	2836790 (72.99%)	1122309 (74.80%)	3959099 (73.49%)
7.	August 25, 2013	3268074 (70.59%)	1361269 (29.41%)	4629343	2112333 (73.82%)	1023497 (75.19%)	3435830 (74.22%)
8.	March 9, 2014	3772853 (71.38%)	1512454 (28.62%)	5285307	2771483 (73.46%)	1114101 (73.66%)	3885584 (73.52%)
9.	August 24, 2014	2691253 (71.23%)	1086813 (28.77%)	3778066	1987802 (73.86%)	809638 (74.50%)	2797440 (74.04%)
TOTAL		30839583 (71.74%)	12147027 (28.26%)	42986610	22532784 (73.06%)	8886244 (73.16%)	31419028 (73.09%)

Source: <http://www.nios.ac.in/nios-nlma-basic-literacy-assessment.aspx>

Dr. Bani Bora on Invitation to University of Wurzburg



Dr. Bani Bora, Senior Fellow, International Institute for Adult and Lifelong Education (IIALE), New Delhi has been invited as a visiting Professor by University of Wurzburg, Germany under the Programme "A New Passage to India" from June 1-30, 2015. She will be affiliated with Prof. Regina Egetenmeyer at the Institute for Education.

Dr. Bani will be conducting a course on Empowerment of Women through Adult Education and also a seminar on

University of Wurzburg, Dr. Bani prepared Power Point Presentations which she has shown before a group of invited audience on May 19, 2015 at IAEA Conference Hall in which Prof. B.S. Garg, Patron, Shri K.C. Choudhary, President, Dr. M.S. Ranawat, Vice President, Dr. Madan Singh, General

Empowerment of Women through Adult Education in India. Secretary, Prof. S.Y. Shah, Director, IIALE, Shri Prem Chand, Senior Fellow, IIALE, Director and staff of IAEA were present.

As a preparatory work for the assignment at To the same group another interesting presentation was made by Shri A. Sundararajan on the topic 'Aura'. The presenter is a Clairvoyant which means seeing



clearly or seeing the invisible. In his professional career he also worked as a Journalist with Indian Express, Hindustan Times and Rajasthan Patrika.

National Seminar on Social Responsibility of Higher Education Institutions at Tirupati

The Department of Adult and Continuing Education, Sri Venkateswara University, Tirupati, Andhra Pradesh in collaboration with Andhra Pradesh State Branch of Indian Adult Education Association is organizing a two day National Seminar on Social Responsibility of Higher Education Institutions: Status, Problems and Strategies on July 3-4, 2015 at Tirupati. The broad objective of the seminar is to identify the role played by higher education institutions in the identified social activities, problems encountered and to suggest suitable strategies for promoting their involvement. The seminar will consist of plenary sessions; theme based invited talks and panel discussions.

The researchers interested in presenting original research/thematic papers are invited to submit their abstracts not exceeding 500 words latest by June 5, 2015. The full paper should contain title, abstract, list of key words and not exceeding 10 A4 size papers including references and appendices, typed with one and half space, 12 font, New Times Roman, MS Word compatible on or before June 20, 2015 by using e-mail Id: pareaddy57@gmail.com and pareaddysvu@yahoo.co.in (Mobile: 09490736837).

The host will provide travel assistance not exceeding 2nd AC train fare (to limited persons) and local hospitality including accommodation.

Training and Apprenticeship Training Transferred to Skill Development

In a recent order issued by the Cabinet Secretariat, Training and Apprenticeship Training from the Ministry of Labour and Employment have been transferred to Ministry of Skill Development and Entrepreneurship (MSDE). With this all Industrial Training Institutes (ITIs) run under government sector, Industrial Training Centres (ITCs)

functioning under private management and vocational training centres operating on Public-Private Partnership (PPP) basis across the country have come under the administrative control of MSDE. The total number of such institutions is around 12,000 with about 16 lakh seats. This order also made all the individuals covered under

Apprenticeship Act to come to MSDE immediately. This is an important decision taken at an appropriate time as these institutions will now be reformed and reoriented with industry driven curricula, greater use of technology and better industry connect.

Seminar on Learning Disabilities



The State Resource Centre, Kerala in collaboration with Kerala State Branch of Indian Adult Education Association and Dr. K. Sivadasan Pillai Foundation organized a seminar on "Learning Disabilities" on April 25, 2015 at the Conference Hall of SRC. Around 50 persons participated in the seminar.

Dr. Geetha Janet, Honorary Director, Centre for Learning Disabilities and Difficulties, Department of Education, University of Kerala gave the lecture on the theme in which she said that the Learning Disability is a group of

disorders that affect a broad range of academic and functional skills including the ability to speak, listen, read, write, spell, reason and organize the information. While explaining further she said that disabilities can happen due to heredity, teratogenic, medical and environmental. However, a lot of innovations have been done in this field to assess the disabilities through different tools, tests and methodologies. She also gave a lot



of information about the facilities available for the persons of learning disabilities in developed countries.

Dr. Rajani Chandran, former Professor of Agriculture University moderated the session and at the end the participants raised a

number of questions for which Dr. Geetha gave convincing reply.

Shri Harish Kumar S. gave welcome address while Dr.T.Padmakumar, Psychologist gave the vote of thanks.

Annual Subscription of Journals Revised

As Indian Journal of Adult Education and Proudh Shiksha are regularly uploaded in IAEA Website: iaea-india.org and is available online for the users it has been decided to print only limited copies for those who pay the annual subscription for these journals in advance. Keeping in view the increase in printing and postage cost the annual subscription of these two Journals have been revised as under:

Name of the Journal	For Life & Institutional Members	For others
Indian Journal of Adult Education	Rs.300/-	Rs.500/-
Proudh Shiksha	Rs.100/-	Rs.200/-

The Life and Institutional Members will continue to get only IAEA Newsletter free of cost.
The revised annual subscription will come into effect from January 2016 onwards.

मासिक समीक्षा बैठक



विकास हो सके। अध्यक्ष महोदय ने भी इस आशय पर अपनी सहमति व्यक्त की।

इसी क्रम में दिनांक 21 मई 2015 को एक और बैठक आयोजित हुई जिसमें सभी कार्यकर्ताओं ने मई माह में स्वयं द्वारा संपादित किये जाने वाले गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की जिस पर अध्यक्ष, महासचिव एवं निदेशक महोदय ने अपने-अपने विचार/सुझाव भी दिये। अंत में अध्यक्ष श्री कैलाश चौधरी ने कहा कि हमने हमेशा से यह प्रयास किया है कि हमारा कार्यालय हर मामले में नवीनतम/अद्यतन बना रहे। इसके लिए उन्होंने आवश्यक

गत 29 अप्रैल 2015 को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के कार्यकर्ताओं की मासिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई जिसमें संघ के अध्यक्ष श्री कैलाश चौधरी, महासचिव डॉ. मदन सिंह तथा निदेशक सहित अन्य सभी कार्यकर्ता उपस्थित थे। बैठक में सभी कार्यकर्ताओं ने अपने द्वारा पूर्व में किये गये तथा आगामी दिनों में किये जाने वाले कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया जिस पर चर्चा हुई। इस चर्चा के उपरांत महासचिव ने कहा कि सभी लोग बेहतर ढंग से कार्य कर रहे हैं लेकिन सभी को यह भी सोचना चाहिए कि अपने नियमित कार्यों के अलावा हम नया क्या कर सकते हैं। उन्होंने कहा की आगामी समीक्षा बैठकों में नये कार्यों के बारे में चर्चा की जानी चाहिए ताकि सभी कार्यकर्ताओं की योग्यता में उत्तरोत्तर



आधुनिक संसाधन तथा कार्यकर्ताओं की निजी योग्यता एवं प्रभावशीलता को उत्तरोत्तर बढ़ाये जाने पर बल दिया।

”अनुभूति“

भावों के सागर तल गहरे
अनुभूति की बहती लहरें
मन सीपी के भीतर से वो
धवल अमल मोती से बिखरें

उम्मीदों का दामन थामे
संघर्षों के पथ को नापें
शनैः-शनैः मंजिल पंग धरते
भाल विजय का तिलक लगाते

संवेदन के झीन झरोखे
जब – तब मन खिड़की से झांकें
नई सुबह की नई किरण ला
तम की वो हर लीक मिटा दें

मन चाही सौगात मिली कब
हर बरखा बरसात हुई कब
फिर भी मृग मरीचिका पीछे
लालायित हो भागे फिरते

चलें बवण्डर संवेगों के
भावों के तूफान उफनते
सबकुछ लुट जाने पर जैसे
अपने-अपने शून्य निरखते

जीवन की माथा पच्ची में
मैं – मेरे का राग अलापें
प्रश्न कोई हल न कर पाते
जीवन यूँ ही व्यर्थ गंवाते

गुजरे वक्त के अक्स में ढूँढ़ें
परछाइयों के घेरे लिपटें
कुछ सुकून मिल जाए मन को
सोच, विगत में प्रति पल पलटें

गुणा – भाग लगाते थकते
कर्माँ की गठरी को ढोते
जीवन की सन्ध्या में जाकर
अपने-अपने शून्य को तकते

– कुसुम वीर

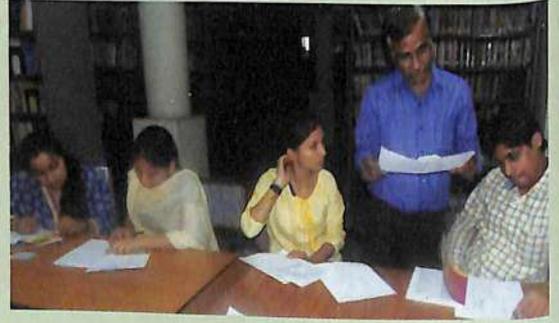
MOTHER'S DAY



**A mother is she
who can take the place
of all others but
whose place none else can take**

संपन्न हुई सीएलएस की परीक्षा

पुस्तकालय विज्ञान
में प्रमाण पत्र कोर्स के
लिए इस बार भारतीय
प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा
6 प्रशिक्षणार्थियों का
नामांकन किया गया
इनमें से 5 ने
आईईईए परिसर में



दिनांक 14 मई 2015 को हुई प्रयोगात्मक परीक्षा में भाग लिया। यह परीक्षा श्री मुरारीलाल शर्मा और श्री जयभगवान द्वारा ली गई जिसकी आवार्ड शीट उसी दिन राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान, नोएडा में जमा करा दी गई। विदित है कि संघ द्वारा नामांकित नौवें बैच के ये छात्र राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय कुतुब रोड, सदर बाजार, दिल्ली में लिखित परीक्षा पूर्व में ही दे चुके हैं।

– जयभगवान

श्रमिक दिवस पर परिचर्चा

जन शिक्षण संस्थान उमरिया
द्वारा 1 मई 2015 श्रमिक दिवस
के अवसर पर आदिवासी बाहुल्य
ग्राम मलियागुड़ा पाली में एक
श्रमिक-परिचर्चा का आयोजन
किया गया जिसमें मजदूर हित,



श्रमिक अधिकार, श्रमिक कानून एवं अधिनियम,
प्रधानमंत्री जन-धन योजना, महात्मा गांधी
राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, पंच
परमेश्वर योजना, जल संरक्षण, वृक्षारोपण,
महिला साक्षरता, स्वास्थ्य एवं स्वरोजगार संबंधी
विविध तथ्यों पर चर्चा की गई। इस चर्चा में
प्रतिभागियों के अतिरिक्त जन शिक्षण संस्थान



के निदेशक श्री राहुल देव सिंह, कार्यक्रम अधिकारी श्री ईश्वरदीन राय, सहायक
कार्यक्रम अधिकारी श्री नरेश प्रसाद यादव तथा स्थानीय ग्राम लोक शिक्षा समिति के
अध्यक्ष ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस परिचर्चा में संस्थान के समस्त स्टाफ व ग्राम लोक शिक्षा समिति के अध्यक्ष
तथा प्रेरक सहित भारी संख्या में नवसाक्षर महिलाएं उपस्थित हुईं। चर्चा के अंत में
जेएसएस के कार्यक्रम प्रभारी मो. इरफान मंसूरी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

– ईश्वरदीन राय
कार्यक्रम अधिकारी, जेएसएस, उमरिया

61st All India Adult Education Conference, Gandhigram, Tamil Nadu

REGISTRATION FORM

Name	
Age and Date of Birth	
Complete Postal Address with pin code (Please give in capital letters)	
Office:	
Residence:	
Whether you require accommodation (Please tick the relevent one)	<input type="checkbox"/> Yes <input type="checkbox"/> No
Telephone Numbers	STD Code:
	Office:
	Residence:
	Fax No.:
	Mobile:
	e-mail:
Date of arrival at Gandhigram	
Date of departure from Gandhigram	
Date:	Signature

REGISTRATION FORM FOR
61st All India Adult Education Conference, Gandhigram, Tamil Nadu

World Book Day observed

SRC, Rayagada

The State Resource Centre, Rayagada, Odisha in association with Agragamee, BGVS conducted a one day workshop at Bhubaneswar on April 23, 2015 on the occasion of World Book Day in which eminent



writers from all over Odisha attended including Shri Aurobindo Behera, Ms. Vidhya Das, Shri Digamber Satapathy, Dr. Krutibas Nayak and Shri Krupasagar Sahu. Speaking on this occasion well know writer

Shri Jitendra Narayan Das (Das Benhur) said that there is an urgent need to revive the prestige of language, culture and arts to mainstream the people for better livelihood, particularly the less and neo-literates. Even after the onslaught of attractive electronic media, books still occupy the place of pride as anything written is a permanent record and cannot be erased that easily.

Shri Achyut Das, Director, Agragamee said that books are important as knowledge is transmitted from one generation to another as it is in a written form. He said that the writings of Gurudev Rabindranath Tagore are having value beyond time and even after so many years they are available for the generations to read.

The workshop was presided over by famous Oriya writers Dr. Dinanath Pathy.

एस.आर.सी. छत्तीसगढ़

राज्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़ ने विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर दो दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया। दिनांक



23-24 अप्रैल 2015 को एस.ओ.एस. बालग्राम माना, रायपुर में आयोजित इस कार्यक्रम में आमंत्रित वक्ताओं एवं प्रतिभागियों द्वारा मुख्यरूप से 'शिक्षा का महत्व' तथा 'परिवार में महिलाओं की नेतृत्व क्षमता विकास' पर विचार व्यक्त किया गया। वक्ताओं में प्रमुखरूप से श्री तुहिन देब, निदेशक, श्रीमती शबाना आजमी, वरिष्ठ कार्यक्रम समन्वयक, श्रीमती चन्द्रिका कौशल, कार्यक्रम सहायक, श्रीमती सोनम एवं श्री विनोद सिंह, कार्यक्रम समन्वयक शामिल थे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कुसुम पांडे, समन्वयक, एस.ओ. एस. बालग्राम माना, रायपुर ने किया। इस कार्यक्रम में अभनपुर विकासखण्ड के ग्राम पंचायत बकतरा और झांकी में सक्रिय 10 स्वयं सहायता समूहों से आये 120 महिलाओं ने भाग लिया।

— तुहिन देब
निदेशक, रा.स.के

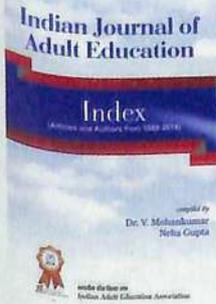
Index Containing Articles and Authors Published in IJAE has been brought out

The Indian Journal of Adult Education was first published in 1939 and is now 75 years old. This journal is a classified one in the field of adult and lifelong learning and is

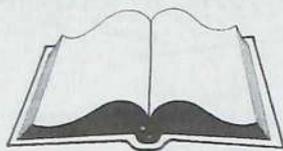
of education and development fields like agriculture, extension, health and family welfare.

As part of Platinum Jubilee celebration of Indian Adult Education Association and also the journal completing 75 years of publication the Index is brought out containing articles published in the journal alongwith the names of authors from the year 1989 to 2014. Already one such Index was published by the Association in 1990 when the journal completed 50 years of its publication which covered the articles and authors from 1939 to 1988.

This Index will be of great use to all those who wish to search the information regarding the articles for use in the research work and writing papers. This would be uploaded in the website of the Association iaea-india.org which can be referred by anyone in India and abroad. However, those who are interested to purchase the hard copy can do so by remitting Rs.200/- through Demand Draft drawn in favour of Indian Adult Education Association and payable at New Delhi. For those living out of country the price of Index is US\$ 10.



popular among the academia as any article/paper published in this journal is counted for career advancement. This journal is also popular as it carries the articles/papers related to all sectors



Lamichhane, Kamal. **Disability, Education and Employment in Developing Countries From Charity to Investment.** New Delhi, Cambridge University Press, 2015: 286 p.

This book tells the importance of human capital of persons with disabilities and demands the paradigm shift from charity into investment approach. Society in general believes that people with disabilities cannot benefit from education, cannot participate in the labour market and cannot be contributing members to families and countries. To invalidate such assumptions, this book describes how education in particular helps make persons with disabilities achieve economic independence and social inclusion. In this book detailed analyses of returns to the investment in education and nexus between disability, education, employability and occupational options are discussed. Other chapters describe disability and poverty followed by the discussion of barriers behind why persons with disabilities are unable to obtain education despite the significantly higher returns.

Ovichegan, Samson K. **Faces of Discrimination in Higher Education in India: Quota policy, social justice and the Dalits.** Routledge, 2015: 204 p.

This book clarify the experiences of a set of students and faculty who are members of the Dalit caste – commonly known as the 'untouchables' – and are relatively 'successful' in that they attend or are academics at a prestigious university. The book provides a background to the study, exploring the role of caste and its enduring influence on social

relations in all aspects of life. The book also contains an account of the current experiences of Dalit students and faculty in one elite university setting – the University of Shah Jahan (pseudonym). Drawing on a set of in-depth semi-structured interviews, the empirical study explores the perceptions of staff and students in relation to the Quota policy and their experiences of living, working and studying in this elite setting. The data chapters are organised to explore the faculty views. The experiences of students are then examined with a focus on the way in which their caste is still an everyday part of how they are sometimes 'othered'. Also, a focus on female Dalit experiences attempts to capture the interconnecting aspects of abject discrimination in their university life. *Faces of Discrimination in Higher Education in India* explores:

1. critical exploration of the Quota System policy and related social justice issues;
2. faculty voices: Quota, caste and discrimination;
3. students' perceptions and experiences of the Quota policy;
4. being a 'female Dalit' student;
5. positioning caste relations and the Quota policy: a critical analysis.

Ramakrishnan, N. and Arora, Venu. **Internal Migration: A Manual for Community Radio Stations.** New Delhi, United Nations Educational Scientific & Cultural Organization, 2015: 134p.

The publication is the training tool proposed by UNESCO and Ideosync to support community radio stations in their capacity and potential to broadcast migrant-sensitive programming. It highlights the main challenges faced by internal migrants

across the country, stress their rights and entitlements and showcase existing audio-programming that friendly to migrants.

Price, Gareth. **India's Aid to Education.** Unesco, 2015: 16p.

This paper was commissioned by the Education for All Global Monitoring Report as background information to assist in drafting the 2015 report.

India has provided assistance to other countries, particularly in South Asia, since the 1950s. In 1964 India established the Indian Technical and Economic Cooperation Programme (ITEC) a key element of which involves civilian and defence training for nominees from other countries. Under ITEC, along with two parallel programmes, India offers assistance to 161 countries. In the last decade, India's assistance has increased significantly, notably through the use of Lines of Credit which enable Indian companies to provide goods which are appropriate and affordable. India does not describe this as assistance – rather as South-South cooperation. India rarely proscribes the type of assistance and instead responds to requests from other countries. Education and training is an important feature of India's development assistance, though Indian assistance has generally focused on areas in which it is relatively stronger – tertiary education, vocational training and utilizing its IT skills, rather than primary or secondary education – although it helped construct schools.

-Compiled by Neha Gupta

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,
23378436, 43489048

Editor: Dr. Madan Singh
E-mail: iaeadelhi@gmail.com Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.6

Re. 1 per copy

June 2015



Indian Adult Education Association

Consultative meeting on Saakshar Bharat



Mission Authority on the initiatives taken by the government to mitigate illiteracy and the achievements made by Saakshar Bharat. After a brief intervention by the Secretary, she called the participants one by one to give their opinion on the

Shri S. C. Khuntia is Secretary (SE&L)

Shri Subash Chandra Khuntia, 1981 batch IAS officer of Karnataka cadre has taken over as Secretary, Department of School Education and Literacy, Ministry of Human Resource Development, Govt. of India on June 15, 2015. In his long professional career he



has served in different departments both in his cadre and central government including the one in the Department of School Education and Literacy as Joint Secretary from 28.11.2005 to 26.4.2011. Before joining the post of Secretary he was Special Secretary and Financial Advisor in the Ministry of Petroleum and Natural Gas.

He has three Post-Graduate Degrees in Physics, Economics and Sociology Political Science Computer Technology and Doctorate in Economics.

A consultative meeting was organized by National Literacy Mission Authority on May 29, 2015 at Vigyan Bhawan Annexe, New Delhi to review the past performance of Saakshar Bharat and to discuss strategies for effective and result oriented implementation. The meeting was presided over by Ms. Vrinda Sarup, Secretary, Department of School Education and Literacy and attended by a number of educational administrators, professionals, national and international experts in the area of adult education, subject specialists, officers of Ministry and Directorate of Adult Education which included Dr.L.Mishra, Shri Abhimanyu Singh, Shri Amod K. Kanth, Prof. S.Y. Shah, Prof. Nayana Tara, Prof. Vandana Chakrabarti, Dr.Nasreen Rustomfram, Shri Shivakumarappa, Dr.A.Mathew and Dr.V.Mohankumar.

The meeting started with a presentation made by Shri Y.S.K.Seshu Kumar, Joint Secretary (Adult Education) & Director General, National Literacy

implementation of literacy programme and suggestions for improvement.

The second session in the afternoon was conducted by Dr.L.Mishra, former Secretary to Govt. of India, M/o Labour whose observations, point-wise on the background paper was circulated to all in the

meeting. In this session the participants gave their opinion on the future strategies to be adopted in Saakshar Bharat programmes.

Overall the consultative meeting held was turned out to be a useful and productive one.

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्तिनगर, दिल्ली

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा कीर्तिनगर, दिल्ली में संचालित स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में स्थानीय लोगों को सूचित करने तथा महिलाओं को विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराने का एक प्रकल्प है। मई-जून में इस प्रकल्प के अर्न्तगत निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित किए गए:

भट्टी, आंगनवाड़ी केन्द्र में पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठकों का आयोजन किया गया जिनमें स्थानीय समुदाय के क्रमशः 35 और 32 युवाओं ने भाग लिया। संदर्भ व्यक्ति के तौर पर कार्यक्रम अधिकारी श्री शिवप्रताप एवं कम्युनिटी एवं एस.एच. जी. मोबिलाइजर श्री हरीश और श्रीमती मीना राना उपस्थित थीं।

इस अवसर पर संदर्भ व्यक्तियों ने उपस्थित नवयुवकों को हाथ धोने के दस पदों का व्यावहारिक ज्ञान तथा उपयोगिता के बारे में गहन चर्चा की तथा व्यक्तिगत स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने के लिए युवाओं को जागरूक किया।

पर इस समूह को चार भागों में विभाजित कर स्वच्छता से संबंधित अलग-अलग प्रस्तुतीकरण करवाया गया। जिसमें व्यक्तिगत स्वच्छता, घर और बाहर की सफाई तथा हाथ धुलाने का अभ्यास किया गया ताकि यह समूह आगे यह प्रशिक्षण जारी रखे। समूह को सेहत का पैगाम पुस्तक के कुछ अंश भी वितरित किए गए।

पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक



गत दिनांक 16 मई 2015 तथा 6 जून 2015 को दो अलग-अलग स्थानों यथा वाधवा कैंप तथा चूना

पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण शिविर



दिनांक 23 मई 2015 को पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण का आयोजन जीआरसी परिसर में 'प्रेरणा' समूह के साथ किया गया। सर्वप्रथम पिछले प्रशिक्षण की प्रतिपुष्टि ली गई। जिससे पता चला कि समूह द्वारा पिछले प्रशिक्षण में बताए गए सभी मुद्दों पर ध्यान दिया है। प्रशिक्षण के बी-स्तर

ओपीडी



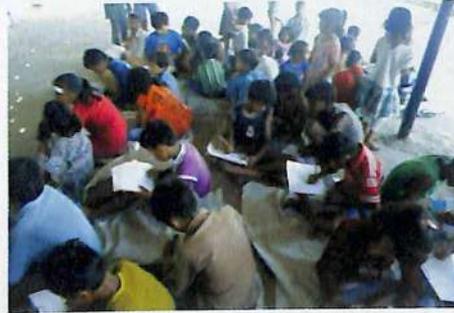
18 मई 2015 को 5/35, बस्ती विकास केन्द्र में एक ओपीडी आयोजित की गयी जिसमें महिला रोग विशेषज्ञ महिला रोग विशेषज्ञ डा. सुरजीत गुप्ता द्वारा 60 मरीजों जिनमें 31 महिलाओं, चार पुरुष तथा 25 बच्चों की स्वास्थ्य जांच की। गंभीर रूप से पीड़ित दो मरीजों को बड़े अस्पताल के लिए रेफर भी किया। बच्चों में बदलते मौसम के साथ आने वाले स्वास्थ्य संबंधी विकारों की चर्चा की गई तथा गर्मियों के बच्चों के खान-पान पर विशेष ध्यान रखने की सलाह भी उपस्थित माताओं को दी डाक्टर गुप्ता द्वारा दी गई।

इसी प्रकार की दूसरी ओपीडी गत 1 जून 2015 को आयोजित की गयी जिसमें डा. सुरजीत गुप्ता



द्वारा कुल 53 लोगों की स्वास्थ्य जांच की गई। जिसमें 37 महिलाएं 10 बच्चे तथा 6 पुरुष तथा आरटीआई/एसटीआई से 6 व्यक्ति शामिल थे। एक व्यक्ति को अस्पताल दिखाने के लिए रेफर भी किया गया और उपस्थित लोगों में कुपोषित महिलाओं को पोषाहार शिविर में भाग लेने के लिए भी प्रेरित किया।

दोनों ही ओपीडी में फार्मसिस्ट श्री ललित कुमार चोपड़ा ने डॉक्टर द्वारा निर्धारित दवाईयां वितरित की।



कार्यक्रम का आयोजन सुबह 11 बजे से सायं 4 बजे तक किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम को तीन सत्रों में विभाजित किया गया। सर्वप्रथम जागरूकता रैली चूना भट्टी से बुद्ध मन्दिर, हरिजन कैम्प, कमला नेहरू कैम्प वाघवा कैम्प, हरिजन बस्ती से होते हुए वापिस चूना भट्टी में संत निरंकारी सत्संग स्थल पर आ गई। इसमें समुदाय की महिलाओं, पुरुषों तथा बच्चों के अलावा एनएफई के बच्चे, महिलाएं, वाश कार्यकर्ता तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी भागीदारी की। रैली के दौरान पेम्फलेट वितरण तथा जागरूकता उत्पन्न करने के लिए पर्यावरण स्लोगन जैसे पेड़ों से है वायु, वायु से है आयु, विश्व धरा का गहना है, हम सबका यही कहना है, भी बोले गए। इसके बाद कला प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें 35 बच्चों ने प्रतिभाग किया।

दूसरे सत्र में प्रगति, राधा तथा संगम स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं की उपस्थिति में आयोजित किया गया। इस अवसर पर महिलाओं द्वारा वृक्षारोपण किया गया तथा रोपित वृक्षों की जिम्मेदारी भी तीनों समूहों ने आपस में बांटी ताकि वृक्ष का ध्यान शिशु के समान रखा जा सके।

तीसरा सत्र बस्ती विकास केंद्र में निरंतर आने वाली महिलाओं की उपस्थिति में आयोजित किया गया। जिसमें पर्यावरण दिवस की चर्चा के साथ-साथ इस बात की भी चर्चा की गई कि किस प्रकार हम सब मिलकर पर्यावरण को विभिन्न

प्रदूषणों से बचा सकते हैं। कार्यक्रम का समापन इस शपथ के साथ किया गया कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने का हर संभव प्रयास सभी के द्वारा निश्चित तौर पर किया जाए।

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यशाला



गत 22 मई को जीआरसी परिसर में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका मुख्य प्रयोजन था कि जीआरसी में प्रशिक्षण ले रही महिलाओं को प्रशिक्षण के साथ साथ स्वास्थ्य कार्यकर्ता बनकर समाज सेवा के साथ रोजगार करना। संदर्भ व्यक्ति के रूप में मौजूद श्री भानू जो कि श्राफ आई हास्पिटल में मैनेजर के रूप में कार्यरत हैं, ने बताया चयनित छात्राओं को 10 दिन का स्वास्थ्य जांच प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिसमें नाक, कान, गला आदि की जांच जापानी मशीनों द्वारा करना सिखाया जाएगा। जांच के पश्चात चुने गए मरीजों को श्राफ अस्पताल में रेफर किया जा सकेगा। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद ये महिलाएं 10-12 हजार रुपये मासिक कमा सकेंगी। कार्यशाला के अन्त में 15 महिलाओं की काउन्सिलिंग की गई तथा उसमें से 9 सदस्यों का प्रशिक्षण हेतु चयन किया गया।

कानूनी जागरूकता शिविर

घरेलू हिंसा तथा महिलाओं के साथ छेड़खानी के विषय पर कानूनी जागरूकता उत्पन्न करने के लिए दिनांक 20 मई को जागरूकता शिविर का आयोजन 5/35 बस्ती विकास केन्द्र में किया गया। इसमें कुल 35 महिलाओं ने सहभाग किया तथा घरेलू

विश्व पर्यावरण दिवस (विशेष दिवस)

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर सन् 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्वीडन में विश्व भर के देशों का पहला पर्यावरण दिवस आयोजित किया इसमें 119 देशों ने भाग लिया तथा एक ही पृथ्वी का सिद्धांत मान्य किया। इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण संघ (UNEP) का जन्म हुआ तथा प्रतिवर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस आयोजित करके नागरिकों को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने का निश्चय किया गया। प्रकृति को समर्पित दुनिया भर में मनाया जाने वाला यह सबसे विशाल उत्सव है। प्राकृतिक पर्यावरण को अपने दैनिक जीवन में स्मरण में रखने के इस प्रयास को आगे बढ़ाने हेतु जीआरसी द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया जिसमें कीर्तिनगर से 164 लोगों ने भागीदारी की।





ने उपस्थित 45 महिलाओं को वृद्धावस्था में सरकार की ओर से मिलने वाली सुविधाओं जैसे वृद्धावस्था पेंशन, मनोरंजन केन्द्र तथा वृद्धावस्था घर आदि के विषय में विस्तार से जानकारी दी। अंत में महिलाओं द्वारा पूछे गए संबंधित प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए।

हिंसा होने पर कानूनी क्या कदम उठाए जा सकते हैं इसकी जानकारी अधिवक्ता श्रीमती रागिनी एस. राजन से प्राप्त की। महिलाओं के लिए विशेष रूप से चलाई जा रहे हेल्प लाइन नं 181 तथा 1098 की भी विस्तृत जानकारी दी गई। इस संबंध में अन्य किसी भी सहायता के लिए जीआरसी के कार्यकर्ताओं से सहायता प्राप्त की जा सकती है।

इसी क्रम में दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जागरूकता शिविर 26 मई को कमला नेहरू कैम्प तथा हनुमान मंदिर में आयोजित किये गये जिसमें अधिवक्ता सुश्री कंचन कुमारी (तीस हजारी कोर्ट)

पोषाहार शिविर

21 मई 2015 को 5/35 कीर्तिनगर में पोषाहार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 36 महिलाएं उपस्थित थीं। 16 से 25 साल की महिलाओं को लक्षित करते हुए इस बार का विषय विटामिन एवं

आयरन रखा गया। पोषाहार विशेषज्ञ श्रीमती वीना जैन द्वारा किशोरावस्था में किन-किन पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है तथा खान-पान में किन तत्वों को शामिल करके हम निरोग रह सकते हैं इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी। अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए खाने में हरी पत्तेदार सब्जियां, मौसमी फल आदि को अवश्य शामिल करना चाहिए। इस अवसर पर फलों का कस्टर्ड तथा आम का पन्ना बनाना भी सिखाया गया। गर्मी के मौसम में आम का पन्ना शरीर का ठन्डा रखने में मदद करता है।

Announcement

All India Adult Education Conference at Gandhigram

The Indian Adult Education Association is organizing 61st All India Adult Education Conference at Gandhigram, Tamil Nadu from December 28-30, 2015 in collaboration with Gandhigram Rural Institute – Deemed University

The theme of the conference is "Lifelong Learning and Skill Development" and the sub-themes are:

1. Vocational Skill Training for Women Empowerment
2. Skill Development Training for Youths
3. Importance of Skill Training in 'Make in India' Programme
4. Traditional Vocational Crafts - Need for Protection and Revival
5. Vocational Training in

Unorganized Sector – Need for Standardization

6. National Skill Qualification Framework – A Step towards Quality Assurance
7. Vocational Skill Development Training and Economic Development
8. Vocational Education: Role of Institutions of Higher Learning

All are cordially invited to attend the conference.

The delegates attending the conference may remit the registration fee of Rs.1000/- on or before October 31, 2015 towards boarding and lodging charges through a separate Demand Draft drawn in favour of "Indian Adult Education Association" payable at

New Delhi. In view of limited accommodation available delegates registered well in advance alone will be given priority in allotment.

For local participants the Registration fee will be Rs.500/- and they will be provided only lunch free of cost.

The registration fee will be Rs.1500/- for those who register their names after October 31, 2015.

The delegates are requested to confirm their participation by e-mail: iaeadelhi@gmail.com and submit the Registration Form by post to General Secretary, Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 alongwith the Demand

Draft. The format of Registration form is given below.

Those who desire to present thematic papers in the conference may submit the Abstracts not

exceeding 500 words latest by October 31, 2015 through e-mail directoriaea@gmail.com. The full paper may be submitted (MS Word, Font- New Times Roman, Font Size

- 12, Spacing - one and half) by November 30, 2015.

(Dr.Madan Singh)
General Secretary, IAEA

61st All India Adult Education Conference, Gandhigram, Tamil Nadu

REGISTRATION FORM

Name	
Age and Date of Birth	
Complete Postal Address with pin code (Please give in capital letters)	
Office:	
Residence:	
Whether you require accommodation (Please tick the relevent one)	<input type="checkbox"/> Yes <input type="checkbox"/> No
Telephone Numbers	STD Code:
	Office:
	Residence:
	Fax No.:
	Mobile:
	e-mail:
Date of arrival at Gandhigram	
Date of departure from Gandhigram	
Date:	Signature

National Workshop on Women Rights

The Department of Political Science of Gobi Arts and Science College, Gobichettipalayam, Tamil Nadu in association with the Department of Social Work, Bharathiar University, Coimbatore is organizing a two day UGC sponsored National Workshop on "Women Rights in 21st Century - Myth and Reality" on July 20-21, 2015.

The organizers have invited papers on the theme and sub-themes from academicians, professional bodies, NGOs and research scholars. The full paper not exceeding 7 pages with not more than two authors, typed in A4 size paper, Times New Roman font and line spacing 1.5 can be sent to the organizers through e-mail: women21w@gmail.com alongwith an abstract.

For more information Dr.S.Saravanakumar, organizing Secretary can be contacted through the given e-mail.

A Review of the Progress of Adult Literacy – Global Scenario

Literacy expands peoples' choices, gives them more control over their lives, increases their ability to participate in society and enhances self esteem. It is a key to education that also opens the way to better health, improved employment opportunities and lower mortality. Literate parents are more likely to send their children to school; literate people are better able to access continuing education opportunities; and literate societies are better geared to meet pressing development challenges. International community has been taking serious view of the lack of education. Right to Education was articulated clearly in Article 26 of the Universal Declaration of Human Rights as early as 1948. Unesco has played a lead role in relentlessly affirming the vital importance of literacy for development and supporting country initiatives to expand adult learning. United Nations' Literacy Decade 2003-2012 stated that 'Literacy for all' is at the heart of basic education for all and that creating literate environments and societies is essential for achieving the goals of eradicating poverty, reducing child mortality, curb population growth, achieving gender equality and ensuring sustainable development, peace and democracy.

Six International
Conferences on Adult

Education (CONFINTEA) held at Elsinore in 1949, Montreal in 1960, Tokyo in 1972, Paris in 1985, Hamburg in 1997 and Belem in 2006 were organized to put adult literacy on the world education agenda more firmly. Belem Frame Work For Action (BFFA) reiterated the fundamental role of adult learning and education as laid down during the five international conferences on adult education since 1949 and unanimously undertook to take forward with a sense of urgency at an accelerated pace, the agenda of adult learning and education.

The World Education Forum which met in Dakar in 2000 adopted six 'Education For All' goals for holistic development of education including goal No. 4 of achieving a 50 Percent improvement in levels of adult literacy by 2015 especially for women, and equitable access to basic and continuing education for all adults. Since then, the EFA Global Monitoring Reports have monitored the progress of achieving these goals over the years. EFA Global Monitoring Report 2006 'Literacy For Life' indicated that the adult literacy rate for the world as a whole which was 75.4 percent in 1990 had moved up to 81.9 percent for 2000-2004 period and it was projected that it will go up to 85.8 percent by 2015. Number of adult illiterates which was 872 million in 1990 had declined to 771 million by

2000-2004. Share of female illiterates was 64 percent during 2000-2004. The 2015 Global Monitoring Report indicates that the adult literacy rate for the period 2005-2012 improved to 84 percent with male literacy rate of 89 percent and female literacy rate of 80 percent. It has been projected that the world adult literacy rate may go up to 86 percent by 2015 with male literacy rate of 90 percent and female literacy rate of 82 percent. Number of adult illiterates as per the estimates for 2005-2012 period was 781 million i.e. 10 million higher than the estimated 771 million for 2000-2004 (EFA GMR 2006). Number of adult illiterates by 2015 has now been estimated to go down to 751 million. Gender disparity in adult literacy rates is persisting as the female illiterates continue to form 64 percent of the total illiterates for 2005-2012 as well as those projected for 2015.

The Regions which are much lagging behind in adult literacy are Sub Sahara Africa, South and West Asia and Arab States. The following table brings out the regional disparity in adult literacy rates for the period 2005-2012 and those projected for 2015. It also indicates gender disparity in the adult literacy rates in different regions and the world as a whole.

Table - 1
Adult Literacy Profile of the World and different Regions 2005-2012 and 2015

Region	Adult Literacy Rate						No. of Adult Illiterates (in Million)			
	2005-12			2015 projected			2005-12		2015 Projected	
	Total	Male	Female	Total	Male	Female	Total	% Female	Total	% Female
World	84	89	80	86	90	82	780.68	64	751.41	64
Arab States	78	85	69	80	87	72	51.77	66	51.45	67
Central and East Europe	99	99	98	99	99	98	4.29	78	4.18	78
Central Asia	100	100	99	100	100	100	0.26	64	0.22	61
East Asia and the Pacific	95	97	93	96	98	94	88.07	70	73.85	70
Latin America and Carrabin	92	93	92	93	94	93	33.03	55	30.20	55
North America and Western Europe	Data not available									
South and West Asia	63	74	52	69	79	60	409.91	64	388.30	65
Sub Sahara Africa	59	68	50	63	71	55	186.90	61	197.00	61

Source: EFA Global Monitoring Report 2015

The above table indicates that while the two regions namely Central and Eastern Europe and Central Asia, would have reached the Universal Adult Literacy, another two regions namely East Asia and the Pacific and Latin America and the Carrabin are moving towards the goal of Universal Literacy. North America and Western Europe Region for which data is not available also falls in the category of higher adult literacy rates as most of the Countries of this region for which data is available have indicated adult literacy rates

between 91 to 99 percent. Arab States are estimated to have reached adult literacy level of 80 percent by 2015 which is 6 percentage points lower as compared to the world average of 86 percent. South and West Asia with adult literacy rate of 69 percent in 2015 and Sub Sahara Africa with merely 63 percent are estimated to be lagging behind by 17 and 23 percentage points respectively. The two regions namely South and West Asia (51.7 percent) and Sub-Sahara Africa (26.2 percent) would continue to account for over three

fourth of the total adult illiterates of the world.

According to the 2005-2012 estimates, 8 Countries having around 10 million or more adult illiterates each account for 61.4 percent of the total adult illiterate population of the world and have 479.33 million adult illiterates. These countries are India, China, Pakistan, Bangladesh, Egypt, Indonesia, Afghanistan and Iran as may be seen from the following table:

The largest share of the adult illiterates (36.6 percent) is in India

Adult Literacy Rate and Adult Illiterate Population (15 and over) by Country – 2005-2012

Country	Adult Literacy Rate	Adult illiterate Population (in million)	Share of World Total
India	63	285.52	36.6
China	95	53.88	6.9
Pakistan	55	49.23	6.3
Bangladesh	59	44.30	5.7
Egypt	74	14.59	1.9
Indonesia	93	12.32	1.6
Afghanistan	32	10.34	1.3
Iran	84	9.15	1.2
World	84	780.68	100.0

Source: EFA Global Monitoring Report -2015

followed by China (6.9 percent), Pakistan (6.3 percent) and Bangladesh (5.7 percent).

The rate of adult illiteracy which was 18 percent in 2000 is likely to have dropped to 14 percent in 2015 i.e. by about 23 percent. The target of halving the global illiteracy rate to around 9 percent proved to be a difficult/unachievable task. Only 17 out of 73 countries with literacy rate below 95 percent in 2000 halved their illiteracy rates. Adult literacy rate is projected to fall between 2000-2015 only by 13 percent in Sub-Sahara Africa, 26 percent in South and West Asia, 36

percent in Latin America and the Caribbean and 39 percent in the Arab States. However the target is projected to have been reached in Central and Eastern Europe, East Asia and the Pacific and Central Asia. Number of adult illiterates is projected to fall only marginally from 771 million in 2000 to 751 million in 2015. Number of adult illiterates is projected to slightly decrease in South and West Asia at 388 million and to increase by 26 percent in Sub-Sahara Africa at 197 million. Gender disparity in adult literacy rates has not improved much. Gender Parity Index is

estimated to have moved from 0.89 in 1995-2004 to 0.91 in 2005-2012. 64 percent of the adult illiterate population was female in 2000 and this percentage is projected to continue to be the same in 2015. The challenge before the international community in the post 2015 era is to bring the adult literacy rates of the Sub-Sahara Africa, South and West Asia and Arab States to the literacy level of the world as a whole.

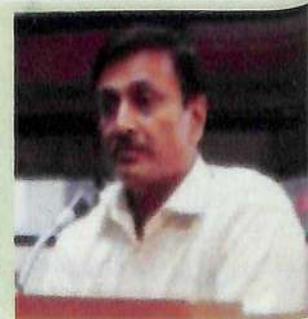
- Prem Chand
Senior Fellow, IIALE

Dr. C. B. Sharma is the Chairman of NIOS

Dr. Chandra B. Sharma has taken over as Chairman, National Institute of Open Schooling (NIOS), New Delhi. Before joining the post he was Professor of Education in School of Education at Indira Gandhi National Open University (IGNOU). He has vast experience in the

field of education and particularly in open learning.

He was a Commonwealth Scholarship holder and did Doctoral Degree in Education from the Hull University, UK. The thesis was on Multimedia Approaches to Teaching Literature.



Revision in the Annual Subscription of Journals

With effect from January 2016 the annual subscription of the two Journals published by Indian Adult Education Association has been revised as per the following:

Name of the Journal	For Life & Institutional Members	For others
Indian Journal of Adult Education	Rs.300/-	Rs.500/-
Proudh Shiksha	Rs.100/-	Rs.200/-

Monthly Monitoring Meeting



The monthly monitoring meeting was held on June 17, 2015 in which members of the staff of IAEA presented their plan of activities for the month of June before Shri K.C.Choudhary, President and Dr. Madan Singh, General Secretary. After each presentation discussion was held and suggestion for improvement given. Some of the suggestions include preparation of addresses for dispatch, regrouping of Life Members city-wise, dispatch of journal Proudh Shiksha before the end of the first month of the quarter, further upkeep of library and documentation centre by installing tinted glasses on the windows and clean maintenance of the office premises including placing of flower pots and maintenance of the same by a gardener.

Obituary



Shri K.G. Balakrishna Pillai, Gandhian, active Social Worker, Writer and former Registrar of Agriculture University passed away on June 1, 2015 at the age of 82. He was the Life Member of Indian Adult Education Association since 1997.

The Indian Adult Education Association conveys heartfelt condolences to the members of the bereaved family and prays for the departed soul to rest in peace.

International Day of Yoga



On December 11, 2014 The United Nations General Assembly declared June 21 as the International Day of Yoga which is the Summer Solstice and the date is the longest day of the year in the Northern Hemisphere and has special significance in many parts of the world. Yoga, a physical, mental and spiritual practice having its origin in India, aims to transform the body and mind.

The declaration of this day came after the Prime Minister Narendra Modi's call during his address in United Nations General Assembly on September 27, 2014 wherein he stated that "Yoga is an invaluable gift of India's ancient tradition. It embodies unity of mind and body; thought and action; restraint and fulfilment; harmony between man and nature; a holistic approach to health and well-being.

While the World countries have enthusiastically celebrated this day, India took special care to make it a grand success.

When people participated in Yoga at different states, in New Delhi it was held at Rajpath in which thousands of people participated including the Prime Minister of India, Shri Narendra Modi and the Chief Minister of NCT Delhi Shri Arvind Kejriwal.



Online Portal for Job Seekers Launched

The government of India has launched online portal for job seekers in Micro, Small and Medium Enterprises sector. The portal is www.eex.dcmsme.gov.in. It provides a platform for skilled hands to know about the employment opportunities and also enables the industries to find skilled manpower. Shortly this facility will be extended to service sector also.

प्रचार-प्रसार सामग्री निर्माण हेतु कार्यशाला



दिनांक 28 मई, 2015 को राज्य संसाधन केन्द्र, लखनऊ, उ.प्र. द्वारा ऑडियो-बिजुअल प्रचार-प्रसार सामग्री निर्माण हेतु कार्यनीति निर्धारण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य साक्षर भारत कार्यक्रम के अन्तर्गत बेसिक साक्षरता के प्रतिभागियों को जागरूक कर भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य की प्रतिपूर्ति हेतु उन्हें परीक्षा में सम्मिलित कराना था।

कार्यशाला में श्री एस.पी. रस्तोगी, निदेशक, इंडिया लिटरेसी बोर्ड, श्री राजेश कुमार बाजपेयी, निदेशक, राज्य संसाधन केन्द्र के अलावा राज्य संसाधन केन्द्र के कई विभागों के अधिकारीगण, रचनाकार, विषय विशेषज्ञ, लखनऊ दूरदर्शन के कार्यक्रम अधिकारी, मीडिया क्षेत्र के विषय-विशेषज्ञ और जर्नलिस्टों ने भाग लिया। कार्यशाला में उपस्थित सभी व्यक्तियों ने प्रचार-प्रसार सामग्री निर्माण हेतु अपने-अपने सुझाव दिये।

— राजेश कुमार बाजपेयी
निदेशक, रा.सं.के, उ.प्र.

‘राज सितारे सजा रही है’

कल की आँधी उड़ा ले गई
सुख सपनों को बहा ले गई
घनीभूत घन घिर मन आए
पीड़ा अन्तर की अकुलाए

दीपक लौ से प्रणय रचाकर
आलिंगन करने को आतुर
शलभ हुआ मदहोश बहुत है
अन्त सदा जिसका निष्ठुर है

तृषित हृदय की प्यास बढ़ी है
आँखों से बरसात हुई है

मृत्यु से भय लेश नहीं है
चरम प्रीत की रीत यहीं है

पथरीले पथ पर पग बढ़ते
पैरों में छाले थे छिलते
कठिन कँटीली राह बिंधी है
संघर्षों की रात घनी है

अँधियारी चादर उतारकर
हुआ प्रभासित नभ, शशि पाकर
स्वेद बिन्दु तन ज्यों ढलकाए
पुष्पों की पाँखुर नहलाए

तन पर तो आघात बहुत है
मन में पर संकल्प अडिग है

धवल चाँदनी का आँचल है
रात सितारे सजा रही है

— कुसुम वीर

प्रो. हंसराज पाल राज्य पुरस्कार से सम्मानित

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के पूर्व संकायाध्यक्ष; शिक्षाविद एवं आचार्य प्रो. हंसराज पाल को भोपाल में आयोजित एक समारोह में माननीय मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने रामजी महाजन पिछड़ावर्ग सेवा, राज्य पुरस्कार 2014 से अलंकृत किया। पुरस्कार में उन्हें स्मृति चिन्ह, प्रमाण-पत्र तथा एक लाख रुपये का चेक प्रदान किया गया। प्रो. पाल को पूर्व में म. प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के डॉ. शंकरदयाल शर्मा सृजन सम्मान 2007 एवं राजीव गांधी राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार-2011 हेतु माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।



प्रो. पाल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के आजीवन सदस्य हैं।

World Environment Day

World Environment Day is celebrated every year on 5th June to raise global awareness to take positive environmental action to protect nature and the planet Earth. The well-being of humanity, the environment, and the functioning of the economy, ultimately depend upon the responsible management of the planet's natural resources. Evidence is building that people are consuming far more natural resources than what the planet can sustainably provide. Many of the Earth's ecosystems are nearing critical tipping points of depletion or irreversible change, pushed by high population growth and economic development. By 2050, if current consumption and production patterns remain the same and with a rising population expected to reach 9.6 billion, we will need three planets to sustain our ways of living and consumption.

Hence, the theme for 2015 World Environment Day was **Seven Billion Dreams. One Planet. Consume with Care.** Living within planetary boundaries is the most promising strategy for ensuring a healthy future. Human prosperity need not cost the earth. Living sustainably is about doing more and better with less. It is also about knowing rising rates of natural resource use and the environmental impacts that occur is not a necessary by-product of economic growth.

JSS, Hoshangabd



The World Environment Day was celebrated by the Director, staff, resource persons and trainees of Jan Shikshan Sansthan, Hoshangabad, Madhya Pradesh by planting of saplings in the campus of the sansthan.

जे.एस.एस, अम्बेडकर नगर

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जन शिक्षण संस्थान, अम्बेडकर नगर द्वारा संचालित केन्द्र रगड़गंज के प्रांगण में वृक्षारोपण एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के कार्यकर्ता, प्रशिक्षणार्थी एवं समाज सेवी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।



इस अवसर पर संस्थान के निदेशक श्री अरुण कुमार शाही ने पर्यावरण संरक्षण के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उपस्थित लोगों से अपील की कि घर में बच्चों के जन्म के अवसर पर एक वृक्ष अवश्य लगायें और पर्यावरण सुरक्षित रखने में अपना सहयोग दें। वृक्षारोपण के समय समाजसेवी श्री सन्तोष कुमार वर्मा भी उपस्थित थे।

जे.एस.एस, उमरिया

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में जन शिक्षण संस्थान, उमरिया द्वारा ग्राम पंचायत धतूरा में एक जागरूकता रैली का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में महिलाएं उपस्थित हुईं। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक राहुल देव सिंह और कार्यक्रम अधिकारी ईश्वरदीन राय ने उपस्थित प्रतिभागियों को पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, महिला साक्षरता, स्वास्थ्य एवं स्वरोजगार



विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षों की बहुत महत्ता है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वृक्षारोपण भी किया गया।

— ईश्वरदीन राय

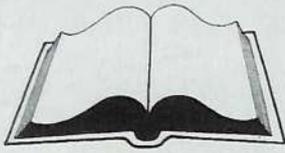
जन शिक्षण संस्थान उमरिया म.प्र.

Ms. Sandy Morrison is elected as President ICAE



Ms. Sandy Morrison, Associate Professor and Associate Dean, School of Maori and Pacific Development, the University of Waikato, Hamilton, New Zealand has been elected as the President of the International Council for Adult Education (ICAE). The announcement regarding this was made at the ICAE World Assembly held at Montreal, Canada from June 11-14, 2015.

The Indian Adult Education Association wishes her all the best in the new endeavour.



Goyal, Omita. **Interrogating Women's Leadership and Empowerment.** Delhi Sage, 2014: 296 p.

This volume seeks to understand what empowerment really means to women today. It examines the situation of women in, and their contribution to, politics, business, education, social and economic development, the women's movement, health, law, insurgency and the arts.

The volume analyses certain key issues of contemporary discourse including:

- Ownership of one's body and freedom of choice
- Redefinition of empowerment and leadership and how far we have achieved it
- Importance of equal access to education, employment and health
- Political participation and decision making, and
- Dichotomy between marginalization of women on grounds of caste, class and religion in a society with changing laws on women's rights

Haijun, Zeng ed. **Approach of ICT in Education for Rural Development: Good Practices from Developing Countries.** Delhi, Sage, 2015: 624 p.

This book contains policy recommendations to help drive and stimulate innovation and creativity through ICT use and reduce the digital divide and social exclusion in rural areas. The cases included in this book typically represent the ICT educational applications in China and developing countries and examine how current policies can

support the overall development progress. It shares good practices and focuses on spreading them better among three targeted groups of people: young people in rural areas, teachers at rural primary and high schools, and "left-behind" rural women.

This book is a research result of the programme "The Information and Communication Technology (ICT) in Education for Rural Development (iERD)" that was initiated in 2012 by the UNESCO International Research and Training Centre for Rural Education (INRULED) along with its three other partners.

Ministry of Statistics and Programme Implementation. **Manual on Health Statistics in India.** New Delhi, Central Statistical Office, 2015: 278p.

The present volume on Manual on Health Statistics for India is to gain insight for the preparation of Manual on Health Statistics for SAARC countries in the next stage. The manual on Health Statistics for India is shared with other SAARC Countries to show the framework which was adopted for India while bringing out various chapters in Manual on Health Statistics.

Apart from administrative data on health related parameters, it also covers measures, estimates and counts derived from survey and census results.

Unesco. **Status of International Students in India for Higher Education.** New Delhi, Unesco, 2014: 102p.

This report on the status of higher education for foreign students in India explores the aspect of student

R.N.I. No. 53577 /1991

Postal Regn. No. DL(C).01/1160/2013-2015

Published on June 26, 2015

mobility in and out of India. The report draws on the data collected under the All India Survey on Higher Education (AISHE). The aim of this report is to gauge the attractiveness of India as a destination for higher education.

According to AISHE, in 2011-12 India was home to 33156 foreign students worldwide that spread over most of the States/UTs of India. Among these, Karnataka was the most popular destination for these students with the highest enrolments in Nursing and Business Management. The report takes an in-depth view of popularity of subjects among foreign students. The report also has a gender component with an aim to discern female enrolment at the higher level of education

Wang, Li. **A Comparative Study on the Role of Universities Transformation of Knowledge and Skills in Rural Areas.** Delhi, Sage, 2015: 320 p.

This book is an important investigation of the roles that a university plays in sustainable rural development. The book engages in a comparative study of two universities, located in China and Australia. The book examines that in spite of being in different locations their work and roles are no less significant in terms of national development.

The book poses the question 'What is the role of universities in bringing about knowledge transformation in rural communities?'

-Compiled by Neha Gupta

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,
23378436, 43489048.

Editor: Dr. Madan Singh

E-mail: iaeadelhi@gmail.com Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.7

Re. 1 per copy

July 2015



Indian Adult Education Association

All India Adult Education Conference at Gandhigram

The Indian Adult Education Association is organizing 61st All India Adult Education Conference at Gandhigram, Tamil Nadu from December 28-30, 2015 in collaboration with Gandhigram Rural Institute - Deemed University (GRI). The theme of the conference is "Lifelong Learning and Skill Development" and sub-themes are - Vocational Skill Training for Women Empowerment, Skill Development Training for Youths, Importance of Skill Training in 'Make in India' Programme, Traditional Vocational Crafts - Need for Protection and Revival, Vocational Training in Unorganized Sector - Need for Standardization, National Skill Qualification Framework - A Step towards Quality Assurance, Vocational Skill Development Training and Economic Development and Vocational Education: Role of Institutions of Higher Learning.

All are cordially invited to attend the conference.

The information regarding registration fee, registration form and procedure to submit papers (for those who wish to read in the conference) may kindly be seen in IAEA Newsletters published in the last three months.



(Estd : 1939)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ Indian Adult Education Association

17-B, Shafiq Memorial, Indraprastha Estate, New Delhi-110002 (INDIA)
Phone : 23379306, 23378436, 23379282 Tele/Fax : 23378206
Grams : ADEDA550, E-mail : iaeedelhi@gmail.com
Web : www.iaea-india.org, www.iaele.org

F.No.IAEA/A&F/3-6/2014-16

June 16, 2015

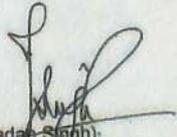
NOTICE

Sir/Madam,

The next meeting of the General Body of Indian Adult Education Association will be held at Gandhigram Rural Institute - Deemed University, Gandhigram, Dindigul District, Tamil Nadu on December 29, 2015 at 9:30 a.m. to consider the following agenda items:

1. Confirmation of the minutes of last meeting of the General Body held on January 11, 2014 at Udaipur.
2. Adoption of the Annual Report of the Association for the year 2014 and 2015.
3. Adoption of Audited Statement of Accounts for the year 2013-14 and 2014-15.
4. Appointment of Auditors for the year 2016-17 and 2017-18.
5. To consider the proposed amendments in the constitution (Rules and Regulations of IAEA).
6. Any other matter with the permission of the chair.

You are requested to make it convenient to attend the meeting.


(Dr. Madan Singh)
General Secretary

All the members of the General Body of IAEA.

Face to Face: An Interview with Prof. Vandana Chakrabarti

On Research and Evaluation in Adult Education



Professor Vandana Chakrabarti is the Pro Vice Chancellor of SNDT Women's University, Mumbai. She has a long teaching experience in SNDT Women's University both in the Department of Social Work and in the Department of Continuing and Adult Education and Extension Work. During her able leadership two post-graduate programmes, M.A. in Non-formal Education and Development and Master of Social Work were started in the University and she was instrumental in carrying out a large number of community based courses and training programmes in collaboration with other departments, colleges and NGOs wherein about 6000 learners, mostly women, ranging from neo-literates to professionals were trained every year. Under her headship her department received the NLM-UNESCO award for excellence in Adult Continuing Education. In the beginning of her academic career she also taught for a short period in Bharathidasan University, Tiruchirappalli, Tamil Nadu.

Professor Vandana, who is a recipient of Fulbright fellowship and B.D. Karve award, had her education in West Bengal, Kerala and Maharashtra. As she was a meritorious student she got National Merit scholarship for M.A. and UGC fellowship for Ph.D. She was also a gold medalist from the University of Kerala. Her research leading to Ph.D was in Social Work from the Tata Institute of Social Sciences, Mumbai.

Prof. Vandana has several publications to her credit and has carried out a large number of research projects for national and international organizations.

She has gained vast field experience not only through the departmental outreach activities but also due to a large number of evaluation studies conducted on the achievement/performance of literacy programmes, vocational skill development training programmes conducted by Jan Shikshan Sansthas and literacy related academic activities carried out by the State Resource Centres. Hence, she has become one of the top experts/subject specialists in the field of adult education/lifelong learning with a lot of combined experience of both theory and practice.

Research and evaluation are not only important from the point of view of academic inputs but also an integral part of any programme and adult education is no exemption. Eventhough, a number of evaluation studies have been conducted periodically, how much the outcome of such studies is used for improving/strengthening the programmes is a big question. Dr.Vandana being an evaluator and also member of a number of committees constituted by National Literacy Mission Authority and University Grants Commission, she was interviewed by Dr.V.Mohankumar, Director, Indian Adult Education Association.



Dr.V.Mohankumar: Good evening Prof. Vandana. I am sure you must be tired after a long working day.

Prof.Vandana Chakrabarti: Good evening Dr.Mohankumar. You are correct, it was a busy day all through but for adult education related discussion I do not feel tired as I like the subject and the field. So you can very well ask questions and I will try my level best to answer.

Dr.V.Mohankumar: Before going into the subject of research and evaluation, I would like to ask a personal question to you. From your profile I could find that you had your education in different states. Was it because of your father's postings?

Prof.Vandana Chakrabarti: Yes. My father was a

Merchant Navy officer and we lived in Kolkata where I completed my schooling. Then he worked with the Cochin Shipyard and I completed my graduation from Union Christian College, Aluva, a town of Kochi in the Ernakulam district of Kerala. I proceeded to Mumbai to study for my Masters' and Ph.D. in the Tata Institute of Social Sciences. After marriage, I joined my husband in Tiruchirappalli in Tamil Nadu. There I taught Social Work in Bharathidasan University.

Dr.V.Mohankumar: Staying and studying in different states gave an opportunity to you to learn the local languages and I am sure in that way you are really a nationalist.

Prof.Vandana Chakrabarti: Yes, it was because of exposure to different states, that I developed a love for languages and interest in different cultures. While Marathi is my mother tongue, I picked up Bangla and to some extent Malayalam and Tamil. Like most others, I learnt English and Hindi in school. Many people think that exposure to different states improves your tolerance of different cultures. But I think that is an under-statement. What really happens is that one develops deep and lasting friendships and that leads to better understanding and integration of cultures. One learns to appreciate their music, dance, cinema, food and so on. The weekly menu in my home includes items from all the states where I lived.

Dr.V.Mohankumar: Before going into the subject of research and evaluation, I would like to know how you have chosen the field of teaching as your professional career.

Prof.Vandana Chakrabarti: My mother was a teacher and a writer. I had a great regard for the teaching profession. But I always wanted to work for the people. Being a social work educator was my best bet. Later, when I shifted to Mumbai, I got an opportunity to be a part of the Department of Continuing and Adult Education and Extension Work of SNDT Women's University and I found my life's calling. Here for over two decades we have been networking with scores of institutions and civil society organizations and annually providing skill development training and awareness to over 6000 people, mostly women. While doing this I realized that we need to train manpower for this work and initiated the Masters' programme in Non-Formal Education and Development.

Dr.V.Mohankumar: What is your opinion about the place of research in adult education?

Prof.Vandana Chakrabarti: Adult Education is both an area of academic study and a field of practice.

Rigorous research enriches theory which is an integral part of every academic discipline. Research also has a very important role to play in improving field practice.

Dr.V.Mohankumar: In my long 40 years experience in the field community development/adult education I had the opportunity to go through a number of books on adult education based on the research studies conducted and I found most of them are about the projects/programmes implemented in the field. They only reveal the success or failure of the projects/programmes. Hence, quality is found to be a big gap in such studies. How can we improve this?

Prof.Vandana Chakrabarti: When the National Adult Education Programme was launched in 1978, universities also contributed their bit by encouraging youth in higher education to participate in Each One Teach One programme under the National Service Scheme. Subsequently, UGC started Departments of Adult Continuing Education and Extension Work in Universities. Apart from starting academic programmes, these departments were mandated to take-up community based adult education activity. Our own department in SNDT Women's University had 100 AE centres. We also conducted 14 Jana Shikshan Nilayams (Continuing Education Centres). To this day continuing education is provided annually to around 6000 learners, mostly women, who range from neo-literates to professionals. While some universities like SNDTWU do have Masters' programme, many departments focus mainly on extension work. This pre-occupation with literacy and field based extension programmes influence the kind of publications that are brought out. Adult educators were oriented more toward pragmatic aspects of programme development. Theoretical facts received far less attention.

For the abysmal literacy rate in our country to change, programmes had to be formulated quickly. Therefore both scholars and field practitioners devoted much of their attention to meeting immediate programmatic needs.

You have asked me how we can improve this situation. Well, today many departments have Masters' programme in Adult Education and the need for theory building to strengthen the academic discipline is felt by many. Research and theory building are prime foundational characteristics of any accepted discipline. Adult education is not an isolated entity. Its multidisciplinary orientation has to be understood. Accepting its linkages with society,

polity, economy, psychology and even history and anthropology, adult education has to be located in the broader context of social sciences.

In view of the above, the Masters' programme conducted by our department at SNDTWU is placed in the Faculty of Social Sciences.

Dr.V.Mohankumar: You may know that National Literacy Mission Authority has given a lot of thought to improve the quality of research in adult education. Do you have any knowledge about this aspect?

Prof.Vandana Chakrabarti: NAEP (1978) recognized the need to have in-built arrangement for applied and coordinated research. As such the Directorate of Adult Education Commissioned 33 research studies in various areas including curriculum, participatory training, retention of literacy and so on. But this was before establishment of NLMA. The Programme of Action (1992) in the National Policy on Education (1986) emphasized the necessity of good quality action research on various aspects related to adult education. When I was an Executive Committee member of the NLMA during the IX Five year Plan period, the EC had discussed signing of MoU with UGC to encourage research. NLMA was prepared to institute fellowships for research. But the leadership in NLMA changed hands and the decision to implement research fellowships did not see the light of the day. Subsequently in the first decade of this century, I was a part of the committee constituted by the DAE at the instance of NLMA to identify significant areas of research. While the committee did submit its report with a list of research areas, research studies are yet to be commissioned.

Apart from this the NLMA has constituted committees like Dave Committee, Arun Gosh Committee and several other expert committees to prepare guidelines for evaluation of field level activity.

Dr.V.Mohankumar: Universities are citadel of knowledge and most of them are involved in research work. Unfortunately, except the Department of Adult, Continuing Education and Extension no other Social Sciences Departments take interest in conducting research on adult education as an inter-discipline subject. What is the way to encourage them?

Prof.Vandana Chakrabarti: In the University sector, major and minor research projects are funded by the UGC. The Indian Council of Social Science Research also provides funds for research projects. In addition there are other external agencies that fund research. Universities themselves have a budget for research. The NLMA can institute research grants. The NLMA can enter into MoU with UGC, ICSSR, ICHR and other

Councils that provide research grants requesting them to put aside a part of their grants for research in the area of Adult Education. NLMA can institute awards for excellence in research in this area.

The NLMA can provide yeoman's service to research in Adult Education by providing scholars access to data collected from the districts. This data will be very useful to researchers.

Dr.V.Mohankumar: Fine Prof. Vandana. As you have conducted a large number evaluation studies on literacy programmes and the institutions working in the field of adult education I would like to ask a few questions on the same. Overall, what do you think about the evaluation in adult education?

Prof.Vandana Chakrabarti: I have jointly conducted 15 evaluation studies with my colleagues. These studies can be broadly placed into two categories- programme evaluations and scheme evaluations. Programme evaluations were pertaining to evaluations of performance of TLC, PLP, CE, JSS and SRC. I also led the review of literacy programme in the entire state of Jharkhand. At the end of X Five Year Plan we evaluated the Scheme of TLC, PLP and OR (Operation Restoration). During the XII Five Year Plan we reviewed Directorate of Adult Education on the request of MHRD. These evaluations and reviews are intended not only to assess the programme outcomes and efficiency and effectiveness of the processes but also to improve policy and practice of adult education.

The Dave Committee Report (1992), on Evaluation of Learning outcomes in Literacy Campaigns provided a blueprint of test construction for measuring literacy achievement. Subsequently the Arun Gosh Committee report and many other expert committee recommendations were used to evolve guidelines for evaluation of different programmes. This brought in some amount of standardization in the large number of studies conducted by empanelled agencies.



Dr.V.Mohankumar: The evaluation studies are normally conducted by institutions/agencies which included IIMs, universities and agencies who have professionalized in the area of evaluation. Many times it is said that the assignment is carried out by engaging persons for field work (data collection) who have no

knowledge of the programmes implemented in the field. This many times leads to wrong conclusion/judgment. What do you say?

Prof. Vandana Chakrabarti: NLM has covered 597 districts under the literacy programme in the initial stage. Carrying out evaluations of programme on the ground has been a huge task not only because of the geographical spread but also because of the number of programmes which included TLC, PLP, CE as well as centres like SRC and JSS that had to be evaluated periodically. Since 1988 over 1250 evaluation studies have been conducted. It is very difficult to keep track of data collection strategy employed by every empanelled agency. It is true that quality of data generated affects the outcome of evaluation and will impact the suggestions for improving the programme. As far as evaluations carried out by SNTD are concerned we have been very particular about training the field workers engaged for data collection. Moreover, for every evaluation study we engaged University or College teachers who accompanied us as group leaders. I myself alongwith my colleagues, remained in the field for the entire period of data collection.

Dr. V. Mohankumar: What is the follow-up action taken on the conclusions and recommendations of the evaluation studies conducted? Are you satisfied with the present system of action taken?

Prof. Vandana Chakrabarti: To tell you frankly, I am not satisfied with the follow-up action presently taken. The observations and recommendations of evaluators should be shared with those who are being evaluated. This will give them a chance to improve themselves. In every subsequent evaluation they should be asked as to how many of the suggestions of previous evaluation have been adopted by them and in case some have not been adopted, give reasons for the same.

The evaluation studies should not only be shared with those who are evaluated, but also disseminated to a larger audience. The observations and findings should be used for improving intervention, and also for theory building not only in the restricted area of adult education but in the broader area of social change and transformation. These studies should be placed in the public domain so that they can be accessed by all.

Dr. V. Mohankumar: What could be a system which can ensure prompt follow-up action on the outcome of evaluation studies?

Prof. Vandana Chakrabarti: I think the whole

approach towards evaluation studies should be different. The study should be owned by the people who are researched (evaluated). They should participate in the process of study from the planning stage and understand how the outcome will benefit them. The intention should be to demystify research and place it in the hands of those who are researched. In such cases, it is possible that people who are researched will demand follow-up action.

Again, when University based researchers work in partnership with field based practitioners continuous testing and application of findings may become a reality. Good research may not lead to good practice if the practitioner is not convinced about the requested changes.

Finally, good research may not lead to improved practice, if political will to give priority to the programme is lacking and adequate resources are not made available.

Dr. V. Mohankumar: What is your opinion about the need for detailed guidelines for conducting research and evaluation in the field of adult education?

Prof. Vandana Chakrabarti: In real life nothing is constant. In the last quarter of a century, since the inception of NLMA, the world has changed considerably. The method of teaching adults has evolved. The process of implementation of literacy programme has changed. The priorities in adult education have changed. Numerous agencies are now involved in skill development of adults. As a result, there is change in who and what is to be evaluated. Naturally, there is a need for new guidelines for evaluation of field level activity.

Dr. V. Mohankumar: I have taken a lot of your time and I am really thankful to you to share your valuable opinion on research and evaluation. I am sure our readers will find your thoughts as an informative one. Namaskar.

Prof. Vandana Chakrabarti: It is nice that Indian Adult Education Association is bringing out interviews on various topics of interest in the Newsletter which otherwise also gives a lot of information about adult education. I appreciate the able guidance provided by your Executive Committee under the Chairmanship of Shri K.C. Choudhary. I wish the Association continues its services to the field of adult education in the years to come. It has seen the Platinum Jubilee in the year 2014 and before it celebrates centenary it will reach new heights. Namaskar.

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्तिनगर, दिल्ली

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र मुख्यरूप से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए दिल्ली सरकार द्वारा प्रायोजित एक कार्यक्रम है जिसे स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा संचालित केन्द्र कीर्तिनगर में स्थित है। इस केन्द्र द्वारा जून-जुलाई माह के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नरूप है:

कानूनी जागरूकता बैठक

दिनांक 16 जून 2015 को जीआरसी परिसर में दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण (पश्चिमी) के सहयोग से दहेज निषेध अधिनियम पर एक कानूनी जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें संदर्भ व्यक्ति के तौर



पर श्रीमती दीपिका उपस्थित हुई। इस बैठक में कुल 35 महिलाओं ने भाग लिया जिन्हें दहेज निषेध अधिनियम के विविध प्रावधानों के बारे में विस्तार से बताया गया ताकि वे अपने साथ-साथ अपने

आगामी पीढ़ी के लड़कियों को भी इसके प्रति सचेत कर सकें। श्रीमती दीपिका ने कहा कि इस बारे में अधिक जानकारी के लिए वे तीस हजारी कोर्ट के रूम न. 295 में संपर्क कर सकती हैं।

इसी प्रकार दिनांक 18 जून तथा 1 जुलाई 2015 को क्रमशः 52/53 तथा 5/35, कीर्तिनगर में दो कानूनी जागरूकता बैठकों का आयोजन किया गया जिनमें कुल 57 स्थानीय महिलाओं ने भाग लिया। दोनों बैठकों में संदर्भ व्यक्ति के रूप में श्रीमती रागिनी एस. राज उपस्थित हुई जिन्होंने घरेलू हिंसा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रतिभागियों को बताया। उन्होंने अपनी बातचीत में यह बताने की कोशिश की कि घरेलू हिंसा शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आदि विभिन्न प्रकारों की हो सकती है और इससे निजात पाने का एकमात्र तरीका इसका प्रतिवाद करना है जिसमें महिलाएं घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 के तहत अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकती हैं।



ओपीडी

दिनांक 19 जून तथा 7 जुलाई 2015 को 5/35, बस्ती विकास केन्द्र में दो ओपीडी का आयोजन किया गया जिसमें संदर्भ व्यक्ति के तौर पर महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरजीत गुप्ता उपस्थित रहीं। दोनों ओपीडी में कुल मिलाकर 108 व्यक्तियों ने अपना स्वास्थ्य जांच कराया तथा तीन व्यक्तियों को आगे की जांच के लिए स्थानीय अस्तपतालों में रेफर किया गया। दोनों ही ओपीडी में आंखों तथा त्वचा रोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करने वाले मुख्यरूप से शामिल हुए थे जिन्हें डॉ. सुरजीत गुप्ता ने आवश्यक सुझाव दिए। अंत में सभी लोगों को श्री ललित कुमार चोपड़ा द्वारा आवश्यक दवाईयां निःशुल्क वितरित की गयी।



पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक

दिनांक 20 जून तथा 3 जुलाई 2015 को कमला नेहरु कैंप में दो पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठकों का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यरूप से व्यक्तिगत स्वच्छता, हाथों की सफाई तथा देख-रेख और अपने घर तथा आस-पड़ोस की स्वच्छता पर चर्चा की गयी। बैठकों में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर कार्यक्रम अधिकारी श्री शिव प्रताप, एसएचजी मोबिलाइजर श्रीमती मीना राणा और सिलार्ड-कटाई की अनुदेशिका सुश्री मीरा उपस्थित रहे दोनों बैठकों में कुल मिलाकर 58 लोगों ने भाग लिया।



पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण

दिनांक 23 जून 2015 को 5/35, कीर्तिनगर में प्रेरणा समूह के 20 सदस्यों के लिए सी-स्तर का जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पानी और स्वच्छता पर समाज में स्वतंत्र रूप से स्वयंसेवी व्यक्ति के तौर पर काम करने के लिए स्वयं सहायता समूहों को दी जाने वाली तीन स्तरीय प्रशिक्षण के क्रम में यह आखिरी प्रशिक्षण था। इस



प्रशिक्षण को प्राप्त करने के उपरान्त प्रेरणा समूह के सदस्य अब स्वतंत्र रूप से अपने निकटवर्ती इलाकों में जागरूकता लाने का कार्य कर सकेंगे। इस प्रशिक्षण में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर

तथा आवश्यक समूचित आहार बनाने की विधि सिखाने हेतु 'पूरक आहार' विषय पर एक पोषाहार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर पोषाहार विशेषज्ञ श्रीमती सुनीता रानी उपस्थित रहीं जिन्होंने शिविर के सभी 38 प्रतिभागियों से विस्तृत बातचीत की और उन्हें अंकुरित भेलपुरी तथा जौ चना मुरमुरा सत्तू आदि व्यंजनों को बनाने की विधि सिखाई।



एसएचजी मोबिलाइजर श्रीमती मीना राणा, सिलाई-कटाई की अनुदेशिका सुश्री मीरा और सौंदर्य प्रसाधन की अनुदेशिका सुश्री चित्रलेखा शर्मा उपस्थित रहे।

पोषाहार शिविर

दिनांक 30 जून 2015 को 5/35, कीर्तिनगर में 13 से 40 वर्ष तक की आयु की लड़कियों तथा महिलाओं को अपना स्वास्थ्य बेहतर बनाये रखने के लिए आवश्यक पोषक तत्वों तथा विटामिनों के बारे में जागरूक करने

National Seminar on Social Responsibility of Higher Education Institutions



The Department of Adult and Continuing Education, Sri Venkateswara University, Tirupati in collaboration with Andhra Pradesh State Branch of Indian Adult Education Association and Institute for Development Research and Alternatives, Tirupati organized a two day "National Seminar on Social Responsibility of Higher Education Institutions: Status, Problems and Strategies" on July 3-4, 2015. Around 30 persons from Andhra Pradesh, Delhi, Kerala, Maharashtra, Meghalaya, Puducherry, Tamil Nadu and Telangana participated in the seminar.

The inaugural session was presided over by Professor A. Ranga Reddy, Emeritus Professor,

Department of Economics, S.V. University while Professor M.C.Reddeppa Reddy, Director and Professor T.Kumaraswami, Principal, Institute for Advanced Studies in Education were the guests of honour. After Professor P. Adinarayana Reddy, Director briefly explained about the broad objectives of the seminar, Professor Jandhyala B. G. Tilak, Head, Department of Educational Finance, National University of Educational Planning and Administration (NUEPA), New Delhi gave Key Note address in which he stressed upon the social responsibility of institutions in higher education to promote human resources and bring social cohesiveness through equity, inclusion, excess of education for the deprived people. Dr. R. B. Satyavathi, Assistant Professor gave welcome address and Dr. B.S.M.D. Raju, Associate Professor proposed the vote of thanks.

In four technical sessions the participants presented papers on various topics including Extension as the third dimension

of university, Community engagement to improve education system, Betterment of higher education for community development, Status of unemployment in India, Community participation in teacher education, Envisaging social responsibility and the role of Adult Education, ICT in lifelong learning, Best practices in



community engagement, etc.

The concluding session was presided over by Professor Erbanoris Jyrwa, Head, Department of Adult & Continuing Education, North Eastern Hill University, Shillong while Professor M. Devarajulu, Registrar, S.V. University gave the Valedictory address.

ICAE World Assembly held at Montreal



Professor Kararina Popovic, Secretary General of ICAE addressing the gathering

The IX World Assembly of the International Council of Adult Education (ICAE) took place at the Universite de Montreal, Canada from June 11-13, 2015 with the theme **Global Commitments, Local Practices: Adult Learning and Education to Create the World we Want**. The World Assembly intended to provide a collective space to strongly affirm the right to education and lifelong learning for all and highlight its key role in enabling citizens to build a more democratic, inclusive, just and environmentally sustainable world. Besides, it also aimed at reviewing priorities for lifelong learning and education and to develop strategies for action at a global, regional and local level. The ICAE is an international network of civil society organizations working on adult learning and education in over 75 countries.

The main objective of the World Assembly was to

create a connection between the international movement for adult education and the concerns of social movements and organizations in Quebec and Canada.

The World Assembly was organized through several plenary sessions and sixty seven simultaneous workshops and self organized activities covering various aspects of adult and lifelong learning viz. Right to education and lifelong learning for all beyond 2015; Capacity building for advocacy; Role of adult learning and education for sustainable development; Adult Learning and Education, Power Relations, Decent Work, Gender Equality, Community Engagement, Quality, Inclusive education for all.

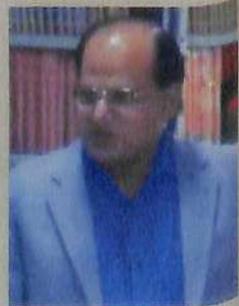
Professor S.Y. Shah, Director of the International Institute of Adult and Lifelong Education and Vice President of IAEA was invited by the UNESCO Institute for Lifelong Learning, Hamburg to attend the thematic workshop on Adult Learning Documentation and Information Network coordinated by the UIL and the Advisory committee meeting of ALADIN and also make a presentation on the innovative learning package developed for the capacity building of adult educators through Open Distance Learning mode.

The Assembly was attended by over four hundred participants from all the continents and concluded with the release of the Declaration on Adult Education.

Annual Conference of Canadian Association for the Study of Adult Education

The Canadian Association for the Study of Adult Education (CASAE) was established in 1981. It is a vibrant and energetic organization that provides a supportive network for graduate students, faculty members, researchers and practitioners who are engaged in adult education. The 34th annual conference of the CASAE was held at the Universite de Montreal, Canada from June 9-11, 2015. A large number of papers were presented in the conference on four different categories viz. general papers, symposium papers, round table papers and Posters of Graduate students. The conference began with a keynote address delivered by Dr. Michele Stanton Jean, who has had an illustrious career in adult education through her involvement with UNESCO, federal and provincial governments, as well as with numerous other national and international government and non-profit organizations. Over two hundred delegates from different provinces of Canada and overseas attended the conference.

Professor S.Y. Shah, Director of the International Institute of Adult and Lifelong Education, New Delhi and Vice President of IAEA made a presentation in the CASAE symposium on **Six Blind Men and an Elephant: The Futile Quest for Consensus on the Competencies Required for Good Practice** alongwith three distinguished adult educators - Professor Bernd K pplinger of Humboldt University, Germany; Professor Katarina Popovi c of the University of Belgrade, Serbia and Secretary General, International Council of Adult Education and Professor Thomas J. Sork of the University of British Columbia, Canada.



तारा-अक्षर+ An Innovative Literacy Practice

1 2 TARA Akshar+ Reading, writing and arithmetic skills in just 56 days

TARA Akshar+ is an adult literacy programme which makes a completely illiterate women functionally literate in just 56 days. This innovative ICT based interactive programme has been developed by Development Alternatives Group which is a leading not for profit civil society organization, working for the empowerment of communities.

The programme uses innovative teaching mechanisms like memory hooks, animated cartoon stories, rapid fire video games and peer learning activities which makes our classes interesting and more effective.

Within 2 hours of regular classes for 56 days, learners are able to read, write and do basic calculations on their own. The student does not have to try to memorize anything, rather she simply watches and plays, the memorizing happens through absorption. No rote learning required!



USP of our programme:



1. **Fastest** – Full literacy and numeracy in 56 days (2 hours a day).
2. **Strongest** – Uses memory reinforcement techniques.
3. **Easiest** – Does not require an expert instructor.
4. **Reliable** – Rigorous tracking mechanism.
5. **Scalable** – Capacity to double each year.
6. **Convenient** – In the vicinity at convenient times.

By the end of 2014 we have made over 100,000 women literate in the Hindi speaking states of India which includes Bihar, Jharkhand, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Delhi, Rajasthan, Haryana and Uttarakhand.

-Supriya Yadav

Assistant Manager (BD)

Development Alternatives, New Delhi

Visitors



Ms. Hiroko SAITO, Consulting Division 2 and Mr.

Masami SUDA, Advisor, System Science Consultants Inc, Tokyo visited Indian Adult Education Association on June 25, 2015 and had discussion with Professor S.Y.Shah, Director, International Institute of Adult and Lifelong Education and Dr.V.Mohankumar, Director, IAEA regarding organization/coordination of three days training programme in New Delhi in the month of September 2015 for the Non-formal Education Officers of Afghanistan, Laos, Moldova, Myanmar and Uganda under Japan International Cooperation Agency's (JICA) Knowledge Co-creation Programme (Group and Region Focus).

In principle the proposal was agreed to and the details have been worked out and finalized in another meeting on July 13, 2015 by Mr. Kenji TAJIMA, Consulting Division 2. Dr. Madan Singh, General Secretary, IAEA was also present.



DACE, SV University Felicitated Professor Kapali

Professor N.V.R Kapali who had long innings as a Faculty and Head in the Department of Adult and Continuing Education, University of Madras, Chennai superannuated from active service on June 30,



2015. For the contribution he has made to the field of adult and lifelong education the Department of Adult and Continuing Education, Sri Venkateswara University, Tirupati felicitated him on July 3, 2015 at Tirupati. His close friends and fellow colleagues in the field of adult education like Professor K. Parthasarathi of the Department of Lifelong Learning and Dean, Faculty of Arts, Bharathidasan University, Tiruchirappalli, Professor V.L.N. Reddy, veteran adult educator and founder Director of the Department of Adult Education, S.V. University, learned faculty members Professor M.C. Reddeppa Reddy, Director, Prof. P. Adinarayana Reddy, Director, Professor T. Kumaraswami, Principal, Institute for Advanced Studies in Education, Dr. B.S.M.D. Raju, Associate Professor and Dr. R. B. Satyavathi, Assistant Professor recalled Professor Kapali's personal abilities and his close association with S.V. University as an Expert Member in the Board of Studies of Adult Education, Selection Committees, Examiner for valuations and conduct of Ph.D. viva-voce, etc. On this occasion Professor Kapali's wife was also present.

सांसद आदर्श ग्राम में साक्षरता के साथ कौशल विकास भी जरूरी है

- श्री शेषुकुमार



दिनांक 27 जून 2015 को पंडित सुन्दरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, श्यामला हिल्स, भोपाल में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार एवं राज्य संसाधन केन्द्र, भोपाल

के संयुक्त तत्वावधान में जन शिक्षण संस्थानों के निदेशकों की एक दिवसीय राष्ट्रीय बैठक आयोजित की गयी जो मुख्यरूप से राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की विशेष पहल "सांसद आदर्श ग्राम में साक्षरता एवं कौशल विकास" पर केन्द्रित थी। बैठक में कुल 37 जन शिक्षण संस्थानों यथा भोपाल, इन्दौर, गुना, ग्वालियर, मुर्सेना, रतलाम, सतना, दतिया, मिण्ड, सीधी, होशंगाबाद, धार, सीहोर, रीवा, छत्तरपुर, सागर, शाजापुर, कटनी, झाबुआ, मण्डला, उमरिया, रायसेन, नरसिंहपुर, दमोह, श्योपुर, डिंडोरी, खण्डवा, अलीराजपुर, टीकमगढ़, देवास, रायपुर, बस्तर, कोरबा, राजनांदगांव, बिलासपुर, कोरिया, सरगुजा के निदेशकों ने भाग लिया।

इस अवसर पर विचार व्यक्त करते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री वाई.एस.के. शेषुकुमार ने कहा कि इस योजना के तहत गोद लिए गए गांवों में ग्रामीणों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए साक्षरता के साथ-साथ कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण भी प्रदान करना होगा। विषय को आगे बढ़ाते हुए प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के प्रभारी निदेशक डॉ. रामाकृष्णा सूरु ने कहा कि इन गांवों में व्यावसायिक शिक्षण प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले ग्रामीणों को चिन्हित किया

जायेगा तथा निकटवर्ती जन शिक्षण संस्थान के माध्यम से उन्हें उनकी रुचि के अनुसार तीन से छः माह अवधि वाले व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उप-सचिव श्री मानिक मण्डल ने कहा कि साक्षरता के साथ कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर ग्रामीण लोग विकास के मुख्य धारा में शामिल हो सकेंगे तथा उप शैक्षिक सलाहकार डॉ. नसीम अहमद ने विस्तृत प्रस्तुतीकरण के साथ कहा कि इस दिशा में किए गये कार्यों की प्रामाणिकता पर विशेष ध्यान देना होगा।

केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षण संस्थान, भोपाल के संयुक्त निदेशक डॉ. आर. बी. शिवागुंडे ने कहा कि बिचौलियों के कारण ग्रामीण कारीगरों को उनके परिश्रम का समुचित लाभ नहीं मिल पाता इसलिए आवश्यक है कि उन्हें कारीगर से उद्यमी बनने की दिशा में बढ़ाया जाय।

बैठक का संचालन राज्य संसाधन केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक श्री इम्तेयाज खान ने किया और आभार निदेशक श्री संजय सिंह राठौर ने व्यक्त किया।



- संजय सिंह राठौर
निदेशक, रा.स.के, भोपाल

JSS Hoshangabad Opened a Training Centre at Sangakheda Village



Jan Shikshan Sansthan, Hoshangabad under Saansad Adarsh Gram Yojana started a vocational and skill development centre at Sangakheda in Babai block which has been adopted by

the Member of Parliament, Shri Udai Pratap Singh. While most of the women in this village are engaged in agriculture operations during seasons, in door-to-door survey they have given their option to learn Dress Making and Designing and hence this course has been started and two batches are ongoing, one from 12:00 noon to 2:00 p.m. and the other 2:00 p.m. to 4:00 p.m. Apart from vocational training the women are given information and knowledge on self-employment opportunities, financial and legal literacy. With the help of State Resource Centre, Bhopal it is proposed to open a Reading Corner in the training centre shortly.

-S.A.Hussain
Director, JSS

जहानपुर में साक्षरता एवं कौशल विकास केन्द्र का उद्घाटन



सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत जन शिक्षण संस्थान, सीहोर द्वारा जहानपुर में एक साक्षरता एवं कौशल विकास केन्द्र की स्थापना की गयी है जिसका विधिवत उद्घाटन दिनांक 3

जुलाई 2015 को स्थानीय राज्य सभा सांसद श्री अनिल माधव देव द्वारा किया गया। इस अवसर पर जनपद के एस.डी.एम श्री बृजेश सक्सेना तथा सी.ई.ओ. श्री नवल मीना सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। केन्द्र प्रारंभ करने के पूर्व जन शिक्षण संस्थान द्वारा इलाके का सर्वेक्षण कर यह ज्ञात किया गया कि कितने लोग और किस प्रकार का व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं। तदुपरान्त प्रथम बैच के लिए कुल 40 प्रशिक्षणार्थियों का पंजीकरण कराया गया जिन्हें उनकी इच्छा के अनुसार सिलाई-कटाई तथा फैशन डिजाइनिंग का तीन माह व्यापी प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा।

- अनिल सिंह, प्रभारी निदेशक, जे.एस.एस.

रा.स.के. ने आयोजित की पठन सामग्री निर्माण हेतु कार्यशाला



राज्य संसाधन केन्द्र, लखनऊ द्वारा दिनांक 23 से 27 जून, 2015 तक बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत, विधिक साक्षरता एवं वित्तीय साक्षरता आदि विषयों पर नवसाक्षरों के लिए उपयुक्त पठन सामग्री निर्माण हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया

जिसमें अनेक अनुभवी रचनाकारों ने भाग लिया। पठन सामग्री तैयार करने से पूर्व इन रचनाकारों के साथ राज्य संसाधन केन्द्र के निदेशक श्री राजेश कुमार बाजपेयी, इंडिया लिटरेसी बोर्ड के सचिव/निदेशक श्री एस.पी.रस्तोगी, राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण के उपनिदेशक, श्री सन्तराम सोनी तथा प्रबन्ध निकाय एवं कार्यक्रम सलाहाकार समिति, राज्य संसाधन केन्द्र, उ.प्र. की सदस्य डॉ. सरोजनी अग्रवाल ने अपने विचार सांझा किये।

इस कार्यशाला में कुल 16 पाण्डुलिपियाँ तैयार की गयी। इन पाण्डुलिपियों का मुद्रण कराकर उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों में स्थापित लोक शिक्षा केन्द्रों को भेजी जाएगी।

— राजेश कुमार बाजपेयी
निदेशक, रा.सं.के., उ.प्र.

UGC sanctioned amount to GRI and BU for Kaushal Kendras

The University Grants Commission has renamed Knowledge Upgradation for Skilled Human Action and Learning (KUSHAL) to Deen Dayal Upadhyay Centres for Knowledge Acquisition and Upgradation of Skilled Human Abilities and Livelihood (DDU-KAUSHAL). Under this scheme all universities which receive general development assistance from UGC and are accredited by NAAC or National Board of Accreditation and UGC approved community colleges or institutions conducting Bachelor in Vacation Studies are eligible for assistance.

Recently the UGC has sanctioned Rs.3.70 crore to establish DDU KAUSHAL KENDRA at Gandhigram Rural Institute – Deemed University (GRI) to conduct B.Voc Programmes in Farm Equipment Operation and Maintenance and Footwear and Accessories Design. Under the same scheme Bharathidasan University, Tiruchirappalli also got Rs.3.50 crore to offer three programmes namely, Trouble Shooting and Maintenance of Electrical and Electronics Equipments, Automobile Technology and Logistics and Supply Chain Management.

—Prof. L. Raja
Head, Dept. of LLL & Extn, GRI

जीवन यूँ व्यर्थ न हो

मुह्त बाद आजाद हुए
माटी का कर्ज चुकाना है
अलगाव की बातें जो करते
उनको अब दूर भगाना है

है स्वार्थ, अहम का खेल यहाँ
भरते सब अपना पेट जहाँ
देश की चिन्ता कौन करे
लूट मची है जहाँ-तहाँ

धरती अपनी, अपना यह वतन
इसकी रक्षा की खातिर हम
मर जाएंगे, मिट जाएंगे
पर इसकी आन बचाएंगे

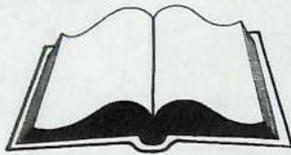
जीवन से सुन्दर मौत है वह
जो देश की खातिर अर्पित हो
यूँ तो सब जीते मरते हैं
अपना जीवन यूँ व्यर्थ न हो

पथ संघर्षों का है दरिया
तूफानों से फिर क्या डरना
जो साहस से बढ़ते आगे
मंजिल अपनी वे ही पाते

क्यों आए थे, क्या करके चले
यह जीवन यूँ ही व्यर्थ टले
है अर्थ यहीं, परमार्थ यहीं
फिर भी हमने थे हाथ मले

सोचें यह, हम क्या कर पाएँ
मुश्किल है कुछ, यह मत सोचें
श्रम स्वेद यहाँ गर बह जाएँ
जीवन को सफल बना पाएँ

— कुसुम वीर



National Sample Survey Office. **Key Indicators of Social Consumption in India: Education.** New Delhi, Ministry of Statistics and Programme Implementation; 2015: 113p.

The surveys on social consumption relating to education, conducted by the National Sample Survey Office (NSSO) are the primary sources of data on various indicators.

The indicators presented in this document are related to:

- Literacy rates
- Current attendance
- Participation in education
- Educational expenditure
- Drop-outs and discontinuance
- Access and ability to operate

Computer

Unicef. **Progress for Children beyond Averages: Learning from the MDGs (No. 11).** UNICEF; 2015: 68p.

This edition of Progress for Children is UNICEF's final report on the child-related Millennium Development Goals (MDGs). It presents latest data that show while the MDGs helped drive tremendous advances in the lives of the world's children, development efforts in the past 15 years failed to reach millions of the most disadvantaged. The report spotlights where the international community must now focus attention and action to reach the most vulnerable children and achieve sustainable growth.

Unicef and WHO. **Progress on Sanitation and Drinking Water: 2015 update and MDG Assessment.** UNICEF; 2015: 90p.

Looking back on 25 years of water, sanitation and hygiene monitoring, the report provides a comprehensive assessment of progress since 1990. The MDG target for drinking water was

achieved in 2010 but the world has missed the sanitation target by almost 700 million people. In 2015, 663 million people still lack improved drinking water sources, 2.4 billion lack improved sanitation facilities and 946 million still practice open defecation.

The MDG target for drinking water was met in 2010

- 91 per cent of the global population now uses an improved drinking water source
- 2.6 billion people have gained access to an improved drinking water source since 1990
- Since 1990, the number of countries with less than 50% coverage of improved drinking water has decreased from 23 to 3
- Eight out of ten people still without improved drinking water sources live in rural areas
- One in ten (663 million) people still lack improved drinking water sources

The world has missed the MDG target for sanitation by almost 700 million people

- 68 per cent of the global population now uses an improved sanitation facility
- 2.1 billion people have gained access to an improved sanitation facility since 1990
- In 2015, 47 countries have less than 50% coverage of improved sanitation
- Half the rural population uses improved sanitation facilities compared with four out five people in urban areas
- One in three (2.4 billion) people still lack improved sanitation facilities and one in eight people (946 million) practice open defecation

R.N.I. No. 53577 /1991

Postal Regn. No. DL(C).01/1160/2013-2015

Published on July 27, 2015

147 countries have met the MDG drinking water target

95 countries have met the MDG sanitation target

77 countries have met both the drinking water and the sanitation target.

-Compiled by Neha Gupta

वरिष्ठ नागरिकों के अधिकार पर संगोष्ठी का आयोजन



दिनांक 23 तथा 28 जून 2015 को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की गुजरात शाखा तथा कलोल तालुका कानूनी सेवा समिति द्वारा संयुक्तरूप से "वरिष्ठ नागरिकों के अधिकार" विषय पर

सीनियर सिटीजन कौंसिल, कलोल तथा कल्याणपुरा सिनियर सिटीजन कौंसिल में दो संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। दोनों ही संगोष्ठियों में स्थानीय इलाकों से आये अनेक वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया जिन्हें भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के आजीवन सदस्य श्री प्रवीणभाई ओझा ने संबोधित किया। श्री प्रवीणभाई ओझा ने प्रतिभागियों को उनके अधिकारों के बारे में विस्तार से बताया। जन शिक्षण संस्थान के उपाध्यक्ष एवं भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के आजीवन सदस्य डॉ. बी.पी.रावल ने प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

- डॉ. बी.पी.रावल

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282, 23378436, 43489048

E-mail: iaedelhi@gmail.com

Editor: Dr. Madan Singh

Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.8

Re. 1 per copy

August 2015



Indian Adult Education Association

A Book "On to Eternity" Presented to Prof. B.S.Garg

As part of Platinum Jubilee celebration of Indian Adult Education Association a book titled "On to Eternity" has been published with the record of Presidential Address and Resolutions of All India Adult Education Conferences held from 1974 to 2014. This book is Volume IV as three such volumes have already been published earlier to cover the period 1938-1958, 1959-1964 and 1966-1973. The Volume IV is compiled by Dr. V. Mohankumar, Director and Smt. Neha Gupta, Junior Librarian-cum-Documentation Assistant.

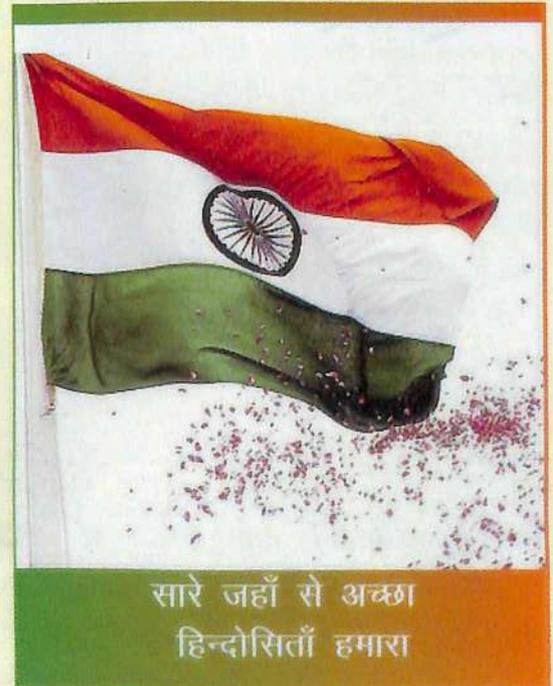


A copy of the book was given to Prof. B.S.Garg, Patron by Shri K.C.Choudhary, President, IAEA on August 19, 2015. On that occasion others present were Prof. S.Y.Shah and Dr.M.S.Ranawat, Vice Presidents, Dr. Madan Singh, General Secretary and Shri S.C.Khandelwal, Joint Secretary.

Good News for Bare Literates - Matriculation Degree through MOOC

The Govt. of India is shortly to unveil a scheme for the benefit of bare literates from remote villages to earn a matriculation degree over years, clearing one subject at a time which will provide a base to pursue higher education at a later date. The vehicle enabling this will be the Massive Open Online Course (MOOC) and the nodal agency will be National Institute of Open Schooling (NIOS).

Once a person is prepared to take the class X exam in a particular subject, he/she will be able to register and opt for a test either through direct online registration with NIOS as a candidate or through Community Service Centres in around one lakh villages. People are free to clear one class X level test after another over any number of years. Once they clear five subjects, of which one must be a language paper, they would get a matriculation certificate from NIOS.



सारे जहाँ से अच्छा
हिन्दोसिताँ हमारा

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्ति नगर, दिल्ली

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र मुख्यरूप से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए दिल्ली सरकार द्वारा प्रायोजित एक कार्यक्रम है जिसे स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा संचालित केन्द्र कीर्ति नगर में स्थित है। इस केन्द्र द्वारा जुलाई-अगस्त माह के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नरूप है:

ओ पी डी

दिनांक 21 जुलाई, 3 अगस्त तथा 17 अगस्त को बस्ती विकास केन्द्र,



कीर्ति नगर में तीन ओपीडी आयोजित की गयी जिनमें क्रमशः 57, 63 तथा 57 लोगों ने अपने स्वास्थ्य की जांच करवाई। तीनों ही ओपीडी में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरजीत गुप्ता तथा फार्मासिस्ट श्री ललित चोपड़ा उपस्थित रहे जिन्होंने जांच के उपरांत आवश्यक दवाईयां निःशुल्क वितरित की। डॉ. गुप्ता ने महिलाओं को मौसमी बीमारियों, साफ-सफाई तथा खान-पान का विशेष ध्यान रखने के लिए प्रेरित किया तथा 6 गंभीररूप से पीड़ित मरीजों को अस्पताल के लिए रेफर किया।

पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक

गत 29 जुलाई को चूना भट्टी तथा 4 अगस्त को हरिजन कैम्प कीर्ति नगर में दो पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठकें आयोजित की गईं जिनमें कुल 64 सदस्यों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत स्वच्छता तथा घरेलू स्वच्छता पर परिचर्चा करके समस्याओं का समाधान करना था। कार्यक्रम के दौरान स्वच्छता के संदर्भ में उपस्थित लोगों के विचारों को भी सुना गया। बैठक में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर श्रीमती मीना राणा, सुश्री रेखा, श्री शिव प्रताप तथा श्रीमती अंजू बाला उपस्थित थीं।



कानूनी जागरूकता शिविर

दिनांक 29 जुलाई 2015 को कानूनी जागरूकता शिविर का आयोजन वाधवा कैम्प, कीर्ति नगर में किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य उपस्थित 29 सहभागी महिलाओं को घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 से अवगत कराना था।

घरेलू हिंसा से कैसे निपटे तथा लड़कियों के साथ क्षेत्र में होने वाली छेड़छाड़ से कैसे निपटा जाए इसके बारे में भी विस्तार से बताया गया। श्रीमती रागिनी एस. राज ने एक सच्ची घटना का उदाहरण देते हुए बताया कि अगर किसी भी लड़की से छेड़छाड़ होती है तो इस बात को छिपाने की बजाय बता देना चाहिए ताकि उसका समाधान किया जा सके। ऐसी बातें छिपाने से अपराधी को बढ़ावा मिलता है और किसी भी प्रकार की मदद के लिए जीआरसी में सम्पर्क किया जा सकता है।



पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण

गत 30 जुलाई को बस्ती विकास केन्द्र में एक पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कुल सहभागियों की संख्या 20 थी। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 20 महिलाओं को पानी और स्वच्छता कार्यकर्ता बनने हेतु प्रशिक्षित किया गया। पानी को स्वच्छ रखने के तरीके, पानी से होने वाली बीमारियों, बरसात के मौसम में जल संबंधी सावधानियां तथा स्वच्छता के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। उपस्थित कार्यकर्ताओं से भी स्वच्छता संबंधित विचार लिए गए।



इस कार्यक्रम में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर जीआरसी से श्रीमती मीना राणा, श्री शिव प्रताप तथा श्रीमती अंजू बाला उपस्थित थीं।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

दिनांक 14 अगस्त 2015 को जीआरसी द्वारा स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन दो सत्रों में किया गया। प्रथम सत्र का आयोजन 5/35, बस्ती विकास केन्द्र, कीर्ति नगर में किया गया जिसमें जीआरसी के सभी कार्यकर्ता और व्यावसायिक प्रशिक्षण ले रही महिलाएं शामिल थीं। दूसरे सत्र का आयोजन अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र, वाधवा कैम्प, कीर्ति नगर में आयोजित किया गया जिसमें अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत भी किया गया जिसमें महिलाओं और बच्चों ने नृत्य, गीत और कविताएं प्रस्तुत कर कार्यक्रम को बेहद रोमांचक बना दिया। जीआरसी कार्यकर्ताओं ने उपस्थित लोगों को महान देशभक्त चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, सरदार भगत सिंह, गांधी जी के त्याग और बलिदान के बारे में विस्तार से बताया।



Growth of Literacy in India 1991-2011 and Projection for 2021

According to Census definition, a person is treated as literate if he or she can read and write with understanding in any language. Literacy rates for population aged 7 years and above have been computed in India for Census years 1981 onwards. Children of age group 0-6 are not classified as literate. The literacy rates are affected by the size of population growth and educational efforts made through primary education (formal as well as non-formal) and adult literacy programmes. If the size of population remains the same the educational effort is the only deciding factor in the growth of literacy. Increase in population depresses the literacy rate and decrease in population helps in the growth of literacy rate. The declining of population of lower age-groups has started in India but its impact in case of higher age groups will be felt only

in the long run. Primary education in the short run contributes to increase of literacy of children upto the age of 14 years. In the long run it contributes to the increase in literacy rate of the higher age-groups also through the progression of lower age groups to higher age groups over a period of time. Adult literacy programmes which provide literacy skills to adults also contribute increase in the literacy rates of adult population.

Status of literacy 1991-2011

A comparative statement of literacy rates for different age-groups since 1991 indicates how the literacy rates at lower levels are improving faster and are affecting over a period of time, the literacy rates of higher age groups also.

Table - 1
Comparative literacy rates by age groups 1991-2011

Age group	1991	2001	2011	Increase in literacy rates	
				1991-2001	2001-2011
7-9	56.9	71.0	82.2	14.1	11.2
10-14	68.8	81.7	91.5	12.9	9.5
15-19	65.8	79.3	88.8	13.5	9.5
20-24	57.8	73.2	83.2	15.4	10.0
25-34	50.8	64.5	75.3	13.7	10.8
35 and above	39.2	50.0	57.1	10.8	7.1
7 years and above	52.2	64.8	73.0	12.6	8.2
15 years and above	48.5	61.0	69.3	12.5	8.3

The above data indicates that increase in the literacy rates of all age groups except that of the age group 35 years and above was higher than the overall average increase of age group 7 and over as well as that of the age group 15 and over. It is clear that the literacy effort during the decade 1991-2001 was much more as compared to that of the decade 2001-11. Increase in literacy rate of

12.6 percent points during 1991-2001 as compared to that of 8.2 in the last decade is an outstanding achievement of the decade 1991-2001.

The following table indicates how the number of literates was determined by the literacy efforts made through primary education and adult literacy programmes during 1991-2001 and 2001-2011:

Table - 2
Comparative number of literates of different age groups 1991-2011 (in millions)

Age group	1991	2001	2011	Increase in number of literates	
				1991-2001	2001-2011
7-9	36.0	53.2	61.8	17.2	8.6
10-14	67.9	102.0	121.0	34.1	19.0
15-19	52.0	79.5	107.1	27.5	27.6
20-24	43.0	65.7	92.7	22.7	25.0

25-34	64.8	101.8	143.0	37.0	41.2
35 and above	95.6	158.5	238.0	62.9	79.5
7 years and above	359.3	560.7	763.6	201.4	202.9
15 years and above	255.4	405.5	580.8	150.1	175.3

The above data indicates that the decadal increase in the number of literates was substantial in higher age groups during 2001-2011 as compared to that of 1991-2001. But there was a decline in case of age groups 7-9 and 10-14. Average annual increase in the number of literates was by about 22 million both

during 1991-2001 and 2001-2011.

As a result of combined efforts on education front and a slightly declining trend in growth of population of younger age groups, the number of non-literates started declining in case of these age groups as may be seen from the following table:

Table-3
Comparative number of non- literates of different age groups 1991-2011 (in millions)

Age group	1991	2001	2011	Increase (+) 1991-2001	/ Decrease (-) 2001-2011
7-9	27.2	21.7	13.4	(-) 5.5	(-) 8.3
10-14	30.8	22.8	11.7	(-) 8.0	(-) 11.1
15-19	27.1	20.8	13.4	(-) 6.3	(-) 7.4
20-24	31.4	24.0	18.7	(-) 7.4	(-) 5.3
25-34	62.8	56.0	47.0	(-) 6.8	(-) 9.0
35 and above	149.5	158.8	178.5	(+) 9.3	(+)19.7
7 and above	328.8	304.1	282.7	(-) 24.7	(-) 21.4
15 and above	270.8	259.6	257.6	(-) 11.2	(-) 2.0

The above data indicates that there was decline in the number of non-literates during 1991-2001 and 2001-2011. But the number of non-literates continued to increase in the age group 35 years and over population.

Estimate of literacy situation for 2021

Comparative literacy situation of different age groups for 2011 and that estimated for 2021 is given in the following table:

Table - 4
Comparative literacy situation of different age groups for 2011 and 2021

Age Group	2021 (Estimates)			2011		
	Population	Literates	Literacy	Population	Literates	Literacy
7-14	202.0	185.8	92	207.9	182.8	87.9
15-19	125.6	118.1	94	120.5	107.1	88.8
20-24	131.0	119.4	91.2	111.4	92.7	83.2
25-34	235.4	202.6	86.1	190.0	143.0	75.3
35 years and above	538.0	337.9	62.8	416.5	238.0	57.1
7 years and above	1232.0	963.8	78.2	1046.3	763.6	73.0
15 years and above	1030.0	778.0	75.5	838.4	580.8	69.3

The above estimates for 2021 imply that after reaching an overall literacy rate of 78 percent, there will still be about 268 million non-literates in the country in 2021 as compared to 283 million in 2011. Literacy rate of 75.5 percent for adult population implies that there will still be over 250 million adult illiterates in 2021. Most of the non-literates will fall in

the category of adult non-literates as only 16 million of them will be in the age group below 15 years (7-14 years). Also 7.5 million non-literates of age group 15-19 and 11.6 million non-literates of age group 20-24 who are likely to be missed and are mainly located in the 9 low literacy states of Bihar, Jharkhand, Uttar Pradesh, Jammu & Kashmir, Andhra

Pradesh, Rajasthan, Assam, Madhya Pradesh and Odisha need to be given priority in the adult literacy programmes. If our additional efforts are able to cover a part of these left over by 2021, the overall literacy rate may reach around 80 percent.

To achieve the 80 percent literacy target of the XI Five Year Plan by 2017 and to raise it beyond 80 percent by 2021, special efforts are needed to reach

out to the adult non-literates of the age groups 25-34 and 35 years and over also failing which these over 250 million adult non-literates will continue to depress the overall literacy rate as well as the adult literacy rate of the country for a long time to come.

-Prem Chand
Senior Fellow, IIALE

वरिष्ठ नागरिकों के लिए विचार-विमर्श गोष्ठी का आयोजन

बदलते समय और संदर्भों में प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्थान के नाते भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली समाज जीवन में आने वाले नवीन चुनौतियों के अनुकूल नीतियों एवं कार्यक्रमों की रचना हेतु सतत प्रयत्नशील रहता है। संस्थान ने विगत दिनों में महिला सशक्तीकरण, कौशल विकास और



शोध के क्षेत्र में कई नवीन प्रयोग प्रारंभ किए हैं। इसी क्रम में संस्थान ने दिनांक 20 अगस्त 2015 को वरिष्ठ नागरिकों के समक्ष आ रही तमाम समस्याओं पर चिंतन करते हुए उनके समाधान के लिए उपयोगी और समयानुकूल कार्यक्रमों को रेखांकित करने हेतु एक विचार-विमर्श गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें संस्थान के संरक्षक, प्रो. भवानी शंकर गर्ग, अध्यक्ष श्री कैलाश चौधरी, उपाध्यक्ष डॉ. एस.वाई. शाह, श्रीमती निशात फारुक और डॉ. एम.एस.राणावत, महासचिव डॉ. मदन सिंह, संयुक्त सचिव श्री एस.सी. खण्डेलवाल, सह-सचिव श्री ए.एच. खान, वरिष्ठ समाजसेवी श्रीमती विद्याबेन शाह, वरिष्ठ शिक्षाविद् डॉ. सी.जे. दासवानी और श्रीमती कमला राना, प्रो. राजेश (दिल्ली विश्वविद्यालय), इण्टरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडल्ट एण्ड लाइफलॉग एजुकेशन के सीनियर फ़ैलो श्री प्रेमचंद और डॉ. वानी बोरा, बुर्जुवा विश्वविद्यालय की शोधार्थी सुश्री स्टेफनिक क्रोनर, संघ के निदेशक डॉ. वी. मोहनकुमार सहित अन्य सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इस विचार-विमर्श में सभी प्रतिभागियों ने अत्यंत ही अनौपचारिक माहौल में अपने निजी तथा अकादमिक अनुभवों को सांझा किया जिसमें से उभरकर आये मुख्य बिन्दु निम्नरूप हैं:

- संस्थान दिल्ली में स्थायीरूप से निवास कर रहे अपने उन आजीवन सदस्यों जो वरिष्ठ नागरिक की श्रेणी में आ चुके हैं अथवा आने वाले हैं, के लिए मासिक अथवा त्रैमासिक स्तर पर मिलन कार्यक्रम आयोजित करे ताकि उनसे नियमित संवाद स्थापित हो सके।
- वरिष्ठ नागरिक बुद्धिमान, ज्ञानवान तथा अनुभवी होते हैं उनको अनुपयोगी मानने के बजाय समाज उन्हें अनुभवी और योग्य संदर्भ

व्यक्ति समझे तथा यथा संभव उनके अनुभवों का सदुपयोग करे। संस्थान को इस दिशा में भी पहल करना चाहिए।

- संस्थान के कई वरिष्ठ आजीवन सदस्यों ने अपनी अकादमिक योग्यताओं का संस्थान के उन्नयन हेतु उपयोग की बात रखी और आग्रह किया कि इस हेतु माध्यम तलाश किए जाएं।

वरिष्ठ नागरिक अपना वार्धक्य जीवन सरलता, सुगमता एवं सम्मान के साथ व्यतीत कर सकें इसके लिए नियमित एवं संतुलित दैनिक जीवनचर्या, संतुलित आहार इत्यादि के साथ नियमित योग अभ्यास भी एक माध्यम हो सकता है। अतः संस्थान को अपने स्तर पर इनके प्रसार-प्रचार अथवा अभ्यास हेतु पहल करनी चाहिए। इस अवसर पर प्रोफेसर बी.के.एस. अयंगर द्वारा लिखित पुस्तक 'Yoga for Everyone' पर आधारित जीवन तत्व योगासनों की एक विस्तृत सूची भी वितरित की गयी।

- संस्थान को वरिष्ठ नागरिकों से संबंधित भारत सरकार की नीतियों में आवश्यक परिवर्तन एवं तदनु रूप क्रियान्वयन के लिए सुझाव प्रेषित करने चाहिए तथा इससे संबंधित शोध कार्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- नौजवान पीढ़ी के सहयोग से बुजुर्गों को बेहतर संवाद तकनीकियों, आईसीटी उपकरणों के उपयोग की विधि आदि सिखाने में उनका सहयोग करना चाहिए ताकि वरिष्ठ नागरिक अपने निजी जीवन में आने वाली दिक्कतों का सरलता से समाधान कर सकें।

विचार-विमर्श के उपरांत डॉ. एल. मिश्रा, भूतपूर्व सचिव, भारत सरकार जो अपनी अस्वस्थता के कारण कार्यक्रम में भाग नहीं ले सके, द्वारा प्रेषित "Anguish of the old and cruelty of the young" शीर्षक नोट का डॉ. वी. मोहनकुमार द्वारा वाचन किया गया। तदुपरान्त सभी लोगों को वरिष्ठ नागरिकों के लिए उपयोगी आहार पर आधारित एक डाकूमेंटरी फिल्म भी दिखाई गयी।

Shri Biresh Pachisia awarded Ph.D. in Adult Education



Shri Biresh Pachisia has been awarded Degree of Doctor of Philosophy in Adult Education by the University of Delhi in July 2015. The title of the research was "A study of

Continuing Education and Skill Development among Elderly Population: Comparative Study of India and Pakistan". The study was supervised by Prof. Rajesh of the Department of Adult, Continuing Education and Extension, University of Delhi.

Shri Biresh is a social activist and working for the elderly

people for the last 10 years. He is also a Life Member of Indian Adult Education Association, New Delhi.

Indian Adult Education Association congratulates Shri Biresh for his achievement and wishes for a bright professional career.

ILA organized Annual Conference at St. Louis



The International Literacy Association (ILA), formerly called International Reading Association (IRA) organizes annual conference every year in one of the states of America in which a large

number of people participate with a lot of enthusiasm. Recently the 60th Annual Conference was held at America's Centre, 701, Convention Centre in St. Louis, Missouri from July 18-20, 2015 in which around 7000 people participated which included Classroom Teachers, Reading Specialists, College/University Administrators and Faculty and School Administrators/Supervisors who are involved in purchasing and budget management. This conference provided knowledge related to education and literacy through presentations by experts, general sessions and group discussions on identified sub-topics.

The participants were addressed among others

by Mr. Shaquille O'Neal, the author of Little Shaq, a new series of books for early readers, basketball



legend and committed person for literacy on "Coaching Tomorrow's Superstars", Ms. Shiza Shahid, a Social activist who Cofounded the Malala Fund to empower girls through education on "The Power of a Movement", Mr. Stephen Peters, a former Classroom Teacher and School Administrator and Ms. Octavia Spencer, a veteran character actress and storyteller on her journey to acting and the ways in which she uses storytelling to transform lives and champion diversity.

A large number of organizations exhibited teaching materials in different stalls in the lobby which enriched the participants with information and knowledge.

The next annual conference of International Literacy Association will be held in Boston from July 9-11, 2016.

Dr.V.Mohankumar, Director and Smt. Kalpana Kaushik, Assistant Director, IAEA met Ms. Amy, Manager, Global Operation and Ms. Yesly Contreras,

Programme Officer, International Literacy Association to brief them about the Asian Literacy Conference to be held in Mumbai

on January 28-29, 2016 and extended invitation to the President, International Literacy Association, Dr. Diane Barone on behalf of Mrs. Kallolini Hazarat, President, Reading Association of India (RAI) to be present in the conference which was subsequently agreed upon.



Kerala Achieved Total Primary Education



Kerala has the distinction of achieving Total Literacy in the year 1991 and now it has one more feather in its cap by achieving Total Primary Education. The credit should go to political leadership, elected members of Panchayati Raj Institutions, State Legislative Assembly, Parliament, Department of Education and general public. However, more credit goes to the Kerala State Literacy Mission Authority for the success as it has systematically planned and implemented the programme.

The Total Primary Education Programme equivalent to class-IV has been named as 'Athulyam'. Before this effort at the state level, the Total Primary Education Programme was implemented selectively in a few places in the state like Nilambur Gram Panchayat in Malappuram district (the programme was named 'Jyothirgamaya'), Kannur and Kasargod districts, the success of which has given enough strength to plan for the state. Eventhough the state has allocated limited funds, much of the resources including cash was mobilized mostly by the Gram, Block and District Panchayats.

In this programme the learners in the age group of 15 to 50 years were enrolled. However, nothing prevented persons beyond 50

years of age to join the programme. A specially prepared text book was used to teach the beneficiaries which included Malyalam language, environmental science, social science, simple arithmetic and oral skills in English language. Two more primers were prepared in Kanada and Tamil languages for the linguistic minority people living in Kerala. A bridge course was given to all the learners before using the primer so that they are able to read and write well. The District Institutes of Education and Training (DIETs) supported the programme by



training the functionaries.

The preparation for Total Primary Education Programme started in September/October 2014 by registering 2,40,804 learners which was followed by starting of classes in November 2014. After the teaching phase the learner evaluation was conducted in the first week of June 2015 at 6613 centres in which 2,05,913 persons sat for the examination. Finally, when the results were declared in the second half of June 2015, the total number of learners passed were 2,02,862 which was equivalent to 98.52%.

-Dr.V.Reghu

Consultant, SLMA, Kerala

“शहीदों पर है नाज हमें”

धन्य-धन्य जीवन उनका
जो देश की खातिर शहीद हुए
जां की परवाह न करके वो
हँसते-हँसते बलिदान हुए

शहीदों पर है नाज हमें
उनकी गाथा हम गाते हैं
नमन करें हम सब उनको
श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं

जन्म भूमि यह स्वर्ग धरा
आओ इसका सम्मान करें
भारत के पावन मस्तक पर
गौरव का चन्दन तिलक करें

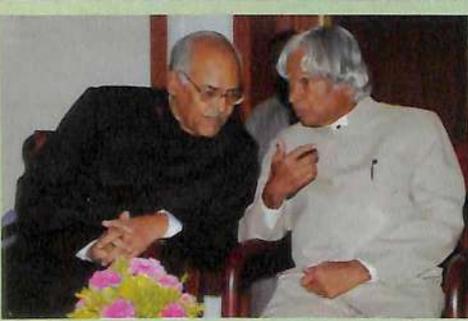
आज़ादी का है मान हमें
इस देश को आगे लाना है
दमन की हर दीवार को अब
ठोकर से मार गिराना है
अखण्ड रहे भारत अपना
यह सपना पूरा करना है
अलगाव की बातें जो करते
उनको अब सबक सिखाना है

बरदाश्त नहीं अन्याय हमें
हर जुल्म का सीना चीरेंगे
इस देश की खातिर जीते हैं
इस देश की खातिर जां देंगे

एक आग धधकती है दिल में
साहस का दरिया बहता है
संस्कारों के जप तप-बल से
दुष्टों का दमन ही होता है

- कुसुम वीर

Literacy Empowers Citizens



Dr.A.P.J. Abdul Kalam in discussion with Shri K.C. Choudhary, President, IAEA

Basically adult literacy empowers the citizens with education and facilitates higher order transformation of society. In a

knowledge society it will have added significance of continuous updating of knowledge. What is known today may not be adequate for tomorrow. What was known earlier may have to be researched for new understanding. The digital world has enabled a huge amount of knowledge and information which can be enabled through conventional teaching processes and autonomous learning methodologies. With regard to

modern distance communication tools to impart adult education the single most obstacles is generation of software content as it requires a mission mode operation integrating the efforts of government, NGOs and individuals. Indian Adult Education Association can contribute in this important area.

-Dr.A.P.J. Abdul Kalam
in his speech after presenting Nehru and Tagore Literacy Awards on July 31, 2009 in New Delhi

Vocational Training Programmes under Saansad Adarsh Gram Yojana

JSS, Shimoga

Under Saansad Adarsh Gram Yojana the Jan Shikshan Sansthan, Shimoga started organizing vocational skill training programmes for the benefit of



Shri Manjunath delivering inaugural address

the poor and downtrodden people. The training programme was inaugurated at Thammadihalli village on July 17, 2015 by Shri Ayanur Manjunath, Member of Parliament (Rajya Sabha) by lighting the ceremonial lamp. Shri Chandrashekar Shetty, President, Thammadihalli Gram Panchayat presided over the function. Among those who present were Shri B. Ramu, IAS, Chief Executive Officer, Zilla Panchayat, Shimoga, Dr. Chadrashekar, Deputy Secretary, Zilla Panchayat, Smt. S. Y. Aruna Devi, Director, Jan Shikshan Sansthan and the members of Gram Panchayat.

A large number of villagers and trainees of different vocational courses being organized by the sansthan also participated.

JSS, Lakhimpur-Kheri

Jan Shikshan Sansthan, Lakhimpur-Kheri started vocational training programmes in 4 villages under

Saansad Adarsh Gram Yojana. They are Nighasan (Raipur Block), Pasgawan (Dhakhaura Block), Bankeganj (Punarbhugrant Block) and Mohammadi (Kaluwa Moti Block). The training programmes were inaugurated on different dates at different places as per the following:

1. Dress Making Cutting & Tailoring course at Raipur centre was inaugurated on June 29, 2015 by Shri Ajay Mishra Teni, Member of Parliament (Lok Sabha). This course is for 6 months and around 20 women undergo training.



2. Fashion Designing and Dress Making Cutting & Tailoring courses at Pasgawan village was inaugurated by Smt. Rekha Arun Verma, Member of Parliament (Lok Sabha) on July 2, 2015.



3. Shri Ravi Prakash Verma, Member of Parliament (Rajya Sabha) inaugurated Dress Making Cutting & Tailoring course in



Bankeganj village on July 9, 2015. Around 41 women have been enrolled in this training programme.

4. A representative of the Member of Parliament inaugurated Dress Making and Cutting & Tailoring course at Mohammadi village. Those present on the occasion include Shri Iftexhar Khan, Block Pramukh, Shri Bhushan Kumar, Block Development Officer, Ms. Nagma Khan, Gram Pradhan, Shri Onkar, former Gram Pradhan, Ms. Manju Tiwari, Assistant Programme Officer, Ms. Noor Bano, Ms. Mamta Yadav, Ms. Sarita Devi, Ms. Mohini, Ms. Anjali and large number of villagers.



-M. Kamrul Hasan
Director, JSS

JSS, Jagatsinghpur

Jan Shikshan Sansthan, Jagatsinghpur started vocational training programmes in the trades Cutting & Tailoring, Appliqué & Patch Work, Soft Toy Making and Phynile Making in two Gram Panchayat villages under Saansad Adarsh Gram



Yojana. In all 300 beneficiaries have enrolled in 13 batches.



The training programmes were inaugurated at different places by Dr. Kulamani Samal, Member of Parliament (Lok Sabha), Shri Ranjib Biswal, Member of Parliament (Rajya Sabha), Shri Chiranjib Biswal, Member of Legislative

Assembly. Those present on the occasion among others were Dr. Ramakrushna Sahoo, Additional District Magistrate, Ms. Sumitra Senapati, Block Development Officer, Local Child Development Programme Officer and Dr. Saraswati Swain, Chairperson of JSS. Shri Antaryami Baral, Director, JSS coordinated the programme and organised the same with public-private partnership.

जेएसएस, लखनऊ

दिनांक 12 अगस्त 2015 को जन शिक्षण संस्थान, लखनऊ द्वारा सांसद आदर्श ग्राम योजना के अन्तर्गत स्थानीय सांसद तथा भारत के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा गोद लिए गये बेंती ग्राम पंचायत (सरोजनी नगर विकास खण्ड) में कौशल विकास कार्यक्रम के तहत सिलाई-कटाई के एक बैच तथा सौंदर्य प्रसाधन एवं स्वास्थ्य संवर्धन के दो बैचों का



उदघाटन सांसद प्रतिनिधि एवं लखनऊ विकास समिति के अध्यक्ष श्री दिवाकर त्रिपाठी, आईएएस (सेवा निवृत्त) द्वारा किया गया। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री त्रिपाठी ने कहा कि देश से बेरोजगारी को दूर करने का एक मात्र उपाय

हुनर हासिल कर, स्वरोजगार प्रारम्भ करना है जिसमें कौशल विकास कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इस अवसर पर एक हस्तशिल्प प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया तथा संस्थान द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे स्थानीय ग्राम प्रधान श्रीमती शान्ति तिवारी तथा मुख्य अतिथि श्री दिवाकर त्रिपाठी को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों तथा अन्य सभी प्रतिभागियों का स्वागत साक्षरता निकेतन के निदेशक, श्री श्रीपति रस्तोगी ने की। संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन तथा संचालन क्रमशः श्री पी.डी. शुक्ला, कार्यक्रम अधिकारी तथा श्री आर.सी. यादव, प्रशासनिक अधिकारी, साक्षरता निकेतन द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अन्त में राज्य संसाधन केन्द्र, लखनऊ के निदेशक श्री राजेश कुमार बाजेपयी ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में संस्थान के सभी पदाधिकारियों तथा प्रशिक्षकों के साथ-साथ सैकड़ों ग्रामवासियों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम में उपस्थित श्री यशपाल, एस.जी.एम., पंजाब नेशनल बैंक, श्री अशोक कुमार मिश्रा, मुख्य प्रबन्धक, पंजाब नेशनल बैंक तथा श्री प्रमोद कुमार उपाध्याय, वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक, ओरियन्टल बैंक आफ कामर्स, ग्राम-बेंती भी उपस्थित रहे जिन्होंने सभी प्रतिभागियों को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के बारे में विस्तार से बताया।

— श्रीपति रस्तोगी
निदेशक, जेएसएस, लखनऊ

जेएसएस, उमरिया

जन शिक्षण संस्थान, उमरिया द्वारा सांसद आदर्श ग्राम योजना के अंतर्गत गोद लिए गए गांवों में कौशल विकास कार्यक्रम के तहत दिनांक 24 जुलाई 2015 को केलमनिया गांव के आदिवासी महिलाओं के लिए एक सिलाई-कटाई प्रशिक्षण केन्द्र

की शुरुआत की गयी जिसके उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर सांसद प्रतिनिधि श्री सुधीर कुमार सैनी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में स्थानीय सरपंच श्री कामता सिंह मसराम एवं भारतीय मजदूर संघ के सदस्य श्री ओमकार द्विवेदी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जेएसएस, उमरिया के निदेशक श्री राहुलदेव



सिंह ने की। इस प्रशिक्षण केन्द्र में सभी आग्रही आदिवासी महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण के साथ-साथ बुनियादी शिक्षा और कौशल उन्नयन की जानकारी भी प्रदान की जाएगी ताकि वे आगे चलकर जीवन में स्वावलंबी बन सकें।

कार्यक्रम में श्री सैनी, श्री मसराम, जिला प्रौढ शिक्षा अधिकारी सुश्री सावित्री सोनी, मण्डल संयोजक श्री एम.एस.अंसारी, एसआरसी भोपाल के कार्यक्रम समन्वयक श्री सुनील कुमार सेन तथा श्री राहुल देव सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन जन शिक्षण संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी श्री ईश्वरदीन राय द्वारा किया गया तथा आभार व्यक्त सहायक कार्यक्रम अधिकारी श्री नरेश प्रसाद यादव ने किया। कार्यक्रम में खैरहा मण्डल के उपाध्यक्ष श्री अनुपम अवस्थी, स्थानीय विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री एच.एल. प्रजापति, प्रेरक अम्बेश्वरी जायसवाल, राज्य संसाधन केन्द्र, भोपाल तथा जन शिक्षण संस्थान उमरिया के सभी प्रमुख अधिकारी, प्रशिक्षिका सुश्री ममता सोनी सहित कई पत्रकार एवं ग्राम पंचायत के गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया।

— ईश्वरदीन राय

कार्यक्रम अधिकारी, जेएसएस, उमरिया

जेएसएस, मंडला

जन शिक्षण संस्थान, मंडला द्वारा सांसद आदर्श ग्राम योजना के अंतर्गत कापा ग्राम में एक साक्षरता एवं कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र की शुरुआत की गई है जिसमें मुख्यरूप से सिलाई-कटाई प्रशिक्षण के साथ-साथ बुनियादी साक्षरता प्रदान की जाएगी। ग्राम पंचायत के भवन में स्थापित इस केन्द्र का उद्घाटन दिनांक 22 जुलाई 2015 को स्थानीय सरपंच श्रीमती हल्की बाई धुर्वे द्वारा किया गया। कौशल विकास प्रशिक्षण की शुरुआत हेतु इस केन्द्र को साक्षर भारत कार्यक्रम की किताबें, प्रशिक्षण हेतु 2 सिलाई मशीन, प्रशिक्षण सामग्री (बॉक्स सहित) तथा सिलाई हेतु कपड़े भी प्रदान किये गये। इस अवसर पर स्थानीय महिलाओं सहित ग्राम के वरिष्ठ नागरिक, ग्राम पंचायत के सम्माननीय सदस्य एवं निकटवर्ती विद्यालय के छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

कार्यक्रम में जेएसएस के निदेशक श्री सुदीप ज्योतिषी तथा कार्यक्रम अधिकारी डॉ.प्रसन्न कुमार दुबे ने सभी प्रतिभागियों को इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में



विस्तार से बताते हुए कहा कि कापा में असाक्षरता को दूर करने तथा स्थानीय लोगों विशेष रूप से महिलाओं को रोजगारोन्मुखी बनाने में यह केन्द्र महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। उन्होंने प्रतिभागियों को बताया कि किस प्रकार से स्थानीय सांसद

श्री फगनसिंह कुलस्ते तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्य पालन अधिकारी श्री जे. विजयकुमार के सक्रिय पहल से सर्वेक्षण के माध्यम से इस प्रशिक्षण केन्द्र हेतु स्थान, विषय एवं अनुदेशिकाओं का चयन किया गया है ताकि स्थानीय समुदाय को इसका अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।



इस अवसर पर संस्था के सहायक कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती सरिता नंदा, प्रशिक्षिका श्रीमती शमशाद बेगम, वरिष्ठ नागरिक श्री गोंडी विश्वकर्मा, शिक्षक श्री शुकुल परस्ते, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता श्री भैयालाल धुर्वे, जनपद सदस्य श्री रतनसिंह पन्द्राम, श्री विश्वनाथ, श्री शिवकुमार, श्री पदमसिंह, श्री रेवतसिंह तथा श्री सोबाराम आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में प्रेरक श्री पहलसिंह द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

जेएसएस, इन्दौर

जन कल्याण कार्य के लिए प्रतिष्ठित संस्थान 'आनन्दम', श्री सारदा मठ तथा जन शिक्षण संस्थान, इन्दौर द्वारा संयुक्तरूप से संचालित सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र के सफल प्रशिक्षणार्थियों के लिए दिनांक 13 अगस्त 2015 को श्री सारदा मठ में एक प्रमाण-पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सारदा मठ की आदरणीय बड़ी माताजी ने स्वयं अपने हाथों से सभी सफल प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये। इस अवसर पर विचार व्यक्त करते हुए 'आनन्दम' के श्री के.सी. पाठक ने कहा कि आत्मनिर्भरता के लिए कौशल विकास जरूरी है। कार्यक्रम में जन शिक्षण संस्थान इन्दौर के निदेशक डॉ. भूपेन्द्रसिंह बघेल ने प्रशिक्षण की उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। श्री वासुदेव लालवानी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में आनन्दम के श्री खण्डेलवाल ने सभी प्रतिभागियों तथा गणमान्य अतिथियों का आभार व्यक्त किया। विदित है कि इस प्रशिक्षण केन्द्र में प्रत्येक बैच के शिक्षार्थियों को प्रौढ शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार किये गये पाठ्यक्रम पर आधारित चार माह अवधि का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।



Visitor



Ms. Stefanic Kroner, Research Scholar in the Department of Education, University of Wurzburg, Germany visited Indian Adult Education Association on July 31, 2015

Financial and Legal Literacy given to Trainees at Model Village



The Jan Shikshan Sansthan, Hoshangabad organized financial and legal literacy programme to 60 trainees of vocational skill development training programme at Sangakheda Kalan, the model village adopted by it in collaboration with the State Resource Centre, Bhopal. The participants were given information on banking procedures, opening of SB account, how unnecessary loans raised lead to hardships, how to control unnecessary expenditures, different methods of saving and different schemes of the government like Jan Dhan Yojana, LIC, pension

Schemes through lecture, slide and film shows and interactive session. In addition legal literacy was also given. On this occasion Shri Gulab Singh Mehra, Sarpanch, Shri Balram Dubey, Secretary, Gram Panchayat, Shri S.A. Hussain, Director, Ms. Shweta Choubey, Programme Officer and Shri Tapan Patel, Assistant Programme Officer, Jan Shikshan Sansthan, Hoshangabad, Shri Imtiaz Khan, Programme Coordinator and Shri Subodh Mandloi, Assistant Programme Coordinator, State Resource Centre, Bhopal were present.

Obituary



Shri J.K. Palit, founder Chairman of Jan Shikshan Sansthan, Gaya, Bihar passed away on July 14, 2015. He was 71 years old. The leadership provided by him to the sansthan in the formative years enabled the organization to grow

fast in serving the people with quality vocational training. He also collaborated closely with the military establishment in Gaya to organize vocational training programmes to the family members of the Jawans which was appreciated by many.

Shri Palit was a former Member of Bihar Legislative Assembly and also served as the Chairman of National Institute of Technology, Kurukshetra, Haryana.

The Indian Adult Education Association conveys heartfelt condolences to the members of the bereaved family and prays for the departed soul to rest in peace.



Shri Alok Pratap Singh, founder Chairman of Jan Shikshan Sansthan, Bhopal-2, Madhya Pradesh passed away in a tragic road accident on July 27, 2015. He was 63 years old.

Shri Singh was an active participant in the struggle for the victims of Bhopal Gas Tragedy to fight a long battle for their legal rights and economic rehabilitation. He was a member of the State level Advisory Committee, Department of Bhopal Gas Relief and Rehabilitation, Government of Madhya Pradesh.

The Indian Adult Education Association conveys heartfelt condolences to the members of the bereaved family and prays for the departed soul to rest in peace.

सहायक शिक्षण सामग्री निर्माण कार्यशाला



आदर्श सांसद ग्राम पंचायतों में स्थापित किए जाने वाले मॉडल लोक शिक्षा केन्द्रों के असाक्षर लाभार्थियों को शीघ्र साक्षर करने के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री निर्माण हेतु राज्य संसाधन केन्द्र, उ.प्र. के पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग द्वारा एक 5 दिवसीय सहायक शिक्षण सामग्री निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 27 से 31

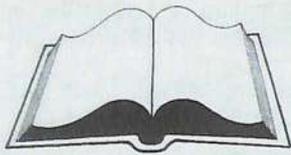
जुलाई, 2015 तक चले इस कार्यशाला में अनेक विषय विशेषज्ञों ने भाग लिया जिसमें श्री हरपाल सिंह, श्री दिनेश पुरोहित, श्री वीरेन्द्र मुलासी, श्री लायक राम मानव, डॉ. आर.सी.सक्सेना, श्री संजय शर्मा, श्री मुकेश भार्गव, श्री यदुनाथ सिंह मुरारी, श्री नरेन्द्र त्रिपाठी तथा श्री अनुराग शर्मा आदि प्रमुख थे।

दिनांक 27 जुलाई 2015 को कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में राज्य संसाधन केन्द्र के अध्यक्ष श्री जी. पटनायक एवं निदेशक श्री राजेश कुमार बाजपेयी ने सभी उपस्थित रचनाकारों एवं विषय-विशेषज्ञों के साथ अपने विचार सांझा करते हुए कहा कि रचनाकार के रूप में हम सभी को प्रयास करना चाहिए कि कार्यशाला में असाक्षरों के लिए निर्मित

की जाने वाली सहायक शिक्षण सामग्री उच्चतम गुणवत्ता से परिपूर्ण हो। श्री बाजपेयी ने यह भी बताया कि फील्ड टेस्टिंग के माध्यम से कार्यशाला में तैयार सामग्री की प्रासंगिकता को परखा जाएगा, तदुपरान्त इसे अन्तिम रूप देकर प्रदेश के जनपदों में संचालित साक्षरता केन्द्रों में उपयोग किया जाएगा।

कार्यशाला का समापन कार्यशाला के संयोजक श्री दिनेश सिंह, एसोसिएट प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर/प्रभारी, पाठ्यक्रम एवं सामग्री निर्माण विभाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

— राजेश कुमार बाजपेयी
निदेशक, रा.स.के, उ.प्र.लखनऊ



Mohankumar, V and Gupta Neha. **Index - Indian Journal of Adult Education**. New Delhi, Indian Adult Education Association, 2015: 204p.

This Index contains articles published in the Indian Journal of Adult Education alongwith the names of authors from the year 1989 to 2014. This journal is published by Indian Adult Education Association, New Delhi.

Singh, Madhu- **Global Perspectives on Recognising Non-formal and Informal Learning Why Recognition Matters**. Germany, Unesco: 2015: 237p.

The purpose of the Technical and Vocational Education and Training: Issues, Concerns and Prospects Book Series is to meet the needs of those interested in an in-depth analysis of current developments concerning various aspects of education for the world of work with particular reference to technical and vocational education and training. The Series examines areas that are at the 'cutting edge' of the field and are innovative in nature. It presents innovative practice, explores controversial topics and uses case studies as examples.

The Series complements the International Handbook of Technical and Vocational Education and Training, with the elaboration of specific topics, themes and case studies in greater breadth and depth than is possible

in the Handbook. Topics covered include: training for the informal economy in developing countries; education of adolescents and youth for academic and vocational work; financing education for work; lifelong learning in the workplace; women and girls in technical and vocational education and training; effectively harnessing ICT's in support of TVET; planning of education systems to promote education for the world of work; recognition, evaluation and assessment; education and training of demobilized soldiers in post-conflict situations; TVET research; and, school to work transition.

Unesco. **Asia-Pacific Regional Education for All Report: A Synthesis of the National EFA Reports**. Bangkok, Unesco, 20105: 113p.

The national EFA reports provide a quantitative account of progress towards the six EFA goals. They also examine enabling and constraining factors, and offer a way forward for developing a post-2015 education agenda. This report provides a comprehensive analysis of the region's socio-economic, demographic, political and technological contexts, including emerging development challenges and aspirations. These contextual factors combined with the region's diversity and dynamism present both challenges and opportunities in defining the

post-2015 education agenda.

Unesco. **Global Inventory of Regional and National Qualifications Frameworks: National and Regional Cases (Vol. II)**. Unesco, 2015: 440p.

The book Global Inventory of Regional and National Qualifications Frameworks: National and Regional Cases Volume 2 provides an inventory of the NQFs of eighty-six countries and seven regional qualifications frameworks. Using country case studies, the Global Inventory charts progress towards the achievement of NQF goals. It draws on extensive research in the field of qualifications, as captured in the list of countries and regions covered.

Central Statistics Office. **India in Figures - 2015**. New Delhi, Government of India, Ministry of Statistics and Programme Implementation. 2015: 29p.

The book India in Figures - 2015 provides the latest data of Demographic Profile, Houses, Household Amenities and Assets, Social Characteristics, Domestic Product and National Income, Prices, Agriculture, Industry, Infrastructure and Services, Energy, Foreign Trade, Fiscal Performance, Labour and Employment, Tourism and Millennium Development Goals.

Compiled by
Neha Gupta

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,
23378436, 43489048

E-mail: iaeadelhi@gmail.com

Editor: Dr. Madan Singh
Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.9

Re. 1 per copy

September 2015



Indian Adult Education Association

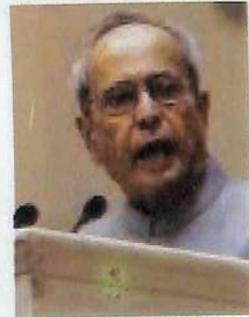
International Literacy Day – 2015



[From L-R: Shri YSK Seshu Kumar, Dr. S.C.Khuntia, Smt. Smriti Zubin Irani, Shri Pranab Mukherjee, Shri Upendra Kushwaha, Mr. Shigeru Aoyagi]

& Director General, National Literacy Mission Authority.

In his address Shri Pranab Mukherjee said that we have significantly raised our literacy rates from 18% in 1951 to 72.98% in 2011 but are yet to achieve 100% literacy. Hence, we must strive to achieve the goal of literacy



"We must strive to achieve the goal of literacy laid down in XII Five Year Plan and gender gap in literacy should not remain more than 10 percentage points".

**- Shri Pranab Mukherjee
President of India**

The International Literacy Day was celebrated all over India with all enthusiasm and dedication. The national level function at New Delhi organized by the National Literacy Mission Authority, Ministry of Human Resource Development, Department of School Education and Literacy was graced by the President of India, Shri Pranab Mukherjee. Others present on the occasion were Smt. Smriti Zubin Irani,

Union Minister of Human Resource Development, Shri Upendra Kushwaha, Minister of State for Human Resource Development (School Education and Literacy), Dr. S.C. Khuntia, Secretary to Govt. of India, Department of School Education and Literacy, Mr. Shigeru Aoyagi, Director & Unesco Representative to India, Bhutan, Maldives and Sri Lanka and Shri YSK Seshu Kumar, Joint Secretary (Adult Education)

September 5th, the birthday of Dr. S. Radhakrishnan is observed as Teacher's Day.



"I am indebted to my father for living, but to my teacher for living well".

- Alexander the Great

laid down in XII Five Year Plan and gender gap in literacy should not remain more than 10 percentage points. He further said that Saakshar Bharat in combination with Swachh Bharat has the potential to transform India and literacy has assumed greater significance in light of paradigm shift which has taken place



in the last one decade by giving rights to people backed by enactments in areas of employment, education and information. Therefore, we must

consider empowerment and sustainability through literacy.

Smt. Smriti Zubin Irani in her address appreciated the literacy functionaries and volunteers for making 2.28 crore learners literate in a short span of 15 months and expanding the scope of literacy by including economic empowerment by

opening around one crore bank accounts under Pradhan Mantri Jan Dhan Yojna and 92.7 lakh beneficiaries to avail the benefits of Pradhan Mantri Suraksha Bima

Yojna. She further said that the National Policy on Education is being revised and asked for suggestions from all to achieve the goal of universal literacy. She concluded her address by stating that the Ministry has taken a pledge to achieve 100% literacy in 'Saansad Aadarsh Grams' of 410 districts by March 2016 and appealed the state and district representatives to take similar kind of pledge for their respective operational areas.

In this function a short film on "Financial Literacy" was shown and the President of India gave away Saakshar Bharat Awards to the following best performers:



State Literacy Mission Authority, Tamil Nadu
Ms. S. Sukanya, Joint Director and
Shri G. Gnanasambandan, Field Officer received the award



State Resource Centre, Kolkata, West Bengal
Smt. Nandini Kajuri, Director received the award



Jan Shikshan Sansthan (DAWS), Allahabad,
Uttar Pradesh
Shri Amitab Garg, Director received the award

8th September, 2015

Chief Guest

SHRI PRADEEP KIKHE
P
dia



Dharmapuri District, Tamil Nadu
Shri K. Vivekanandan, Collector and Smt.
Mageswari, Chief Educational Officer received
the award



Bastar District, Chhattisgarh
Shri Amit Kataria, Collector & DM and Shri
K.L.Chauhan, CEO, Zilla Panchayat received the
award



Haveri District, Karnataka
Shri K.B. Anjanappa, CEO, Zilla Panchayat and Dr.
A.I. Lokapur, District Adult Education Officer
received the award



Palamalai Gram Panchayat, Salem District, Tamil
Nadu
Smt. M. Vijaya, Village President and Dr.
D.Thangavel, District Coordinator received the
award



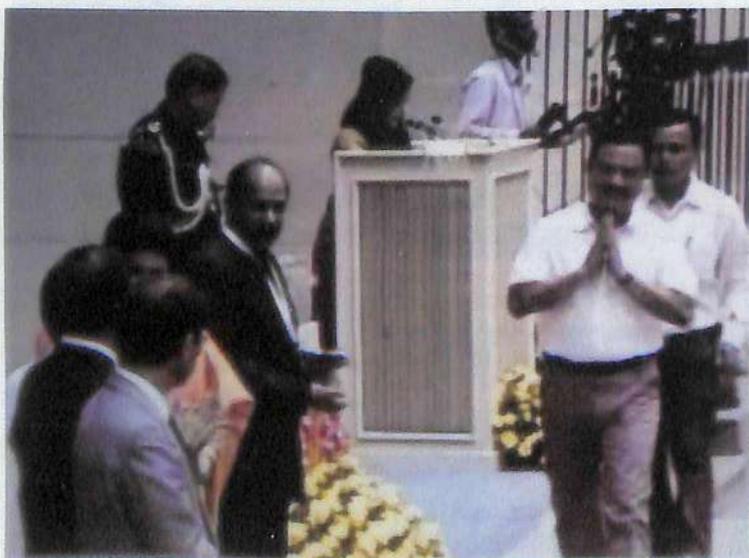
Giroud Gram Panchayat, Raipur District,
Chhattisgarh
Shri Chandra Kumar Naik, Village Sarpach and
Shri Aditya Chandok, District Project Officer
received the award



Poosarlapadu Gram Panchayat, Srikakulam District, Andhra Pradesh
Dr.P.Laxminarasimham, District Collector and Shri G.Krishna Rao, Deputy Director (Adult Education) received the award



Ankireddygudem Gram Panchayat, Nalgonda District, Telangana
Shri Surubi Mallesh Gaur, Village Sarpanch and Shri K. Chandrashekar, Deputy Director, Adult Education received the award



Khanggabok Part-II, Mayai Leikai, Thoubal District, Manipur
Shri M. Okendro, Minister of Education, Govt. of Manipur and Shri Sunil Singh, Senior Prerak & Member Secretary received the award

Shri Upendra Kushwaha gave the welcome address and Mr. Shigeru Aoyagi read out the message of Ms. Irina Bokova, Director General

of Unesco.

At the end Shri YSK Seshu Kumar gave the vote of thanks.

IAEA Organized NFE Training to International Participants



Participants with President, Vice President & General Secretary of IAEA

2015 was devoted to five lecture sessions on different topics. The first session was taken by Shri YSK Seshu Kumar, Joint Secretary (Adult Education) and Director General, National Literacy Mission Authority on the topic **Saakshar Bharat Programme: Government's Literacy Promotion Efforts in India** in which he gave a detailed account of adult literacy rate as per 2011 Census, literacy programmes implemented in India under different Five Year Plan period, the need for bringing Saakshar Bharat Programme in 2009 including its goals and objectives, achievements made so far and assessment and certification by NIOS.

The second session was taken by Prof. S.Y.Shah, Director, International Institute of Adult and Lifelong Education on the topic **Indian Adult Education: Historical Perspective** in which he analyzed different



perspectives including overview of major literacy interventions, experience of using radio under PREAL (Project Radio Education for Adult Literacy), Computer Based Functional Literacy Programme (CBFL), Same Language Sub-titling (SLS) in which literacy taught through Film and Folk Songs telecast on National Television, Women's empowerment programme "Mahila Samakhya" and short term professional programmes called PALDIN (Participatory Adult Learning Documentation and Information Networking).

Japan International Cooperation Agency (JICA) under Knowledge Co-Creation Programme (Group & Region Focus) organized a training programme for promotion of Non-formal Education to the officers working in the field of literacy from Afghanistan, Laos, Myanmar and Uganda from August 23, 2015 to September 18, 2015. While a large portion of the training was given to the participants in Tokyo, three days training from September 14-16, 2015 was assigned to Indian Adult Education Association to brief the participants about the Indian experience in literacy and also show them the literacy centres in action. In all 9 persons participated in the training out of which 2 were from Afghanistan (Mr. Akbar Ali & Mr. Rahimi Rahmanullah), 2 from Myanmar (Ms. Phyu Sin Thant & Ms. Yin Nwe Tun), 2 from Laos (Mr. Silavongphet Kongphat & Ms. Phangthavong Phanhaha), 2 from Uganda (Ms. Kateme Elizabeth & Amongi Lydia) and one from Japan Ms. Inagaki Hitomi who was the Coordinator. Mr. Masami Suda, Advisor, System Science Consultants Inc. Tokyo also visited the field alongwith the participants.



The first day of the training programme, i.e. September 14,

Dr. Nasim Ahmad, Deputy Educational Adviser, Department of School Education and Literacy took a

former Director, State Resource Centre, Jamia Millia Islamia on Teaching Methods of Literacy Education.



session on **Monitoring System on Literacy Education in India** in which he detailed all the information regarding magnitude of literacy programme in India, development of web based monitoring system from village to national level, salient features of monitoring system in Saakshar Bharat, data uploading, micro planning from the village level onwards, division of activities at different levels of implementation including financial allocation, selection of banks for fund release and bank authorization, consolidation of data and presentation of reports.

Smt. Farooq explained in detail about the methods of teaching - Synthetic Method, Analytic Method and Eclectic Method, teaching of Primer, improving ability of reading skills, teaching of writing and learning to use writing in meeting the practical needs.

On September 15-16, 2015 the participants visited

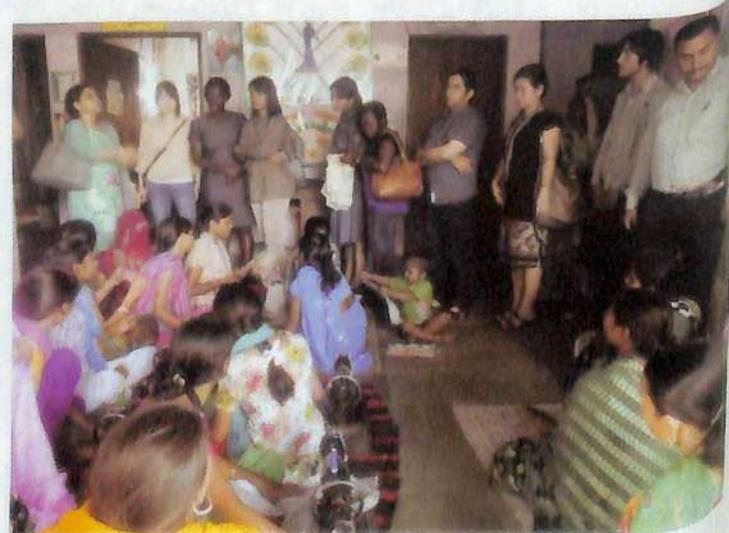
In the post lunch session Dr. Anita Priyadarshini, Reader, Staff Training and Research Institute of Distance Education (STRIDE), IGNOU addressed the trainees on the topic **Curriculum and Teaching Contents of Literacy Education in India**. Dr. Anita spoke



Literacy Centre, Govindpuri



on Policy Frameworks on Formal Schooling, Policy Frameworks on Literacy, the need for functional literacy, Basic Education, Vocational Education and Continuing Education Programmes, literacy curriculum - meaning, Teaching Contents /Subject Matter, Main Area and Specific Topics in Literacy Curriculum, Population Education in Literacy Education - Role and Importance, Learning Experiences, the importance of Improved Pace and Contents of Learning (IPCL), Evaluation Strategy and Significant Lessons Learnt in Curriculum Development.



Vocational Training Centre, Kirti Nagar

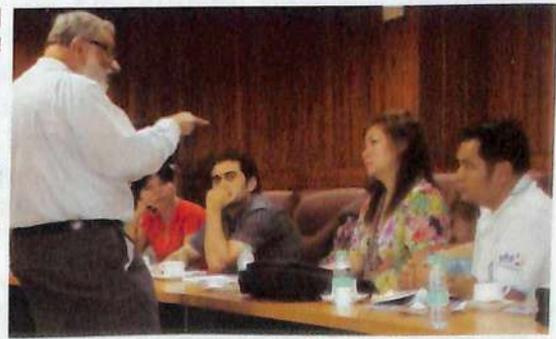
The last session was taken by Smt. Nishat Farooq,



Literacy & Vocational Training Centre, Dasghera



Vocational Training Centre, Vasant Vihar



[Left-participants attending a session in NIOS. Right- Dr. Kuldeep Agarwal discussing with participants]

literacy and vocational training centres run by Laxman Public School, Hauz Khas Enclave at Bhoomiheen Camp Slum in Govindpuri, Dasghera urban centre by Springdales School, Pusa Road, Gender Resource Centre, Kirti Nagar by Indian Adult Education Association and Jan Shikshan Sansthan, RK Puram in Arya Samaj Building, Vasant Vihar.

The participants also had an opportunity to visit National Institute of Open Schooling at NOIDA where they were briefed by senior officers about Skill Development Programme for Adult Literates/Neo-Literates, Equivalency Programme and Assessment and Certification of Neo-literates. The field visit was coordinated by Ms. Seema Banerjee (Laxman Public School), Smt. Jasmeet Chandok (Springdales School), Smt. Kalpana Kaushik and Shri Hemant Singh (IAEA), Smt. Shashi Pathak (JSS, RK Puram) and Dr. Kuldeep Agarwal (NIOS).

The overall coordination of field visits in planning and execution was given by Dr. Rajni Kumar, Honorary Advisor, Delhi Schools Literacy Project (DSLSP), Smt. Usha Ram, Principal, Laxman Public School and Smt. Vijaya Puri, Coordinator, DSLSP.

The entire training programme was planned and implemented by Dr. V.Mohankumar, Director, IAEA.

ILD Message from DG, Unesco

The theme of International Literacy Day 2015 is Literacy and Sustainable Societies. Literacy is a key driver for sustainable development. Literacy skills are the prerequisite for the learning of a broader set of knowledge, skills, attitudes and values, required for creating sustainable societies. At the same time, progress in areas of sustainable development, such as health and agriculture, serves as an enabling factor in the promotion of literacy and literate environments.

"New technologies, including mobile telephones, also offer fresh opportunities for literacy for all. We

must invest more, and I appeal to all Members States and all our partners to redouble our efforts – political and financial – to ensure that literacy is fully recognized as one of the most powerful accelerators of sustainable development. The future starts with the alphabet."



- Ms. Irina Bokova

Director-General, Unesco

Unesco International Literacy Prize Winners 2015

Every year Unesco International Literacy Prizes are awarded in recognition of excellence and innovation in literacy. They are Unesco King Sejong Literacy Prize and Unesco Confucius Prize for Literacy.

In the year 2015 the Unesco King Sejong Prize went to Mozambique and Sri Lanka and Unesco Confucius Prize for Literacy went to Madagascar, Chile and Slovakia.

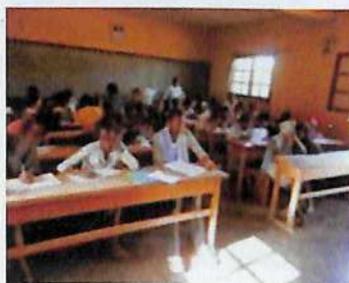
Associação Progresso in Mozambique received the prize for the programme "Literacy in Local Language - a Springboard for Gender Equality". It uses literacy to promote changes in traditional practices that are harmful to women and girls as well as paying special attention to teaching adults to read and write in a local language. It contributes

to increasing the participation of women in local governing bodies, consultative councils and community based institutions in the districts covered by the programme.

The **National Institute of Education of Sri Lanka** received the prize for "Open School Programme" which provides education to isolated communities and groups such as indigenous populations, prisoners and street children as well providing an alternative educational programme for those deprived of a formal education. The institute designs and develops curricula for

general and teacher education and builds the professional competencies of the education community through research and innovation.

The **Platform of Associations in charge of ASAMA and Post-ASAMA (PACA), Madagascar** received the prize for the programme "Action for Inclusive Education in Madagascar", which has reached over 13,000 people since it was established in 2009 based on the integral and multi-disciplinary approach that considers social and economic development as inter-dependent. It provides



"Studying to fight against poverty".

The **Juan Luis Vives School of Valparaiso, Chile** received the prize for the programme "Literacy for People Deprived of Liberty" which has reached over 2000 male and female prisoners since it was established in 1999. The school helps them to complete their studies and contributes to their integration into society and the labour market by providing literacy, technical and vocational education and creating spaces for reflection and introspection.

The **Association Svatobor, Slovakia** received the prize for the programme "Romano Barardo" which has worked with marginalized Roma communities since 2006. It focuses on the development of their educational and eco-gardening skills, contributing to their inclusion in society and providing them with a stable source of food. The Association also works as a mediator in a society where prejudices against Roma communities have a detrimental effect on their social and economic development.



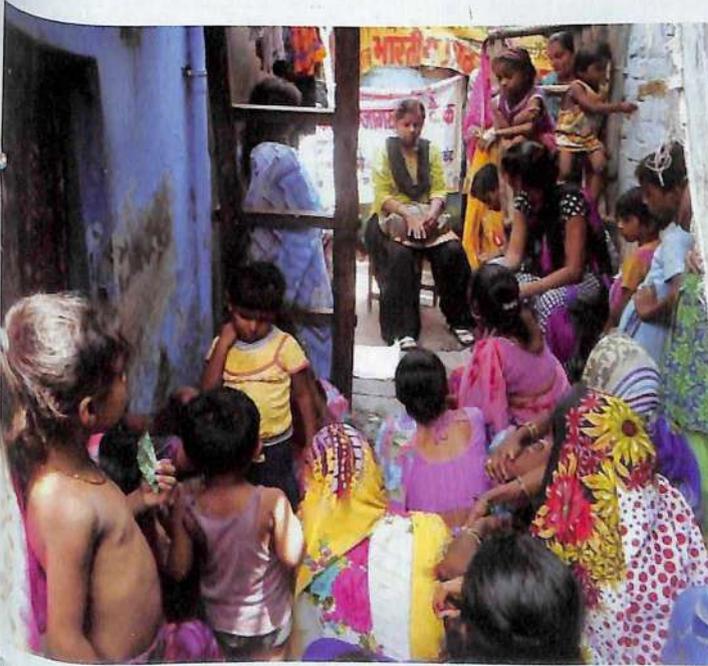
Smt. Kalpana Kaushik has been promoted as Deputy Director in Indian Adult Education Association effective from September 1, 2015

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्ति नगर, दिल्ली

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र मुख्यरूप से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए दिल्ली सरकार द्वारा प्रायोजित एक कार्यक्रम है जिसे स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा संचालित केन्द्र कीर्ति नगर में स्थित है। इस केन्द्र द्वारा अगस्त-सितम्बर माह के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नरूप है:

कानूनी जागरूकता बैठक

गत 19 अगस्त 2015 को हरिजन कैम्प, कीर्ति नगर तथा 2 सितम्बर 2015 को बाघवा कैंप कीर्तिनगर में दो कानूनी जागरूकता बैठकों का आयोजन



जीआरसी/डेलसा को सूचित करनी चाहिए। यौन उत्पीड़न से पीड़ित बच्चों की काउंसिलिंग अवश्य करानी चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि इन मामलों में डरने की नहीं हिम्मत दिखाने की जरूरत होती है जिससे अपराधी को सजा मिल सके। सभी प्रतिभागियों को हेल्प लाइन नम्बर भी बताया गया जिस पर 24x7 कभी भी शिकायत की जा सकती है। इन्हीं चर्चाओं के बाद प्रथम बैठक की समाप्ति की गयी।

विदित है कि झुग्गी-झोपड़ियों तथा मलिन बस्तियों में यौन अपराधों की संख्या अधिक होती है लेकिन कानूनी जानकारी के अभाव में लोग शान्त रह जाते हैं, कुछ लोग तो समाज में बदनामी के डर के कारण किसी से कुछ नहीं बताते। बच्चे यदि अपने माता-पिता से शिकायत भी करते हैं तो वे उन्हें चुप करा देते हैं जिससे अपराधी को अपराध करने के लिए और बढ़ावा मिल जाता है। इसलिए दूसरे जागरूकता बैठक में संदर्भ व्यक्ति ने यौन उत्पीड़न से बचाव कैसे किया जाए तथा इसमें विधिक सेवा प्राधिकरण और जीआरसी की भूमिका के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। साथ ही साथ बच्चों के अभिभावकों को यह भी बताया गया कि वे अपने बच्चों के साथ मित्रता पूर्वक व्यवहार करें तथा उनके मित्रों, पार्क में खेलने वालों एवं स्कूल में मित्रों तथा शिक्षकों के व्यवहार पर नजर रखें। यदि आवश्यकता पड़े तो हेल्प लाइन नम्बर या निकट के पुलिस स्टेशन में भी एफ.आई.आर. करने से ना डरें।

पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण

दिनांक 21 अगस्त 2015 को बाघवा कैंप कीर्तिनगर तथा 31 अगस्त 2015 को 5/35, कीर्ति नगर में दो पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

किया गया जिसमें कुल 51 व्यक्तियों ने भाग लिया। दोनों ही बैठकों में संदर्भ व्यक्ति के रूप में श्रीमती रागिनी एस. राज (एडवोकेट) उपस्थित हुईं। प्रथम बैठक का मुख्य उद्देश्य उपस्थित प्रतिभागियों को बाल यौन उत्पीड़न कानून (POCSO) के बारे में जागरूक करना था जबकि दूसरे का उद्देश्य यौन अपराधों से बचाव कैसे हो इस बारे में प्रतिभागियों को जागरूक करना था। प्रथम बैठक में श्रीमती राज ने लोगों को बताया कि आये दिन बच्चों के यौन उत्पीड़न की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी बच्चे के बच्चे आज सचमुच सुरक्षित नहीं है। बच्चों से किया गया किसी भी प्रकार का यौन शोषण व उत्पीड़न सबसे घिनौने अपराध है जिसके लिए 7 वर्ष की सजा या फिर आजीवन कारावास या फांसी की सजा भी हो सकती है। उन्होंने कहा कि बाल यौन उत्पीड़न का शिकार लड़के-लड़कियां दोनों ही हो सकती हैं। ऐसे में बच्चों को यौन उत्पीड़न से बचाने के लिए सभी अभिभावकों को सावधानियां बरतनी चाहिए। हमें बच्चों की गलतियों पर नजर रखनी चाहिए तथा शक होने पर तुरंत उनसे पूछताछ करनी चाहिए। आवश्यकता होने पर तुरंत एफआईआर दर्ज करनी चाहिए या फिर



प्रथम बैठक में संदर्भ व्यक्ति के रूप में उपस्थित श्रीमती अंजूबाला ने सभी उपस्थित महिलाओं को स्वच्छ-भारत, स्वस्थ-भारत की चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान की भी चर्चा की। तत्पश्चात संदर्भ व्यक्ति श्रीमती मीना राणा ने व्यक्तिगत स्वच्छता और घर तथा आस-पास के वातावरण को कैसे स्वच्छ रखना जाए, इसके बारे में जानकारी दी। उसके पश्चात सुश्री रेखा पाण्डेय ने घर को साफ-सुथरा रखने के तरीकों और कूड़ा प्रबंधन के बारे में भी बताया। इस अवसर पर कुछ महिलाओं द्वारा हाथ धोने की विधि का प्रदर्शन भी करके दिखाया गया।

दूसरे बैठक में 'पहल समूह' के सभी 20 सदस्यों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी संदर्भ व्यक्ति के तौर पर जीआरसी से श्रीमती मीना राना, श्रीमती अंजूबाला, सुश्री रेखा पांडे उपस्थित रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारंभ पिछले प्रशिक्षण में बताए गये स्वच्छता के विभिन्न मुद्दों पर आपसी परिचर्चा के साथ किया गया। संदर्भ व्यक्तियों ने सभी से प्रशिक्षण में बताए गये मुद्दों के उपयोग के बारे में पूछा तो सभी ने अपने-अपने कार्य के अनुभवों को सांझा किया। कुछ लोगों को अपने कार्य अनुभव बताने में थोड़ी दिक्कत हो रही थी पर संदर्भ व्यक्तियों ने उनका हौसला बढ़ाते हुए बताया कि प्रत्येक अच्छे कार्य की शुरुआत करते समय कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है लेकिन बाद में उसका अच्छा परिणाम आता है।

इसके पश्चात सदस्यों को अलग-अलग समूहों में बांटकर उनसे विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गयी जिससे समस्याओं के समाधान के विभिन्न विकल्प निकलकर आये। सभी स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं ने शपथ ली की हम अपने स्वच्छता अभियान में अधिक से अधिक युवा साथियों को जोड़ेंगे तथा उन्हें व्यक्तिगत स्वच्छता, आस-पास के वातावरण और खान-पान में स्वच्छता के महत्व के बारे में बताएंगे। अंत में सभी सदस्यों को तीसरे और अंतिम प्रशिक्षण के बारे में बताकर प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन किया गया।

पोषाहार शिविर

दिनांक 27 अगस्त 2015 को हरिजन कैंप कीर्तिनगर में एक पोषाहार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मलिन बस्ती हरिजन कैंप



कीर्तिनगर की कुल 36 महिलाओं ने भाग लिया। शिविर के प्रारम्भ में पोषाहार विशेषज्ञ ने सभी महिलाओं के साथ जीआरसी की भूमिका पर चर्चा के साथ-साथ साफ-सफाई, संतुलित और पौष्टिक आहार तथा महिलाओं के स्वास्थ्य पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने महिलाओं के शरीर के लिए विशेष रूप से आयरन, कैल्शियम और विटामिन्स की आवश्यकता तथा उसकी कमी से होने वाली बीमारियों और उसके लक्षणों पर भी चर्चा की और घरेलु स्तर पर खून की कमी की जाँच की विधि भी बताई।

किशोरावस्था, गर्भावस्था तथा स्तनपान की अवस्था में एनीमिया अधिक पाया जाता है। इसलिए प्रतिभागियों को आयरन तथा अन्य पदार्थों की कमी



की पूर्ति के लिए भोजन में हरी पत्तेदार सब्जियां, गुड़-चना, अंकुरित अनाज, दाल, टमाटर तथा खट्टे रसदार फल खाने की भी सलाह दी गई। इसके पश्चात दो नुस्खों क्रमशः पौष्टिक पालक तथा मिक्स आटे का चीला और पौष्टिक नारियल धनिया, पुदीना की चटनी को महिलाओं से बनवा कर उसका

प्रदर्शन कराया गया तथा उन्हें खिलाया भी गया। इस अवसर पर कुछ महिलाओं ने अपने स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याओं पर प्रश्न भी पूछे।

पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक

गत 4 सितम्बर 2015 को 10/67, कीर्ति नगर की झुग्गियों में एक पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कुल



मिलाकर 40 लोगों ने भाग लिया। बैठक में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर जीआरसी से श्रीमती मीना राना, श्रीमती अंजुबाला, सुश्री रेखा पांडेय उपस्थित रहीं।

बैठक के प्रारंभ में सभी प्रतिभागियों को स्वच्छता का महत्व और उसके

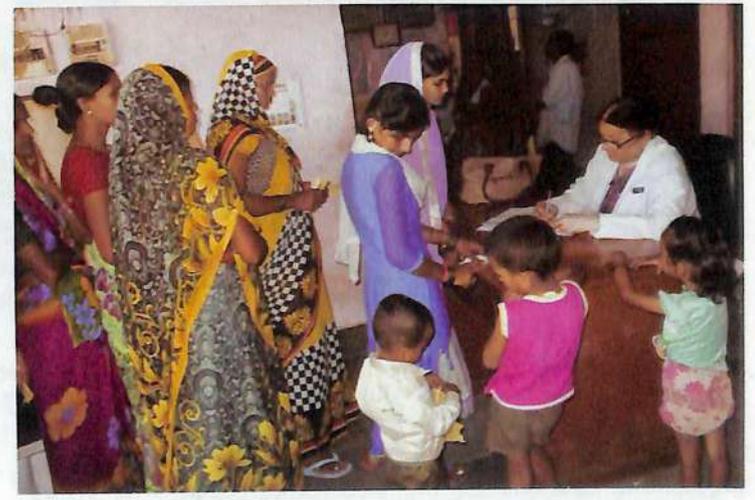


अभाव में होने वाली बीमारियों के बारे में बताया गया। उन्हें यह भी बताया गया कि छोटी-छोटी गलतियों तथा आलस्य के कारण हम तथा हमारे बच्चे बीमार हो जाते हैं जिससे परिवार को आर्थिक तथा शारीरिक क्षति पहुंचती है। इसलिए सभी को व्यक्तिगत सफाई तथा आस-पास की सफाई पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रतिभागियों को चार्ट पेपर तथा कहानियों के माध्यम से स्वच्छता के फायदे के बारे में भी जागरूक किया गया तथा वाश किट और पैम्फलेट दिखाकर उन्हें जागरूक करने का प्रयास किया गया। इसके अलावा

प्रतिभागियों को साबुन से हाथ धोने के कई सही तरीकों का प्रदर्शन करके दिखाया गया और अधिक जानकारी के लिए पैम्फलेट भी वितरित किये गये। अंत में गंदगी न फैलाने के लिए सभी को शपथ भी दिलाई गयी।

ओपीडी

दिनांक 7 सितम्बर 2015 को 5/35, कीर्ति नगर में एक ओपीडी का



आयोजन किया गया जिसमें महिला रोग विशेषज्ञ डॉ गुप्ता द्वारा कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र के झुग्गी-झोपडियों से आए कुल 55 लोगों का इलाज किया गया। तदुपरान्त फार्मासिस्ट श्री चोपड़ा ने उन्हें डाक्टर द्वारा अनुमोदित



दवाईयां नि:शुल्क वितरित की। डॉ गुप्ता ने दो मरीजों को अन्य अस्पतालों के लिए रेफर भी किया। साथ ही साथ उन्होंने सभी मरीजों को मच्छरों से बचाव हेतु विशेष हिदायतें दी तथा कुछ मरीजों को पुनः अगले ओपीडी में आकर जांच कराने के लिए भी कहा।

International Workshop on Women's Empowerment



The International Institute of Adult and Lifelong Education (IIALE) organized a two day International Workshop in the Lecture Hall of Indian Adult Education Association on "Women's Empowerment and Education" on September 11-12, 2015 in which 17 students participated out of which 9 were from University of Wurzburg, Germany, 3 from University of Delhi, 3 from Jawaharlal Nehru University and another 2 from Jamia Millia Islamia. Dr. Madan Singh, General Secretary, IAEA, Prof. Rajesh, Department of Adult, Continuing Education and Extension, University of Delhi and Smt. Kalpana Kaushik, Deputy Director, IAEA were also present. The workshop aimed to highlight the concept of women's empowerment and the role of education in empowering women in India and Germany.

Prof. S.Y. Shah, Director, IIALE in his introductory remarks briefly said about Indian Adult Education Association, its history and context of programmatic alliances of the Association with Wurzburg University, Germany, University of Delhi, Jawaharlal Nehru University and Jamia Millia Islamia. He also presented the overview of the programme.

Dr. Bani Bora, Senior Fellow, IIALE gave a presentation on the concept of "Women Empowerment". The key highlights of her presentation were: phases of women's growth, various aspects of discrimination against women at different phases of growth, vicious cycle of poverty, stages of women empowerment, indicators of women empowerment and role of adult education in women empowerment.

Prof. Karuna Chanana, former Professor of Sociology, Jawaharlal Nehru University gave a presentation on "Women Higher Education and Empowerment: Indian Context" in which she highlighted the education scenario both in Indian and international context by giving two case studies to substantiate the facts.



Dr. Mandakini Pant, Freelance Consultant on Gender and Education took a session on "Empowered Women, Strong Communities: Educating Women Farmers in Andhra Pradesh". She began her presentation by explaining the context of agriculture crisis in Andhra Pradesh and its impact on women farmers. Initiatives on Community Managed Sustainable Agriculture (CMSA)

in terms of component, educational process and ways of mobilizing women farmers for education were elaborated upon subsequently. Impact of community education initiatives on women farmers was also highlighted. She concluded her presentation by drawing lessons on community education and women empowerment.

Ms. Stefanie Kroner, Research Scholar in Adult and Continuing Education, University of Wurzburg gave a presentation on "Empowerment through Transformative Learning and Reflected Group Dynamics in Adult Education" in which she elaborated on the concept of transformative learning, phases of learning, phases of transformative processes and group dynamics. The students actively participated in all the lecture sessions by raising a number of issues and queries for clarification.



The highlight of the workshop was field visit to Gender Resource Centre (GRC), Kirti Nagar which was coordinated by Smt. Kalpana Kaushik, Chief Functionary of GRC and Shri Hemant Singh, Project Coordinator. The participants took keen interest in the community development initiatives of GRC by interacting with the trainees of vocational courses, learners of adult education centre, local community and the field functionaries to understand their views on developments undertaken. Subsequently, they reflected on their field visit experiences and shared their insights in the workshop on the following day i.e. on September 12, 2015.

International Literacy Week Celebrated by DACEE, University of Delhi



The Department of Adult, Continuing Education & Extension (DACEE), University of Delhi organized a series of activities on the occasion of International Literacy Week from September 4-10, 2015. The

activities included library visit, extension work, poster competition, panel discussion on the topic 'Literate Society' and a collaborative programme at community centre in Wazirabad.

On September 8th a special lecture was organized in which Prof. Sagan Bhatia, former HOD, Department of Adult, Continuing Education & Extension, University of Delhi was the Chief Guest. He spoke on the need for the involvement of society in promoting literacy.

The International Literacy Week concluded with a rally, talk and interaction in Sarvodya Rajkiya Vidyalaya, Village - Jaunti, Delhi. This village has been adopted by Dr. Udit Raj, Member of Parliament under Saansad Adarsh Gram Yojana.



The entire programme was planned by Prof. J.P. Dubey, Head of the Department and organized in close association with the faculty members, students, collaborating agencies and government departments including Delhi Police.

- Prof. J.P. Dubey,
- HOD, DACEE

International Literacy Day Organized by DACE, SV University

The Department of Adult and Continuing Education (DACE) and Institute for Advanced Studies in Education (IASE), Sri Venkateswara University, Tirupati jointly organized the celebrations of International Literacy Day 2015 in the university. While Prof. T. Kumaraswamy, Principal, IASE presided over the function, Prof. M.C. Reddeppa Reddy, Director, DACE was the Chief Guest. Other speakers were Prof. P. Adinarayana Reddy, Director, DACE and Prof. Stanley Jayakumar, Department of Sociology, SV University.

In this function Prof. P. Adinarayana Reddy and Prof. Stanley Jayakumar, the Best Teacher Awardees of the university were felicitated with garland and mementos.

As part of the celebration an awareness camp and rally were organized at Ramachandrapuram in Tirupati Rural Mandal, Chittoor District in collaboration with Zilla Parishad High School. Shri V. Munichandra Reddy, Secretary, ROPE (a NGO) was the Chief Guest.

All the programmes related to ILD celebrations were conducted with the active cooperation of members of the staff of DACE, Research Scholars and collaborating agencies.

- Dr. P. Adinarayana Reddy
Director, DACE

OBITUARY



Smt. Binny Yanga, Founder Chairman, Jan Shikshan Sansthan, Naharlagun and State Resource Centre, Arunachal Pradesh expired on September 3, 2015 in a hospital at Guwahati. She was 58 years old and is survived by her husband, two daughters and two sons.

Smt. Binny was conferred Padma Shri Award in the year 2012 in recognition of her dedicated service in the field of social work.

The Indian Adult Education Association conveys heartfelt condolences to the members of the bereaved family and prays for the departed soul to rest in peace.

‘हिंदी है पहचान हमारी’

हिंदी स्वाभिमान हमारा
यह संस्कृति की भाषा
इसमें ही अपना रस घोले
भारत की हर भाषा

शब्दों में बहु भाव लिए
पर्याय छिपे कई अर्थ किए
समानार्थ मिलकर जब आए
सम भावों को गले लगाएं

अभिधा में सीधी सी लखती
लक्षणा में करती यह लक्षित
इसपर भी जब बात बने ना
व्यंगों से करती है व्यंजित

अद्भुत भाव भरे कविता में
कहानी में है सोच निराली
आनन्दित करती यह सबको
इसकी महिमा सबसे न्यारी

यह है परम्परा का सागर
ज्ञान यही, विज्ञान यही
गहन भाव लखते इसमें
हमारी है पहचान यही

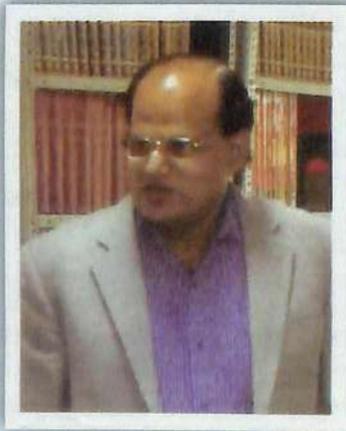
शब्द-शब्द में भाव गहन हैं
नाना रस इसमें पगते हैं
अलंकार श्रृंगार सजें जब
अद्भुत रूप सभी लखते हैं

पहेली इसमें सुन्दर सजती
लोकोक्ति सागर सा भरती
करें मुहावरे अठखेली जब
मन को यह मोहित सा करती

भारत माँ के भाल पे चमके
हिंदी की बिदिया है प्यारी
इसका लोहा सभी मानते
यह तो है पहचान हमारी

— कुसुम वीर

DSLSP – Valedictory Function of Literacy Week



Prof. S.Y. Shah, Director, International Institute of Adult and Lifelong Education has been nominated to the **Hall of Fame's Class of 2015** by the Board of Directors of the International Adult and Continuing Education Hall of Fame. The Hall's induction ceremony will be held on November 18, 2015 at Renaissance Oklahoma City Hotel, USA during the 64th Annual Conference of the American Association for Adult and Continuing Education.

The Indian Adult Education Association congratulates Prof. S.Y. Shah for this prestigious nomination and wishes for many more such recognitions in future.

As part of International Literacy Day 2015 celebrations the Delhi Schools Literacy Project (DSLSP) like previous years conducted Literacy Week by organizing various programmes in different schools for which the valedictory function was held on September 11, 2015 in Springdales School, Dhaula Kuan. Shri YSK Seshu Kumar, Joint Secretary (Adult Education) & Director General, National Literacy Mission Authority was the Chief Guest.

The programme started with the welcome address by Dr. Jyoti Bose, Principal, Springdales School, Dhaula Kuan followed by lighting of the ceremonial lamp and report of literacy week activities presented by Dr. Rajni Kumar, Honorary Advisor, DSLSP. The students from different schools presented cultural programmes and the Chief Guest distributed awards to the winners of different competitions. The sixth volume of JAAGO (Joint Action and Greater Opportunity) was released on this occasion and a Literacy Pledge was taken by the students to strive to make the country literate.

The vote of thanks was proposed by Smt. P. Loomba, Honorary Secretary, DSLSP.



ILD 2016 will be Golden Jubilee

International Literacy Day is celebrated all over the world on the 8th of September every year to mobilize public opinion for the cause of literacy. For the first time, problem of illiteracy was discussed at the international level in the World Congress of Ministers of Education at Tehran September 8, 1965. Subsequently, Unesco in its 14th session in November 1966 had declared this day as the International Literacy Day. Hence, the first International Literacy Day was celebrated on September 8, 1967 & the one celebrated on September 8, 2015 was 49th in series.

So, the International Literacy Day 2016 will be 50th in series which is Golden Jubilee.

Springdales Education Society Celebrates Diamond Jubilee



The journey of Springdales Schools started in September 1955 and the year 2015-16 is observed as the Diamond Jubilee Year. To commemorate the glorious services rendered to the field of education in the last 60

years the Springdales Education Society organized Diamond Jubilee celebration on September 19, 2015 at Vigyan Bhawan, New Delhi. The Vice President of India, Shri Hamid Ansari was the Chief Guest. Smt. Salma Ansari was also present on the occasion.

Dr. Rajni Kumar, Founder and Chairperson, Springdales Education Society presented a detailed report of the achievements made by the Springdales Schools in Delhi, Jaipur and Dubai.

Shri Ansari in his inaugural address paid rich encomium to Dr. Rajni Kumar on achieving many milestones in the last 60 years of excellence in education and complimented the school for pursuing the motto 'Vasudhaiva Kutumbakam' as it reflects a progressive educational philosophy, spirit of service and upheld the principles of liberty, equality, fraternity and justice for all. He also presented the

Diamond Jubilee Distinguished Alumni Award to Dr. Jyoti Bose, Principal, Springdales School, Dhaulta Kaun for her association with Springdales for the last 60 years.



While Dr. Jyoti Bose gave the welcome address, the vote of thanks was given by Dr. Kiran Datar, Chairperson, Springdales, Dhaulta Kaun.

Immediately after the inaugural session an educational conference was organized in the same venue with the theme "In Search of a Humane Society – The Role of Education". This conference also had panel discussions on chosen topics.

The valedictory address was given by Dr. Karan Singh, a veteran Scholar, Philosopher and Member of Parliament (Rajya Sabha). He said that the need of the hour is to change the future citizens into humane and compassionate individuals by providing holistic education.

Dr. Jyoti Bose presented a vision statement for 2025 while Smt. Arneeta Mulla Wattal, Principal, Springdales School, Pusa Road charted out the path ahead.

SRC, Dehradun Organized ILD Celebration



The State Resource Centre, Dehradun, Uttarakhand organized International Literacy Day celebration on September 8, 2015 in Gujjar Basti, Gaundikhata, Haridwar in which Shri Ramesh Singh, Civil Judge, Haridwar was the Chief Guest. Others present on the occasion were

Shri Brijmohan Tyagi, District Coordinator, Moh. Isha, Pradhan of the village, Shri Roshandeen of 'Gujjar Punarwas Samiti' and Shri Samsher Ali, Gujjar Eco Vikas Parishad and social worker.

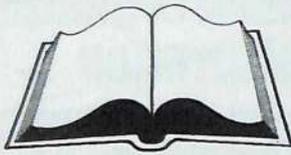


Shri Ramesh Singh in his address said that education is important for all round development of an individual, community and the society as it not only gives knowledge about 3Rs but also creates awareness which is the basic for development.

Moh. Isha while giving welcome address stressed the importance of literacy and the need for strengthening primary education. Smt. Pratima of State Resource Centre in her address dealt more on the need of educating women as when mother is educated, the entire family is educated. The women today are more enterprising and forthcoming and hence, they need not get empowerment on the recommendation of anyone else, instead the empowerment should come within the women.

A few successful Preraks of Adult Education Centres shared their experience while Smt. Rekha of SRC recited a poem and primary school children presented a cultural programme. A quiz competition was conducted and winners given prizes. Best students and Preraks were given prizes and certificates. At the end Shri Quasim of SRC proposed the vote of thanks.

- Dr. Priya Zadu
Director, SRC



Department of Economic and Social Affairs. **World Population Prospects: The 2015 Revision.** New York, United Nations, 2015: 66p.

The World Population Prospects: The 2015 Revision provides the demographic data and indicators to assess population trends at the global, regional and national levels and to calculate many other key indicators.

According to the results of the 2015 Revision, the world population reached 7.3 billion as of mid-2015, implying that the world has added approximately one billion people in the span of the last twelve years. Sixty per cent of the global population lives in Asia (4.4 billion), 16 per cent in Africa (1.2 billion), 10 per cent in Europe (738 million), 9 per cent in Latin America and the Caribbean (634 million), and the remaining 5 per cent in Northern America (358 million) and Oceania (39 million). China (1.4 billion) and India (1.3 billion) remain the two largest countries of the world, both with more than 1 billion people, representing 19 and 18 per cent of the world's population, respectively.

Lamichhane, Kamal. **Disability, Education and Employment in Developing Countries: From Charity to Investment.** New Delhi, Cambridge University Press, 2015: 286 p.

This book discusses the importance of human capital of persons with disabilities and demands the paradigm shift from charity into investment approach. Society in general believes that people with disabilities cannot benefit from education, cannot participate in the labour market and cannot be

contributing members to families and countries. To invalidate such assumptions, this book describes how education in particular helps make persons with disabilities achieve economic independence and social inclusion. For the first time, detailed analyses of returns to the investment in education and nexus between disability, education, employability and occupational options are discussed. Moreover, other chapters describe disability and poverty followed by the discussion of barriers behind why persons with disabilities are unable to obtain education despite the significantly higher returns. These foundational themes recur throughout the book.

UNESCO. **Promising EFA Practices in Asia-Pacific Region – India Sarva Shiksha Abhiyan.** France, United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization, 2015: 74p.

This case study on promising practices in Education for All (EFA) in India presents successful and innovative initiatives which have helped governments accelerate EFA progress at the country level.

India's focus on elementary education and literacy goals precedes the World Conference on Education for All held in Jomtien in 1990. In 1986, India's national educational goals and strategies were re-examined and were reframed in the National Policy on Education, leading to the setting of the goal of free and compulsory education for all children aged 6–14.

The new education strategies and policies were in response to the grim

education situation that existed in much of India in the mid-1980s. In many states literacy rates were low, especially among girls and women and there was much disparity in education levels between states. Particular challenges had arisen as a result of extreme inequality in society. Education indicators showed that disadvantaged communities, which constituted more than one-third of India's population, had low achievement levels in many areas. In the context of such challenges, India's progress since then towards achieving the EFA Goals has been remarkable.

While India has shown progress in all six of the EFA goals, the extent of progress in each varies. India's major achievements have been in Goal 1 and Goal 5.

UNICEF. **Progress for Children Beyond Averages: Learning from the MDGs (No. 11).** UNICEF, 2015: 68p.

This edition of Progress for Children is UNICEF's final report on the child-related Millennium Development Goals (MDGs). It presents latest data that show while the MDGs helped drive tremendous advances in the lives of the world's children, development efforts in the past 15 years failed to reach millions of the most disadvantaged. The report spotlights where the international community must now focus attention and action to reach the most vulnerable children and achieve sustainable growth.

Compiled by
Neha Gupta
Jr. Librarian-cum-Documentation
Assistant, IAEA

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,
23378436, 43489048

E-mail: iaeadelhi@gmail.com

Editor: Dr. Madan Singh

Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.10

Re. 1 per copy

October 2015



Indian Adult Education Association

Professor Regina visited IIALE

Dr. Regina Egetenmeyer, Professor of Adult/Continuing Education, Institute of Education, Julius Maximilian University, Wurzburg, Germany visited the International Institute of Adult and Lifelong Education (IIALE) on October 10, 2015 and held discussion with Shri K.C.Choudhary, Chancellor and the faculty members on initiating collaborative programmes. During the meeting Professor S.Y.Shah, Director, IIALE recalled the visit of eight German students to the Institute and the academic support provided to them and the details of the specially designed International Workshop on Women's Empowerment. Appreciating the support provided



by the Institute, Professor Regina shared the experiences of students who were greatly benefitted by the course and hoped that in future more collaborative activities will be

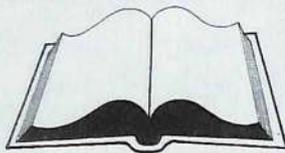
undertaken.

The meeting was also attended by a few faculty members of Jawaharlal Nehru University and University of Delhi.

International Workshop on Women's Empowerment

Group photograph of the participants of the International Workshop on Women's Empowerment held at the International Institute of Adult and Lifelong Education on September 4-5, 2015. The workshop was attended by the students of Julius Maximilian University, Wurzburg, Germany, Jamia Millia Islamia, University of Delhi and Jawaharlal Nehru University. Apart from the students, the photograph shows the faculty members of the institute, resource persons and the lead speaker Professor Karuna Chanana, an eminent expert on gender.





Lamichhane, Kamal: **Disability, education and employment in developing countries: from charity to investment.** New Delhi, Cambridge University Press, 2015: 271 p.

This book tells the importance of human capital of persons with disabilities and demands the paradigm shift from charity into investment approach. Society in general believes that people with disabilities cannot benefit from education, cannot participate in the labour market and cannot be contributing members to families and countries. It describes how education in particular helps make persons with disabilities achieve economic independence and social inclusion. Detailed analyses of returns to the investment in education and nexus between disability, education,

employability and occupational options are discussed. Other chapters describe disability and poverty followed by the discussion of barriers behind why persons with disabilities are unable to obtain education despite the significantly higher returns.

Matthias, Pilz; Gengaiyah, Uma and Rengan, Venkatram. **Skills development in the informal sector in India: the case of street food vendors.** In International review of education: journal of lifelong learning, April 2015: pp. 191-209.

On the basis of a survey of 49 street food vendors in the Indian cities of New Delhi and Coimbatore, the authors of this article demonstrate that informal learning is a particularly significant

form of vocational education and training. Vendors do not acquire skills in formal vocational education and training (VET) settings; for them, opportunities for learning on the job in family businesses or in informal employment are especially important. Unlike other studies, article's findings show that street food vendors have a wide range of specialist knowledge, skills and expertise required to conduct their business which they deploy profitably. These skills are not confined to preparing and selling food but also extend to areas such as price setting and marketing. All the street food vendors interviewed identified strongly with their occupation and expressed pride in it. Around half voiced a wish for further training. The article suggests promoting non-formal learning settings geared explicitly to street food vendors' difficult working conditions. In line with a few other international innovative schemes, they term this a "non-formal apprenticeship" approach.

National University of Educational Planning and Administration and Department of School Education and Literacy. **Secondary Education in India: Progress towards Universalisation - Flash Statistics: 2014-15 (Provisional).** New Delhi, NUEPA, 2015: 68p.

Secondary Education in India, Flash Statistics: 2014-15 is based on data collected during U-DISE 2014-15. The document is based on the data received from as many as 1.52 million schools spread over 680 districts across 36 States & UTs.

The Report Cards are produced to provide comprehensive information on all the vital parameters, be it student, teacher or school related variables, yet

concise, accurate information about each school in a standard format which is easy to understand.

Unesco. **EFA Global Monitoring Report 2015: Gender and EFA 2000-2015 - Achievements and Challenges.** France, Unesco: 2015: 57p.

This publication provides detailed evidence of how much has been achieved in the past 15 years but also where considerable - some quite intractable - challenges remain. It highlights notable progress in gender parity in primary and secondary education, particularly in South and West Asia, while underscoring the persistent barriers to achieving gender equality in education. The lack of progress in literacy among adult women is especially stark: in 2015 an estimated 481 million women, 15 years and over, lack basic literacy skills, 64% of the total number of those who are illiterate, a percentage virtually unchanged since 2000.

This report describes an array of country efforts, some quite effective, to achieve and go beyond gender parity in education. Many of these policies and programmes focus on the immediate school environment in which girls learn. Others focus on the informal and formal laws, social norms and practices that deny girls their right of access to, and completion of, a full cycle of quality basic education. The analyses and key messages in Gender and EFA 2000-2015: Achievements and Challenges deserve careful scrutiny as the world embarks on a universal, integrated and even more ambitious sustainable development agenda in the years to come.

UNESCO. **Mobile Phones and Literacy: Empowerment**

Women's Hands. France, Unesco, 2015: 126p.

Despite the advancements made by Information and Communication Technologies in several international development sectors, further evidence is needed on how mobile phone technology is reaching women, improving their learning, and

providing them with new opportunities and better living conditions. Can mobile phones develop women's literacy and strengthen their capability to choose and benefit from wider educational, social and decent work opportunities that can improve their lives? Based on a cross-analysis of nine mobile

learning projects in three world regions, this publication sheds light on the extent to which mobile phones can enhance women's literacy and lead to their empowerment.

Compiled by
Neha Gupta

Jr. Librarian-cum-
Documentation Assistant, IAEA

Annual Subscription Revised

It is to inform all the concerned that the annual subscription of Indian Journal of Adult Education and Proudh Shiksha has been revised as per the following with effect from January 2016:

1. Indian Journal of Adult Education Rs.500/-
2. Proudh Shiksha Rs.200/-

Those individuals/institutions desire to remit the Annual Subscription for the year 2016 may kindly do the same as per the revised rates. The Demand Draft may be drawn in favour of **Indian Adult Education Association** payable at New Delhi.

Book for Sale

The Indian Adult Education Association, New Delhi has brought out recently a book titled **Status and Trend of Literacy in India (Adult and Youth) Database for Literacy Programmes - 2011**. This book has 200 pages with 8 chapters and 17 tables. Annexure also gives district-wise information regarding literates, illiterates and literacy rates by sex and rural/urban areas for the age group 7 and above and illiterates, literates and literacy rates by sex and areas for adolescent (10-19) and youth (15-24) population - 2011.

The price of the book is Rs.800/- (US \$ 90) per copy.

Those who desire to purchase may kindly send the purchase order by mail (director@iaea.org) clearly indicating the number of copies required and

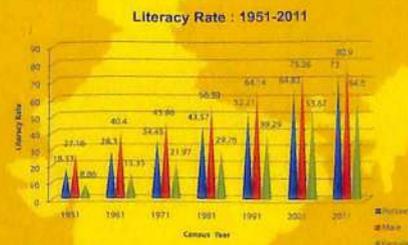
STATISTICS SPEAK VOLUMES

Indian Adult Education Association

17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002
Phones: 23379292, 23376436, 23379309 Tele Fax: 91-11-23376209
E-Mail: director@iaea.org, director@iaea.org
Website: www.iaea.org, www.iaea.org

STATUS AND TREND OF LITERACY IN INDIA

(ADULT AND YOUTH)
DATABASE FOR LITERACY PROGRAMMES - 2011



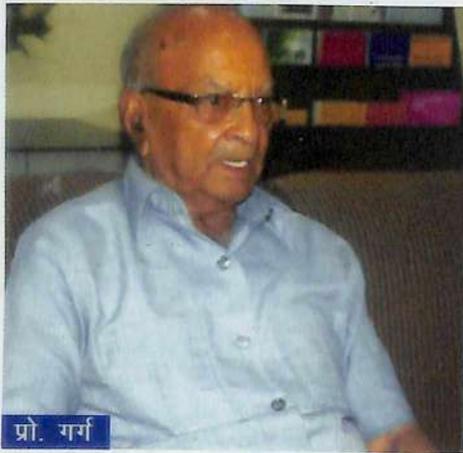
Prem Chand



Indian Adult Education Association

the Demand Draft for the total amount based on the number of copies requested for by post. The Demand Draft may be drawn in favour of **Indian Adult Education Association** payable at New Delhi.

ज्ञान की अविरल धारा में हमें अपने योग्यता के अनुसार कुछ नवीन जोड़ना चाहिए - प्रो. गर्ग



प्रो. गर्ग

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के वर्तमान संरक्षक प्रो. भवानी शंकर गर्ग प्रौढ़ शिक्षा जगत के एक जाने-माने व्यक्तित्व हैं। 87 वर्षीय प्रो. गर्ग ने लगभग छः दशक लंबे अपने सामाजिक एवं अकादमिक जीवन में भारतीय शिक्षा जगत, विशेषरूप से प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा के क्षेत्र में हुए सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रकार के परिवर्तनों को बेहद करीब से देखा है। वे न केवल इन परिवर्तनों के चश्मदीद गवाह रहे हैं बल्कि इन परिवर्तनों की पृष्ठभूमि में हो रहे रणनीतिक चहलकदमियों के सक्रिय अंग भी रहे हैं। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के रिसर्च ऑफिसर श्री बी. संजय से हुई अपनी बातचीत में उन्होंने उन तमाम बातों पर प्रकाश डाला है जो अभी भी प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा जगत के लिखित प्रकाशनों का अंग नहीं बन पाये हैं। ये तथ्य आगामी वर्षों में शोध कार्य करने वाले विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे।

बी संजय: महोदय, भारत के शिक्षा जगत में प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। इस अवधारणा के अंतर्गत चलाये गये विविध कार्यक्रमों की निरंतर श्रृंखला के चलते आज हमारी साक्षरता दर 73 प्रतिशत तक पहुंच गयी है लेकिन हमारे पास इस प्रगति के पृष्ठभूमि में हो रहे घटनाओं एवं तथ्यों की विस्तृत और क्रमिक जानकारी उपलब्ध कराने



लायक कोई ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध नहीं हैं। आप जैसे कतिपय लोगों के संस्थागत स्मृतियों में बहुत सारी जानकारियां उपलब्ध हैं जिन्हें लिखित इतिहास का अंग बनना चाहिए ताकि भविष्य के अध्ययेताओं तक वह सरलता से पहुंच सके। कृपया यह बताएं कि प्रौढ़ शिक्षा जगत से आपका संबंध कैसे और कब बना?

प्रो. गर्ग: 11 वर्ष की आयु में मेरे पिता का स्वर्गवास हो गया। एक सामान्य परिवार में जन्मे बच्चे के सिर से इस छोटी सी उम्र में पिता का साया उठ जाना उसे बेसहारा बनाने जैसा ही था। ऐसे में अध्ययन के लिए मैं अपने ननिहाल कुम्भलगढ़ आ गया। यहां मैंने आगे की पढ़ाई की। अध्ययन एवं अपने अन्य जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए मैं नौकरी करना चाहता था जिसकी तलाश में मैं विद्यापीठ पहुंचा। राजस्थान विद्यापीठ में मुझे नौकरी मिल गयी। दिनांक 2 सितंबर 1948 को विद्यापीठ में मेरी नियुक्ति हो गयी। पंडित जनार्दन राय नागर ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से पढ़ाई की थी। वे पंडित मदन मोहन मालवीय के व्यक्तित्व और कार्य से बेहद प्रभावित थे। गांधी जी और मालवीय जी की प्रेरणा से पंडित जनार्दन राय नागर ने 21 अगस्त 1937 को विद्यापीठ की स्थापना की।

हैड, हार्ट और हैंड (Head, Heart and Hand) की अवधारणा के माध्यम से मनुष्य का सर्वांगीण विकास तथा शिक्षा विशेषरूप से प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा, के माध्यम से जन शिक्षण का कार्य करना विद्यापीठ का केन्द्र बिन्दु था जिससे मैं स्वाभाविक ही जुड़ गया। सामाजिक कार्य में मेरी व्यक्तिगत रुचि को इससे एक नवीन दिशा प्राप्त हुई और इस प्रकार प्रौढ़ शिक्षा जगत के साथ मेरा प्रारंभिक संपर्क बना जो उत्तरोत्तर और अधिक प्रगाढ़ और व्यापक होता चला गया।

बी संजय: महोदय, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ से आप किस प्रकार जुड़े?

प्रो. गर्ग: विद्यापीठ और भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ दोनों ही समकालीन संस्थान हैं। एक की स्थापना



अगस्त 1937 में हुई तो दूसरे की स्थापना सन् 1939 में हुई। इतना ही नहीं दोनों संस्थाओं के उद्देश्य में भी व्यापक समानता रही है।

परिणामस्वरूप दोनों संस्थानों के शीर्षस्थ सक्रिय कार्यकर्ताओं में स्वाभाविक संबंध रहा जिसके कारण मैं भी भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ से संबद्ध हो गया। अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा आयोजित गतिविधियों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण गतिविधि माना जाता रहा है। प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाले देशभर के सभी प्रमुख व्यक्ति इस अधिवेशन में भाग लेने की इच्छा रखते हैं। संभवतः इस क्षेत्र के राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लोगों के आपसी संवाद के लिए यह सम्मेलन अत्यंत ही महत्वपूर्ण होता था। इस हेतु मेरा भी अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलनों में जाना प्रारंभ हो गया। यह मेरा सौभाग्य रहा है कि प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अपने दौर में सक्रियरूप से कार्य करने वाले लगभग सभी राष्ट्रीय व्यक्तित्वों के साथ मुझे कार्य करने का अवसर मिला और उनमें से भी अधिकांश के साथ मेरा मित्रवत संबंध रहा है।

बी संजय: महोदय, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के साथ आपका इतना लंबा संबंध रहा है। क्या यह संबंध निरंतर रहा या इसमें कोई व्याधान भी आया है?

प्रो. गर्ग: व्याधान तो कोई नहीं आया। पर भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के साथ मेरा संबंध उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होता गया है। शुरु के दिनों में मैं एक सामान्य कार्यकर्ता की तरह ही अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलनों में भाग लेने मात्र के लिए आता-जाता था लेकिन इस क्षेत्र के प्रति मेरी निष्ठा और सक्रियता के कारण उस दौर के प्रमुख लोगों मुझे ज्यादा से ज्यादा जिम्मेवारी प्रदान करते गये। परिणामस्वरूप मैं संघ का अध्यक्ष भी बना और आज संरक्षक भी हूं। इन प्रमुख पदों पर पर रहते हुए मैंने

ने दायित्वों को अत्यंत प्रभावी ढंग से निर्वहन करने का सदैव प्रयास किया है।

बी संजय: महोदय, राजस्थान विद्यापीठ और भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ इन दोनों संस्थानों में आप शीर्षस्थ पदों पर रहे हैं। क्या आपको दोनों ही संस्थाओं को साथ-साथ संचालित करने में दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ा?

प्रो. गर्ग: उलझने तो कहीं भी और कभी आती हैं। कोई दिक्कत आयी ऐसा मुझे याद नहीं। इसका कारण यह रहा कि मैंने सदैव इस बात को ध्यान में रखने की कोशिश की कि कोई भी संस्थान किसी एक व्यक्ति द्वारा सफलतापूर्वक संचालित नहीं हो सकता। इसके लिए सकारात्मक सोच रखने वाले योग्यतापूर्ण मानव संसाधन विकसित करने की आवश्यकता होती है। इसलिए चाहे वह विद्यापीठ हो संघ, मैंने नवीन लोगों को खड़े करने और उनमें नेतृत्व क्षमता विकसित करने का भरपूर प्रयास किया है। आजकल मैं नवीन पीढ़ी के नेतृत्व को केवल मार्गदर्शन प्रदान करने का ही दायित्व अपने पास रखता हूँ।

बी संजय: महोदय, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ में आपका पसंदीदा विषय-वस्तु क्या रहा है जिसे की आप लगातार विकसित होते रहना देखना चाहते हैं और उसके लिए प्रयत्न भी करते हैं?

प्रो. गर्ग: हम प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाले एक राष्ट्रीय स्तर की स्वयंसेवी संस्थान हैं जो अपनी न्यूनतम वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने में स्वयं सम्पूर्ण है। संघ में कार्य करते हुए मेरी नजर सदैव इस बात पर रही है कि ऐसे संस्थान से शेष समाज की जो अपेक्षाएं हैं क्या हम उन्हें पूरा करने में कारगर साबित हो पा रहे हैं? समाजविक ही मेरी नजर हमारे द्वारा समय-समय पर प्रदत्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा नियमितरूप से प्रकाशित की जा रही प्रकाशन सामग्रियों की गुणवत्ता पर जाती है। इसके साथ ही साथ मैं इस बात को भी सदैव रेखांकित करता रहा हूँ कि हमें समाज क्षेत्र विशेष में कार्य कर रहे तमाम स्वयंसेवी संस्थाओं को नेतृत्व प्रदान करना चाहिए तथा स्वयंसेवी रूप विकसित करना चाहिए जिसका उपयोग

समाज आसानी से कर सके।

बी संजय: महोदय, आपके द्वारा समय-समय पर लिये गये वे कौन से प्रमुख निर्णय हैं जो भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुए हैं?

प्रो. गर्ग: मैं संघ के कार्य में विस्तार, अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलनों की गुणवत्ता तथा यहां कार्य कर रहे कार्यकर्ताओं के सम्यक और उत्तरोत्तर विकास के बारे में सदैव सोचता रहता हूँ। इन्हीं बातों को वास्तविक धरातल पर आगे बढ़ाने के लिए हमने कई सकारात्मक निर्णय लेने का प्रयास किया है। संघ के कार्य में विस्तार हेतु हमने भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के नई दिल्ली स्थित कार्यालय में नवीन भवन निर्माण तथा क्षेत्रीय स्तर पर कार्य विस्तार का निर्णय लिया। अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन गुणवत्तापूर्ण हो इसके लिए समय-समय पर अलग-अलग प्रयोग किये। राजस्थान विद्यापीठ के सक्रिय सहयोग से सन् 2014 में उदयपुर में हुई अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन में हमने राजनीतिज्ञों के साथ-साथ समाज जीवन के विविध क्षेत्रों के प्रमुख विद्वानों को शामिल करने का सफल प्रयास किया। संघ में कार्यरत कार्यकर्ता हमारी प्रगति के मुख्य आधार हैं। उनके विकास एवं उत्तरोत्तर समृद्धि के लिए मैंने यथासंभव निर्णय लेने का प्रयास किया है। मेरा मानना है कि भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ को देश के अलग-अलग हिस्सों में प्रत्यक्ष कार्य विस्तार के लिए क्षेत्रीय केन्द्र विकसित करने चाहिए।

बी संजय: महोदय, क्या आपको लगता है कि भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा क्षेत्र के विकास में अपना सार्थक और अपेक्षित योगदान दे पाया है?

प्रो. गर्ग: भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने भारत में प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा क्षेत्र के विकास में अपना सार्थक योगदान दिया है इसमें कोई संदेह नहीं है। जहां तक अपेक्षित योगदान का प्रश्न है इस पर बार-बार चिंतन की आवश्यकता है। हम प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा के क्षेत्र में भारत में कार्य करने वाले अद्वितीय संस्थान हैं। इसलिए हमारे कार्य की तुलना किसी और से नहीं बल्कि सामाजिक अपेक्षा से की जानी

चाहिए। इस दिशा में जब मैं सोचता हूँ तो मुझे स्वर्गीय एस.सी.दत्ता साहब की एक बात याद आती है। अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलनों के बारे में दत्ता साहब कहते थे कि ये ग्रेट इंडियन जंबूरी हैं। इसके चर्चा और प्रतिभागियों का स्तर क्या है इस पर हमें आंतरिक शोध करना चाहिए। पर प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता को उजागर करने तथा देशभर में इसके कार्य को विस्तृत करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह भी निश्चित है। यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस क्षेत्र के बेस्ट प्रोडक्ट सदा से हमारे संपर्क में रहे हैं पर उनमें से अधिकांश अध्ययन एवं अध्यापन के अतिरिक्त संचालित इस क्षेत्र के दैनंदिन गतिविधियों में शामिल नहीं होते। हमें यह प्रयास करना चाहिए कि वे सभी इस क्षेत्र की गुणवत्ता के विकास में अपना सार्थक योगदान दे सकें और इसके लिए हमें उपयुक्त कार्ययोजना भी तैयार करनी चाहिए।



बी संजय: महोदय, क्या सरकार, विशेषरूप से राष्ट्रीय साक्षरता मिशन से भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ को सहयोग प्राप्त होता रहा है?

प्रो. गर्ग: अपनी नीतियों के अनुसार भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ सदैव ही केन्द्र सरकार द्वारा लायी गयी विविध योजनाओं के संकल्पना विकास एवं उसके क्रियान्वयन में सहयोगी रहा है। जहां तक राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की ओर से की गयी पहल की बात है तो वे स्वयं द्वारा आयोजित विविध विमर्श कार्यक्रमों में हमें बुलाते हैं और हमारे निदेशक सहित अन्य कई शीर्षस्थ अधिकारी इन विमर्शों में सक्रियरूप से भाग लेते हुए अपना सार्थक योगदान देते हैं।



बी संजय: महोदय, क्या भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ में नवीन नेतृत्व को प्रोत्साहित किया जाता है?

प्रो. गर्ग: अवश्य। मैं स्वयं ही इस बात का गवाह हूँ कि संघ में नेतृत्व बहुत ही सहजता के साथ परिवर्तित होता रहा है। मेरी निजी सफलता का राज भी यही है। मैंने स्वयं भी कोशिश की है कि संस्थान

में उभरकर आते हुए नवीन नेतृत्व को अधिक से अधिक जिम्मेवारी सौंपी जाए।

बी संजय: महोदय, अपनी आगामी जीवन यात्रा सुगमतापूर्ण तरीके से तय करने के लिए संघ को किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए?

प्रो. गर्ग: मेरा अनुभव यह कहता है कि व्यक्तित्व संघर्ष (Personality Clash) बड़ी-बड़ी संस्थाओं को शिखर से शून्य तक पहुंचा देता है। इसलिए हमें सदैव सावधान रहना चाहिए ताकि हमारे बीच किसी भी स्थिति में व्यक्तित्व संघर्ष की स्थिति न आये। एक बात और संस्थान में कार्यरत कार्यकर्ताओं के समान विकास पर भी उचित ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि सभी कार्यकर्ता अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिए उद्वत रहें। यह किसी भी संस्थान के प्रगति की चाबी होती है।

बी संजय: महोदय, आपके नेतृत्व में संघ ने अपना प्लेटिनम जुबली वर्ष मनाया ? आपके अनुसार आगामी 25 वर्षों में संघ की कार्ययोजना में क्या विशेष परिवर्तन किया जाना चाहिए कि यह यादगार उपलब्धियों के साथ अपने स्थापना के शताब्दी वर्ष में प्रवेश करे?

प्रो. गर्ग: किसी स्वयंसेवी संस्थान द्वारा अपने सक्रिय कार्यकाल का शताब्दी वर्ष मनाना स्वयं में ही एक यादगार उपलब्धि होगी। उम्र के जिस पड़ाव में मैं पहुंच चुका हूं शायद ही मैं शताब्दी वर्ष समारोह जो वर्ष 2039 में मनाया जायेगा, का साक्षात्कार कर सकूँ। पर यह तो सच है कि उस वर्ष में गिनाये जा सकने वाले उपलब्धियों की आधारशिला आज ही रखी जानी है। मैं मानता हूँ कि संघ को आगामी 25 वर्षों की कार्ययोजना भारत द्वारा घोषित विविध राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के सांतत्य में करनी चाहिए।

यूनेस्को में व्यक्त सामूहिक प्रतिबद्धता के अनुसार सन् 2030 तक देश के सभी बच्चे और किशोर आठवीं (लोअर सेकेण्डरी एजुकेशन) तक की शिक्षा प्राप्त कर लेने चाहिए, प्रौढ़ तथा कौशल विकास शिक्षा को आजीवन शिक्षण के माध्यम से सर्वव्यापी बनाया जाना चाहिए ताकि सभी लोग सुविधापूर्ण तरीके से जीवन यापन कर सकें। भारत इन लक्ष्यों को निर्धारित अवधि में हासिल कर सके इसके लिए

प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा क्षेत्र को प्रोफेशनल टच दिये जाने की आवश्यकता है। यह सभी जानते हैं कि जब तक स्वयंसेवी संस्थान इसके लिए अपेक्षित माहौल और दबाव उत्पन्न नहीं करेंगे तब तक सरकार शायद ही इसे वह स्वरूप प्रदान करे और इस क्षेत्र में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ आने वाले दिनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि हम न केवल राष्ट्रीय बल्कि उन अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से भी कदम से कदम मिलाकर कार्य करें जो इस दिशा में कार्यरत हैं। विश्वविद्यालय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अकादमिक संस्थान इसमें बेहद सहायक सिद्ध हो सकते हैं। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ निर्णायक भूमिका का निर्वहन करे इसके लिए यह भी आवश्यक है कि संस्थान में कार्यरत मानव संसाधन की गुणवत्ता के उत्तरोत्तर विकास पर भी लगातार ध्यान दिया जाय और आवश्यक निवेश किया जाय।



बी संजय : महोदय, आप हमारे नवीन पीढ़ी को कोई संदेश देना चाहेंगे?

प्रो. गर्ग: मैंने अपने जीवन में यह महसूस किया है कि पद,

प्रतिष्ठा और पैसा ये तीनों ही कष्टदायी होते हैं। ये तीनों ही अंहकार का कारण हैं।

इनका उपयोग इतराने के लिए अथवा किसी पर धौंस जमाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। इससे आप न केवल



अपना सम्मान खोते जाते हैं बल्कि धीरे-धीरे अपने समाज और अपने इर्द-गिर्द के लोगों से भी कट जाते हैं और इनके अभाव में अंततः निःसंग जीवन जीने को बाध्य होते हैं। एक दूसरी बात यह है कि अकादमिक क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि ज्ञान की धारा अविरल है और इसका प्रवाह हमारे पहले भी था और हमारे बाद भी रहेगा। अक्सर कुछ नया करने के प्रयास में हम पानी को घड़े में न डालकर अन्यत्र डाल देते हैं इससे घड़े के पानी के स्तर में कोई बढ़ोतरी नहीं होती और हमारे जाने के बाद हमारा श्रम बेवजह साबित हो जाता है। इसलिए इस अविरल धारा में हमें अपने योग्यता के अनुसार कुछ

नवीन जोड़ना चाहिए।

बी संजय: महोदय, आपने अपने निजी जीवन के इतने गहरे अनुभव मुझसे सांझा किये इसके लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। मुझे विश्वास है कि आपकी बातें आगामी पीढ़ी के लिए पाथेय साबित होंगी।

Announcement

Asian Literacy Conference to be held at Mumbai

The Reading Association of India (RAI) is organizing Asian Literacy Conference at Mumbai on January 28-29, 2016 in collaboration with Gujarat Research Society. The conference is open to the educators at all levels, administrators and others who are interested in the field of adult and lifelong learning. The theme of the conference is Role of Information and Communication Technologies in Promoting Reading and Developing a Learning Society. Sub-themes are: (i) Experience of Using ICT in Formal Education Settings, especially in schools (ii) Experience of Using ICT for out of school youth, on literate and neo-literate adults (iii) Teacher Training – How ICT is used to support the professional development of teachers and new ways of teaching and learning and (iv) Role of ICT in developing a learning society.

Those who are interested to attend the conference may contact Ms. Doris Saldanha, Secretary, Reading Association of India (RAI), West Zone (e-mail: grs@bom5.vsnl.net.in). Tel: 022-26462691, 26041031

During the conference the meeting of International Development in Asia Committee (IDAC) will also be held on January 28, 2016.

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्ति नगर, दिल्ली

डेंगू जागरूकता अभियान शिविर



दिनांक 21 सितंबर 2015 को 5/35, कीर्ति नगर, चूना भट्टी, हरिजन कैंप तथा जवाहर कैंप में जीआरसी द्वारा जिलाधीश कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली के सहयोग से एक डेंगू जागरूकता अभियान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें संदर्भ व्यक्ति के तौर पर डॉ. सुरजीत गुप्ता तथा डॉ. सुनीता उपस्थित रही जिन्होंने प्रतिभागियों को डेंगू के लक्षणों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि इस बार डेंगू ने लगभग पूरे दिल्ली को अपने चपेट में ले लिया है और तमाम कोशिशों के बाद भी इसका खतरा उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है। इसलिए अपने इलाके में रह रहे निवासियों को इस भयानक बीमारी के कारणों, और इससे बचाव के उपाय एवं सावधानियों के बारे में जागरूक करना आवश्यक प्रतीत हुआ और इस जागरूकता अभियान के माध्यम से जीआरसी के कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर पत्रक एवं बातचीत के माध्यम से इस बात की जानकारी पहुंचाई। साथ ही साथ 22 सितंबर को प्यूमिंग मशीन के माध्यम से पूरे इलाके में औषधीयुक्त धुआं फैलाया गया ताकि डेंगू मच्छरों के विस्तार को रोका जा सके।

दिनांक 23 और 24 सितंबर 2015 को जीआरसी



रेफर भी किया। इसके बाद फार्मासिस्ट श्री ललित चोपड़ा ने सभी रोगियों को डाक्टर द्वारा अनुमोदित दवाईयां निःशुल्क वितरित की।

पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक



गत 3 अक्टूबर 2015 को हरिजन कैंप, कीर्ति नगर में एक पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कुल 30 बच्चों ने भाग लिया। बैठक में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर जीआरसी से श्री शिव प्रताप, कार्यक्रम अधिकारी, श्रीमती अंजुबाला, हैल्प डेस्क कॉउंसलर तथा सुश्री रेखा पांडेय, कम्युनिटी मोबिलाइजर उपस्थित रहीं। उन्होंने स्वच्छता विशेषरूप से खुले में शौच करने से होने वाली बिमारियों के बारे में प्रतिभागियों को आगाह करते हुए कहा कि हमें शौचालयों के उपयोग की आदत डालनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने आस-पास तथा अपने घरों में लगे शौचालयों को साफ-सुथरा रखें तथा स्वयं में स्वस्थ आदतें विकसित करें। डेंगू के बढ़ते हुए आंतक को देखते हुए इस अवसर पर प्रतिभागियों में इस बीमारी से बचने के लिए किए जाने वाले प्रमुख उपायों पर एक पत्रक भी वितरित किया गया।

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र मुख्यरूप से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए दिल्ली सरकार द्वारा प्रायोजित एक कार्यक्रम है जिसे स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा संचालित केन्द्र कीर्ति नगर में स्थित है। इस केन्द्र द्वारा सितम्बर-अक्टूबर माह के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नरूप है:

ओपीडी



दिनांक 5 अक्टूबर 2015 को 5/35, बस्ती विकास केन्द्र, कीर्ति नगर में एक ओपीडी का आयोजन किया गया जिसमें महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरजीत गुप्ता ने सभी 61 लोगों का स्वास्थ्य जांच करते हुए बताया कि मौसम में तेजी के साथ बदलाव हो रहा है ऐसे में डेंगू, वायरल बुखार यादि होने का खतरा होता है। अतः सभी लोगों को इस बारे में सावधानियां बरतनी चाहिए। डॉ. गुप्ता ने बताया कि इसमें से डेंगू जानलेवा है और यह मच्छरों के काटने से होता है। इसलिए लोगों को चाहिए कि वे स्वच्छ पानी को खुले में न रखें, अपने घर अथवा आस-पड़ोस कहीं भी पानी न जमने दें तथा हमेशा पूरी बाजू का कपड़ा पहनें और सोते समय मच्छरदानी का अवयव उपयोग करें। इस दौरान डॉ. गुप्ता ने दो मरीजों को अन्य अस्पतालों के लिए



और ऐसे मच्छरों के यदि आस-पास होने की संभावना हो तो लोगों को क्या सावधानी बरतनी चाहिए? तथा यदि डेंगू के लक्षण दिखें तो तुरन्त उपचार हेतु कहां जाना चाहिए? इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्रदान किए गये।

पोषाहार शिविर



दिनांक 12 अक्टूबर 2015 को 8/35, कीर्ति नगर में एक पोषाहार शिविर का आयोजन किया गया जिसका मुख्य विषय रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज)

वाले महिलाओं को उचित आहार एवं पोषण सामग्रियों के बारे में जानकारी प्रदान करना था। शिविर में मुख्य संदर्भ व्यक्ति के तौर पर पोषाहार विशेषज्ञ श्रीमती वीना जैन उपस्थित रहीं। शिविर में कुल 32 महिलाओं ने भाग लिया।

श्रीमती वीना जैन ने लोगों को मेनोपॉज और उस दौरान बरती जानी वाली सावधानियों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि महिलाओं के जीवन में यह पड़ाव रजोगुण से निवृत्त हो जाने के उपरान्त आता है जो शरीर में विभिन्न प्रकार की बीमारियों के उत्पन्न होने का कारण बनता है। इसके प्रारंभिक लक्षण वजन बढ़ना, हड्डियों का कमजोर होना, नींद न आना, गरमाहट लगना अथवा पसीना आना इत्यादि होते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे समय पर महिलाओं को सावधान हो जाना चाहिए तथा अपने खान-पान और जीवनशैली में अनुकूल परिवर्तन लाना चाहिए। इस अवसर पर प्रतिभागियों को दो पकवान पौष्टिक चना दाल, पालक मिक्स वेज खिचड़ी तथा पौष्टिक पोहे की खीर बनाने की विधि भी प्रदर्शित की गयी।

कार्यकर्ताओं द्वारा स्थानीय आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के सहयोग से कमला नेहरू कैंप, चूना भट्टी और 5/35, कीर्ति नगर में डेंगू के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए नुककड़ नाटक एवं जागरूकता रैलियों का आयोजन किया गया। इन नाटकों को अनेक स्थानीय लोगों ने देखा तथा रैलियों में अपना सक्रिय योगदान दिया। जिलाधीश कार्यालय के सहयोग से चूना भट्टी में आयोजित नुककड़ नाटक में लगभग 100 दर्शक उपस्थित थे। नुककड़ नाटक एवं रैलियों के दौरान पत्रकों एवं नारों के माध्यम से डेंगू क्यों होता है? किस मच्छर के काटने से होता है? ये मच्छर कब काटते हैं? ये मच्छर न पनपें इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

Seminar on Jack Fruit & value added products



A one day seminar was organized by the State Resource Centre, Kerala in collaboration with the Kerala State Branch of Indian Adult Education Association and Dr. K. Sivadasan Pillai Foundation on September 26, 2015 in the Conference Hall of State Resource Centre. The topic was Jackfruit Promotion and Its Value Added Products.

Shri L. Pankajakshan, Director, Santhigram and Secretary, Jackfruit Promotion Council initiated the topic to the audience and said that Jackfruit is not merely a fruit but it has a lot of contents for good health of the human beings. Hence, this



fruit can be consumed more as a product of health. He also said that a number of bi-products can be produced from the Jackfruit which can be sold in the open market for a good cost. The value added products of Jackfruit can bring good economic gains to people in return from the sale.

The seminar was chaired by Dr. V.M. Sasikumar, Executive Director, Dr. K. Sivadasan Pillai foundation. In the beginning Shri Harish Kumar.S, Media Officer, State Resource Centre, Kerala welcomed all those present and at the end Dr. Shaila proposed the vote of thanks.

—Harish Kumar. S

JSS, Visakhapatnam Organized Cleaning Campaign



The Jan Shikshan Sansthan, Visakhapatnam, Andhra Pradesh organized a cleaning campaign as part of Swachh Bharat Programme at Pedagantyada on October 12, 2015 in which the beneficiaries of vocational training programmes, Director and members of the staff of JSS and officials of the Steel Plant have participated and cleaned Raitu Bazar, the vegetable market. On that occasion they also spoke to the general public on the importance of cleanliness and environmental Sanitation.

Plan India Report for the year 2015 Released



"The State of the Girls: What Next?" is the report for the year 2015 released by Shri Govind Nihalani, Chair Emeritus, Plan India on October 20, 2015 at India Habitat Centre, New Delhi. The report focuses on assessing the state of girls in India on the important issues like gender discrimination and its impact on girls schooling, girls in changing urban and digital landscape, engaging men and boys towards gender equality, learning for life for girls and adolescents, situation of adolescent girls at times of disasters and pathways to empowering girls. The report also covers case stories of positive deviance from Plan programme areas and views of leading development specialists, policy and opinion makers.

Ms. Bhaygashri Dengle, Executive Director, Plan India underlined the key findings of the report and Ms. Frederika Meijer, UNFPA Representative in India/Country Director, UNFPA, Bhutan moderated the panel discussion. Others who shared their views included Ms. Surina Narula, Patron, Plan India, Ms. Sonali Khan, Vice President and Country Director, Breakthrough, Ms. Nalini Gangadharan, Chairperson, CAP Foundation and Ms. Jyoti Singh, President, Sakhi Sangam for Social Change.

On this occasion an exhibition on the BIAAG theme was put-up by the children from various Plan communities. "Because I am a Girl" is Plan's global gender equity and equality campaign to create a world that values girls.

IAEA congratulates Plan India for its continuous efforts for the campaign which supports millions of girls in getting proper education, skills and support which is leading them to move from poverty to a future of opportunity.

- Kalpana Kaushik
Deputy Director, IAEA

Bhopal JSS Organized Blood Donation Camp

The Jan Shikshan Sansthan, Bhopal (No.2) organized Blood Donation Camp on October 5, 2015 in collaboration with its parent organization and Sanchanalaya, Gas Rahat Vibhag, Govt. of Madhya Pradesh and supported by Hamidia



Hospital which provided the specially designed bus with all facilities to collect blood at any spot. The objective of the camp was to create awareness among the resource persons and beneficiaries of JSS with

regard to blood donation and how it helps to save the lives of the people.

On this occasion medical check-up was done to all those people who came forward to donate the blood and deserving cases were referred to hospitals for further treatment.



Shri Abhishek Singh, Director, Sanchanalaya, Gas Rahat Vibhag and Shri Shyam Lal Yadav, Deputy Superintendent of Police (Retd) visited the camp and appreciated the efforts of JSS.

- Vineet Cecil
Director, JSS

National Teacher Award Conferred on Dr. Sanjay Sharma

Dr. Sanjay Sharma, Faculty in the Department of Adult Education, Dr. Harisingh Gour Central University, Sagar, Madhya Pradesh has been



conferred National Teacher Award- 2015 by the Institute for Environment, Yoga and Social Security (IEYSS), New Delhi at a function held in the India International Centre, New Delhi. Dr. Sharma was nominated for the award in the category of 'Education and Social Security' by the juries.

All India Adult Education Conference to be held at Gandhigram

The Indian Adult Education Association is organizing 61st All India Adult Education Conference at Gandhigram, Tamil Nadu from December 28-30, 2015 in collaboration with Gandhigram Rural Institute – Deemed University. The theme of the conference is “Lifelong Learning and Skill Development”. All are cordially invited to attend the conference.

The delegates attending the conference may remit the registration fee of Rs.1000/- immediately towards boarding and lodging charges through a separate Demand Draft drawn in

favour of “Indian Adult Education Association” payable at New Delhi. In view of limited accommodation available delegates registered well in advance alone will be given priority in allotment.

For local participants the Registration fee will be Rs.500/- and they will be provided only lunch free of cost.

The delegates are requested to confirm their participation by e-mail: iaeadelhi@gmail.com and submit the Registration Form by post to General Secretary, Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New

Delhi – 110 002 alongwith the Demand Draft. A model Registration form is printed in this Newsletter.

Those who desire to present thematic papers in the conference may submit the Abstracts not exceeding 500 words latest by October 31, 2015 through e-mail directoriatea@gmail.com. The full paper may be submitted (MS Word, Font- New Times Roman, Font Size – 12, Spacing – one and half) by November 30, 2015.

(Dr.Madan Singh)
General Secretary, IAEA

ITIs are again in Great Demand

The Industrial Training Institutes (ITIs) operated both by the government and private sectors are vocational training institutions that provide post-school technical training. Normally a class 10 pass certificate is the minimum eligibility for admission to ITIs. Long before when these institutions were started they



had heavy demand for admission of students as the skills offered provided enormous opportunities in the employment market. But in course of time due to a large number of polytechnics, community polytechnics and engineering colleges opened in the private sector which increased the intake of students in huge number had lead to glut in the employment of qualified persons of different technical skills. The ultimate result was that they started accepting employment in organized and unorganized sectors which were much lower to their qualification that deprived many times the employment opportunities for ITI qualified technical persons. Finally, many ITIs were losing their charm. Today these institutions are gaining their old glory for providing manpower requirements in the blue colored jobs.

In view of the Government of India's new initiative of 'Make in India' and priority given to create skilled manpower the demand for technical and vocational training institutions is increasing day-by-day with the result today a large number of ITIs are being opened. As per the official data around 113 ITIs were set-up during the

period April to August 2015 with the intake of 1,71,392 students. The states with the largest number of ITIs are Uttar Pradesh (2185), Rajasthan (1769), Karnataka (1481), Madhya Pradesh (886), Bihar (873), Maharashtra (863) and Tamil Nadu (722).

As on date there are 13,105 ITIs in the country which cater to about 18,65,629 students.



“We will be remembered only if we give to our younger generation a prosperous and safe India, resulting out of economic prosperity coupled with civilizational heritage.”

– Dr. A.P.J. Abdul Kalam
(Birthday on October 15th)

SRC, Chhattisgarh Organized a Programme on Library Management and Book Reading



The State Resource Centre, Chhattisgarh with the academic resource support from Indian Adult Education Association, New Delhi organized a two day state level orientation programme on Library Management and Book Reading on October 7-8, 2015 in the auditorium of the State Council for Educational Research and Training (SCERT), Raipur. In all 46 Resource Persons from 23 Saakshar Bharat districts participated in the programme.

The participants were addressed by Ms. Zineviva Kindo, Deputy Director, School Education and Director, State Literacy Mission Authority, Chhattisgarh, Shri Sanjay Ojha, Director, SCERT, Dr. S Sengupta, Chief Librarian, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Shri Prashant Pandey and Shri Dinesh Taunk, Deputy Directors, State Literacy Mission Authority, Chhattisgarh, Shri M.L.Sharma, Assistant Director, Indian Adult Education Association, New Delhi, Shri Tuhin Deb, Director, SRC, Chhattisgarh and Shri Rajkamal Nayak. All of them in their presentation have highlighted the importance of book reading for knowledge and creating a reading society which is the ultimate objective of Saakshar Bharat. A few speakers also have stressed the importance of creating a library in Lok Shiksha Kendras (AECs) with books which are of reading interest to all. As far as Chhattisgarh is concerned a lot of reading materials have already been produced and many more are also being developed. Unless they are used for reading they will be only show pieces on the shelves. They have also stressed that Preraks should try to impress upon the people who visit AECs to pick-up books for reading which in course of time can become a practice for many.

On this occasion Ms. Chandrika Kaushal, Dr. Snehalata Tiwari, Ms. Meera Dewangan, Shri Ishwardas and Shri Poshhan Behera rendered inspirational songs which was enjoyed by one and all.

Obituary

Shri Ashoke Shrivastava expired on October 4, 2015. He was a school teacher and the last posting in his professional career was the Principal of Government Secondary School in Madhya Pradesh.

Shri Shrivastava was the Life Member of Indian Adult Education Association from March 2007 and an elected Member of the Council of IAEA for the term 2014-16.

The Indian Adult Education Association conveys heartfelt condolences to the members of the bereaved family and prays for the departed soul to rest in peace.

JSS, Jagatsinghpur Organized Awareness Programme on MUDRA Yojana



The Jan Shikshan Sansthan, Jagatsinghpur, Odisha organized an awareness programme on Pradhan Mantri MUDRA Yojana in two Saansad Adarsh villages – Bagoi and Palasole in which a large number of villagers and JSS beneficiaries who have been already trained in different vocational skill development programmes participated.

Shri Ranjan Kumar Mohanty, Assistant Manager, Lead District Bank, Jagatsinghpur spoke in detail about the aims and objectives of MUDRA Yojana and how one can avail this facility for economic development. Shri Antaryami Baral, Director, Jan Shikshan Sansthan, Jagatsinghpur in his brief address desired the beneficiaries of the Sansthan who have got skill in their hands to come forward to start self-employment by availing the benefits of MUDRA Yojana so that they can earn a decent amount which can support/supplement the family income.

The programme was attended by Dr. Kulamani Samal, Member of Parliament (Lok Sabha), Chairperson, Block Panchayat, Sarapanch, Members of Panchayat Samiti and village leaders.

—Antaryami Baral



Skill Training Programme started under Saansad Adarsh Gram Yojana



Jan Shikshan Sansthan, Lucknow started two vocational skill development training programmes – Cutting & Tailoring (4 batches) and Beauty Culture & Health Care (3 batches) for 175 women belonged to SC and OBC communities of Aat Ghari Saura and Mall villages in Mall Block, Lucknow. Aat Ghari Saura village is adopted by Shri Kaushal Kishore, Member of Parliament (Lok Sabha) and Mall village is adopted by Ms. Mayawati, Member of Parliament (Rajya Sabha) under Saansad Adarsh Gram Yojana.

एसआरसी भोपाल द्वारा 'मेरा जिला मेरी योजना' पर कार्यशाला का आयोजन



अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के उपलक्ष्य में दिल्ली में हुई एक बैठक जिसमें देशभर के जन शिक्षण संस्थानों के निदेशक भी भाग ले रहे थे, में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने कहा कि साक्षरता एवं कौशल विकास को व्यापक स्वरूप प्रदान करने के लिए आवश्यक है कि जिला के स्तर पर कार्य करने वाले अधिकारी अपने जिले के लिए योजना स्वयं बनाये। इस प्रकार से विकसित योजना जिले की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा कर पायेंगे। इस दिशा में त्वरित कदम बढ़ाते हुए राज्य संसाधन केन्द्र, भोपाल ने दिनांक 28 सितंबर 2015 को 'मेरा जिला मेरी योजना (माई डिस्ट्रिक्ट माई प्लान)' विषय पर एक उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें भोपाल और इन्दौर राज्य संसाधन केन्द्रों के कार्यक्षेत्र में आने वाले जन शिक्षण संस्थानों के 22 निदेशकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन राज्य संसाधन केन्द्र, भोपाल के अध्यक्ष श्री अनुराग सीढा

R.N.I. No. 53577 /1991

Postal Regn. No. DL(C).01/1160/2013-2015

Published on October 28, 2015

तथा निदेशक श्री संजय सिंह राठौर द्वारा किया गया। तदुपरान्त केन्द्र के प्रशिक्षण समन्वयक श्री इम्तेयाज खान ने 'माई डिस्ट्रिक्ट माई प्लान' योजना के संभावित रोडमैप पर पावर प्वाइंट प्रस्तुती दी। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, सांसद आदर्श ग्राम योजना तथा प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना पर भी विस्तृत चर्चा की गयी। प्रतिभागियों के आग्रह पर सभी निदेशकों को 'मेरा जिला मेरी योजना (माई डिस्ट्रिक्ट माई प्लान)' हेतु एक प्रपोजल फार्मेट विकसित किए जाने का निर्णय लिया गया।

Dr. S.K. Paul has got Bharat Shiksha Ratan Award



Dr. Sujit Kumar Paul, Associate Professor, Department of Lifelong Learning and Extension, Institute of Rural Reconstruction, Visva-Bharati (A Central University), Sriniketan, Birbhum, West Bengal has been conferred Bharat Shiksha Ratan Award by the Global Society for Health and Educational Growth for his contribution in education and community development work. The award was presented to him in a function held in the Deputy Speaker Hall, Constitution Club of India, New Delhi on September 21, 2015.

Dr. Paul is a Life Member of Indian Adult Education Association.

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,

23378436, 43489048

Editor: Dr. Madan Singh

E-mail: iaeadelhi@gmail.com

Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.11

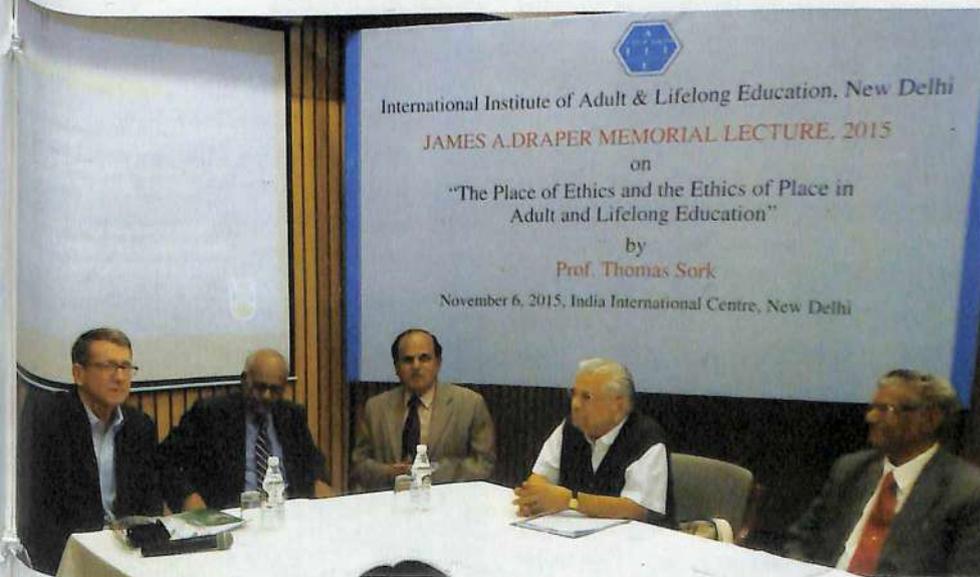
Re. 1 per copy

November 2015



Indian Adult Education Association

IIALE Organized James Draper Memorial Lecture at New Delhi



The Indian Adult Education Association/International Institute of Adult and Lifelong Education organize James A. Draper Memorial Lecture every year. James Draper who was fondly called Jim by his friends and fellow colleagues was a veteran adult educator and a good friend of India. He worked in India in 1960s promoting extension and other forms of adult education throughout the country. He was responsible for establishing Adult Education Department in the University of Rajasthan as part of Colombo Plan Project which still is

a fine illustration of his commitment both to encourage university-community engagement and to prepare those who work as adult educators. Infact, that was the beginning and thereafter separate department for adult education was created in a large number of universities, most of which are now called Department of Lifelong Education.

James A. Draper Memorial Lecture 2015 was organized by International Institute of Adult and Lifelong Education (IIALE) on

November 6, 2015 at India International Centre, New Delhi. Dr. Thomas A. Sork, Senior Associate Dean, International and Administration, Faculty of Education, The University of British Columbia, Vancouver, Canada delivered the lecture on the topic **The Place of Ethics and the Ethics of Place in Adult and Lifelong Education.**

The meeting was presided over by Shri K.C.Choudhary, President, IAEA & Chancellor, IIALE and Prof.S.Y.Shah, Vice Chairman, IAEA & Director, IIALE introduced the speaker. Others present were



Dr. Madan Singh, General Secretary, IAEA & Registrar, IIALE, Dr. P. Adinarayana Reddy, Treasurer, IAEA, veteran adult educators including Dr. L.Mishra, Prof. C.J.Daswani, Dr.R.M. Kalra, Prof. Asoke Bhattacharya, Dr. Varsha Das, Dr. Mridula Seth and professors, Senior Faculty and research scholars from the University of Delhi, Jawaharlal Nehru University, Indira Gandhi National Open University, National University of Educational Planning and Administration and Sri Padmavati Mahila Visvavidyalayam, Tirupati.

Dr. Sork while delivering the lecture said that when he was working in the Continuing Education Units of several universities he constantly confronted by various moral dilemmas and had not acquired conceptual tools to adequately analyze and resolve them. Hence, he not only felt inadequate to resolve them but was curious why the literature he had been exposed to in his studies of adult education had been silent on the ethics of practice. He had always suspected that this was because the adult educators regard themselves as always taking the high moral ground and thereby avoid finding themselves in morally-ambiguous or morally-dangerous territory. So he started his work in adult education with a

related interest in professional ethics. He narrated a number of ethical issues in adult education by quoting living examples and how the adult educators have to behave when such issues come before them. Thereafter, he spoke in detail about a few publications brought out on ethics in adult education including Interdisciplinary Code of Ethics for Adult Education (Connelly & Light, 1981), a paper written by him alongwith a doctoral student (Singarella & Sork, 1983), code of ethics developed specially for those in adult education by the Pennsylvania Association for Adult Continuing Education (PAACE, 1985), a comprehensive book on ethics on adult education published by Teachers College Press, Columbia University (Brockett, 1988), an article published on the front page in New York Times on May 26, 1991, *Confronting Controversies in Challenging Times: A Call for Action* (Galbraith & Sisco, 1992) which included a chapter arguing in affirmative that a code of ethics was needed (Sork & Welock, 1992) and another one in negative (Cunningham, 1992), *Code of Ethics for Adult Educators* (Wood, 1996) and *Towards Developing a Universal Code of Ethics for Adult Educators* (Siegel, 2000).

He concluded his lecture by stating that Jim Draper must be

looking for the adult educators, to discuss the ethics of practice in dynamic challenging India. He would be impressed by the great strides India has made in addressing issues of literacy, equality, population, diversity, health and the challenges of rapid development. He would be impressed if the Twelfth Five Year Plan succeeds in the paradigm shift from basic literacy to lifelong learning.

His lecture drew a lot of interest among the audience. Soon after the lecture was over persons like Dr. L.Mishra, Prof. Asoke Bhattacharya, Dr. Varsha Das, Dr. Mridula Seth, Prof. Rajesh, Prof. Prakash Narayan, Prof. C.J.Daswani and Dr. R.M. Kalra have raised pertinent questions/points for clarification which was suitably answered by Dr. Thomas Sork.



"Education imparted by heart can bring revolution in the society".

-Maulana Abul Kalam Azad

The first Education Minister of Independent India. His birthday on November 11th is celebrated as National Education Day.

Meeting on Self-learning in a Digital Era

A three day meeting on Self-Learning in a Digital Era was held at the Gateway Resort, Damdama Lake, Gurgaon on November 2-4, 2015 to discuss what are the defining challenges for lifelong learning in Europe and Asia in the 21st century and is the claim that online learning resources will create an education revolution correct? Or merely a claim? This meeting was organized by the Danish School of Education, Aarhus University, Denmark (Asia-Europe Meeting Lifelong Learning Hub - ASEM LLL Hub) in cooperation with Danish Ministry of Foreign Affairs, Danish Ministry of Education, the Innovation Centre Denmark at the Royal Danish Embassy in New Delhi and EU and Asia-Europe Foundation. The participants were from different countries of Asia and Europe. India was represented by a good number of participants, thanks to the initiative taken by Prof. S.Y.Shah, Director, International Institute of Adult and Lifelong Education whell in time.

In the inaugural session opening speeches were given by Prof. Dinesh Singh, former Vice Chancellor, University of Delhi and Mr. Attache' Kristoffer Brix Bertelsen, Danish Innovation Centre, Embassy of Denmark, India. The opening remarks were made by Mr. Karsten Warnecke, Asia-Europe Foundation and the themes were introduced alongwith profiles of the keynote speakers by Prof. Claus Holm, Chair of ASEM LLL Hub.

There were four Keynote addresses - (1) Various



Lifelong Learning Needs in Asian Countries: To what extent MOOCS/E-Learning the Solution? by Mr. Le Huy Lam, Director SEAMEO CELLL, Vietnam, (2) Digital Cultures and Lifelong Learning by Prof. Jeremy Knox, University of Edinburgh, UK, (3) Making MOOCS Work: Learning in an Open World by Prof. Li Yuan, University of Bolton, UK and (4) Revisiting teacher professional support-the NROER model by Prof. Rajaram Sharma, Joint Director, NCERT, India.

The meeting had two plenary sessions and two parallel seminars of two groups each. In the parallel seminars topics discussed were Questioning the Contribution of MOOCS, Workplace Learning, Instructional Design of MOOCS and A Nordic Approach to e-Learning. There was one panel discussion also.

The three day meeting ended with specific recommendations.

IAEA Staff Members Honoured



On the eve of Diwali the members of the staff of Indian Adult Education Association had a get together with Shri K.C.Choudhary, President and Dr. Madan Singh, General Secretary on November 5, 2015 in which five members of the staff who have completed 15 years of continuous service in the Association were honoured. They were Smt. Kalpana Kaushik, Shri M.L.Sharma, Smt. Neha Gupta, Shri Kripal Singh Mehara and Shri Kishore. They received Titan wrist watches as gift from the President.

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र मुख्यरूप से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए दिल्ली सरकार द्वारा प्रायोजित एक कार्यक्रम है जिसे स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा संचालित केन्द्र कीर्ति नगर में स्थित है। इस केन्द्र द्वारा अक्टूबर-नवम्बर माह के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नरूप है:

पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण



दिनांक 29 अक्टूबर 2015 को वाघवा कैंप, कीर्तिनगर में एक पानी और स्वच्छता जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 21 लोगों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य स्थानीय समुदाय के लोगों का एक समूह बनाकर उन्हें व्यक्तिगत एवं घरेलू स्वच्छता की समस्या के समाधान हेतु स्वैच्छिक कार्यकर्ता बनने के लिए प्रशिक्षित करना था। कार्यक्रम में जीआरसी कार्यकर्ता श्री शिव प्रताप, श्रीमती अंजूबाला एवं श्रीमती मीना राना संदर्भ व्यक्ति के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का प्रारंभ सदस्यों तथा संदर्भ व्यक्तियों

के आपसी परिचय से हुआ। तत्पश्चात पानी और स्वच्छता विषय पर एक परिचर्चा की गयी। परिचर्चा के दौरान यह बात सामने आयी कि स्थानीय इलाकों में शौचालय और पीने के पानी की बहुत समस्याएं हैं, लोग कूड़ा नालियों तथा घर के आस-पास ही फेंकते हैं जिससे यहां पर कई प्रकार के बिमारियों के उत्पन्न होने की संभावना बहुत बढ़ गयी है। इस पर संदर्भ व्यक्ति श्रीमती अंजूबाला ने कहा कि इस गंदगी से समुदाय में रहने वाले बच्चे सर्वाधिक प्रभावित होते हैं और उनमें हैजा, मलेरिया, पीलिया, इत्यादि गंभीर बिमारियों के होने की संभावना उत्पन्न हो जाती है इसलिए कूड़े को उचित स्थान पर फेंकना चाहिए, पीने के पानी को छानकर या क्लोरीन मिलाकर पीना चाहिए तथा घर के आस-पास खुले में शौच नहीं करना चाहिए और न ही बच्चों को ऐसे स्थानों पर शौच कराना चाहिए।

प्रशिक्षण के उपरांत सभी सदस्यों ने पूर्ण सहमति से अपने समूह का नाम 'विकास' समूह रखा। इसके पश्चात संदर्भ व्यक्ति श्रीमती मीना ने 'सेहत का पैगाम नामक' पुस्तिका के महत्व के बारे में बताते हुए वर्तमान के वातावरण पर चर्चा की तथा 'विकास' समूह के सभी सदस्यों को 'सेहत का पैगाम' नामक पुस्तिका की छायाप्रति प्रदान की। इसके बाद श्री शिव प्रताप ने बी-स्तर के प्रशिक्षण के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि स्वैच्छिक कार्यकर्ता बनने हेतु जीआरसी द्वारा तीन प्रशिक्षण दिये जाते हैं। इस तीन स्तरीय प्रशिक्षण को प्राप्त करने के बाद सभी सदस्य वाश चैंपियन बनकर समाज में पानी और स्वच्छता से संबंधित मुद्दों के समाधान हेतु कार्य करते हैं। प्रशिक्षण के अंत में सभी को शपथ दिलाई गयी कि आज से न तो गंदगी फैलाएंगे और न किसी को फैलाने देंगे तथा सभी को स्वच्छ वातावरण और स्वच्छ समाज बनाने के लिए प्रेरित करेंगे।

ओपीडी

दिनांक 2 नवम्बर तथा 16 नवम्बर, 2015 को बस्ती विकास केन्द्र, जीआरसी परिसर, कीर्तिनगर में दो ओपीडी का अयोजन किया गया जिसमें संदर्भ व्यक्ति के रूप में महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरजीत



गुप्ता तथा फार्मासिस्ट ललित कुमार चोपड़ा उपस्थित थे। इन दोनों ओपीडी में कुल मिलाकर एक सौ स्थानीय लोगों ने अपना स्वास्थ्य जांच करवाया।

प्रथम ओपीडी में डॉ. गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों को बताया कि हमें पीने के पानी की स्वच्छता और गुणवत्ता पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है इससे हम स्वभाविक ही कई बिमारियों से बच सकते हैं। उन्होंने कहा कि इसके लिए आवश्यक है कि हम पानी को छानकर या उसमें आवश्यक मात्रा क्लोरीन की गोली मिलाकर पीयें। शारीरिक रूप से अधिक कमजोर 4 महिलाओं को डॉ. गुप्ता आगामी पोषाहार शिविर में भाग लेकर आवश्यक सुझाव प्राप्त करने की सलाह दी।

दूसरे ओपीडी में डॉ. गुप्ता ने उपस्थित लोगों को मौसम परिवर्तन के कारण होने वाली बिमारियों यथा जुकाम, बुखार, सर्दी-खांसी आदि से बचने के लिए महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की। साथ ही साथ उन्होंने कई गर्भवती प्रतिभागी महिलाओं को खान-पान तथा व्यक्तिगत स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने का सुझाव दिया।

दोनों ही ओपीडी में फार्मासिस्ट श्री ललित चोपड़ा ने डॉक्टर के सुझाव अनुसार सभी लोगों को निःशुल्क दवाईयां वितरित की।

कानूनी जागरूकता शिविर

दिनांक 4 नवम्बर 2015 को 8/35, कीर्ति नगर



कार्यस्थल पर यौन शोषण के विरुद्ध कानूनी सलाह प्रदान करने के उद्देश्य से एक कानूनी जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 30 महिलाओं ने भाग लिया। इस बैठक में संदर्भ व्यक्ति के रूप में एडवोकेट श्रीमती रागिनी एस. राज उपस्थित रही। शिविर के प्रारंभ में श्रीमती राज ने प्रतिभागी महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर होने वाले यौन शोषण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए बताया कि अक्सर महिलाएं यह समझ ही नहीं पाती कि उनका शोषण किस प्रकार किया जा रहा है। श्रीमती राज ने कहा कि हमें यौन शोषण के मानसिक और शारीरिक पहलुओं के प्रति जागरूक रहते हुए बेहिचक अपने तथा अपने सहकर्मियों की सुरक्षा के लिए कानूनी प्रावधानों के उपयोग के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि इस समूचे प्रक्रिया में हम महिला हैल्प लाईन अथवा पुलिस स्टेशन में उपलब्ध वूमन सेल की मदद ले सकते हैं।

इसी प्रकार का दूसरा शिविर दिनांक 10 नवम्बर



2015 को 5/32, बस्ती विकास केन्द्र, कीर्तिनगर में जीआरसी तथा विधिक सेवा प्राधिकरण, दिल्ली द्वारा आयोजित किया गया जिसमें स्थानीय समुदाय के कुल 29 लोगों ने भाग लिया। शिविर का मुख्य उद्देश्य बच्चों के अधिकारों के बारे में समुदाय को

जागरूक करना था।

इस शिविर में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर अधिवक्ता श्री के.के. सिंह मौजूद थे। उन्होंने इस अवसर पर प्रतिभागियों को बताया कि बालश्रम हमारे देश में एक कानूनन अपराध है। इसके अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र वाले किसी भी बालक से श्रमिक का कार्य नहीं लिया जा सकता है। यदि कोई ऐसा करता है तो उसे कानून के अनुसार सजा भुगतना होगा। उन्होंने यह भी बताया कि मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है। उपरोक्त दोनों प्रावधानों के संबंध में किसी भी प्रकार की सहायता के लिए 1098, 100 या जीआरसी केन्द्र में संपर्क किया जा सकता है।

पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक

दिनांक 3 नवम्बर 2015 को 5/35, कीर्ति नगर



में समुदाय के युवा लड़कियों के लिए एक पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कुल 29 युवा लड़कियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर जीआरसी कार्यकर्ता श्री शिव प्रताप तथा श्रीमती अंजू बाला उपस्थित रही।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम जीआरसी द्वारा आयोजित गतिविधियों के बारे में चर्चा की गयी उसके बाद संदर्भ व्यक्तियों ने बताया की स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है और इसके बारे में परिवार तथा समाज में जागरूकता उत्पन्न करने में युवा वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि समाज के हम सभी युवा पानी एवं स्वच्छता से संबंधित तमाम मुद्दों को जीआरसी के कार्यक्रमों के माध्यम से बेहतर ढंग से समझें तथा अन्य सभी को इस बारे में जागरूक करने का प्रयास करें।

पोषाहार शिविर

दिनांक 9 नवम्बर 2015 को जवाहर कैंप, कीर्तिनगर में एक पोषाहार शिविर का आयोजन



किया गया जिसमें कुल 31 महिलाओं ने भाग लिया। इस शिविर में मुख्य संदर्भ व्यक्ति के रूप में पोषाहार विशेषज्ञ श्रीमती वीना जैन उपस्थित रहीं। शिविर का मुख्य उद्देश्य 18 से 40 वर्ष की महिलाओं में मासिक धर्म की अनियमितता को संतुलित करने के लिए आवश्यक उचित पोषक तत्वों के बारे में जानकारी प्रदान करना था।



इस अवसर पर श्रीमती वीना जैन ने उपस्थित महिलाओं को सर्वप्रथम व्यक्तिगत जीवन में साफ-सफाई के अनिवार्यता के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मासिक धर्म के संतुलन में स्वच्छता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसके पश्चात उन्होंने महिलाओं में खून की कमी तथा मासिक धर्म को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने कहा की

स्वस्थ शरीर के लिए कई खनिज-लवणों एवं विटामिनों की आवश्यकता होती है। यदि इन पदार्थों का हमारे दैनिक खान-पान में उचित मात्रा में समावेश न हो तो हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं या बिमारियों से निजात पाना अत्यंत सरल है। हम अपने खान-पान में मौसमी फलों तथा सब्जियों व अन्य पोषक तत्वों का सही मात्रा में उपयोग करके खनिज-लवणों एवं विटामिनों की कमी को पूरा कर सकते हैं। श्रीमती जैन ने इस अवसर पर दो प्रकार के पोषाहार यथा पौष्टिक गुण वाले चावल तथा पौष्टिक चुकन्दर बथुये का रायता बनाने की विधि का भी प्रदर्शन किया और प्रतिभागी महिलाओं से भी इन पौष्टिक आहारों को बनवाया।

अंत में कुछ प्रतिभागियों ने अपने निजी जीवन से संबंधित कई सवाल पूछे। पोषाहार विशेषज्ञ ने उन सभी प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया।

विश्व शौचालय दिवस समारोह

दिनांक 19 नवम्बर 2015 को 5/35, कीर्ति नगर, बाधवा कैंप तथा एम.सी.डी. स्कूल चूना भट्टी में विश्व शौचालय दिवस समारोह का आयोजन किया गया। तीन अलग-अलग सत्रों में आयोजित इस समारोह में कुल 350 लोगों ने भाग लिया। समारोह में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर जीआरसी के प्रोग्राम कॉर्डिनेटर श्री हेमन्त सिंह, हैल्य डेस्क कॉउंसिलर श्रीमती अंजू बाला, सैल्फ-हैल्य गुप समन्वयक श्रीमती मीना राणा सहित जीआरसी के अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

समारोह के प्रथम सत्र में समुदाय की प्रतिभागी महिलाओं एवं पुरुषों तथा एन.एफ.ई के बच्चों ने



सामूहिक रूप से एक जागरूकता रैली निकाली जो बाधवा कैंप गली नं. 8 से होते हुए चूना भट्टी, हरिजन कैंप से होकर बाधवा कैंप के गली नं. 1 में पहुंची। इसके बाद अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र पर एक

जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें संदर्भ व्यक्तियों द्वारा शौचालय दिवस मनाए जाने के उद्देश्यों के बारे में सभी को बताया गया। इसके बाद एक चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें 20 बच्चों ने भाग लिया। भाग लेने वाले बच्चों में से प्रथम तीन को पुरस्कृत भी किया गया।

समारोह का द्वितीय सत्र एमसीडी स्कूल, चूना भट्टी में आयोजित किया गया जिसमें कुल 200



बच्चों ने भाग लिया। इस दौरान बच्चों को शौचालय के सटीक उपयोग के विधि के बारे में विस्तार से बताया गया। उन्हें यह भी बताया गया कि शौच के उपरान्त शौचालय में पानी डालना तथा अपने हाथ साबुन से ठीक प्रकार से धोना अत्यंत आवश्यक है। इसके बाद बच्चों से विश्व शौचालय दिवस तथा शौचालय एवं स्वच्छता से संबंधित अन्य विषयों पर प्रश्न पूछे गये तथा सटीक उत्तर देने वाले बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। विद्यालय के शिक्षक श्री संजय ने कार्यक्रम की बेहद प्रशंसा की।

समारोह का तीसरा और आखिरी सत्र जीआरसी परिसर में आयोजित किया गया जिसमें जीआरसी में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं एवं महिलाओं ने भाग लिया। इस सत्र में प्रतिभागियों से शौचालय संबंधित समस्याओं पर चर्चा की गयी जिसमें प्रतिभागियों ने बताया कि ऐसा नहीं है कि लोग शौचालय का उपयोग नहीं करना चाहते। वास्तव में हमारे इलाके में शौचालयों की संख्या आबादी की तुलना में अत्यंत कम होने तथा साफ-सफाई की व्यवस्था न होने के कारण उपयोग करने की स्थिति में ही नहीं होते। संदर्भ व्यक्तियों ने इस बारे में उन्हें सुझाया कि उन्हें सामूहिक रूप से इस समस्या की चर्चा स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों से करनी चाहिए तथा तब तक उपलब्ध शौचालयों की साफ-सफाई तथा उपयोग के लिए



सामुदायिक स्तर पर प्रयत्न करने चाहिए। इस अवसर पर सभी ने मिलकर यह नारा दिया कि - 'खुले में न नाले में, शौच करो शौचालय में'। इसके साथ विश्व शौचालय दिवस समारोह सम्पन्न हुआ।

Seminar on Skilling India at SV University, Tirupati

The Department of Adult and Continuing Education, Sri Venkateswara University, Tirupati in collaboration with Institute for Development Research and Alternatives is organizing ICSSR sponsored national seminar on 'Skilling India: Status, Contours and Strategies' on December 22-23, 2015. It is open for administrators, academicians, students, research scholars and social workers to participate.

Local hospitality including accommodation (two nights) and boarding will be arranged during the seminar and also the host will provide travel assistance to limited number of people as per the university norms. Those who require travel assistance need to apply in advance.

The researchers interested in presenting original research/thematic papers may submit Abstract by December 10, 2015 and full paper by December 20, 2015.

Contact persons: Prof. P. Adinarayana Reddy, Seminar Director (e-mail: pareddySVU@yahoo.co.in, Mobile No: 09490736837) & Dr. D. Uma Devi, Seminar Co-Director.

University of Waikato interested to have Collaboration with IAEA



Ms. Niki McCartney, Associate Director, National Centre for Literacy & Numeracy for Adults, Faculty of Education, The University of Waikato, Hamilton, New Zealand who was on a visit to New Delhi to attend a conference on literacy and language development for women and girls at Jawaharlal Nehru University visited Indian Adult Education Association on November 18, 2015 to meet Dr. V.Mohankumar, Director and Smt. Kalpana Kaushik, Deputy Director to discuss and get the inputs on potential literacy, language and numeracy collaborations with the Association particularly in the areas of research, professional development, programme development and implementation.

Ms. Niki was briefed on the literacy programmes in India, development of teaching-learning materials, improved pace and content of learning and also about the role played by the Association and the International Institute of Adult and Lifelong Education in the field of literacy and lifelong learning. She was also given a few publications brought out by the Association.

Asian Literacy Conference 2016 at Mumbai

The Reading Association of India (RAI) is organizing Asian Literacy Conference at Mumbai on January 28-29, 2016 in collaboration with Gujarat Research Society and Indian Section of World Education Fellowship (WEF). The conference is open to all.

Theme of the conference: 'Role of Information and Communication Technologies in Promoting Reading and Developing a Learning Society.'

Conference fees (includes lunch, refreshments, conference dinner and conference materials):

Participants	Early Bird before 15.11.2015	Payment after 15.11.2015
Indian participants	Rs.2500/-	Rs.3000/-
Indian youth participants	Rs.1500/-	Rs.2000/-
International participants	US\$ 250	US\$ 300
International youth participants	US\$ 250	US\$ 225

Method of payment (by bank transfer):

Name of Bank	IDBI Bank, Khar Branch (West), Mumbai - 400 052
Account Name	Gujarat Research Society
Account Number	0014104000301879
Swift Code	IBKLINBB126
IFS Code	IBKL0000014

*please send a copy of the Bank Transfer Slip alongwith the Registration Form to the contact person latest by December 15, 2015.

Contact persons:

Mrs. Doris Saldanha, Secretary, Reading Association of India, West Zone
Phone: Tel: +91(022) 26462691, 26041031, e-mail: grs@bom5.vsnl.net.in

Mr. George and Ms. Jaymala, Conference Secretariate
Phone: +91 (022) 26462691, 26041031, e-mail: grs@bom5.vsnl.net.in

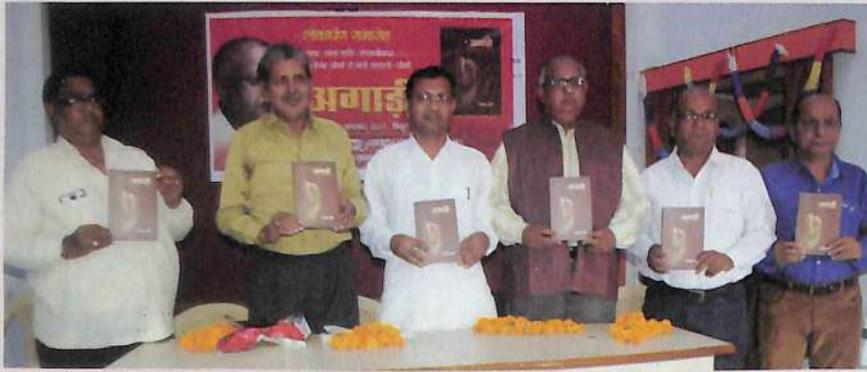
Workshop on Art of Knowledge Sharing and Training of Trainers

The World Bank has organized a six day workshop at Hotel Le Meridien, New Delhi from November 2-7, 2015 on Art of Knowledge Sharing and Training of Trainers to develop institutional capacity to effectively and systematically capture, package and share tacit knowledge and insights on development solutions for the most pertinent challenges in prevention and control of HIV/AIDS.

Persons who have participated in the Training of Trainers will act as Mentors and their role would be the change agents and they will organize training programmes for others.

Dr. Biresh Pachisia, a Life Member of IAEA also participated in the training as a Mentor.

श्री राजेन्द्र जोशी की कृति 'अगाडी' का विमोचन



दिनांक 15 नवम्बर 2015 को महाराजा नरेन्द्र सिंह ऑडिटोरियम, बीकानेर में आयोजित एक साहित्यिक कार्यक्रम में जाने-माने कवि एवं कथाकार श्री राजेन्द्र जोशी द्वारा रचित कहानियों का संग्रह 'अगाडी' का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कथाकार संपादक डॉ. सत्यनारायण

गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन कवि नाटककार श्री हरीश बी.शर्मा द्वारा किया गया।

विदित है कि श्री राजेन्द्र जोशी भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के आजीवन सदस्य तथा कार्यकारिणी सदस्य भी हैं।

सोनी तथा विशिष्ट अतिथि साहित्यकार संपादक श्री मधु आचार्य आशावादी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार श्री भंवरलाल भ्रमर ने की। इस अवसर पर युवा आलोचक डॉ. नीरज दइया ने श्री जोशी की कृति 'अगाडी' पर पत्रवाचन किया। इस समारोह में भाग ले रहे गणमान्य साहित्यकारों ने श्री जोशी की रचना शैली, उनके सोच की आधुनिक दिशा तथा नारी मुक्ति के प्रबल स्वर की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में स्वागत भाषण वरिष्ठ कथाकार व्यंग्यकार श्री बुलाकी शर्मा द्वारा प्रदान किया

Virtual Police Station Launched



The Commonwealth Human Rights Initiatives (CHRI) in cooperation with the Rajasthan Police has launched the Virtual Police Station (VPS) at India Habitat Centre on November 17, 2015, a first of its kind tool built for police training and public education. This interactive multi-language programme works both online and offline, and allows a user, be it a cadet in a police academy or a man, woman or child at home, to learn the duties, rights and responsibilities one should expect in a police station. Using cutting

edge 360 degree photography and web architecture, combined with videos, text boxes and vital legal resources, anyone can learn the laws and procedures relating to arrest, crimes against women, riot control, theft, and more. Users can also better understand the ranks, rooms and registers found in a police station, so that everyone gets on the same page to help create better policing across India. The Virtual Police Station has been called the next generation of police training. It is made with support from the delegation of the European Union to India and Friedric Naumann Stiftung.

CHRI Director Ms. Maja Daruwal said that the police needs to be made more gender inclusive and

gender responsive, we have now come out with a training tool that can help make the police truly representative, citizen centric and community friendly. VPS is one step forward in humanizing the functioning of the police and it strives to "demystify the police station by exposing us to the layers of work-management, administration, investigation, going to court, forensic-that the personnel in

their police station performs.

Shri BL Soni, IPS, Director, Rajasthan Police Training Academy shared how they start using VPS in Training. Dr. Kiran Bedi, IPS (Retd) also shared her views and perspectives on implementation of VPS. Shri Vivek Trivedi, Communications Officer presented that how one can use the Virtual Police Station. Dr. Ronald Meinardus, Regional Director, Friedrich Naumann Stiftung gave his special remark at the end.

- Kalpana Kaushik
Deputy Director, IAEA

Orientation-cum-Review Meeting Organized by Tamil Nadu SLMA



The Tamil Nadu State Literacy Mission Authority in collaboration with the State Resource Centre, Chennai organized a orientation-cum-review meeting on November 1, 2015 at the conference hall of SCERT in which the District Coordinators of 9 Saakshar Bharat Districts, Directors of Jan Shikshan Sansthan, officers of SLMA and SRC participated. The meeting was chaired by Shri Y.S.K. Seshu Kumar, Director General, National Literacy Mission Authority. In this meeting the DG, NLMA explained to the

participants the benefits of Pradhan Mantri Suraksha Beema Yojana (PMSBY), Saansad Adarsh Gram Yojana (SAGY) and the Equivalency Programme. He desired the participants to take active part and all out efforts to achieve 100% literacy in SAGY in the selected districts. He profusely appreciated the achievements made by Tamil Nadu SLMA for which it has got Saakshar Bharat Award and the SRC for its academic support to SLMA and the Saakshar Bharat districts. The DG, NLMA also distributed certificates to the Transgenders who have successfully completed the basic literacy programme. A short film produced by State Resource Centre titled 'Rural India and Path of Success' was screened in the meeting.

Shri V. Mohanraj, Director of Non-formal and Adult Education, Govt. of Tamil Nadu, Smt. S. Suganya, Joint Director, Directorate of Non-formal and Adult Education and Shri P. Ravi, Regional Director, National Institute of Open Schooling, Chennai, Dr. V. Balaji, Director, State Resource Centre were present.

उमरिया जेएसएस : प्रमाणपत्र वितरण समारोह

दिनांक 2 नवंबर 2015 को जन शिक्षण संस्थान, उमरिया तथा राज्य संसाधन केंद्र, भोपाल द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में गत तीन



महिनों से सांसद आदर्श ग्राम योजना के अंतर्गत ग्राम केलमनिया में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति, बेरोजगार महिलाओं के लिए संचालित सिलाई-कटाई प्रशिक्षण कार्यक्रम के सभी 46 सफल शिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री राहुल देव सिंह ने कहा कि यह हुनर शीघ्र आपके अतिरिक्त आर्थिक उर्पाजन में सहयोगी बनेगा और आप सभी ग्रामीण विकास के लिए सरकार द्वारा संचालित विविध कार्यक्रमों का अपने हित में उपयोग करते हुए स्वयं को तथा अपने परिवार को स्वावलंबी बना सकेंगे।

इस अवसर पर ग्राम पंचायत के सरपंच श्री कामता सिंह मंसराम तथा जन शिक्षण संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी श्री ईश्वरदीन राय, सहायक कार्यक्रम अधिकारी श्री नरेश प्रसाद यादव, सुश्री निकहत प्रवीण, मो. इरफान मंसूरी, श्री राकेश यादव, श्रेत्र समन्वयक शारदा प्रसाद तिवारी, अनुदेशिका श्रीमती समता सोनी एवं श्रीमती सोमवती यादव सहित अनेक स्थानीय लोग भी उपस्थित थे।

Goa JSS Director Presented a paper on Women Empowerment at NCRI, Hyderabad

The National Council for Rural Institute, Hyderabad was founded by Shri P.V. Narasimha Rao. On the occasion of its 20th Foundation Day a two day



national workshop was organized on October 19-20, 2015 on 'Convergence of Rural Institutions and Socio-economic Development Programme' in which more than 50 institutions across the country had participated. On this occasion Shri Shrihari Athaye, Director Incharge, Jan Shikshan Sansthan, Goa presented a paper on 'Empowerment of Women - Policy Instruments, Strategies and Interventions'.

Shri Bandaru Dattatreya, Union Minister of State for Labour & Employment (Independent Charge) addressed the gathering. Others present on the occasion were Prof. R.V.R.Chandrasekhar Rao, former DG, Commonwealth of Learning, Canada, Ms. S.Vani Devi, Secretary, Surabhi Educational Society, Hyderabad, Dr. D.Rama Rao, Director, National Academy of Agricultural Research Management (NAARM), Hyderabad, Dr. P.Durgaprasad, Chairman and Dr.D.N.Das, Deputy Director, National Council for Rural Institutes.

DAE Organized Training for KRPs on Financial Literacy

The Directorate of Adult Education, Govt. of India in collaboration with the State Bank of India and Jan Shikshan Sansthan, Tirupati organized a three day training programme for 26 Key Resource Persons drawn from the State Resource Centres across the country on Financial Literacy at Tirupati on October 26-28, 2015. The training was inaugurated by Shri G.V.Yaswant Ram, Assistant General Manager, SBLC while the Keynote address was given by Prof. T. Kumaraswamy of SV University. The participants were also addressed by Dr. Ramakrishna Sura, Director, Directorate of Adult Education and Dr. Kuldeep Kumar, Consultant, National Literacy Mission Authority.



In the technical sessions Dr. Ramakrishna Sura made a presentation on Saansad Adarsh Gram Yojana, Prof. Kumaraswamy on Mobilization and Motivation for functional literacy, Shri D. Sudhakar of State Bank of India on Budget and Planning and Money Transfer, Direct Benefit Fund Transfer in India, Shri Prakash Reddy, General

Manager (Training) on the Importance of KYC and Revised Kisan Credit Card Scheme, Shri Nagaraju Naidu on Insurance, Mutual Funds, ULIPS, Government Provident Fund, 80ccd, Health Insurance, PLSBY, Atal Pension Yojana, etc.

As part of the training programme the participants also visited two vocational skill training centres - Fabric Painting, Water Purification and Preparation of Bronze Items run by JSS, Tirupati.

At the end the participants were given certificates by Dr.G.Muniratnam, General Secretary, RASS.

- Dr.V.Mallikarjuna Reddy
Director, JSS, Tirupati

Kerala SRC Organized Entrepreneurship Development Programme

The State Resource Centre, Kerala organized a four day Entrepreneurship Development Programme at Jubilee Memorial Animation Centre, Thiruvananthapuram on October 27-30, 2015 for the selected 48 beneficiaries of Kerala State Literacy Mission Authority, Jan Shikshan Sansthans functioning

in Kerala and Kerala Mahila Samakhya Society. The main objective of the programme was to develop capacity in the beneficiaries of vocational training programmes on entrepreneurship. Of the four days, the first three days were devoted to theory in which the issues discussed included leadership skills, team management,



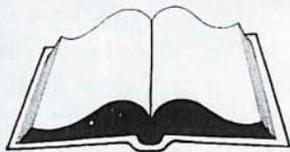
entrepreneurship, schemes available for new entrepreneurs, your business to the next level, be a brand, motivation, agriculture as an enterprise, banks and micro enterprises, stress management and positive

attitude and micro enterprises - concept and reality. The last day was devoted to field visit to a few micro enterprises functioning in Thiruvananthapuram district.

The inaugural session of the programme on October 27th was presided over by Dr. N. B. Sureshkumar, Director, State Resource Centre and the inaugural

address was given by Shri Prabhakaran, Consultant, Kerala State Council for Science, Technology and Environment. Prof. R. Sasikumar, Joint Director, Kerala State Literacy Mission Authority gave the Keynote address. On October 30th Dr. M.K.C. Nair, Vice Chancellor, Kerala University of Health Sciences, Thrissur gave the valedictory address

and distributed certificates to the participants while Dr. B.Viyayakumar, Principal, Kerala Institute of Tourism and Travel Studies, Thiruvananthapuram addressed the participants.



Haijun, ZENG and others eds. **Approach of ICT in Education for Rural Development: Good Practices from Developing Countries.** New Delhi, Sage; 2015: 624 p.

This is a comprehensive study on the importance of ICT in rural education. There are many challenges faced in effective Information and Communication Technology (ICT) implementation for rural development. This book contains policy recommendations to help drive and stimulate innovation and creativity through ICT use and reduce the digital divide and social exclusion in rural areas. The cases included in this book typically represent the ICT educational applications in China and developing countries and examine how current policies can support the overall development progress. It is expected to share good practices and to focus on spreading them better among three targeted groups of people: young people in rural areas, teachers at rural primary and high schools, and "left-behind" rural women.

Nayak, Pulin B ed. **Economic Development of India.** Delhi, Routledge; 2015: 1,752 p.

This book presents some of the historical material on development issues in the Indian context going back about a hundred years, from Gandhi's economic formulations to Nehru's ideas, substantially different on issues such as the agriculture versus industry debate and the relative roles of the public and private sectors. After India gained independence in 1947 the issue of economic development assumed a centre stage in national policy making. Indeed one might even say that India was the laboratory where many of the significant new theories on economic development have been tested.

Prem Chand. **Status and Trend of**

Literacy in India (Adult and Youth): Database for literacy programmes – 2011. New Delhi, Indian Adult Education Association, 2015: 200p.

Census of India brings out literacy data for age group 7 and above and also contains literacy data by single year age/quinquennial age groups. Effective literacy rates based on age group 7 and above data are being widely used in India for different purposes. Few countries use 10 years and above data for working-out literacy rates of their country. But UNESCO brings out comparative adult and youth literacy rates for different countries of the world which provide a basis for monitoring Goal-3: Learning Needs of All Youths and Adults, Goal-4: Improving Levels of Literacy of Education for All programme of UNESCO. This book provides data on literacy for age group 7 and above as well as literacy data for adult population aged 15 years and above and youth population of 15-24 years. Literacy data of the Adolescents (10-19 age group) is given in Annexure III. Literacy data and its analysis based on NSS survey (2014) has also been added.

Literacy rate of the country of age group 7 years and above population has gone up to 73 percent by 2011 but the adult literacy rate is lagging behind by about 4 percent points. While the youth literacy (15-24) rate has gone up to 86 percent, the overall adult literacy rate is only 69 percent. India has over one third of the total 780 million adult illiterates of the world. Of the total 283 million illiterates of age group 7 and over of the country in 2011, 258 million forming over 90 percent are in the age group of 15 years and above. The UNESCO's goal of halving the adult illiteracy rate by 2015 i.e. reducing the illiteracy rate of 40 in 2000 to be reduced to 20 by 2015 is not likely to be achieved as we are falling much behind the target of 80 percent adult literacy. Analysis of the adult illiterate population by sex, caste, rural/urban and by States/UTs provides a basis for preparing long term/short term plans for reducing adult illiteracy in India.

Satia, Jay and others eds. **Innovations in Family Planning: Case Studies from India.** New Delhi, Sage; 2015: 292 p.

This book tells about innovations in family planning service delivery in the country which is of particular contemporary relevance, both nationally and globally. It features innovative case studies of family planning from India which have demonstrated impact and are sustainable and scalable. These cases contribute to the approaches of problem solving, enhancing quality family planning care at the grass-roots level and influence future directions of the programme.

Sinha, Ankan. **Educational Technology (POD).** Delhi, Kalpaz Publications; 2015: 132p.

The book Educational Technology (POD) tells how to spread the knowledge by and through certain modern and innovative technologies to the learners and budding teachers. This book covers vast area of whole education system with quality and user friendly information to the professionals and the students.

Melkote, Srinivas Raj and Steeves, H. Leslie. **Communication for Development: Theory and Practice for Empowerment and Social Justice.** New Delhi, Sage; 2015: 568 p.

This book examines social change theory and practice while presenting a conceptual framework of development communication to address inequality and injustice in contemporary contexts.

It explores empowerment and social justice to individuals and communities around the world in the context of increasing globalization. Tracing the history of development communication, it looks objectively at diverse approaches and their supporters, and goes on to provide models for the future. It also offers a chapter presenting the foregrounding empowerment and social justice as goals for development communication in the 21st century.

Compiled by Ms. Neha Gupta
Jr. Librarian-cum-Documentation
Assistant, IAEA

मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के जिला स्तरीय अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम



दिनांक 4 से 6 नवंबर, 2015 को राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण, भारत सरकार द्वारा राज्य साक्षरता

मिशन प्राधिकरण व राज्य संसाधन केन्द्र छत्तीसगढ़ के सहयोग से छत्तीसगढ़ प्रशासनिक अकादमी निमोरा, रायपुर में छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारियों एवं जिला परियोजना अधिकारियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें म.प्र. के मंदसौर, भिंड, शाहडोल, दतिया, सतना, टीकमगढ़, मुरैना, ग्वालियर, गुना, कटनी, शिवपुरी, देवास तथा छत्तीसगढ़ के रायपुर, कोरबा, दंतेवाड़ा, राजनांदगांव, बस्तर, कांकेर, जांजगीर चांपा, महासमुंद, बिलासपुर व रायगढ़ से आये कुल 32 अधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का इतिहास, प्रशिक्षण की रूपरेखा व उपादेयता, साक्षर-भारत कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के साथ अंतरविभागीय समन्वय, लोक शिक्षा केन्द्र की संरचना एवं गतिविधियां, समतुल्यता कार्यक्रम, साक्षर भारत कार्यक्रम में सूचना शिक्षा संचार सामग्रियों की भूमिका, सांसद आदर्श ग्राम योजना तथा राष्ट्रीय शिक्षार्थी आकलन पद्धति, साक्षर भारत योजना की रणनीति तथा क्रियान्वयन, फण्ड और लेखा प्रबंधन (एफ.ए.एम.एस.) तथा मैनेजमेंट इन्फॉर्मेशन सिस्टम, महिलाओं, एस.सी., एस.टी. तथा अल्पसंख्यकों के कानूनी अधिकार, वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम के तहत प्रधानमंत्री जन-धन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, अटल पेंशन योजना तथा मुद्रा योजना जैसे विषयों पर चर्चा की गयी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के स्कूल शिक्षा सचिव श्री सुब्रत साहू थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. रामाकृष्ण सूरा ने की। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण, रायपुर, छत्तीसगढ़ की संचालक सुश्री जिनेविव किंडो थी तथा इसमें संदर्भ व्यक्ति के तौर पर प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, नई दिल्ली के सलाहकार श्री जुबैर हसन कुरैशी व डॉ. कुलदीप कुमार उपस्थित रहे। प्रतिभागियों को श्री सुब्रत साहू, डॉ. रामाकृष्ण सूरा तथा सुश्री जिनेविव किंडो ने संबोधित किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण, रायपुर, छत्तीसगढ़ के सहायक संचालक श्री दिनेश टांक द्वारा 'पढ़ेला



जाबो.....' शीर्षक प्रेरणा गीत के गायन से किया गया। कार्यक्रम का संचालन राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण, रायपुर, छत्तीसगढ़ के सहायक संचालक श्री प्रशान्त पाण्डेय व आभार राज्य संसाधन केन्द्र रायपुर, छत्तीसगढ़ के निदेशक श्री तुहिन देब द्वारा किया गया।

— तुहिन देब
निदेशक, रा.स.के. छत्तीसगढ़

Kundrakudi JSS Organized Awareness Programme



The Jan Shikshan Sansthan, Kundrakudi organized an awareness programme for its beneficiaries on Pradhan Mantri Mudra Yojana at Thirupputhur. The programme was Chaired by Dr. K.Balakrishnan, Chairman of JSS and Shri A.Subramanian, Lead District Manager, Indian Overseas Bank, Sivagangai District explained about the salient features of the scheme. Shri Nagarajan, Statistical Inspector, District Industries Centre spoke on the schemes available under state and central governments to promote self-employment of the youths. Shri R. Somasundaram, Chairman, Town Panchayat, Thirupputhur and member of BOM of JSS encouraged the audience to be successful entrepreneurs by pursuing self-employment.

Shri M. Thiyagarajan, Director, JSS gave the welcome address while Shri T.Bharathi, Senior Programme Officer proposed the vote of thanks.

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,
23378436, 43489048

Editor: Dr. Madan Singh

E-mail: iaeadelhi@gmail.com

Website: iaea-india.org

IAEA NEWSLETTER

Vol. 24 No.12

Re. 1 per copy

December 2015



Indian Adult Education Association

A Rare Honour to Indian Adult Education: Professor S.Y. Shah inducted to the International Hall of Fame



educator – Professor Alexander Charters who is 99 years and exchanged views on various issues. Afterwards, Professor Shah and Choudhary visited the International HOF located at the Department of Continuing Education of University of Oklahoma. Prof. Shah is the second Indian to receive the honour.

Prof. Shah has been recognized for his researches and publications in the area of history of adult education, professionalization, international

[From L-R] K.C.Choudhary, Chancellor, IIALE, Thomas A.Sork, Associate Dean, University of British Columbia, S.Y.Shah, Director, IIALE, Lawrence TSUI, Founder Director of Continuing Education, University of Macau

International Hall of Fame (HOF) in Adult Continuing Education has been honoring adult educators from different parts of the globe in recognition of their outstanding contributions to the field of Adult Continuing Education at national and international levels.

Professor S.Y. Shah, currently the Director of International Institute of Adult and Lifelong Education and a former Professor of Jawaharlal Nehru University received a gold medal and inducted to the International Hall

of Fame in Adult Continuing Education at an impressive ceremony organized during the Annual Conference of the American Association of Adult Continuing Education held at Oklahoma on November 18, 2015.

The impressive ceremony was attended by Dr.K.C.Choudhary, Chancellor of International Institute of Adult and Lifelong Education. On the side-lines of ceremony, Prof. Shah and Choudhary met a renowned adult



cooperation and institutional building specially setting-up the International Institute of Adult and Lifelong Education and Indian Reading Association and editing the Indian Journal of Adult Education and International Journal of Adult and Lifelong Education for a couple of years

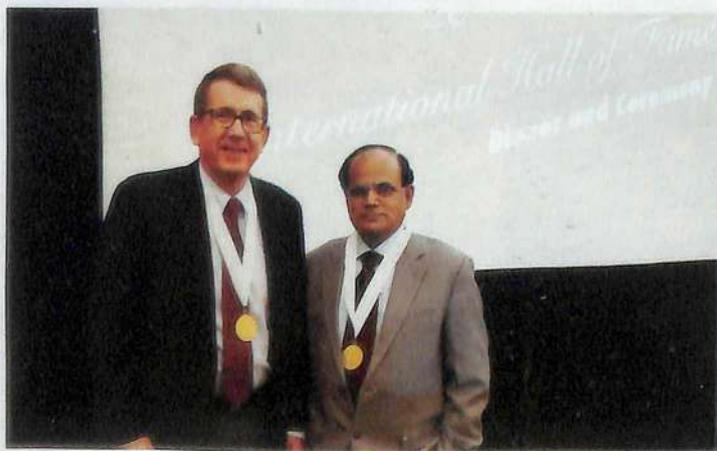
besides taking leadership role in organizing several short-term courses, workshops, seminars and conferences; designing and teaching innovative courses in India and abroad and serving as Chairman/Member of several Expert Committees of National Literacy Mission, University Grants

Commission, Planning Commission, World Literacy of Canada, UNESCO Institute for Lifelong Learning, Indian Adult Education Association and Directorate of Adult Education. Professor Shah has been a recipient of Nehru Literacy Award (2007).

Following interview on Skype by Professor Richard Patterson of Chicago University throws light on Prof. Shah's work in the field of adult education.

Professor Richard Patterson: Hello Shah. Congratulations on being inducted into the International Hall of Fame (HOF) in Adult Continuing Education. How do you feel? How did it happen?

Thank you Patterson. I am delighted to join the HOF. I knew about the HOF and was quite familiar with the work of several members of the HOF as I used to give an assignment to my Masters students to select two eminent adult educators (one from India and one from overseas) and discuss their work in the class. They invariably visited the website of HOF and selected one international adult educator from the members I had



no idea how the persons were selected by the HOF. Then, one day I got an e-mail from Prof. Tom Sork, Senior Associate Dean of the University of British Columbia and a member of HOF that he wants to recommend my name to the HOF and if interested I should send him a copy of my CV. Needless to say that I complied with his request. Based on my CV, he undertook the tedious task of preparing my nomination papers. He informed me that he would request Professor Budd Hall to second my name. The nominator has to personally attend the function and introduce the nominee and hand over the plaque and medal which he did with pleasure.

What is your educational background and how did your professional career begin and when did you enter the field of adult education?

I did two Masters Degrees viz., History and Education and M.Phil and Ph.D in History of Education from Jawaharlal Nehru University in New Delhi. My professional career began as a Lecturer in Education at the National Council of Educational Research and Training, New Delhi where I got the chance of working in India's first non-formal education project at Bhumiadhar in Nainital District and later at Baruali in Aligarh district for about eight years. Subsequently when JNU launched adult education programme, I was appointed as an Assistant Director of Adult Continuing Education programme. With my long experience in training and material development in the area of non-formal education, I had no difficulty in initiating adult education programmes in the university.

What were your significant work in the field of adult education?

Apart from the mandatory work of planning and managing adult continuing education programmes and around the campus of JNU, I devoted lot of time to do research in history of adult education. The credit should go to my teachers late Professor Tapas Majumdar and Sarvepalli Gopal who told me to focus on research and publications as it would justify my position in the university as an academic and earn respectability. Since I had the background of history, I started research in the area of history of adult education.

Broadly I worked in three areas viz., history of adult education, international cooperation and professionalization.

I observed that though there were several documents in adult education, they were scattered and not easily accessible to researchers or policy makers. Hence I began by collecting and editing all the important documents related to Indian adult education and brought out a Source Book and an Encyclopedia of



Professor Shah and Dr.Choudhary met Professor Alexander Charters who is 99 years old during the induction ceremony of the Hall of Fame at Oklahoma. Professor Charters has been a Professor of Adult Education at Syracuse University where he built-up an International Depository of Adult Education. He was also the founding President of International Society of Comparative Adult Education. He has several publications in the area of comparative adult education. He has also published his paper in the Indian Journal of Adult Education and visited India.

Also seen in the photo is Professor Margret Charters, wife of Professor Alexander Charters.

Adult Education in India which were readily published by the National Literacy Mission of Government of India. Then I started identifying eminent adult educators and examining their ideas and work. Since during those days, the university was implementing Each One Teach One programme originally developed by Dr.Frank Laubach - an American Presbyterian Missionary, I began studying his ideas and work. As he had donated all his papers to Syracuse University, I travelled to Syracuse with a Kellogg Visiting Scholar Award and studied his collection which was kept in 56 boxes and edited a volume on his work in India which was published by Indian Adult Education Association. During late 1980s, when India had launched literacy campaigns, I was curious to know the origins of the campaign approach. Since my readings showed that Bihar had launched a successful literacy campaign as early as 1930s, I researched and wrote a book on Adult Education in Bihar which was again published by IAEA on the occasion of Golden Jubilee. Then I was invited to write a piece on history of adult education in India for the Encyclopedia of Education published by NCERT. Since one of my task in JNU was developing the discipline of adult education and introduce teaching programme, I started reading about the development of university adult education. I came to know that as early as 1960's, the University of Rajasthan had set-up the first department of adult education in India. My colleague Dr. Anita Dighe suggested that I study the Rajasthan experience to gain some insights into the development of university adult education. At that time, I had a chance of meeting late Professor James

Draper -one of the persons closely associated with the setting-up of the department of adult education at Rajasthan University. From my interactions with him I came to know the role of several Canadians in the promotion of university adult education in India. This led me to focus on international cooperation and examine overseas influences on Indian adult education and I brought out two publications on the role and influence of Canada and Britain on Indian adult education.

I understand that you are the Co-coordinator of the Asia Europe network on Professionalization of Adult Education. When and how did your work in the area of professionalization of adult education begin? Did you face any challenge?

My work on professionalization of adult education began in JNU. One of my mandate in JNU was on developing the discipline of adult education and designing professional courses in adult education. It was not easy as I had thought. When I discussed the idea with the then Dean of School of Social Sciences late Professor Ashok Mathur, he was not sure whether the students in JNU would be interested in such a course and he suggested that I should offer anon-credit course on adult education to ascertain the interest of students. Following his advice, I designed anon-credit course and advertised and some of the students responded. I taught the course once in a week for a semester and initially 24 students registered for the course and I gave them a certificate of participation. In the subsequent three semesters, the number of students increased to 34 and 42. The last batch of students felt that the course should be offered as a regular credit course and they submitted a memorandum to the Vice Chancellor which was forwarded to the Dean and I was asked to design a credit course. Thus an adult education course was introduced in JNU mainly due to the demand from the students.

During my interactions with several literacy workers, I came to know that a number of them were keen to take-up a professional course in adult education to improve their knowledge. But they were not interested in joining a full time course. They felt that if there is a short course through Open Distance Learning mode, they could pursue it along with their job. I took-up the challenge and with the support of UGC and UNESCO Institute for Education and National Literacy Mission and active cooperation of several academics, a short course on Participatory Adult Learning and Documentation and Networking (PALDIN) consisting of two learning packages were developed and it was hosted on the UNESCO website so that interested adult

education functionaries could benefit. Since most of the learners were keen to have a certificate from a recognized university, I approached the then Vice Chancellor of Indira Gandhi National Open University-Professor Rajasekharan Pillai with a request to explore the possibilities of expanding the learning package into a diploma programme. The university reviewed the materials and in due course, expanded it to a Post Graduate Diploma Programme in Adult Education. A global survey undertaken by the Slovenian Institute of Adult Education identified PALDIN as one of three innovative professional development programmes for adult educators.

My interest in professionalization did not confine to developing professional courses, but I felt that a professional institute would be a great help in furthering professionalization. Hence I was exploring the possibilities of setting-up an Institute.

How did you pursue the idea of setting-up an Institute of Adult and Lifelong Education?

Since I was working as a Senior Fellow at the erstwhile National Institute of Adult Education in New Delhi, where I was engaged in designing professional development programmes and other activities, I had an idea and understood the importance of such an Institute in furthering professionalization of adult education. Subsequent to the closure of the Institute, there was a demand for such an Institute in different forums of adult education. As I was the Vice President of IAEA and actively involved in several activities of IAEA, viz; designing and directing short courses on research methodology and recent developments in adult continuing education, organizing seminars, workshops and editing the Indian Journal Adult Education, I felt that if such professional activities are undertaken under the aegis of an Institute, it would command better recognition. I discussed the idea with Dr.K.C.Choudhary, President of IAEA during an informal luncheon meeting. He not only welcomed the idea but asked me to prepare the blue print of such an institute. All the members of the Executive Committee endorsed the idea and the Institute was registered as a non-profit organization in 2002. I am happy to say that, the institute has succeeded in getting the cooperation of a large number of national and international scholars and it is functioning well over a decade.

What are the major achievements of the Institute?

The institute started functioning with an International Seminar on Urban Literacy supported by the British Council and National Literacy Mission. Although the institute launched an International Journal of Adult and Lifelong Education which I edited for over three years, it could not be continued due to the lack of quality

articles. With the support of the UNESCO Institute for Education, a study of adult learning organization in India was undertaken which led to the development of a professional development programme (PALDIN). We have entered into a Memorandum of Understanding with the University of British Columbia (Canada), J.M. University, Wurzburg (Germany) for undertaking collaborative programmes and exchange of faculty and students. We have been organizing annual James Draper Lectures by eminent scholars. We have an active publication plans.

As the Director of the institute did you face any challenge?

Because of the strong support of the Chancellor and other members of the Institute, I did not face any problem in managing the Institute. However lack of interest among the faculty in taking-up research programmes and bringing out publications has been an important issue. Besides attracting young scholars to take active interest in adult and lifelong learning has been a big challenge. Hence we are planning to grant a number of Visiting Scholar Awards to young scholars and Scholar in Residence Awards to senior academics to visit the Institute and carry out their researches.

I understand that you were very closely associated with NGOs specially IAEA. What were your experiences of working with NGOs?

I have had a rewarding experience of working with NGOs specially- IAEA for over two decades. For about a decade when I was the Vice President of IAEA, I took active interest in organizing short courses on research methodology and recent developments in adult education in collaboration with JNU. During my tenure as a member of India Advisory Board of World Literacy of Canada for over a decade, I designed an innovative curriculum for their adult education programme in eastern U.P. I observed that NGO's invariably welcomed the academic guidance provided by academicians.

I have seen from your CV that you worked as a Joint Advisor in Planning Commission and served as a Chairman of the Twelfth Five Year Plan Sub Group on Adult Education and member of several Committees of the government. What has been your experience of working with Government?

Working in Government was a great learning experience for me. In fact I joined Planning Commission mainly to understand how the five year plans are made and funds are allocated. I got an opportunity to learn the art of drafting the chapter on Education of the Eight Five Year Plan and understand the intricacies of policy formulation. Based on my experience in Planning Commission, I wrote a paper on funding of adult education. In fact, I enjoyed working

In Government and during my interactions with some of the senior civil servants specially late Mr. Anil Bordia, Dr. L. Mishra, Mr. M. R. Kolhatkar and Mr. Bhaskar Chatterjee, I found them to be very competent and committed to adult education. Though serving as bureaucrats, some of them were better than university professors in terms of their scholarship, analytical skills and command over language. I have had the privilege of observing and working with all the Director Generals of National Literacy Mission and I observed that the success of literacy programme depended primarily on the quality of their leadership.

I have noticed that you had travelled to over thirty countries in connection with conferences, meetings, research and teaching. What were some of the highlights?

I got an opportunity to teach and do research in several overseas universities viz; Syracuse, Toronto, Nottingham, Warwick, Duisburg Essen, Wurzburg and Aarhus. The academic atmosphere in those universities was very stimulating and helped me carry out good researches. The time I spent abroad, broadened my vision. The students took active interest in discussions. In all my lectures, sometime was given to group discussions among students on various aspects of the lecture. Some of the contacts, I had developed led to collaborative projects and lasting friendship.

What are your current interests and activities?

Currently my interest is in writing the history of Indian Adult Education Association which has completed 75 years. Since UNESCO has nominated me as one of the

fifteen members of the international THINK TANK in Recognition, Validation and Accreditation of Prior Learning, I will be carrying out research in this area during the next year. I would also like to work towards developing our Institute as an excellent academic institution and function as a THINK TANK in adult and lifelong learning. I would also like to develop an adult education archive at the institute which includes interviews with eminent adult educators and all the relevant documents.

In your acceptance speech, you said that your profession has been your pastime. What did you mean?

I meant that I really enjoyed my work in the field of adult education both as a teacher and researcher. Since I did research only on those topics which really interested me, I enjoyed the process and it was never a burden. Besides, I made friendship with some of the eminent adult educators from all over the world. I was fortunate that because of my work in adult education I got several invitations to attend conferences and workshops from the national and international agencies and universities which were rewarding professionally and personally.

Frankly speaking, Professor Shah, I am really impressed by your achievements and I hope you will continue your work in the field of adult education like a true lifelong learner. Thank you for the interview.

It was a pleasure talking to you, Professor Patterson. Thank you very much.

आयोजित हुई सी.एल.एस. की प्रयोगात्मक परीक्षा



भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा चलाये जा रहे पुस्तकालय विज्ञान में प्रमाण पत्र कोर्स करने का एक प्रमुख केन्द्र है। इस बार इस केन्द्र द्वारा संचालित 10वें बैच के 15 विद्यार्थियों ने अक्टूबर/नवम्बर 2015 की लिखित परीक्षाओं में भाग लिया। यह परीक्षा प्रिन्स पब्लिक स्कूल, बुद्ध बिहार, फेस 2, दिल्ली में सम्पन्न हुई। प्रयोगात्मक परीक्षाएं 30 नवंबर 2015 को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली के कार्यालय में श्री मुरारीलाल शर्मा और श्री जय भगवान की देखरेख में संपन्न हुई। प्रयोगात्मक परीक्षाओं की आवार्ड सीट उसी दिन राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा में जमा करा दी गई।

Winners of Nehru and Tagore Literacy award

The Indian Adult Education Association instituted two literacy awards, one in the name of Jawaharlal Nehru started in the year 1968 to commemorate his distinguished services to the cause of reason of enlightenment and the other in the name of Rabindranath Tagore started in the year 1987 to commemorate the 125th Birth anniversary of the great poet. The awards are given to individuals and institutions in recognition of their outstanding work in the field of adult education/women's education. So far 43 have been given Nehru Literacy Award and 24 have got Tagore Literacy Award.

The Awards Selection Committee which met on November 6, 2015 at India International Centre, New Delhi has selected the following for the awards:

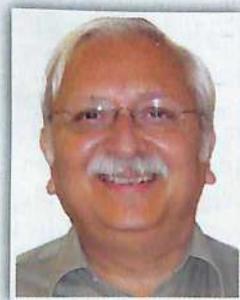
Nehru Literacy Award



Prof. H.S. Bhola



Ramakrishna Mission



Dr. Rajesh Tandon

Prof. H.S. Bhola, Professor Emeritus, Indiana University, USA, Ramakrishna Mission Lokasiksha Parishad, Narendrapur, West Bengal and Dr. Rajesh Tandon, Co-founder and President, Participatory Research in Asia (PRIA), an International NGO and presently a Member of the Governing Board of PRIA.

Tagore Literacy Award



Dr. Mridula Seth



SNDT Women's University, Mumbai



Mrs. Maria Khan

Dr. Mridula Seth, former Technical Advisor (Adolescent and Youth), UNFPA and currently the Director of "Padai Ka Maza" Project, Society for Promotion of Youth and Masses (SPYM), Juvenile Drug De-addiction Centre, New Delhi, SNDT Women's University, Mumbai and Mrs. Maria Lourdes Almazan Khan, Secretary General, Asia South Pacific Association for Basic and Adult Education (ASPBAE), Mumbai.

The awards carry a plaque, shawl, citation and cash of Rs.21,000.

Consultative Workshop to Review Life Skills Training Package

Society for Promotion of Youth and Masses (SPYM) and Lady Irwin College, New Delhi developed a Life Skills Training Package – For Today and Tomorrow (FTT) to build life skills of juveniles in the Drug De-addiction and Rehabilitation Centre, Delhi. In order to review and improve the package a workshop was held on December 3, 2015 at the National Institute of Social Defence, New Delhi which was inaugurated by Smt. Anita Agnihotri, Secretary, Ministry of Social Justice and Empowerment, Govt. of India.

Smt. Kalpana Kaushik, Deputy Director represented Indian Adult Education Association in this workshop.



स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र, कीर्ति नगर, दिल्ली

स्त्री शक्ति सुविधा केन्द्र मुख्यरूप से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए दिल्ली सरकार द्वारा प्रायोजित एक कार्यक्रम है जिसे स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा संचालित केन्द्र कीर्ति नगर में स्थित है। इस केन्द्र द्वारा नवम्बर-दिसम्बर माह के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नरूप है:

कानूनी जागरूकता बैठक

दिनांक 2 दिसम्बर 2015 को वाघवा कैंप, गली न. 2 में एक कानूनी जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कुल 29 महिलाओं ने भाग लिया। बैठक में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर डेलसा से श्रीमती रागिनी एस.



राज उपस्थित थीं। बैठक बच्चों का लैंगिक अपराधों से संरक्षण अधिनियम (The Protection of Children from Sexual Offences- POCSO) पर केन्द्रित था।

बैठक में उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्रीमती रागिनी ने बताया कि कोई भी व्यक्ति अगर नाबालिक बच्चों का यौन शोषण करता है अथवा उनके साथ जबरदस्ती शारीरिक संबंध बनाने का प्रयास करता है तो पोस्को एक्ट के तहत उसके लिए सजा का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि बच्चों के साथ यौन शोषण होने पर तुरंत एफआईआर दर्ज करना चाहिए तथा बच्चे की चिकित्सीय जांच करानी चाहिए ताकि पीड़ित को उचित न्याय दिलाया जा सके। इसके लिए दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण के काउंसिलर तथा जीआरसी में सम्पर्क करके भी सहायता प्राप्त की जा सकती है। अंत में उन्होंने प्रतिभागी महिलाओं से आग्रह किया कि इस संबंध में प्राप्त जानकारी को वे अधिक से अधिक लोगों में साझा करें ताकि समाज इस प्रकार के अपराधों को रोकने में सक्षम हो सके।

ओपीडी

दिनांक 4 दिसम्बर 2015 को बरती विकास केन्द्र, कीर्तिनगर में एक ओपीडी का आयोजन किया गया जिसमें कुल 70 लोगों ने अपना स्वास्थ्य जांच करवाया। ओपीडी में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर डॉ. सुरजीत गुप्ता उपस्थित रहीं जिन्होंने जांच के उपरान्त

शारीरिक रूप से कमजोर तथा एनिमिया से पीड़ित महिलाओं को अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा। उन्होंने बच्चों को सर्दी से बचने के



लिए गरम कपड़े तथा साफ-सुथरा रखने का सुझाव भी दिया। इस दौरान उन्होंने गंभीररूप से पीड़ित एक मरीज को अन्य अस्पताल के लिए रेफर भी किया। फार्मासिस्ट श्री ललित कुमार चोपड़ा ने सभी मरीजों को आवश्यकतानुसार निःशुल्क दवाईयां वितरित की।



पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक

दिनांक 8 दिसंबर 2015 को कमला नेहरू कैंप में एक पानी और स्वच्छता जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कुल 31 महिलाओं ने भाग लिया। बैठक में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर जीआरसी से श्रीमती अंजू बाला, श्रीमती मीना राना तथा सुश्री आरती उपस्थित थीं।

इस अवसर पर श्रीमती मीना ने उपस्थित महिलाओं तथा स्वयं सहायता

समूह के सदस्यों को अपने घर की साफ-सफाई के साथ-साथ अपने क्षेत्र की सफाई के बारे में भी विस्तार से बताया और कहा कि उल्टी, दस्त, पेट दर्द, हैजा, मलेरिया, पीलिया, हाथीपांव आदि बीमारियां गंदगी के कारण ही होती हैं। इसलिए हमें गंदगी से हमेशा सावधान रहना चाहिए। तत्पश्चात सुश्री आरती द्वारा वाशकट में मौजूद उपकरणों के माध्यम से हाथ धोने के तरीकों के बारे में बताया गया



तथा अधिक जानकारी के लिए संबंधित पैम्फलेट भी वितरित किये गये। बैठक के अंत में श्रीमती अंजू बाला ने उपस्थित प्रतिभागियों को अपने घर तथा आस-पास के वातावरण को साफ-सुथरा रखने के लिए संकल्प लेने का आग्रह किया।



पोषाहार शिविर

दिनांक 14 दिसंबर 2015 को 5/35, शिव मंदिर में एक पोषाहार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय इलाके के 37 लोगों ने भाग लिया। शिविर में पोषाहार विशेषज्ञ श्रीमती वीना जैन संदर्भ

व्यक्ति के तौर पर उपस्थित थीं। शिविर का मुख्य उद्देश्य किशोरावस्था में आवश्यक पौष्टिक आहार के बारे में प्रतिभागियों को बताना था।

शिविर की शुरुआत में उपस्थित प्रतिभागियों को जीआरसी द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। तत्पश्चात श्रीमती जैन ने महिलाओं तथा किशोरियों को व्यक्तिगत स्वच्छता व पौष्टिक आहार तथा स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देते हुए किशोरवस्था में आवश्यक पोषक तत्वों और उनकी पूर्ति के बारे में बताया। उन्होंने मासिक धर्म के समय बरती जाने वाली सावधानियों तथा इस समय होने वाले शारीरिक परिवर्तन व परेशानियों का उल्लेख



करते हुए जंक फूड, फास्ट फूड व अनावश्यक डायटिंग के दुष्प्रभावों के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। अंत में उन्होंने दो खाद्य व्यंजनों के बनाने की विधि का भी पददर्शन किया जिसमें पौष्टिक हरा-भरा सरसों का साग तथा पौष्टिक मिस्सी रोटी सम्मिलित थीं। उन्होंने इन दोनों खाद्य पदार्थों में पाये जाने वाले विटामिन तथा अन्य पोषक तत्वों के बारे में भी जानकारी दी। अधिक जानकारी के लिए, इनसे संबंधित नुस्खों की छायाप्रतियां भी वितरित की गयी तथा विशेषरूप से कमजोर 5 किशोरियों को ओपीडी के लिए भी रेफर किया गया।



IAEA Foundation Day Observed

The Indian Adult Education Association was founded on December 2, 1939 by a group of eminent scholars like Dr. Amarnath Jha, Shri Shafiq-ur-Rehman Kidwai, Shri N.K. Mukharjee, Shri B.S. Mathur and Dr. Zakir Hussain in response to the clarion call given by the Father of the Nation, Mahatma Gandhi to educate the general public. Every year the Foundation day is celebrated in a simple but fitting manner. This year also the members of the staff of the Association observed the day with lighting of the lamp. Shri K.C.Choudhary, President conveyed his blessings to all associated with IAEA.



National Conference on Urbanization



The Indian Association of Social Science Institutions, New Delhi in association with Institute of Public Enterprise, Hyderabad organized a two day

National Conference on Urbanization in India: Emerging Issues at Hyderabad on December 10-11, 2015. In this conference Shri M.L.Sharma, Assistant Director represented Indian Adult Education Association. He has also attended the Annual General Body Meeting on December 10, 2015.

काराबंदियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम

दिनांक 9 दिसंबर 2015 को जन शिक्षण संस्थान, गुना द्वारा स्थानीय जिला कारागार के काराबंदियों में व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं साक्षरता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें काराबंदियों को साक्षरता, जन शिक्षण संस्थान द्वारा चलाए जा रहे विविध व्यावसायिक पाठ्यक्रमों तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा प्रदान की जा रही विधिक सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया गया।



इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला कारागार के अधीक्षक श्री अतुल सिन्हा तथा विशेष अतिथि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की जिला विधिक सहायता अधिकारी कु. शिखा श्रीवास्तव थीं। इनके अतिरिक्त इस अवसर पर पूर्व कारागार अधीक्षक श्री महेशचंद्र गुप्ता तथा जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी श्री अशोक सिंह चौहान भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री प्रशांत व्यास ने की। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती चन्द्रलेखा ठाकुर द्वारा किया गया। आभार श्री आविद खान ने प्रदान किया। कार्यक्रम में श्री रामवरण सगर, श्री कालूसिंह, श्री हरिसिंह ओझा आदि की सराहनीय भूमिका रही।

— प्रशांत व्यास
निदेशक, जेएसएस

National Business Conclave 'SEEK 2015' held at Thiruvananthapuram

The Additional Skill Acquisition Programme (ASAP) is a joint initiative of General and Higher Education Departments of Govt. of Kerala to create a big pool of trained manpower with various vocational skills for better employment opportunities. In this effort schools and colleges take part in a big way to provide additional skills to the students alongwith the general education. Under the auspicious of ASAP a National Business Conclave 'SEEK 2015' (SEEK- Skill Enterprise Engagement for Empowering Kerala) was organized at Hotel Taj Vivanta, Thiruvananthapuram on December 16 - 17, 2015. The conclave was second in series in which a large number of persons participated which included technocrats, entrepreneurs, representatives of big companies, educational institutions, educational administrators, subject specialists, NGO representatives, community colleges and government representatives from different states dealing with skill development programmes. Dr. V.Mohankumar, Director represented Indian Adult Education Association in this conclave.

The conclave was inaugurated by Shri P.K. Abdu

Rabb, Minister for Education, Govt. of Kerala. The business sessions were divided into two - one was 10 general sessions with specific topics like Positioning Kerala as the Hub for Skilled Workforce, Curriculum Development and Standardization, Lifelong Learning and Learning Pathways, Developing the Trainer Eco-System, Quality Framework for Skilling in India, Making Skilling and Employment as Aspirational, Mainstreaming of Skilling Interventions, National Assessment Framework, Demand Based Skilling and Employability Assurance, Multi-Skill Development Centres and Entrepreneurial Development and the other was 25 panel sessions. The Chairpersons of different panels presented the report about the discussions held and recommendations in the general sessions.

Dr. V.Mohankumar was one of the panelists in Lifelong Learning and Learning Pathways for which the Chairperson was Ms. Rao R. Bhavani, Director, Amrita Multi Model Applications & Computer Human Interaction Labs (ammachi labs), an academic and research centre at Amrita University.

Human Rights Day Observed at Magadh University

The Human Rights Day is observed every year on 10th December. It commemorates the day on which, in 1948, the United Nations General Assembly adopted the Universal Declaration of Human Rights.

On the occasion of Human Rights Day a meeting was organized jointly by the Department of Education, Magadh University, Bodhgaya and Bihar State Branch of Indian Adult Education Association on December 11, 2015 which was attended by faculty members, students and NGO representatives which included Dr. Dhananjay Dheeraj, Assistant Professor, Department of Education, Dr. P.K. Dhal, Principal, Department of Education and Dr. Israil Khan, Director, DDE.

Shri A.H.Khan, former Director, Adult Education Unit, Magadh University in his address said that exploitation is one of the worst forms of violation of human rights



and it needs to be tackled properly by the society and particularly the student community. He also said that even with a number of schemes formulated by state and central governments to uplift the poor people in rural India, the benefit of such schemes have not reached them properly with the result they continue to live in poverty. Unless the deprived sections are also made to advance in life the inclusive growth of the country cannot be achieved.

-A.H.Khan



साक्षरता एवं कौशल विकास केन्द्र का उद्घाटन

जन शिक्षण संस्थान सतना ने सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत गोद लिए गये गांव पालदेव (चित्रकूट) में एक सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की है। विगत दिनों, इस केन्द्र का विधिवत उद्घाटन श्री प्रकाश जावड़ेकर, केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्री जावड़ेकर ने स्वयं सिलाई मशीन चला कर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया तथा स्वावलंबन के लिए कौशल विकास की महत्ता के बारे में बताया। कार्यक्रम में जन शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष एवं सी.ई.ओ. जिला पंचायत श्री ए.बी. सिंह, राज्य संसाधन केन्द्र के निदेशक श्री संजय सिंह, जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री राज कुमार सनादय, एस.आर.



सी. के कार्यक्रम समन्वयक श्री सुनील सेन, पी.ओ. डॉ. अजय तिवारी, ए.पी.ओ. श्री प्रदीप जैन तथा श्री ज्ञानेन्द्र मिश्रा सहित अनेक संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

— आर. के. सनादय
निदेशक, जेएसएस

Seminar on Family Life – Unidentified Realities



The Kerala State Resource Centre in collaboration with Kerala State Branch of Indian Adult Education Association and Dr. K. Sivadasan Pillai Foundation organized a one day seminar on 'Family Life – Unidentified Realities' (a psycho – legal analysis) on 28.11.2015 in which 26 persons participated. While Prof. A. Abdul Vahab presided over the seminar Advocate Suresh Thonnakkal, Psycho-Legal Psychologist and Counseling Hypno Therapist, DEVARAGAM, Thiruvananthapuram was the main speaker.

Shri Harish Kumar welcomed the gathering while Shri Prathapachandran proposed the vote of thanks.

SRC Jamia Oriented JSS Functionaries

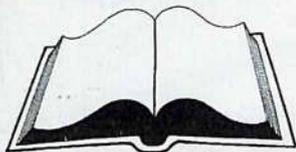
The State Resource Centre, Jamia Millia Islamia, New Delhi organized a one day orientation programme to the functionaries of Jan Shikshan Sansthan located in Saakshar Bharat Districts of Uttar Pradesh and National Capital Region on November 30, 2015 at Conference Hall of SRC in which 20 Directors, Programme Officers and other



functionaries participated. The main thrust areas discussed were strategies for achieving 100% literacy in Saansad Adarsh Grams of Saakshar Bharat Districts with the active cooperation of Zilla Lok Shiksha Samitis and State Resource Centre. Organizing vocational skill development programmes and awareness activities in Adarsh Grams by JSSs was also discussed though some of the sansthan have already initiated such efforts.

The other aspects discussed were legal literacy including legal aid services, lok adalats, laws protecting the interests of SC, ST, laws protecting the welfare of women, financial literacy including Prime Minister's Jan Dhan Yojana, Prime Minister's Surksha Beema Yojana, MUDRA Yojna, etc.

The resource support for the orientation programme was provided by SRC Faculty, DAE, TSG of NLMA and UNDP.



Paul, Sujit Kumar. **Rural Development: Concept and Recent Approaches.** New Delhi, Concept; 2015: 416p.

This book deals with important core issues on rural development. Its focal point is to understand the concepts and recent approaches to rural development. It gives a holistic picture of rural development in India.

Unesco. **Teachers in Asia Pacific: Status and Rights.** Bangkok, Unesco; 2015: 39p.

This report is a synthesis of research studies conducted in eight countries: Cambodia, Indonesia, Mongolia, Pakistan, Republic of Korea, Samoa, Sri Lanka and Uzbekistan. It examines the current trends and policies affecting teachers' status, focusing on 10 areas: entry requirements; pre-service training; recruitment and deployment; workload; professional development; salaries; retirement; assessment; unions and school leadership.

Valentina, G. **Agripreneurship for Employment and Empowerment of Women in Rural Areas.** Delhi, Kalpaz Publications; 2015: 292p.

Traditionally women in agriculture are confined to activities mainly Weeders, Preparation of agriculture fields, Application of green and farmyard manure, Crop management, Planting, Harvesting and Post-harvest operations. Onset of liberalisation opened avenues for women's participation in agricultural labour force giving rise to Feminization of Agriculture and increase in rural female work participation rate. Consequent impact has been the creation of women entrepreneurs known as WOMEN AGRI- ENTREPRENEURS. Today they comprise about 10 percent of total entrepreneurs in India and 51% in Forest-based small-scale enterprises playing a key role to transform rural livelihoods. They also face many

challenges like mushrooming multinational companies, patriarchy, illiteracy, dependency on male members, economically not self-dependent, dependency on intermediaries, marketing, sales and non cooperation of financial institutions. This book provides a platform for women entrepreneurs to share their experiences, discern role of technology in promoting employment and empowerment and debate on initiatives made by government in promoting Agripreneurship in women.

World Economic Forum. **The Global Gender Gap Report 2015.** Switzerland, World Economic Forum; 2015: 377p.

Through the Global Gender Gap Report 2015, the World Economic Forum quantifies the magnitude of gender-based disparities and tracks their progress over time. While no single measure can capture the complete situation, the Global Gender Gap Index presented in this Report seeks to measure one important aspect of gender equality: the relative gaps between women and men across four key areas: health, education, economy and politics.

This edition of the Global Gender Gap Report reveal the pattern of change around the world relative to the 109 continuously covered countries' own past performance and in relation to each other. The report includes as well the latest research on the benefits of gender equality from a variety of sectors, the current use of policy tools and business practices, and future implications for business leaders and policy-makers, including new findings in the context of disruptions to labour markets.

Compiled by Neha Gupta
Jr. Librarian-cum-
Documentation Assistant, IAEA

Borooah, Vani Kant and others. **Caste, Discrimination, and Exclusion in Modern India.** New Delhi, Sage; 2015: 348 p.

This book posits the Scheduled Castes (SCs) and Scheduled Tribes (STs) vis-à-vis their upper-caste Hindu peers and establishes how caste is a lived reality in everyday life in modern India.

It explores areas where caste and religious exclusion are most visible, such as human development, inequality, poverty, educational attainments, child malnutrition, health, employment, wages, gender, and access to public goods. With an in-depth theoretical foundation and empirical analysis, it establishes that in each of these sectors, the performance of upper-caste Hindu households is far better compared to that from the SC, ST, and Muslim households.

Paltasingh, Tattwamasi and Tyagi, Renu eds. **Caring for the Elderly: Social Gerontology in the Indian Context.** New Delhi, Sage; 2015: 308 p.

This book seeks to improve the quality of life of the elderly by means of policy suggestions that can be implemented by the government.

Caring for the Elderly focuses on managing various issues confronting the elderly today and remedial measures that can be taken by care givers and society at large. The book tells the important concepts, such as population ageing and its associated impacts. In a rapidly changing world, there is a need to discuss issues related to the elderly population and their health and well-being in the social and economic context.

Best Educationist Award to Prof. J.P.Dubey

R.N.I. No. 53577 /1991

Postal Regn. No. DL(C).01/1160/2013-2015

Published on December 26, 2015



Professor J.P.Dubey, Head, Department of Adult, Continuing Education and Extension, University of Delhi has received the Best Educationist Award for the year 2015 from the Newspaper Association of India (NAI). The honour bestowed on him is in recognition of his continuous

engagement with the community for providing services and generating knowledge to help changing the teaching-learning programme in higher education. He has also been credited for developing a short term course on Radio Broadcasting and initiating the process of skilling students for gainful employment.

The award was given to him in a function held at NDMC Convention Centre, Sansad Marg, New Delhi on November 28, 2015.

Indian Adult Education Association conveys its best wishes to Professor Dubey who is a Life Member of the Association since 1994.

जिला कारागार में प्रमाणपत्र वितरण समारोह



गौतमबुद्ध नगर में स्थित जिला कारागार में जन शिक्षण संस्थान, गौतमबुद्ध नगर के सहयोग और जेलर मो. अकरम खान के अथक प्रयासों से काराबंदियों के लिए कई कल्याणकारी कार्यक्रमों का

संचालन किया जा रहा है। विगत दिनों इन काराबंदियों को फैंब्रिक पेंटिंग पर रोजगारपरख प्रशिक्षण पदान किया गया। इस सफल प्रशिक्षण के उपरांत दिनांक 17 नवम्बर 2015 को प्रशिक्षण प्राप्त सभी काराबंदियों को प्रमाणपत्र वितरित करने के लिए कारापरिसर में ही एक कार्यक्रम का आयोजन किया

Jagatsinghpur JSS Observed World AIDS Day

The Jan Shikshan Sansthan, Jagatsinghpur observed World AIDS Day on December 1, 2015 through a mass programme of Human Chain with signature campaign to create awareness among the general public on HIV/AIDS and its ill effects on



the society in general and the infected persons and their families in particular in which a large number of people participated which included political leaders, educationists, bureaucrats, social activists, reporters and beneficiaries of the JSS. People who signed on the big chart paper also wrote well meaning slogans on eradicating HIV/AIDS which was displayed in the programme venue. All those who participated in the programme were also given booklets and leaflets on HIV/AIDS apart from pinning red ribbon. JSS also arranged to plant trees on this occasion.

गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्थानीय जिला अधिकारी श्री एन.पी. सिंह थे। जिन्होंने सभी प्रशिक्षण प्राप्त काराबंदियों को प्रमाणपत्र वितरित किये। इस अवसर पर जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री प्रदीप मिश्रा तथा जेलर मो. अकरम खान सहित नेहरू युवा केन्द्र के उप-निदेशक श्री यू.पी. सिंह, जिला बेसिक अधिकारी श्री मनोज कुमार वर्मा, सिंडिकेट बैंक के एल.डी.एम श्री ए.के. सिंह भी उपस्थित थे।

— प्रदीप मिश्रा,
निदेशक, जेएसएस

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Tel: 011-23379306, 23378206, 23379282,

23378436, 43489048

E-mail: iaeadelhi@gmail.com

Editor: Dr. Madan Singh

Website: iaea-india.org